

वार्षिक रिपोर्ट  
ANNUAL REPORT  
1993-94



सत्यमेव जयते

NIEPA DC



D08146

संस्कृति विभाग

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

भारत सरकार

(भाग-2)

DEPARTMENT OF CULTURE  
MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT  
GOVERNMENT OF INDIA  
(PART-2)

DEPARTMENT OF EDUCATION (Govt of India)  
National Institute of Educational Planning and Administration  
17-B, Sri Aurobindo Marg,  
New Delhi-110016  
Doc. No. D-8146  
Date 9-8-94

# विषय-सूची

	पृष्ठ संख्या
1. प्रस्तावना	1
2. पुनरावलोकन 1993—94	3
3. संगठन	11
4. पुरातत्व	15
5. संग्रहालय	23
6. मानव-विज्ञान और नृजाति-विज्ञान संबंधी संस्थाएं	33
7. अभिलेख और प्रलेख	37
8. बौद्ध एवं तिब्बती अध्ययन संस्थान	45
9. पुस्तकालय	49
10. अकादमियां और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय	59
11. संस्कृति का उन्नयन और प्रचार	71
12. शिक्षावृत्ति, छात्रवृत्ति और वित्तीय सहायता की योजना	79
13. स्मारक	81
14. शताब्दियां और जयंतियां	83
15. अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंध	85
16. भारत महोत्सव	87
17. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र	89
18. राष्ट्रीय संस्कृति नीति	91

परिशिष्ट— I प्रशासनिक चार्ट

परिशिष्ट— II विचारित मदों के लिए वित्तीय आवंटन

## प्रस्तावना

मानव संसाधन विकास मंत्रालय की स्थापना 1985 में शिक्षा, महिला तथा बाल विकास, कलाओं, संस्कृति, युवा कार्यक्रमों तथा खेलों के क्षेत्रों में मानव क्षमता के विकास की दिशा में प्रयासों के समेकन के उद्देश्य से की गई थी। 1993-94 के वर्ष के दौरान मंत्रालय ने इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अपने प्रयास को जारी रखा। इस रिपोर्ट में मंत्रालय के चारों विभागों के कार्यकलाप शामिल किए गए हैं और इसे चार भागों में प्रस्तुत किया गया है:—

भाग-I शिक्षा विभाग

भाग-II संस्कृति विभाग

भाग-III युवा कार्यक्रम तथा खेल विभाग

भाग-IV महिला तथा बाल विकास विभाग

### शिक्षा विभाग

1.2 वर्ष 1993-94 की सर्वाधिक ऐतिहासिक घटना 16 दिसम्बर, 1993 को नई दिल्ली में नौ जनसंख्या बहुल देशों का सभी के लिए शिक्षा शिखर सम्मेलन की मेजबानी करना थी। ये नौ देश हैं- बंगलादेश, ब्राजील, चीन, मिश्र, भारत, इण्डोनेसिया, मेक्सिको, नाइजीरिया और पाकिस्तान। इन देशों में विश्व की आधी से अधिक जनसंख्या रहती है और इनमें संसार के 70 प्रतिशत अशिक्षित हैं। संयुक्त राष्ट्र की तीन एजेंसियों अर्थात् संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संघ, संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय बाल आपातकालीन निधि और यू०एन०एफ०पी०ए० के अध्यक्षों ने भी शिखर सम्मेलन में भाग लिया था। नौ जनसंख्या बहुल देशों ने दिल्ली घोषणा और कार्यवाही ढांचे को पारित किया।

1.3 घोषणा में प्रत्येक बच्चे के लिए किसी स्कूल में अथवा उसकी योग्यता के अनुसार उपयुक्त शिक्षा कार्यक्रम में कोई स्थान सुनिश्चित करने, सार्वजनिक और निजी स्रोतों से बच्चों, युवाओं और प्रौढ़ों के लिए मूलभूत शिक्षा की दिशा में प्रयासों को समेकित करने, सभी स्तरों के लिए बुनियादी शिक्षा की एक संघटित कार्यनीति के संदर्भ में साक्षरता तथा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों में सुधार करने और उनका विस्तार करने, बुनियादी शिक्षा की प्राप्ति की दिशा में असमानताओं को दूर करने के लिए, बुनियादी शिक्षा की कोटि और प्रासंगिकता में सुधार लाने के लिए और सभी कक्षाओं में मानव विकास को राष्ट्रीय तथा अन्य स्तरों पर यह सुनिश्चित करते हुए सर्वोच्च प्राथमिकता देना कि राष्ट्रीय और सामुदायिक संसाधनों में बढ़ते हुए अंश को बुनियादी शिक्षा के प्रति समर्पित किया जाए और शिक्षा के लिए विद्यमान संसाधनों के प्रबंध में सुधार लाने की अपेक्षा की गई है।

1.4 राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 और कार्यवाही योजना, 1992 में वास्तव में दिल्ली घोषणा और कार्यवाही ढांचे के प्रावधानों की प्रत्याशा की गई थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह सुनिश्चित करने के लिए यह संकल्प किया गया है कि संतोषप्रद कोटि की निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा 21वीं सदी से पहले 14 वर्ष तक आयु के सभी बच्चों को प्रदान की जाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति/कार्यवाही योजना के कार्यान्वयन कार्यक्रम में तेजी लाने के लिए कार्यवाही पहले ही की जा रही है। दिल्ली घोषणा के अनुसरण में उठाए गए विशेष कदमों में कुछ कदम हैं—नौ देशों में दूरस्थ शिक्षा के लिए एक सहयोग युक्ति विकसित करना। अनुभवों के आदान-प्रदान की दृष्टि से नौ देशों में समय-समय पर परामर्श करना। समुदायों और अभिभावकों को अधिक प्राधिकार देने की दृष्टि से शिक्षा संबंधी ढांचों में विकेन्द्रीकृत प्रबंध को शुरू करना और स्कूल को उसके कार्य निष्पादन के लिए समुदाय के प्रति और अधिक उत्तरदायी बनाना, शिक्षकों के लिए कार्य निष्पादन संबंधी मानदण्डों तथा आचार संहिता को विकसित करना तथा जिला विशिष्ट शिक्षा कार्यक्रमों को विकसित करना।

1.5 शिखर सम्मेलन शिक्षा के विकेन्द्रीकृत प्रबंध के सम्बंध में के०शि०स०बो० (केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड) की समिति और साक्षरता के सम्बंध में राष्ट्रीय विकास परिषद् की समिति की रिपोर्टों पर अनुवर्ती कार्यवाही पर विचार करने के लिए प्रधानमंत्री ने 15 फरवरी, 1994 को सभी राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों के मुख्य मंत्रियों का एक विशेष सम्मेलन आयोजित किया। मुख्य मंत्रियों ने निर्णय लिया कि शिक्षा के लिए संसाधन जुटाने और प्राथमिक तथा प्रौढ़ शिक्षा को उच्च प्राथमिकता प्रदान करने के लिए स्थानीय समुदाय, राज्य सरकारों और केन्द्रीय सरकार की ओर से समन्वित और संगठित कार्यवाही किए जाने की जरूरत होगी।

1.6 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में, जिसे 1992 तक अद्यतन किया गया है, कई प्रमुख कार्यनीतियों का प्रावधान है। इनमें (I) प्रारंभिक शिक्षा और प्रौढ़ साक्षरता के कार्यान्वयन के वास्ते योजना की इकाई के रूप में राज्य के स्थान पर जिले पर ध्यान देना, (II) मूलभूत बुनियादी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक गतिशीलता पर निर्भरता बढ़ाने और (III) छोटे परिवार के मानदण्ड, स्वास्थ्य देखभाल, पर्यावरण तथा पोषण जैसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दों के साथ प्रौढ़ साक्षरता और गैर-औपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों का समेकन शामिल है। प्रारंभिक शिक्षा के सर्वसुलभीकरण के संदर्भ में 8वीं योजना में अपनाई गयी कार्य नीतियां ये हैं:—

- जन सहभागिता के माध्यम से सूक्ष्म आयोजना के व्यापक कार्य नीति के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा के सर्वसुलभीकरण के लिए जिला सम्येक्ष, जनसंख्या सम्येक्ष योजनाओं को तैयार करने पर बल देते हुए एक भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण अपनाना।
- स्कूलों में नैसिखियों के शिक्षा ग्रहण में सुधार लाने के लिए न्यूनतम अध्ययन स्तर आरंभ करना। सूक्ष्म आयोजना से सार्वभौमिक पहुंच तथा सार्वभौमिक सहभागिता प्राप्त होगी जबकि अध्ययन के न्यूनतम स्तर सार्वभौमिक उपलब्धता के लिए कार्यनीति होगी।

1.7 यह बल दो प्रकार का होगा: प्रथमतः, स्कूल-वंचित बस्तियों में नए स्कूल खोल कर सार्वभौमिक पहुंच को प्राप्त करना, जो औपचारिक स्कूल में नहीं जा सकते, उनकी जरूरत को पूरा करने के लिए गैर-औपचारिक अध्ययन केन्द्र नेटवर्क का विस्तार करना। दूसरे, बेहतर अवसरचना तथा कार्यकलाप आधारित, बाल केन्द्रित, कौशलमुख पठन-पाठन प्रक्रिया के जरिए स्कूल के वातावरण में सुधार लाकर सार्वभौमिक रूप में शिक्षा जारी रखना तथा तत्सम्बन्धी उपलब्धता।

1.8 वर्तमान संस्थागत कार्य ढांचे को पूर्णतया कार्यात्मक तथा कौशल के उच्चतर स्तर पर कार्यकरण के अनुरूप बनाया जाना है। शिक्षक-प्रशिक्षण की केन्द्रीयता निर्दिष्ट होने पर, जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थानों, सी०टी०ई० और आई०ए०एस०ई० के संचालन पर शीघ्रताशीघ्र बल दिया जाएगा और यह सुनिश्चित किया जाएगा कि ये व्यावसायिक तौर पर निपुण और उच्च अभिप्रेरित कार्मिकों से सुसज्जित हों। आपरेशन ब्रैक बोर्ड की स्कीम का कार्यान्वयन उचित उत्साह से किया जाएगा। गैर-औपचारिक शिक्षा केन्द्रों का स्थान नियत करने, उनके कार्यकरण की मानिट्रिंग तथा पर्यवेक्षण पर ध्यान दिया जाएगा, ताकि वंचित वर्ग इस स्कीम से अधिक से अधिक लाभान्वित हो सकें।

1.9 पूर्ण साक्षरता का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रारंभिक शिक्षा के सर्वसुलभीकरण और सर्वसार्थिक प्रौढ़ साक्षरता का दुतरफा दृष्टिकोण अपनाया जा रहा है। प्राथमिक शिक्षा तथा प्रौढ़ शिक्षा दोनों में जिला सम्येक्ष कार्यक्रम विकसित किये गये हैं। प्रारंभिक शिक्षा के सर्वसुलभीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक प्रमुख नई शुरुआत के रूप में वर्ष 1993-94 में जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम शुरू किया गया जिसमें जिला स्तर योजना की कार्य नीति को आरम्भ करना अपेक्षित है। इस कार्यक्रम में प्राथमिक शिक्षा विकास कार्यक्रम के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण अपनाया गया है और सहभागी आयोजना और प्रबंध पर मुख्य रूप से बल दिया गया है। इसमें बालिकाओं की शिक्षा पर विशेष रूप से अधिक बल दिया गया है और शिक्षकों के प्रशिक्षण और विकेन्द्रीकृत प्रबंध में निवेशों के जरिए स्कूल की प्रभावकारिता को बढ़ावा देने की अपेक्षा की गई है। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय, राज्य अथवा स्थानीय सभी स्तरों पर बल देता है और इसमें ऐसी कार्यनीतियां विकसित की गयी हैं, जिनके अनुसार वैसी ही कार्यनीतियां बनाई जा सकें और उन्हें बरकरार रखा जा सके। यह कार्यक्रम मध्य प्रदेश के 19 जिलों में पहले ही शुरू किया जा चुका है। आठवीं योजना के दौरान कम से कम 110 जिलों में इस कार्यक्रम को आरम्भ करने के प्रयास किये जायेंगे।

1.10 संपूर्ण साक्षरता अभियान अब सर्वाधिक अनुकूल कार्यनीति तथा साथ-साथ प्रौढ़ निरक्षरता के उन्मूलन के लिए एक कारगर और व्यवहार्य प्रतिमान के रूप में उभरा है। सम्पूर्ण साक्षरता अभियान ने शैक्षिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों को अपने कार्य क्षेत्र में शामिल करके काफी प्रयत्न किए हैं। इन अभियानों का केन्द्र बिंदु अब उत्तरी राज्यों में संकेन्द्रित है जहाँ बहुतायत में निरक्षर जनसंख्या रहती है।

1.11 देश में स्कूली शिक्षा की सुविधाओं की वर्तमान स्थिति का निर्धारण करने के लिए, 30 सितम्बर, 1993 को संदर्भ तिथि मानकर इस वित्तीय वर्ष के दौरान रा०शै०अ०प्र०परि०, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र तथा राज्य स्तरीय एजेंसियों के जरिए छठा अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण किया जा रहा है। स्कूली छात्रों के शैक्षिक बोझ को कम करने हेतु उपाय सुझाने के लिए प्रो० यशपाल की अध्यक्षता में राष्ट्रीय सलाहकार समिति ने 15.7.93 को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।

1.12 पंचायती राज और नगर पालिका संस्थाओं के संबंध में 73वें और 74वें संवैधानिक संशोधनों के अनुसरण में इस विभाग ने शिक्षा के विकेन्द्रीकृत प्रबंध ढांचे को आरंभ करने के वास्ते राज्यों के लिए मार्गदर्शी रूपरेखाएं तैयार करने के लिए शीघ्र पहल की है। यह आशा है कि विकेन्द्रीकृत प्रबंध ढांचे की शुरुआत से शिक्षा में सामुदायिक सहयोग बढ़ेगा। इसके परिणाम स्वरूप, निश्चित रूप से समाज के सभी वर्गों द्वारा शिक्षा में अधिक सहभागिता होगी और शिक्षा की कोटि में सुधार होगा।

1.13 स्कूली शिक्षा में माध्यमिक शिक्षा का व्यावसायीकरण एक प्रमुख लक्षित क्षेत्र है। (दस) जमा दो के स्तर पर माध्यमिक शिक्षा के व्यावसायीकरण की योजना शिक्षा संबंधी अवसरों में विविधता लाने के उद्देश्य से फरवरी, 1988 में आरंभ की गई थी ताकि व्यक्तिगत रूप से रोजगार चलाने की प्रक्रिया में वृद्धि हो सके, कुशल जनशक्ति की मांग और पूर्ति के मध्य बेमेल को कम किया जा सके और बिना किसी विशेष हित अथवा उद्देश्य के उच्च शिक्षा जारी रखने वालों के लिए विकल्प उपलब्ध कराया जा सके। यह आशा की जाती है कि 1995 के अंत तक राष्ट्रीय शिक्षा नीति का 10 प्रतिशत दिक् परिवर्तन का लक्ष्य प्राप्त करना संभव होगा। इसके अतिरिक्त शैक्षिक शिक्षा के वांछित आयाम के रूप में व्यवसाय में भाग लेने के लिए कक्षा IX तथा X के छात्रों को तैयार करने के लिए 1993-94 से निम्न माध्यमिक स्तर पर पूर्व व्यावसायिक शिक्षा की योजना आरंभ की गई। VIII वीं योजना के दौरान 1000 स्कूलों को इसके अंतर्गत लाने का प्रस्ताव है।

1.14 महिलाओं की शिक्षा हमेशा से प्राथमिकता का क्षेत्र रहा है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पूर्ण शैक्षिक पद्धति को महिलाओं की शिक्षा और उनके अधिकारों के लिए कार्य करने की परिकल्पना की गई है। इस बात पर बल दिया गया है कि स्त्री और पुरुष की समस्या के प्रति चेतना सभी शैक्षिक प्रक्रियाओं में उत्पन्न की जानी चाहिए। औपचारिक और गैर औपचारिक शिक्षा में लड़कियों के नामांकन और उनकी शिक्षा जारी रखने, शिक्षकों के रूप में ग्रामीण महिलाओं की भर्ती और पाठ्यचर्या में महिलाओं की भर्ती और पाठ्यचर्या में महिला और पुरुष के भेदभाव को दूर करने पर बल दिया गया है। विभिन्न योजनाओं में विशेष प्रावधान किए गए हैं जैसे नई ब्लैक बोर्ड योजना में यह व्यवस्था की गई है कि कम से कम 50 प्रतिशत महिला शिक्षक नियुक्त किए जाने चाहिए और गैर औपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत पूर्णतया लड़कियों के लिए स्थापित केन्द्रों के लिए 90 प्रतिशत सहायता प्रदान की जाती है। लड़कियों की शिक्षा को जारी रखने के उद्देश्य से माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में छात्राओं के लिए भोजन व्यवस्था और छात्रावास सुविधाएं सुदृढ़ करने हेतु चालू वर्ष के दौरान एक नई योजना शुरू की गई। इस योजना के अन्तर्गत भोजन, फर्नीचर, उपकरणों और मनोरंजन सम्बंधी सामग्रियों, इत्यादि के लिए स्वैच्छिक एजेंसियों द्वारा चलाए जा रहे विद्यमान छात्रवासों या बोर्डिंग हाउसों को सहायता प्रदान की जाती है। अप्रैल, 1989 में शुरू की गई महिला सामाख्या परियोजना काफी सफल रही है जिसमें यह मान लिया गया है कि महिलाओं की समानता के लिए शिक्षा एक निर्णायक घटक हो सकती है। यह कार्य नीति, कुछ अन्य बुनियादी शिक्षा परियोजनाओं में अपनाई जा रही है। उच्चतर शिक्षा सामान्य और तकनीकी दोनों क्षेत्रों में महिलाओं के लिए असाधारण रूप से शैक्षिक अवसर उपलब्ध होने की गुंजाइश है।

1.15 अल्पसंख्यकों के शैक्षिक विकास पर बल देने के लिए शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े अल्पसंख्यकों के लिए एक क्षेत्र गहन कार्यक्रम चलाया गया है। प्रारम्भ में यह कार्यक्रम शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यक बहुल जिलों पर ध्यान केन्द्रित करेगा।

## संस्कृति विभाग

1.16 संस्कृति विभाग का प्रमुख ध्येय देश की सांस्कृतिक परंपराओं का परिरक्षण, प्रोन्नयन और संवर्धन करना है। इन परंपराओं को जीवंत बनाए रखने के लिए विभाग द्वारा संस्थाओं का एक नेटवर्क स्थापित किया गया है और स्मारकों तथा ऐतिहासिक स्थलों का उत्खनन, संरक्षण, सुरक्षण, पुस्तकालयों व संग्रहालयों का विकास, साहित्यिक, रूपकर तथा प्रदर्शन कलाओं का प्रोन्नयन, सांस्कृतिक क्षेत्र की प्रतिभाओं को बधाई व पुरस्कार प्रदान करने सहित विविध प्रकार के कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के प्रति लोगों में चेतना जागृत करने के लिए संस्कृति विभाग द्वारा किए गए कार्यक्रमों में से ये कुछ थोड़े से कार्यक्रमलाप हैं। विभाग विभिन्न देशों की जनता को भारत की जनता के और निकट लाने के अपने प्रयासों के अंतर्गत विभिन्न देशों के साथ सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम निष्पादित करता है तथा अन्य देशों के सांस्कृतिक महोत्सवों को भारत में तथा भारत महोत्सवों को विभिन्न देशों में आयोजित करता है। अगले परिच्छेदों में 1993-94 के दौरान संस्कृति विभाग के महत्वपूर्ण कार्यक्रमलापों और उपलब्धियों को प्रस्तुत किया गया है।

1.17 वर्ष 1993-94 के दौरान, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ए०एस०आई०) ने देश के विभिन्न भागों में लगभग 500 स्मारकों को परिरक्षण और संरक्षण कार्य के लिए अपने हाथ में लिया, जिनमें से लगभग 250 कार्यों की व्यापक परिरक्षण-कार्य के लिए विशेष रूप से पहचान की गई। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के दलों ने अंगकोरवाट, कम्बोडिया के स्मारकों को परिरक्षित तथा संरक्षित करने का अपना कार्य जारी रखा, जिसकी अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त पुरातत्वविदों तथा संरक्षणविदों द्वारा प्रशंसा की गई है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा भारत के भिन्न-भिन्न भागों में प्रागैतिहासिक काल से लेकर मध्य काल के अनेक स्थलों और अवशेषों का पता लगाया गया है। धौलपुर जिले के पार्वती तथा उतंगन नदी घाटी सहित अनेक स्थलों तथा पूर्वोत्तर राज्यों के प्रागैतिहासिक स्थलों की खोज का कार्य किया गया। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने दिल्ली के लालकोट में तोमर शासक अनंगपाल II द्वारा ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य में निर्मित दिल्ली की किलाबंद राजधानी की खोज की। तमिलनाडु के दक्षिण अर्कोट जिले के जिजी किला के सफाई कार्य के दौरान 16वीं शताब्दी के एक महल, एक भूमिगत पथ तथा एक सिंहासन मंच का पता चला। मामल्लपुरम, तमिलनाडु में एक दीर्घवृत्ताकार ढांचे का पता चला है, जिसमें सीढ़ियां हैं तथा इसमें एक पंक्ति का उत्कीर्णन भी है, जिससे इस बात का संकेत मिलता है कि इसे राजसिंहा के नाम से मशहूर प्रसिद्ध पल्लव राजा नरसिंह वर्मन III (695-722 ई०) द्वारा बनवाया गया था।

1.18 वर्ष के दौरान, भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता ने मंगोलिया के ललित कला संग्रहालय में बौद्ध कला वस्तुओं की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया, जिसमें भगवान बुद्ध के जीवन और संदेश को दर्शाया गया था। इसने सिंगापुर में "बौद्ध-मार्ग पर" नामक एक अन्य प्रदर्शनी का भी आयोजन किया, जिसमें लगभग 60 उत्कृष्ट और प्रतिनिधि कलावस्तुओं को प्रदर्शित किया गया, जिनमें भगवान बुद्ध के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया था। राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली ने राजा रवि वर्मा के चित्रों, आरेखों तथा तैलचित्रों पर एक विशेष प्रदर्शनी का आयोजन किया। उत्तर-पूर्व के आदिवासियों की जीवन शैली पर पूर्णतः जीर्णोद्धारित तथा पुनः अभिकल्पित एक नई वीथी का भी उद्घाटन किया गया। शिक्षा और संस्कृति पर भारत अमरीका उप-आयोग के तत्वावधान में राष्ट्रीय संग्रहालय ने "देवता, संरक्षक और प्रेमी: उत्तरी भारत के मंदिरों की मूर्तिकला" नामक प्रदर्शनी में लगाने के लिए एशिया सोसायटी गैलरी, न्यूयार्क को पत्थर की 16 मूर्तियां भेजीं। राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद्, कलकत्ता को राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र, दिल्ली में लगाए गए "सूचना क्रान्ति" नामक अपने प्रदर्श के लिए प्रौद्योगिकी-इतिहास सोसायटी, संयुक्त राज्य अमरीका से 1993 का वांछित "दिबनर एवार्ड" प्राप्त हुआ।

1.19 संस्कृति विभाग के अंतर्गत आने वाले पुस्तकालय ने अपने साहित्यिक कार्यकलापों के अलावा पुस्तकों/पत्रिकाओं को प्राप्त करने तथा पाठक सेवा प्रदान करने संबंधी अपने कार्यकलाप जारी रखे। केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार ने अपनी महाभारत आंकड़ा-आधार परियोजना के अंतर्गत लगभग 30,000 श्लोकों को मशीन द्वारा पढ़ने योग्य रूप में रूपांतरित किया।

1.20 भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण विभाग ने "भारत के लोग" नामक अपनी रिपोर्ट को प्रकाशित करने के लिए कदम उठाये हैं। इस परियोजना के अंतर्गत सूचना के संपूर्ण क्षेत्र को शामिल करने के कारण इसके कुल 43 खंड बने हैं, जिनमें से 11 राष्ट्रीय तथा 32 राज्य श्रृंखलाएं हैं। वर्ष के दौरान, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय ने "दृश्य मानव-विज्ञान में जन-परिप्रेक्ष्य" पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। यह आदिवासी तथा सदृश लोगों पर अनन्त यात्रा (इंटरनल वॉयेज) नामक एक अंतर्राष्ट्रीय समागम आयोजित करने की योजना तैयार कर रहा है। "आदिवासियों की सांस्कृतिक विरासत" पर ऊटी, शिलांग तथा कई अन्य स्थानों पर शैक्षिक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। संग्रहालय ने मिट्टी के बर्तन तथा टेराकोटा की जीवंत भारतीय परंपरा पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें एक कुम्भकार कार्यशाला तथा संगोष्ठी का आयोजन शामिल था। इसमें भारत के विभिन्न भागों के 40 से भी अधिक कुम्भकारों ने भाग लिया तथा अपनी परंपरागत तकनीकों का प्रदर्शन किया।

1.21 साहित्य अकादेमी ने, जो साहित्य की राष्ट्रीय अकादेमी है, वर्ष के दौरान 140 पुस्तकों को प्रकाशित किया है तथा 29 पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन किया है। इसके अतिरिक्त, अकादेमी द्वारा साहित्यिक मंच की 27 बैठकें तथा "लेखक से मिलिए" नामक 5 बैठकें भी आयोजित की गई हैं। संगीत नाटक अकादेमी ने, जो संगीत, नृत्य और नाटक की राष्ट्रीय अकादेमी है, दिल्ली में कथकली महोत्सव का आयोजन किया, जिसमें कथकली के प्रतिनिधि नाटककारों द्वारा लिखे गए 10 नाटकों को शामिल किया गया। इन नाटकों में आजकल प्रचलित कथकली परंपरा की व्यापक तस्वीर खींची गयी है। चार क्षेत्रीय थियेटर्स का आयोजन करने के अतिरिक्त, अकादेमी एक युवा नाट्य समारोह, युवा निदेशकों के लिए राष्ट्रीय थिएटर महोत्सव, का आयोजन करने की योजना तैयार कर रही है, जिसमें वर्ष 1993-94 के दौरान, चार क्षेत्रीय महोत्सवों में मंचित किए गए नाटकों में से चुनिंदा नाटकों को मंचित किया जाएगा। ललित कला अकादेमी ने, जो कला की राष्ट्रीय अकादेमी हैं, ढाका, बंगलादेश में आयोजित छठी एशियाई कला द्विवार्षिकी में भाग लिया। फ्रांस के दूतावास के साथ मिलकर इसने नई दिल्ली में चित्रों, मूर्तियों तथा मुद्रणों पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की रंगमंडली ने लखनऊ में "मुआवज़े" का मंचन किया। इस मंडली ने ग्रीष्म नाट्य उत्सव का भी आयोजन किया।

1.22 वर्ष के दौरान, गुवाहाटी में 10.00 करोड़ रुपये की केन्द्रीय सहायता से "श्रीमंत शंकरदेव कला क्षेत्र" नामक एक सांस्कृतिक परिसर स्थापित करने का निर्णय लिया गया है। आशा है कि कुछ वर्ष पहले हस्ताक्षरित ऐतिहासिक "असम समझौते" के खंड 6 के अनुरूप इससे असम के लोगों की सांस्कृतिक विरासत को परिरक्षित करने की असम की जनता की काफी समय से लंबित मांग पूरी हो सकेगी।

1.23 सांस्कृतिक समुदाय की काफी समय से लंबित मांग को पूरा करने के लिए विभाग का प्रस्ताव है कि नई दिल्ली में बहुकला राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिसर स्थापित किया जाए, जो शहर के सांस्कृतिक और रचनात्मक कार्यकलापों के मुख्य केन्द्र के रूप में कार्य करेगा। "परिसर" के नाम से जाने जाने वाले इस सांस्कृतिक परिसर में अंतर्राष्ट्रीय स्तर के समतुल्य सभी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी जहां एक ही स्थान पर सेमिनार, प्रदर्शनी थिएटर, नृत्य रूपक सहित प्रदर्शन कलाओं के आयोजन के लिए सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

## युवा कार्यक्रम और खेल विभाग

### युवा कार्यक्रम

1.24 युवा कार्यक्रम और खेल विभाग युवा विकास की अनेक योजनाएं कार्यान्वित कर रहा है। ये योजनाएं इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई हैं कि युवा वर्ग राष्ट्र का अत्यधिक महत्वपूर्ण मानव संसाधन है जिस पर देश का वर्तमान और भविष्य निर्भर

करता है। वर्ष के दौरान किये गये अनेक कार्यों में युवाओं की अत्याधिक शक्ति को रचनात्मक कार्यक्रमों में लगाने के लिए युवा कार्यक्रमों के लिए एक नया आयाम दिया गया है। महत्वपूर्ण कार्य नीचे दर्शाये गये हैं :—

1.25 साहसिक कार्य के प्रोत्साहन की योजना को स्थल, जल, वायु से संबंधित अनेक साहसिक कार्यक्रमों को शामिल करने के लिए पुनः तैयार किया गया है। यद्यपि, इस योजना के अंतर्गत अनेक प्रोत्साहनों की वृद्धि की गई है फिर भी विभाग से सहायता लेने की प्रक्रिया को सरल बनाया गया है।

1.26 साहसिक कार्यक्रमों को मान्यता देने के लिए इस वर्ष से अर्जुन पुरस्कार के समतुल्य तीन साहसिक पुरस्कार शुरू किए गए हैं।

1.27 यह निर्णय किया गया है कि युवाओं से संबंधित विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण, अनुसंधान, प्रलेखन तथा विस्तार सेवाएं प्रदान करने के लिए एक शीर्ष संस्थान और संसाधन अधिकरण के रूप में श्रीपेरेंबुदुर में राजीव गांधी राष्ट्रीय युवा विकास संस्थान की स्थापना की जाए। भारत के प्रधानमंत्री ने 1 सितम्बर, 1993 को श्रीपेरेंबुदुर में संस्थान के परिसर के लिए आधार शिला रखी।

1.28 नेहरु युवा केन्द्रों के लिए एक कार्य योजना तैयार की गई है जिस में कार्यक्रम कार्यान्वयन स्तर पर विकेन्द्रीकरण के लिए जोर दिया गया है। ऐसे विकेन्द्रीकरण से स्थानीय परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए नये कार्यक्रम तैयार करने में सहायता मिलेगी।

1.29 एन० एस० एस० जो कि समुदाय सेवा छात्र युवा कार्यक्रम तथा छात्रों के व्यक्तित्व विकास का एक बड़ा हिस्सा है, रजत जयन्ती वर्ष 14 सितम्बर, 1993 को भारत के प्रधानमंत्री द्वारा प्रारम्भ किया गया। वर्ष के दौरान कार्यान्वित किये जाने वाले बहुत से कार्यक्रम तैयार किए गए हैं ताकि छात्रों को विभिन्न विकासोत्पन्न कार्यक्रमों में शामिल किया जा सके। जहां कहीं एन० एस० एस० यूनिटें विद्यमान हैं वहां एंसे 158 विश्वविद्यालयों को शामिल करने के लिए प्रमुख स्वास्थ्य संबंधित कार्यक्रम विश्वविद्यालय टाक एंड्स का विस्तार किया गया है।

1.30 9 अगस्त, 1993 को राष्ट्रीय चेतना वर्ष का समापन स्थानीय स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान करते हुए सभी क्षेत्रीय यूनिटों में मनाया गया। अन्तर समुदाय, अन्तर-विश्वास और आपसी सद्भावना को बढ़ावा देने के लिए सम्पूर्ण देश में 20 अगस्त, 1993 को सद्भावना दिवस मनाया गया। सभी विश्वविद्यालयों को एन०एस०एस० स्वयंसेवकों द्वारा तथा सभी जिलों में नेहरु युवा केन्द्रों द्वारा समारोहों का आयोजन किया गया। मुख्य समारोह दिल्ली के इन्दिरा गांधी इन्डोर स्टेडियम में आयोजित किया गया। इस अवसर पर तीन उत्कृष्ट युवा क्लबों को भी पुरस्कारों का वितरण किया गया।

## खेल और शारीरिक शिक्षा

1.31 खेल और शारीरिक उपयुक्तता के लिए भारत की लम्बी परम्परा रही है। नवे एशियाई खेलों के आयोजन से पहले 1982 में अलग खेल विभाग के सृजन से इस विषय को उच्च मान्यता दी गई। तत्पश्चात् 1984 में सर्वप्रथम राष्ट्रीय खेल नीति घोषित की गई। इस नीति के कार्यान्वयन के लिए 1992 में (वर्षाकालीन सत्र में) संसद के समक्ष एक नया कार्यान्वयन कार्यक्रम रखा गया।

1.32 वर्ष 1993-94 के दौरान विभाग ने एशियाई खेल 1994 के लिए टीमों और खिलाड़ियों की तैयारी हेतु अपने सभी प्रयास संगठित किए हैं। संशोधित मार्गदर्शी रूपरेखाएं जारी की गई हैं जिनमें प्रशिक्षण शिविरों, खेल उपस्कारों की खरीद, विदेश में प्रशिक्षण और प्रतिस्पर्धा के जरिए अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन और खेलों में अच्छे प्रदर्शन को प्रोत्साहित करने के लिए अधिक प्रोत्साहन शुरू करने का प्रावधान है। आगामी एशियाई खेलों के लिए भारतीय दल की तैयारी का प्रबोधन करते के लिए राज्यमंत्री की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई है।

1.33 स्कूली आयु से खेलों का विस्तार करने के लिए सरकार ने सूचना और प्रसारण राज्यमंत्री श्री के०पी० सिंह देव की अध्यक्षता में केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड की उप-समिति गठित की है जो खेल और शारीरिक शिक्षा को शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाने के लिए उपायों के सम्बन्ध में अपने सुझाव देगी। समिति ने अपना कार्य पूरा कर लिया है और विभाग को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी है।

1.34 खेलों में निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए और खिलाड़ियों के लिए खेल उपस्कारों के आयात को सुगम और सरल बनाने के लिए वर्ष के दौरान कई उपाय शुरू किए गए हैं। आयकर अधिनियम 1961 की धारा 35(ए)(सी) को संशोधित किया गया है। इससे औद्योगिक घरानों द्वारा खेलों के संवर्धन अथवा विकास कार्यक्रमों पर किया गया खर्च 100 प्रतिशत छूट के लाभ का पात्र होगा। इस के अतिरिक्त वाणिज्य मंत्रालय ने एक सार्वजनिक सूचना जारी की है जिसमें ऐसी खेल वस्तुओं/उपस्कारों को विनिर्दिष्ट किया गया है, जो विनिर्दिष्ट संगठनों द्वारा बिना किसी आयात लाइसेंस के खरीदी जा सकती हैं।



## महिला एवं बाल विकास विभाग

1.35 महिलाओं और बच्चों का चौमुखी विकास देश के मानव संसाधन विकास प्रयासों का एक महत्वपूर्ण अंग है। महिला एवं बाल विकास विभाग को, जो कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय का एक संघटक विभाग है, महिला एवं बाल विकास के क्षेत्र में सरकारी तथा गैर-सरकारी दोनों प्रकार के संगठनों के प्रयासों में मार्ग-दर्शन करने, उनका समन्वय, संवर्धन करने तथा उनकी समीक्षा करने के लिए एक नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करने का दायित्व सौंपा गया है।

1.36 महिलाओं और पुरुषों के बीच असमानता पूरे विश्व में व्याप्त है, हालांकि भ्रामक रूप से यह असमानता का सूक्ष्म रूप प्रतीत होता है। सरकार महसूस करती है कि महिलाओं को, जो हमारी जनसंख्या का आधा हिस्सा ही नहीं हैं, बल्कि जो सामाजिक परिवर्तन की धुरी हैं, यदि विकास की प्रक्रिया में शामिल नहीं किया जाता है तो विकास स्थायी नहीं बन सकता। अतः महिलाओं और पुरुषों के बीच सभी प्रकार की असमानताओं को दूर करना तथा महिलाओं को वास्तविक अर्थों में समान दर्जा दिलाना, जैसा कि हमारे संविधान में विहित है, हमारे लिए महत्वपूर्ण है। अतः, सरकार के सभी प्रयास, महिलाओं के समग्र स्तर-सामाजिक, आर्थिक, कानूनी और राजनैतिक को पुरुषों के स्तर के बराबर लाकर उन्हें राष्ट्रीय विकास की प्रक्रिया में शामिल करने पर केन्द्रित हैं। इस संबंध में अनेक कार्यक्रम कार्यान्वित किये जा रहे हैं, जिनमें रोजगार और आयोत्पादन, कल्याण और समर्थन सेवाएं, लिंग संचेतना और जागरूकता विकास गतिविधियां शामिल हैं। उपर्युक्त क्षेत्रों में विभाग द्वारा कार्यान्वित किये गए कार्यक्रम, स्वास्थ्य, शिक्षा, श्रम, रोजगार तथा ग्रामीण विकास के क्षेत्रों में और निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रमों में महिलाओं के सामान्य विकास के अन्य कार्यक्रमों के पूरक और अनुपूरक है।

1.37 सरकार ने जनवरी, 1992 में एक सांविधिक राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना की है, जिसका विशिष्ट दायित्व महिलाओं को प्रदत्त संवैधानिक और कानूनी रक्षोपायों से संबंधित सभी मामलों का अध्ययन और प्रबोधन करना, यथावश्यक संशोधनों का सुझाव देने के लिए मौजूदा विधानों की समीक्षा करना, तथा महिलाओं को अधिकारों से वंचित किये जाने के संबंध में शिकायतों की जांच करना है। यह आयोग महिलाओं पर अत्याचारों की रोकथाम के लिए एक प्रहरी निकाय के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

यह आयोग सम्मेलनों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, बैठकों आदि का आयोजन करके महिलाओं में जागरूकता बढ़ाने और उन्हें एकजुट करने के कार्य में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इसी प्रकार के आयोग राज्य स्तर पर भी स्थापित किए जा रहे हैं। महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा और केरल राज्यों ने आयोगों की स्थापना कर ली है।

1.38 हाल ही में, एक राष्ट्रीय महिला कोष की स्थापना की गई है। जैसी कि परिकल्पना की गई है इस कोष का उद्देश्य ऐसी सर्वाधिक निर्धन और परिसम्पत्ति-विहीन महिलाओं की जरूरतों को पूरा करना है, जिन्हें ऋण की आवश्यकता है, किन्तु जिनकी पहुंच औपचारिक बैंकिंग अथवा ऋण-प्रणाली तक नहीं है। इससे अनौपचारिक क्षेत्र में महिलाओं के लिए ऋण संबंधी सेवाओं का एक राष्ट्रीय नेटवर्क विकसित करने में मदद मिलेगी और इससे महिलाओं के स्वरोजगार प्रयासों को बढ़ावा मिलने की संभावना है।

1.39 महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार करके उन्हें शक्ति सम्पन्न बनाने के लिए की गई एक अन्य पहल है—2 अक्टूबर, 1993 को प्रारंभ की गई महिला समृद्धि योजना। महिला समृद्धि योजना का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं में बचत की आदत को बढ़ावा देना और उनकी वित्तीय परिसम्पत्तियों में सुधार लाना है। इससे वास्तव में महिलाओं को अपने घरेलू संसाधनों पर अधिक नियंत्रण रख सकने का एक अवसर प्राप्त होगा। महिला समृद्धि योजना के अर्न्तगत यदि कोई ग्रामीण महिला एक वर्ष की लॉक-इन अवधि के लिए 300 रु० तक जमा करती है, तो उसे जमा राशि पर सरकार की ओर से 25 प्रतिशत प्रोत्साहन राशि प्राप्त होगी। यह योजना पूरे देश में ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक बेहतरी के लिए शुरू की गई नई प्रायोगिक परियोजनाओं में से एक है।

1.40 वर्ष 1990 के दशक के दौरान, कार्यनीति यह सुनिश्चित करने की होगी कि विभिन्न क्षेत्रों से मिलने वाले विकास के लाभों से महिलाएं वंचित न रहें और सामान्य विकासीय कार्यक्रमों के पूरक के रूप में ऐसे विशेष कार्यक्रम कार्यान्वित किए जाएं, जिनमें लिंग-संचेतना पर अधिक बल हो। शिक्षा, स्वास्थ्य, तथा रोजगार के तीन क्रोड क्षेत्रों में महिलाओं को मिलने वाले लाभों पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है, क्योंकि महिलाओं को विकास की मुख्य धारा में शामिल करने के लिए ये क्षेत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

1.41 राष्ट्रीय बाल कार्य योजना (1992) और राष्ट्रीय बालिका कार्य योजना (1991-2000) तैयार कर ली गई है। ये दो कार्य योजनाएं बच्चों की "उत्तरजीविता", "संरक्षण" और "विकास" सुनिश्चित करने के लिए समन्वित और बहु-क्षेत्रीय हैं, जिनका उद्देश्य अन्ततोगत्वा बच्चों का बेहतर भविष्य बनाना है। जबकि बालिका को बच्चों के समग्र लक्ष्य वर्ग का एक अभिन्न अंग होने के नाते सामान्य कार्य योजना से पूरा लाभ प्राप्त होने की आशा है, उसकी लिंग-विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति बालिका कार्य योजना द्वारा की जाएगी, जिसमें किशोर लड़कियों पर अधिक बल दिया जाएगा।

1.42 भारत सरकार द्वारा अगस्त, 1974 में अपनाई गई राष्ट्रीय बाल नीति में राष्ट्र के बच्चों को सर्वाधिक महत्वपूर्ण सम्पत्ति कहा गया है। तदनुसार, यह विभाग समन्वित बाल विकास सेवाओं का एक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम कार्यान्वित कर रहा है, जिनमें अत्यधिक पिछड़े हुए ग्रामीण क्षेत्रों, आदिवासी क्षेत्रों और शहरी गन्दी बस्तियों में रहने वाले 0-6 वर्ष की आयु-वर्ग के बच्चों और गर्भवती तथा शिशुवती माताओं की मूल आवश्यकताओं की पूर्ति सुनिश्चित की जाती है। समन्वित बाल विकास सेवा के अर्न्तगत सेवाओं का एक पैकेज प्रदान किया जाता है, जिनमें स्वास्थ्य-जाँच, टीकाकरण, डॉक्टर-परामर्श सेवाएं, पूरक-पोषाहार पोषण, 3-6 वर्ष की आयु-वर्ग के बच्चों को स्कूल-पूर्व शिक्षा तथा स्वास्थ्य और महिलाओं को पोषाहार शिक्षा शामिल है। सेवाओं का यह समेकित पैकेज बच्चों के समग्र विकास के लिए संकेन्द्रित रूप में प्रदान किया जाता है। इस समय पूरे देश में कुल 3066 आई सी डी एस परियोजनाएं हैं, जिनसे 16.3 मिलियन बच्चों तथा 3.2 मिलियन माताओं को लाभ पहुंच रहा है।

1.43 नियमित आई सी डी एस कार्यक्रम के अलावा, विभाग, वर्ष 1991-92 से, अधिकांशतः आदिवासी/पिछड़े क्षेत्रों में आंध्र प्रदेश के 110 ब्लॉकों और उड़ीसा के 191 ब्लॉकों में विश्व-बैंक से सहायता प्राप्त आई सी डी एस परियोजनाएं भी कार्यान्वित कर रहा है, जिनके अर्न्तगत महिलाओं को रोजगार देने के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण, महिलाओं के लिए समेकित जीवन शिक्षा, किशोर लड़कियों के लिए सेवाएं, अत्यधिक कुपोषितों का पोषाहारीय पुनर्वास, आदि जैसी अतिरिक्त सेवाएं प्रदान की जाती हैं। हाल ही में, वर्ष 1993-94 में, विश्व बैंक से सहायता प्राप्त इसी प्रकार की आई सी डी एस परियोजनाएं बिहार और मध्य प्रदेश राज्यों के लिए स्वीकृत की गई हैं और उनका कार्यान्वयन शुरू हो गया है।

1.44 विभाग ने समेकित बाल विकास सेवा प्रणाली के माध्यम से एक नई पहल की है, जिसके अर्न्तगत अब तक उपेक्षित किशोर लड़कियों को, विशेषकर स्कूली पढ़ाई छोड़ देने वाली लड़कियों को आवश्यक सेवाएं प्रदान की जाती हैं। इन सेवाओं में स्वास्थ्य और पोषाहार देखभाल, कार्य-साधक साक्षरता और व्यावसायिक प्रशिक्षण शामिल हैं। इन सेवाओं का 507 आई० सी० डी० एस० ब्लॉकों में विस्तार किया जा रहा है। जब यह कार्यक्रम पूरी तरह लागू हो जाएगा तो इसके अर्न्तगत 11-18 वर्ष की आयु वर्ग की 4.5 लाख किशोर लड़कियां लाभान्वित होंगी।

1.45 समेकित बाल विकास सेवा कार्यक्रमों के अलावा, विभाग द्वारा बाल विकास के क्षेत्र में कार्यान्वित किये गए अन्य कार्यक्रमों में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा, बालवाड़ी पोषाहार कार्यक्रम, शिशुगृह आदि शामिल हैं, जिनके अर्न्तगत अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों तथा अन्य पिछड़े समुदायों जैसे विशेष वर्गों के बच्चों पर विशेष बल देते हुए, बच्चों की विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है।

1.46 शिशुगृहों की बढ़ती हुई मांग को ध्यान में रखते हुए एक राष्ट्रीय शिशुगृह कोष की स्थापना की गयी है। इस कोष से नये शिशुगृह केन्द्र खोलने के लिए स्वैच्छिक संगठनों को वित्तीय सहायता दी जायेगी। यह सहायता मुख्य रूप से कोष की राशि से प्राप्त ब्याज में से और कुछ सीमा तक कॉर्पोरेट निधि से दी जाएगी।

1.47 अपने देश के लोगों के लिये पर्याप्त पोषाहार सुनिश्चित करने की संवैधानिक वचनबद्धता को पूरा करने के लिए एक राष्ट्रीय पोषाहार नीति बनायी गई और कार्यान्वयन के लिए उसे अपनाया गया। चूंकि, पोषाहार एक बहु-आयामी समस्या है, इसलिए नीति में विभिन्न क्षेत्रों द्वारा बहु-आयामी कार्रवाई की परिकल्पना की गयी है। नीति में इस बात को स्वीकार किया गया है कि महिलाएं और बच्चे दोनों ही हमारे प्राथमिकता-प्राप्त वर्ग हैं जिनकी ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।



सुनहरे रंग से चित्रित बुद्ध की काष्ठ प्रतिमा - 20वीं सदी बर्मा  
Buddha, Wood, painted with gold colour - 20th Century Burma

## पुनरावलोकन (1993-94)

2.01 संस्कृति विभाग का मुख्य बल भारतीय संस्कृति का उसके समृद्ध और विविध प्रतिरूपों में प्रसार-प्रचार तथा प्रोन्नयन करना है। आशय यह है कि लोगों में सांस्कृतिक जागरूकता पैदा करके उनकी रचनात्मक शक्तियों का उपयोग विभिन्न कला रूपों की अभिव्यक्ति के लिए किया जाना चाहिए। वर्ष 1993-94 के दौरान विभाग ने पुरातत्व, अभिलेखागार, संग्रहालय, पुस्तकालय, मानव-विज्ञान, बौद्ध अध्ययन/तिब्बती अध्ययन, आदि के क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं का नेटवर्क स्थापित करके देश की समृद्ध और ऐतिहासिक सांस्कृतिक विरासत तथा परंपराओं के परिरक्षण, प्रोन्नयन तथा संवर्धन की ओर अपना ध्यान देना जारी रखा। राष्ट्रीय संस्कृति नीति भी संसद के विचारार्थ प्रस्तुत की गई है। अनुवर्ती परिच्छेदों में संस्कृति विभाग के तत्वावधान में 1993-94 के प्रमुख कार्यक्रमों का संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

### पुरातत्व

2.02 राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों/स्थलों का परिरक्षण और संरक्षण करना भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (ए०एस०आई०) के प्रमुख कार्यों में से एक है। वर्ष 1993-94 के दौरान 500 स्मारकों के संरक्षण और परिरक्षण का कार्य हाथ में लिया गया, जिनमें से व्यापक संरक्षण कार्य के लिए 250 को विशेषतः निर्धारित किया गया। वर्ष के दौरान सर्वेक्षण द्वारा शुरू किए गए संरक्षण कार्यों में से कुछ प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं: आंध्र प्रदेश में हैदराबाद के गोलकोंडा किले के स्मारक; चारमीनार, हैदराबाद, अदुरु के बौद्ध स्थल, उदयगिरी के मंदिर, आंध्र प्रदेश में वारंगल स्थित स्मारक, बिहार में नालंदा, सासाराम, एंटिचेक और कुम्राहार स्थित स्मारक, दिल्ली स्थित लाल किला, पुराना किला, कुतुबमीनार, तुगलकाबाद किला, हुमायूं का मकबरा के स्मारक; वेल्हा गोवा के स्मारक तथा गोवा स्थित औरंगजेब किला; हरियाणा में द्वारका स्थित मंदिर, पावागढ़ स्थित जामा मस्जिद, थानेसर स्थित शेख चिल्ली का मकबरा, मेहम स्थित शाहजहां की बावली; चंबा (हिमाचल प्रदेश) स्थित लक्ष्मी नारायण मंदिर, लेह के मठ, लद्दाख स्थित आलची, लामायुरू, स्तूप, शोय और लेह महल; कोचीन स्थित सेंट फ्रांसिस चर्च; कर्नाटक में बीजापुर, हंपी और बेलगांव स्थित स्मारक, खुजराहो के स्मारक, अजंता-एलौरा, औरंगाबाद की गुफाएं, दीमापुर (नागालैंड) के दीमापुर खंडहर, पुरी स्थित भगवान जगन्नाथ का मंदिर, अमृतसर (पंजाब) का रामबाग दरवाजा, राजस्थान में जैसलमेर के किले, डोंग के महल, झालावाड़ (राजस्थान) में कोल्वी स्थित गुफाएं, तमिलनाडु में मद्रास, बेल्लूर, अटूर, सलेम के किला परिसर, कांचीपुरम् के स्मारक, उत्तर प्रदेश में फतेहपुर सीकरी, आगरा किला, पश्चिम बंगाल में मुर्शिदाबाद, विष्णुपुर, कलना और गुप्तीपाड़ा के स्मारक आदि।

2.03 कंबोडिया और भारत की सरकारों के बीच हुए द्विपक्षीय करार के अनुसरण में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अंकोरवाट स्थित मंदिर परिसर पर कार्य कर रहा है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की टीम वर्षों से उन स्मारकों के परिरक्षण और संरक्षण का प्रमुख और महत्वपूर्ण कार्य कर रही है, जिसकी प्रशंसा अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त पुरातत्वविदों तथा संरक्षणविदों द्वारा की गई है।

2.04 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा गांव-गांव सर्वेक्षण के जरिए प्राचीन काल के अवशेषों की कुछ समस्योन्मुख खोज और अन्वेषण के फलस्वरूप वर्ष के दौरान देश के भिन्न-भिन्न भागों में प्रागैतिहासिक काल से लेकर मध्य काल तक के अनेक स्थलों और अवशेषों का पता लगाया गया है। खोज गए स्थलों में धौलपुरकी पार्वती और उतंगन नदी घाटी, उत्तर पूर्वी राज्यों में प्रागैतिहासिक स्थल, हरियाणा में घग्घर नदी का कुंड आदि शामिल हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने दिल्ली स्थित लालकोट में तोमर शासक अनंगपाल II द्वारा 11वीं शताब्दी के मध्य में निर्मित दिल्ली की प्रथम किलाबंद राजधानी का खुदाई करके पता लगाया है। तमिलनाडु के दक्षिण आरकोट जिले के जिंजी किला की सफाई के दौरान 16वीं शताब्दी के महल, एक सुरंग तथा सिंहासन के एक मंच का पता चला है। मामल्लापुरम तमिलनाडु में पदचिह्न अंकित सीढ़ी वाले एक वृत्ताकार ढांचे का पता लगाया गया है, जिस पर एक पंक्ति का उत्कीर्णन है, जिससे पता चलता है कि यह राजसिंहा के नाम से मशहूर प्रसिद्ध पल्लव राजा नरसिंह वर्मन III (695-722) द्वारा बनवाया गया है। लेटे हुए विष्णु की एक अन्य अखंडित मूर्ति, जिसके निर्माण काल के बारे में यह कहा जा सकता है कि इसे नर्मिणी के समय बनवाया गया था तथा एक अखंडित पूजा-स्थल का भी पता लगाया गया, जिसमें वृषभ लिंग शिव की मूर्ति विराजमान है। गुरुकुल आश्रम, नवशिष्यालय वाले सेंट अगस्टन चर्च परिसर, प्राचीन गोवा तथा पीपुल पापुलो कालेज, जिसे 1833 में धार्मिक दमन के कारण अगस्टन मतावलंबियों द्वारा खाली कर दिया गया था, को सफाई कार्य के द्वारा समुचित ढंग से अनावृत कर दिया गया है।

2.05 वर्ष के दौरान भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान की समुद्रीय पुरातत्व इकाई के साथ मिलकर गुजरात के द्वारका, पश्चिमी तट पर स्थित गोवा तथा पूर्वी तट पर स्थित पंपुहार में अंतर्राज्यीय पुरातात्विक कार्य किया।

## संग्रहालय

2.06 वर्ष के दौरान राष्ट्रीय संग्रहालय ने "मध्य एशियाई कला" पर एक विशेष प्रदर्शनी का आयोजन किया, जिसका उद्घाटन भारत में हंगरी के राजदूत द्वारा किया गया। वर्ष के दौरान राष्ट्रीय संग्रहालय में माननीय प्रधान मंत्री द्वारा राजा रवि वर्मा के चित्रों, आलेखों तथा तैलचित्रों पर एक विशेष प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। राष्ट्रीय संग्रहालय ने वर्ष के दौरान "उत्तर पूर्व के आदिवासियों की जीवन शैली" नामक एक नई वीडियो को नवीकृत तथा पुनः अभिकल्पित किया। सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत "भारतीय कांसा" नामक एक प्रदर्शनी हंगरी को भेजी गई। शिक्षा और संस्कृति पर भारत-अमरीका उप आयोग के अंतर्गत राष्ट्रीय संग्रहालय ने वर्ष के दौरान "देवता, संरक्षक और प्रेमी: उत्तरी भारत का मंदिर शिल्प" नामक प्रदर्शनी में लगाने के लिए एशिया सोसायटी गैलरी, न्यूयार्क (संयुक्त राज्य अमरीका) को पत्थर की 16 मूर्तियाँ भेजीं। भारतीय संग्रहालय संघ और राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान के सहयोग से इसने "संग्रहालयों में प्रदर्शन की आधुनिक प्रविधियाँ" नामक विषय पर 24वाँ अखिल भारतीय संग्रहालय सम्मेलन का आयोजन किया।

2.07 भारतीय संग्रहालय कलकत्ता ने "चल संग्रहालय" की शुरुआत की, जो ग्रामीण क्षेत्रों की दहलीज पर संग्रहालय के संदेश को ले जाने के लिए तैयार किया गया है। भारत सरकार और मंगोलिया गणतंत्र की सरकार के बीच हुए सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत नवंबर, 1993 में ऊलन बटोर में मंगोलियाई ललित कला संग्रहालय में बौद्ध कलावस्तुओं की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। भारतीय संग्रहालय ने "बुद्ध का मार्ग" नामक एक प्रदर्शनी का आयोजन किया, जिसमें भगवान बुद्ध के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाने वाले लगभग 60 उत्कृष्ट तथा प्रतिनिधि कला वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी के अंतर-राज्यीय विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीय संग्रहालय ने राजकीय संग्रहालय मद्रास से "भारत में रोमन पुरावशेष" नामक एक प्रदर्शनी प्राप्त की। अरिकामेदु की खुदाई से प्राप्त वस्तुओं, रोमन सोने चांदी तथा जस्ते के सिक्कों तथा रोमन जवाहरात की वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया। भारत-रोमन व्यापार तथा सांस्कृतिक संपर्कों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा भारत में रोमन कला और शिल्पों की खोज पर चर्चा करने के लिए इसने एक तीन दिवसीय सेमिनार का भी आयोजन किया। वर्ष के दौरान संग्रहालय ने पाल सैन शैली से संबंधित नटराज की 10वीं शताब्दी की एक चोल्-कांस्य की प्रतिमा तथा विष्णु की पत्थर की एक मूर्ति, अवनीन्द्रनाथ की एक चित्रकारी तथा नेटूर राज परिवार की एक सजाई गई तलवार को अपने संग्रह में जोड़ा।

2.08 सालारगंज संग्रहालय, हैदराबाद ने "कला में एशियाई हाथीदांत" विषय पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। वर्ष के दौरान इसने अरबी की पांडुलिपियों का सूचीपत्र खंड VII प्रकाशित किया। राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद्, कलकत्ता (एन०सी०एस०एम०), जो संस्कृति विभाग के अंतर्गत एक स्वायत्त संगठन है, छात्रों में खास तौर पर तथा आम जनता में आम-तौर पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने के काम में मुख्य रूप से लगा हुआ है। वर्ष के दौरान राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् की एक उल्लेखनीय उपलब्धि यह है कि इसको दिल्ली स्थित राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र में "सूचना क्रांति" नामक लगाए गए अपने प्रदर्श के लिए प्रौद्योगिकी इतिहास सोसायटी (सोसायटी फॉर दी हिस्ट्री ऑफ टेक्नोलॉजी) संयुक्त राज्य अमरीका से वर्ष 1993 का वांछित "डिबनेर एवार्ड" प्राप्त हुआ। राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद्, कलकत्ता में एक "विज्ञान नगर" निर्मित करने के लिए कदम उठा रही है, जो कि कलकत्ता के निवासियों तथा महानगर में आने वाले अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों के लिए आकर्षण का प्रमुख केन्द्र होगा। इनके अतिरिक्त, राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् ने "टर्न की" आधार पर मारीशस में राजीव गांधी विज्ञान केन्द्र नामक एक पूर्ण विज्ञान केन्द्र विकसित करने के लिए परियोजना प्रस्ताव

तैयार किया। राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् ने वर्ष के दौरान ब्रिस्बेन, आस्ट्रेलिया स्थित क्रीन्सलैंड संग्रहालय के नए विज्ञान केन्द्र के लिए भौतिक विज्ञान पर भागीदारी वाले 30 प्रदर्शनों की आपूर्ति की। केन्द्रीय अनुसंधान और प्रशिक्षण प्रयोगशाला में इन सभी प्रदर्शनों की अवधारणा तैयार करके इन्हें विकसित किया गया है, जोकि राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् का विचार कोष है।

2.09 इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद ने 25 जुलाई से 8 अगस्त, 1993 के बीच एक पखवाड़े की पेंटिंग कार्यशाला का आयोजन किया, जिसे इतनी लोकप्रियता मिली कि यह 2 माह तक चलती रही। इसने इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा उत्तर मध्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र के संयुक्त सौजन्य से चित्रकारी "कृति 1993" नामक एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया। वर्ष के दौरान संग्रहालय द्वारा "स्मरण एवं श्रद्धांजलि पर्व (प्रयाग के साहित्यिक सर्जकों के संदर्भ में)" नामक एक सेमिनार का भी आयोजन किया गया।

2.10 नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली ने (i) चीनी लोक शांति और निरस्तरीकरण संघ के चीनी शिष्टमंडल के साथ शांति और निरस्तरीकरण तथा (ii) भारतीय राष्ट्रीयता और भारतीय एकता के लिए आज की चुनौतियाँ विषयों पर दो चर्चाओं का आयोजन किया। महान इतालवी राजनीतिक विचारक गाम्बोनी की जन्म शताब्दी के अवसर पर राज्य विचारधारा और सभ्य समाज (स्टेट आडयोलॉजी एंड सिविल सोसायटी) पर एक तीन-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। आधुनिक भारतीय इतिहास और सामाजिक विज्ञानों पर ध्यान केंद्रित करने वाले इस पुस्तकालय ने 1993-94 के दौरान अपने संग्रह में वृद्धि करना तथा अपनी सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार करना जारी रखा। सितंबर, 1993 तक इसके मौजूदा स्टॉक में दो हजार चार सौ से ज्यादा पुस्तकें जोड़ी गईं। इसी अवधि में रिकॉर्ड के लिए तथा अध्येताओं और अन्य संस्थाओं को आपूर्ति करने के लिए लगभग 13,115 मीटर पॉजिटिव माइक्रोफिल्म, पुराने फोटोग्राफों के 1044 नेगेटिव, 1064 फोटोग्राफ, माइक्रोफार्म के लिए 14,902 टोस प्रतियाँ, 1,29,476 जीरॉक्स प्रतियाँ तैयार की गईं।

## मानव विज्ञान

2.11 भारतीय मानव-विज्ञान सर्वेक्षण विभाग, कलकत्ता एक वैज्ञानिक अनुसंधान संगठन है, इसके अनुसंधानों में समकालीन मानवविज्ञानी विषयों पर बल दिया जाता है। वर्ष के दौरान सर्वेक्षण ने "पीपुल ऑफ इंडिया" नामक रिपोर्ट को प्रकाशित करने के लिए कदम उठाया। इस परियोजना के तहत सृजित सभी प्रकार की सूचना से 43 खंड तैयार हुए हैं, जिनमें से 11 राष्ट्रीय तथा 32 राज्य श्रृंखलाएं हैं। चार खंड पहले ही प्रकाशित हो चुके हैं तथा शेष 39 खंडों के प्रकाशन का कार्य विभिन्न चरणों में है। खंड (i) भारत में आदिवासी और लोक परंपरा में राम कथा, (ii) आदिवासी और लोक परंपराओं में महाभारत, (iii) आदिवासी नृ-विज्ञान, प्रथागत कानून और परिवर्तन तथा (iv) कमजोर वर्गों को मानव-विज्ञान नामक खंडों के संपादन का कार्य पूरा कर लिया गया है तथा इनके प्रकाशन की व्यवस्था कर ली गई है। महाभारत से संबंधित खंड को छोड़कर सभी खंड प्रकाशित हो चुके हैं तथा महाभारत से संबंधित खंड के शीघ्र प्रकाशित हो जाने की संभावना है। सर्वेक्षण का "भारतीय स्थान नाम सोसायटी, मैसूर" के सहयोग से स्थानों के नाम तथा व्यक्तिगत नामों के मानव विज्ञानी अध्ययन पर एक परियोजना तथा भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर स्थित पारिस्थितिकी विज्ञान केन्द्र के सहयोग से "पारिस्थितिकी विज्ञान" पर एक अन्य परियोजना शुरू करने का प्रस्ताव है।

2.12 इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल एक स्वायत्त संगठन है, जो समय और स्थान के संदर्भ में मानव जाति के इतिहास के प्रति समर्पित है। 1993-94 के दौरान इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय ने मध्य प्रदेश की भील जाति तथा कार्बी जाति के आवास तथा असम के जेमी नागा जाति के आवास नामक दो नए प्रदर्शनों को जोड़कर "आदिवासी आवास" नामक अपनी खुली प्रदर्शनी में और विकास किया। यायावर शिकारी जनजाति के आवास परिसर का भी निर्माण किया गया। वर्ष के दौरान "आदिवासी तथा सदृश लोग" पर एक अंतरराष्ट्रीय विचार गोष्ठी आयोजित की जानी है। "इंटरनल वॉयज" नामक आयोजन में सृजनात्मक कलाओं पर एक प्रदर्शनी, संगोष्ठी, समूह चर्चा, सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति आदि शामिल होंगे। संपूर्ण भारत से भाग लेने वाले प्रतियोगियों के अलावा, लगभग 20 विदेशी राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लेने की पुष्टि की है। लगभग एक दर्जन देशों द्वारा प्रदर्शनी भी भेजे जा रहे हैं। संग्रहालय ने मिट्टी के बर्तन तथा टेराकोटा की जीवंत परंपरा पर "पड़ाव" नामक एक कार्यक्रम का भी आयोजन किया, जिसमें कुम्भकार समागम, एक कार्यशाला तथा एक संगोष्ठी को शामिल किया गया था। उक्त कार्यक्रम में भारत के भिन्न-भिन्न भागों के 40 से भी अधिक कुम्भकारों ने भाग लेकर अपनी परंपरागत तकनीकों का प्रदर्शन किया। परंपरा के पहलुओं की जीवंत प्रस्तुति के कार्यक्रम में इस वर्ष संग्रहालय ने "पूनम" कार्यक्रम की श्रृंखला में संगीत गोष्ठी का आयोजन किया, जिसकी विशेषता यह है कि बांसुरी वादक, पं० हरि प्रसाद चौरसिया ने बांसुरी बजाई, श्रीमती सुभा मुद्गल ने गायन किया आदि। संग्रहालय के परिसर में दो नाटकों का भी मंचन किया गया, जिनमें श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा लिखित नाटक को "जगर मगर अंधेर" के रूप में तथा राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित उपन्यास "बोल्गा से गंगा" को नाट्य रूप में मंचित किया गया। संग्रहालय ने वर्ष के दौरान "दृश्य मानव-विज्ञान में लोगों का परिप्रेक्ष्य" पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। इस संगोष्ठी में 40 से भी अधिक मानव-विज्ञानी अध्येताओं तथा सिनेमा निर्माताओं ने भाग लिया, जिन्होंने आदिवासी और ग्रामीण लोगों पर वृत्तचित्र बनाए थे। आदिवासियों की सांस्कृतिक विरासत पर वर्ष के दौरान ऊटी, शिलांग, गुवाहाटी, वर्दवान, भुवनेश्वर, गनगाद तथा अन्य स्थानों पर शैक्षिक सभाओं का आयोजन किया गया।

## अभिलेखागार

2.13 भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार (एन० ए० आई) ने, जो भारत सरकार के स्थाई महत्व के गैर- अद्यतन रिकार्डों का अभिरक्षक है, इतिहास प्रभाग, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार से प्राप्त द्वितीय विश्व युद्ध के भारतीय राज्य बलों से संबंधित 85 संग्राम डायरियों सहित निजी तथा सार्वजनिक रिकार्डों, रिकार्डों की माइक्रोफिल्म प्रतियों का अधिग्रहण करके अपने संग्रह को और अधिक समृद्ध बनाया। वर्ष के दौरान, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार ने गृह मंत्रालय की 11,206 मिसिलें (1948-63), राष्ट्रपति सचिवालय की 17 मिसिलें (1894-1911), डा० सैयद महमूद और कुमारी कैथरीन मेयो, आदि द्वारा लिखित निजी कागजात प्राप्त किए। सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत फ्रांसीसी राष्ट्रीय अभिलेखागार से भारत में फ्रांस के इतिहास से संबंधित फ्रांसीसी भाषा में चालीस माइक्रोफिल्म रोल्स (1884-1952) प्राप्त किए। पंजाब तथा राजस्थान राज्यों से संबंधित "पंडा रिकार्ड" के दस माइक्रोफिल्म रोल्स जीनिवोर्गो जेकबल सोसायटी ऑफ उटा (यू० एस० ए०) से उपहार के रूप में प्राप्त किए गये।

2.14 एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता ने वर्ष के दौरान, "भारत विद्या (इंडोलोजी)" नामक परियोजना में काफी प्रगति की। इस परियोजना का प्रथम चरण "प्रकृति और सौंदर्य के संबंध में भारत की अनुभूति" पूरा कर लिया गया है। "चिकित्सा शास्त्र इतिहास" संबंधी परियोजना में मध्यकालीन भारत की औषधियों की जांच-पड़ताल पूरी कर ली गई। "भोटिया (भारत-तिब्बती) हिमालय के निवासी, उनकी पहचान तथा मुख्य धारा के साथ उनका एकीकरण" विषय पर जांच पड़ताल संबंधी 'तिब्बती अध्ययन' नामक परियोजना के कार्य में काफी प्रगति हुई है। सोसायटी ने वर्ष के दौरान "इन साइक्लोपीडिया एशियाटिका" तैयार करने के लिए एक महत्वपूर्ण परियोजना शुरू की है। यह बहुखंडीय परियोजना होगी, जिसका मुख्य उद्देश्य आज तक के एशिया के देशों तथा लोगों के इतिहास और संस्कृति के विकास का क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत करना होगा।

## पुस्तकालय

2.15 राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता देश का सबसे बड़ा पुस्तकालय तथा पुस्तक वितरण अधिनियम, 1954 के प्रावधानों के अंतर्गत पुस्तक प्राप्त करने वाले पुस्तकालयों में से एक है तथा यह भारतीय मुद्रित सांस्कृतिक विरासत का सबसे प्रमुख भंडार है। पुस्तकालय अपने वाचनालयों तथा परिदाय अनुभाग के माध्यम से पाठक सेवाएं प्रदान करता है। पुस्तकालय सामग्री के संरक्षण के लिए पुस्तकालय के पास एक सतत रूप से चलने वाला कार्यक्रम है। "माइक्रोफिलिंग" कार्यक्रम के अंतर्गत पुस्तकालय दुर्लभ तथा अप्राप्य प्रकाशनों की माइक्रोफिल्म तैयार करके उनकी विषय-वस्तुओं को भावी पीढ़ी के लिए परिरक्षित करता है। वर्ष के दौरान पुस्तकालय के आधुनिकीकरण योजना के अंतर्गत पुस्तकालय ने अंतर्राष्ट्रीय यूनीमार्क के प्रारूप पर अंग्रेजी भाषा के विनिबंधों के सूचीकरण का कार्य प्रारंभ किया तथा इसके अंतर्गत स्वचालित पत्रिका नियंत्रण भी शुरू किया गया।

2.16 दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की सरकार से प्राप्त प्रस्ताव के आधार पर पंजाबी अकादेमी के अंतर्गत चलाए जा रहे 58 से भी अधिक संयुक्त पुस्तकालयों को अपने अधिकार में ले लिया है। तिहाड़ जेल के महा जेल निरीक्षक के अनुरोध पर दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने केंद्रीय जेल, तिहाड़ के परिसर में एक उप शाखा/पुस्तकालय- एवं-वाचनालय एवं पूर्ति केन्द्र स्थापित करने का निर्णय लिया है।

2.17 खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी के पास अन्य संग्रहों में उपलब्ध दुर्लभ पांडुलिपियों की प्रतियों का अधिग्रहण करने की योजना है। अभी तक, अलीगढ़, रामपुर, भागलपुर, मानेर, फुलवारी शरीफ, आसफ़िया (हैदराबाद) और एशियाटिक सोसायटी (कलकत्ता) के संग्रहों को इसमें शामिल किया जा चुका है। भारत-कार्यालय एवं कैम्ब्रिज के ब्रिटिश संग्रह से भी दुर्लभ चुनिदा पांडुलिपियों का अधिग्रहण कर लिया गया है। पुस्तकालय ने सितंबर, 1993 के अंत तक 24 पांडुलिपियों एवं 876 मुद्रित पुस्तकों का अधिग्रहण कर लिया था। पुस्तकालय द्वारा इस वर्ष के अंत तक कम से कम 100 पांडुलिपियों को अधिग्रहीत करने के अपने लक्ष्य को पूरा करने की योजना है। पुस्तकालय ने सितंबर, 1993 के अंत तक लगभग 800 मुद्रित पुस्तकों की मरम्मत व जिल्दसाजी करने के अतिरिक्त, लगभग 100 पांडुलिपियों को पटलित (लैमिनेट) भी कर लिया था।

2.18 राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान, कलकत्ता एक स्वायत्त निकाय है, जो कि पुस्तकालय सेवाओं को प्रोत्साहन देने के कार्य में लगा है। इस वर्ष के दौरान, पुस्तकालय ने अपनी स्थापना के दो दशक पूरे हो जाने के उपलक्ष्य में भारतीय पुस्तकालय आंदोलन पर एक सेमिनार तथा राजा राममोहन राय स्मारक व्याख्यान का आयोजन किया।

## अकादेमियां और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

2.19 आलोच्य वर्ष के दौरान, संगीत, नृत्य नाटक की राष्ट्रीय अकादेमी, संगीत नाटक अकादेमी ने केरल सरकार के संस्कृति विभाग के सहयोग से त्रिवेन्द्रम में नृत्योत्सव का आयोजन किया। नृत्योत्सव में देश के विभिन्न भागों के भारतीय शास्त्रीय नृत्य की संपूर्ण श्रृंखला के चुनिंदा नर्तकों का प्रदर्शन देखने को मिला। अकादेमी ने “कथकली महोत्सव” नामक एक कार्यक्रम का भी आयोजन किया, जिसमें केरल के पारंपरिक नृत्य थिएटर कथकली पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया। इस कार्यक्रम में सांयकालीन प्रदर्शन और दिन के समय में व्याख्यान-एवं-प्रस्तुतियों का आयोजन शामिल था, जिनमें लगभग सभी मौजूदा सम्माननीय गुरुओं और प्रमुख प्रदर्शकों ने भाग लिया। संगीत नाटक अकादेमी, ब्रिटिश उच्चायोग के ब्रिटिश काउंसिल डिवीजन और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् द्वारा संयुक्त रूप से ब्रिटिश काउंसिल के प्रेक्षागृह में एक ताल-वादन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में ब्रिटेन की सुप्रसिद्ध ताल-वादक, सुश्री एवलिन ग्लेनी तथा सुविख्यात भारतीय ताल-वादकों, टी० एच० विनायक राम, गोविंद चक्रवर्ती आदि को साथ-साथ एक ही मंच पर ताल वादन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। युवा निर्देशकों द्वारा प्रायोगिक थिएटर को समर्थन दिए जाने को ध्यान में रखते हुए, अकादेमी अपने चार वार्षिक क्षेत्रीय थिएटर उत्सवों पर मंचित की जाने वाली प्रस्तुतियों के लिए आर्थिक सहायता तथा राष्ट्रीय थिएटर उत्सव के लिए चुने गए नाटकों के लिए और आगे वित्तीय सहायता प्रदान करती है। आलोच्य वर्ष के दौरान, उत्तर क्षेत्रोत्सव चंडीगढ़ में, पश्चिम क्षेत्रोत्सव पणजी में, पूर्व क्षेत्रोत्सव जमशेदपुर में आयोजित किया गया और दक्षिण क्षेत्रोत्सव मदुरै में होना तय हुआ है। अकादेमी द्वारा युवा नाट्य समारोह आयोजित किए जाने की योजना है, जिसमें चार क्षेत्रोत्सवों में मंचित किए गए चुनिंदा नाटकों को प्रदर्शित किया जाएगा।

2.20 ललित कला अकादेमी, जो कि राष्ट्रीय कला अकादेमी है, दृश्य व रूपकर कलाओं के विकास को प्रोत्साहित व समन्वित करती है। आलोच्य वर्ष के दौरान, अकादेमी ने फ्रांसीसी दूतावास के सहयोग से चित्रकलाओं, मूर्तिकलाओं तथा प्रिंटों की एक प्रदर्शनी आयोजित की, जिसमें 40 से अधिक भारतीय कलाकारों ने भाग लिया। अकादेमी ने ढाका, बांग्लादेश में आयोजित छठी एशियाई कला द्विवार्षिकी में भाग लिया। अकादेमी सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत चीन में समकालीन चित्रकलाओं की एक प्रदर्शनी आयोजित करने के लिए कदम उठा रही है। अकादेमी द्वारा फरवरी/मार्च, 1994 के दौरान चार सप्ताह की अवधि के लिए 8वीं त्रैवार्षिकी-भारत का आयोजन करने की योजना है और इसमें भाग लेने के लिए 97 देशों को निमंत्रण-पत्र भेजे जा चुके हैं। त्रैवार्षिकी-भारत प्रदर्शनी के एक अंग के रूप में अकादेमी द्वारा एक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार और एक अंतर्राष्ट्रीय शिविर आयोजित करने की योजना है। अकादेमी द्वारा फरवरी, 1994 के दौरान नई दिल्ली में 7वां राष्ट्रीय कला मेला आयोजित करने की योजना है। मेले की विषय-वस्तु है—“एक देश के लोगों की सृजनात्मक प्रतिभा को हर संभव तरीके से प्रदर्शित करना”।

2.21 साहित्य अकादेमी एक शीर्षस्थ राष्ट्रीय निष्पक्ष है, जो साहित्य की प्रोन्नति के प्रति कृत संकल्प है। अकादेमी के प्रमुख कार्यक्रम हैं—22 भाषाओं में वार्षिक पुरस्कार प्रदान करना, सेमिनारों, साहित्यिक सम्मेलनों व कार्यशालाओं आदि का आयोजन करना आदि। कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में, अकादेमी सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के अंतर्गत पारस्परिक आधार पर लेखकों के मेल-मिलाप या पुरातन-साहित्य का अनुवाद करने से संबंधित उपबंधों को निष्पादित करती आ रही है। वर्ष 1993-94 के दौरान अकादेमी ने लेखकों को 21 पुरस्कार और अनुवादकों को 16 अनुवाद पुरस्कार प्रदान किए, 140 पुस्तकें प्रकाशित कीं तथा 29 पुस्तक-प्रदर्शनियां लगाईं। इनके अतिरिक्त, अकादेमी ने 6 सेमिनारों, 27 साहित्यिक मंच बैठकें, 5 “लेखक से मिलिए” बैठकें तथा 3 कार्यशालाएं भी आयोजित कीं। अकादेमी द्वारा शेष वर्ष के दौरान “पांच दशकों में मराठी काव्य” नामक एक सेमिनार और “अफ्रीकी एशियाई लेखन” नामक विषय पर भी एक सेमिनार आयोजित करने की योजना है।

2.22 आलोच्य वर्ष के दौरान राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की रंगमंडली कंपनी ने लखनऊ में “मुआवजे” का प्रदर्शन किया। इसने साहित्य कला परिषद् द्वारा आयोजित 1992 के सर्वोत्तम नाटकों के उत्सव में भी भाग लिया और “आधे अधूरे” नामक नाटक का मंचन किया। कंपनी ने मई-जून 1993 के माह में ग्रीष्मकालीन नाटकोत्सव का आयोजन किया, जिसमें “घासीराम कोतवाल”, “आधे-अधूरे” आदि जैसे प्रसिद्ध नाटकों का मंचन किया गया। विस्तार कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालय ने देश के विभिन्न भागों में थियेटर कर्मियों के लाभ के लिए कई थिएटर कार्यशालाएं आयोजित कीं। वर्तमान वर्ष में ये कार्यशालाएं बीजापुर, नैनीताल, जम्मू, बंगलौर तथा कई अन्य स्थानों पर आयोजित की गईं। थिएटर की तकनीकों पर एक माह की अवधि की कार्यशाला दिल्ली में आयोजित की गई। “रंग यात्रा” नामक प्रदर्शनी शुरू कर दी गई है तथा यह बड़ी तादाद में दर्शकों को आकर्षित कर रही है। 10,000 से अधिक लोग इस प्रदर्शनी को देख चुके हैं। विद्यालय इस प्रदर्शनी को उदयपुर, जयपुर, चंडीगढ़ और अमृतसर ले जाने की योजना बना रहा है।

## संस्कृति की प्रोन्नति और प्रचार-प्रसार

2.23 संस्कृति विभाग कला एवं संस्कृति की प्रोन्नति, परिरक्षण और प्रचार-प्रसार के लिए कई योजनाएं कार्यान्वित करता आ रहा है। जनजातीय/लोक कला और संस्कृति की प्रोन्नति व प्रचार-प्रसार तथा हिमालय की सांस्कृतिक धरोहर के परिरक्षण और विकास से संबंधित योजनाओं के अंतर्गत विभाग स्वैच्छिक सांस्कृतिक संगठनों को अनुदान/आर्थिक सहायता प्रदान करता है।



2.24 सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र संस्कृति विभाग के अधीन एक स्वायत्त निकाय है। यह हमारा सांस्कृतिक धरोहर के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा अन्य कार्यक्रमों का संचालन करता है। प्राथमिक, माध्यमिक और हाई स्कूल शिक्षकों के लिए केन्द्रीय स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम इस प्रकार है: प्रशिक्षित शिक्षकों के लिए प्रबोधन कार्यक्रम व पुनर्शिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएं, "शिक्षा के संदर्भ में कठपुतली कला पर पाठ्यक्रम और सेमिनार"। प्रशिक्षण कार्यक्रम सेवाकालीन शिक्षकों, प्रशिक्षकों, प्रशासकों और छात्रों के लिए आयोजित किये जाते हैं। 1993-94 के दौरान, अभी तक केन्द्र ने चार प्रबोधन पाठ्यक्रमों का आयोजन किया है, जिनमें लगभग 300 शिक्षकों ने भाग लिया। केन्द्र ने मद्रास और दिल्ली में "संग्रहालय और स्कूलों" पर बंबई में "सृजनात्मक नाट्य कला" पर और कांचीपुरम में "सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन" पर एक-एक कार्यशाला का आयोजन किया है। केन्द्र ने नई दिल्ली में शिक्षा के संदर्भ में कठपुतली कला पर भी पाठ्यक्रम आयोजित किये, जिनमें लगभग 350 शिक्षकों ने भाग लिया। केन्द्र को विश्व सांस्कृतिक विकास दिवस को मनाने के लिए प्रमुख एजेंसी के रूप में नामित किया गया। इस दिवस के उपलक्ष्य में केन्द्र ने देश के विभिन्न भागों में निबंध व चित्रकला स्पर्धाएं तथा संगीत नृत्य और थिएटर समारोहों का आयोजन किया। आलोच्य वर्ष के दौरान, सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने "कांचीपुरम मंदिरों का शहर" नामक विषय पर एक दृश्य-श्रव्य शैक्षिक मॉड्यूल तैयार किया। दृश्य-श्रव्य मॉड्यूल की 200 प्रतियां तैयार की गई, जिनमें से 75 प्रतियां वितरित कर दी गई हैं। आलोच्यवर्ष के दौरान, सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने 600 सांस्कृतिक किट तैयार कीं, जिनमें से 217 किटें उन संस्थाओं को वितरित कर दी गईं, जिनके शिक्षकों ने सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त किया। केन्द्र ने "एशिया और प्रशांत के लोक नृत्य" नामक विषय पर एक सांस्कृतिक किट भी तैयार की, जिसकी 200 प्रतियां तैयार की गईं, जिनमें से 43 प्रतियां देश भर के चुनिंदा स्कूलों में वितरित कर दी गईं।

2.25 देश में नवंबर, 1985 और दिसंबर, 1987 की अवधि में प्रारंभ किए गए 7 क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, पिछले वर्षों के दौरान, लोक एवं जनजातीय संस्कृति को प्रोत्साहित एवं प्रचारित-प्रसारित करने वाली प्रमुख क्षेत्रीय संस्थाओं के रूप में उभरकर सामने आए हैं। क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्रों के लक्ष्यों में देश के ग्रामीण एवं उपेक्षित क्षेत्रों में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रोत्साहन दिया जाना शामिल है। वर्ष 1993-94 के दौरान, पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, शांति निकेतन ने 20 कार्यक्रमों का आयोजन किया, जिनमें जनजातीय, लोक, पारम्परिक एवं शास्त्रीय संगीत व नृत्य कार्यक्रम शामिल थे। मई-जून, 1993 में सर्वोत्कृष्ट पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को देश के विभिन्न स्थानों पर "अपनी मातृभूमि को जाने" नामक कार्यक्रम के अंतर्गत सैर-सपाटे के लिए ले जाया गया। केन्द्र ने महान चित्रकारों, मूर्तिकारों आदि की कलाकृतियों की एक प्रदर्शनी भी दिल्ली में आयोजित की। पूर्वी क्षेत्र के कवि सम्मेलन का आयोजन गंगटोक में किया गया। दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, तंजावुर ने तंजाई नृत्योत्सव का आयोजन तंजावुर में किया। केन्द्र ने मद्रास में कला मेला तथा एर्णाकुलम में भारतोत्सव का भी आयोजन किया। पश्चिम क्षेत्र, सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर ने मुखौटे और मिट्टी के बर्तन बनाने के संबंध में शिल्प कार्यशाला का आयोजन किया। संगीत नाटक अकादमी के सहयोग से पणजी में एक नाट्य समारोह (थिएटर फेस्टिवल) का भी आयोजन किया। केन्द्र ने जयपुर और गोवा में लघु चित्रकलाओं पर एक व्याख्यान-एवं-प्रदर्शन का भी आयोजन किया। उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद ने बाल प्रस्तुति पर एक थिएटर कार्यशाला का आयोजन करने के अतिरिक्त, इलाहाबाद में गजल और कव्वाली समारोह में भी भाग लिया। उत्तर-पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, दीमापुर ने दीमापुर में आयोजित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 'रिजिगडे' नामक समारोह में और डिब्रूगढ़ के नाट्योत्सव में भाग लिया। उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, पटियाला ने भटिंडा में एक राष्ट्र स्तरीय लोक नृत्योत्सव और चंडीगढ़ में एक राष्ट्र स्तरीय शिल्प मेला का आयोजन किया। केन्द्र ने आगरा में आयोजित किए गए ताज महोत्सव में भी भाग लिया। दक्षिण-मध्य सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर ने भटिंडा और बंगलौर में लोक नृत्योत्सव का आयोजन करने के साथ-साथ ऊटी में शिल्प मेला और सिरसा में सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया।

## स्मारक

2.26 गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति संस्कृति विभाग के अधीन एक स्वायत्त संगठन है। इसका मुख्य उद्देश्य महात्मा गांधी के जीवन लक्ष्य और विचारों का प्रचार-प्रसार करना है। आलोच्य वर्ष के दौरान समिति ने महात्मा गांधी की 125वीं वर्षगांठ के अवसर पर राष्ट्रपिता को यवनिका-उत्थापक के रूप में संगीतमय श्रद्धांजलि अर्पित की। दिल्ली में आयोजित संगीतात्मक कार्यक्रम में गांधीजी पर विभिन्न रचयिताओं द्वारा रचित गीत शामिल किए गए थे। 15-17 मई, 1993 के दौरान "भारत लेखक संघ" के राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन लोक सभा के माननीय अध्यक्ष द्वारा किया गया। इसमें 300 प्रसिद्ध लेखकों तथा बुद्धिजीवियों ने भाग लिया, जिन्होंने गांधीवादी दर्शन शास्त्र और विचारधारा के प्रकाश में देश की मौजूदा स्थिति पर चर्चा की।

## भारत महोत्सव

2.27 वर्ष 1993 के दौरान "रिटर्न स्वीडिश मैनिफेस्टेशन" के अंतर्गत "कामकाजी माहौल" और "बाल क्रीड़ा अधिकार" नामक विषय पर दो सेमिनार आयोजित किए गए। दि स्वीडिश इन्स्टीट्यूट स्वेकहोम के सहयोग से गांधी श्रम संस्थान द्वारा अप्रैल में अहमदाबाद में

और एस० एन०डी०टी० विश्वविद्यालय द्वारा जून में पुणे में विचार गोष्ठियां भी आयोजित की गईं। चीन में भारत महोत्सव छः सप्ताह की अवधि के लिए 9 मई, 1994 से प्रारंभ किया जायेगा। इस संबंध में तैयारियां की जा रही हैं।

## इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

2.28 इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में पाँच मुख्य प्रभाग हैं। : अर्थात् (1) कला निधि, (2) कला कोश, (3) जनपद संपदा, (4) कला दर्शन और (5) सूत्रधार। वर्ष 1993-94 के दौरान कला निधि प्रभाग के संदर्भ पुस्तकालय के संग्रह में प्रख्यात लेखकों की 2750 चुनिंदा कृतियां जोड़ी गईं। विदेशी संग्रह से दुर्लभ भारतीय पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्मों के 117 रोल और मास्को, बर्लिन इत्यादि जैसे स्थानों से 13000 माइक्रो-फिश्न जोड़ी गईं। कला कोश प्रभाग के अंतर्गत मात्रलक्षणम्, श्री हस्तमुक्तावली इत्यादि जैसी समालोचनात्मक ढंग से संपादित 11 पाठ्य पुस्तकें मुद्रित तथा प्रकाशित की गई हैं। जनपद संपदा प्रभाग ने “उत्तर कन्नड़ के पवित्र उपवन और पवित्र वृक्ष”; “मनुष्य, जानवर और प्रकृति के बीच सहजीवी संबंध” और अनेक अन्य प्रासंगिक विषयों की परियोजनाओं के संबंध में अपनी रिपोर्ट पूरी कर ली हैं। “सांस्कृतिक तादात्म्य और विकास के अन्तरापृष्ठ” से संबंधित एक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार यूनेस्को के तत्वावधान में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा आयोजित किया गया। यह ‘शैल कला पर विश्व विशेषज्ञ सम्मेलन’ पर एक अंतर्राष्ट्रीय बैठक आयोजित करने की योजना तैयार कर रहा है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के मनुष्य, पर्यावरण और कलाओं के फोकस-कार्यक्रम के एक अंग के रूप में “मनुष्य-प्रकृति, एकीकृत दृष्टिकोण” पर बहु-विषयक सेमिनारों की एक श्रृंखला आयोजित की गई थी। कला दर्शन प्रभाग ने “प्रकृति-तत्वों के साथ सामंजस्य में मनुष्य” नामक शीर्षक से एक प्रदर्शनी आयोजित की। “सूचना 2000” नामक परियोजना के अंतर्गत एक कार्यक्रम के रूप में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, भारतीय अमरीकी शिक्षा एवं संस्कृति उप-आयोग द्वारा संयुक्त रूप से “दिमाग का भविष्य-भविष्य का दिमाग” नामक एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।



## संगठन

3.01 संस्कृति विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय के चार विभागों में से एक विभाग है। यह विभाग भारत सरकार (कार्य आवंटन) नियमावली, 1961 में 174 वें संशोधन के द्वारा वर्ष 1985 में स्थापित किया गया था।

3.02 यह विभाग मानव संसाधन विकास मंत्री के समग्र प्रभार में है। इस विभाग के सचिवालय के अध्यक्ष सचिव महोदय हैं, जिनकी सहायता के लिए दो संयुक्त सचिव हैं। भारत महोत्सव कक्ष, जिसका पृथक अस्तित्व था, अब विभाग में ही शामिल कर दिया गया है। संस्कृति विभाग का ब्यौरे-वार स्वरूप परिशिष्ट-1 में दिए गए संगठनात्मक चार्ट में दर्शाया गया है।

3.03 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार इस विभाग के दो सम्बद्ध कार्यालय हैं। इसके 6 अधीनस्थ कार्यालय और 21 स्वायत्त संगठन हैं, जिनका पूर्ण या आंशिक वित्त पोषण इसी विभाग द्वारा ही किया जाता है। अधीनस्थ कार्यालय और स्वायत्त संगठन इस प्रकार हैं:—

### अधीनस्थ कार्यालय

1. भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, कलकत्ता
2. राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली
3. राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली
4. राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता
5. राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा संरक्षण अनुसंधानशाला, लखनऊ
6. केंद्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कलकत्ता

### स्वायत्त संगठन

1. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल
2. राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, कलकत्ता
3. नेहरु स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली
4. संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली

5. साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
6. ललित कला अकादेमी, नई दिल्ली
7. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली
8. सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली
9. गांधी स्मृति और दर्शन समिति, नई दिल्ली
10. इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद
11. दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, दिल्ली
12. राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान, कलकत्ता
13. केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, वाराणसी
14. केंद्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह (लद्दाख)
15. विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, कलकत्ता
16. भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता
17. एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता
18. सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद
19. खुदाबख्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना
20. रामपुर रजा पुस्तकालय, रामपुर
21. तंजावुर महाराजा सरफोजी सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजावुर

3.04 संस्कृति विभाग इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की देखभाल भी कर रहा है, जिसकी देखभाल पहले कला विभाग करता था, क्योंकि इसका विलय इस विभाग में कर दिया गया है।

## संवर्धन और प्रसार

3.05 संस्कृति विभाग, कला और संस्कृति के संवर्धन और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विनिर्दिष्ट प्रदर्शन, साहित्यिक और दृश्य कलाओं के संवर्धन के लिए यह सीधे ही विभिन्न योजनाएं संचालित करता है। यह विभाग अनुदानों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों आदि के माध्यम से इन क्षेत्रों में स्वेच्छिक कार्यकलापों के विकास के लिए सहायता देता है। यह परंपरागत शिल्पों और कौशलों, विशेषकर लोक कला और शिल्पों के संवर्धन और विकास के लिए भी प्रयास करता है।

## भौतिक विरासत

3.06 यह विभाग भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भारतीय मानव-विज्ञान सर्वेक्षण, राष्ट्रीय मानव संग्रहालय आदि जैसी विशिष्ट एजेंसियों के माध्यम से पुरातत्व, मानव-विज्ञान, संग्रहालयों आदि जैसी भौतिक विरासत का परिरक्षण, संरक्षण और सुरक्षण करता है। यह विभाग राष्ट्रीय महत्व के अनेक संग्रहालयों और दीर्घाओं का संचालन करता है। यह विभाग बौद्ध एवं हिमालयी अध्ययन जैसे विशिष्ट क्षेत्रों में कार्यरत संस्थाओं को बढ़ावा भी देता है।

## अभिलेखागार

3.07 यह विभाग भारत सरकार की अभिलेखीय नीति के निर्माण और केन्द्र तथा राज्यों में अभिलेखों के विकास एवं सुरक्षा से संबंधित है। विभाग यह जिम्मेदारी भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार के माध्यम से कार्यान्वित कर रहा है। यह सार्वजनिक पुस्तकालयों के विकास से संबंधित है और राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता तथा राष्ट्रीय महत्व के अन्य पुस्तकालयों का संचालन करता है।

## छात्रवृत्तियां/शिक्षावृत्तियां

3.08 कला और संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए विभाग द्वारा अनेक छात्रवृत्तियां, शिक्षावृत्तियां और अनुदान दिए जाते हैं। महत्वपूर्ण व्यक्तियों की शताब्दियों और वर्षगांठों का आयोजन किया जाता है। यह विभाग कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तियों और इतिहास के किसी विशेष भाग से संबंधित स्मारकों का रख-रखाव करता है।

## अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंध

3.09 विभाग, अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंधों से जुड़े सभी मामलों को समन्वित करता है। यह विभिन्न देशों के साथ सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों को संपन्न करने के लिए शीर्ष एजेंसी के रूप में काम करता है। यह देश में आने वाली और विदेशों को भेजी जाने वाली प्रदर्शनियों का प्रबंध करता है और कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में यूनेस्को के कार्यक्रमों में परिकल्पित कार्यक्रमों को प्रारंभ करता है।

## हिन्दी का प्रगामी प्रयोग

3.10 संस्कृति विभाग और इसके संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों एवं स्वायत्त संगठनों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का कार्य उप निदेशक (राजभाषा) द्वारा किया जाता है, जिसकी सहायता के लिए एक सहायक निदेशक (रा० भा०) और अन्य अधीनस्थ स्टाफ है। संयुक्त सचिव (प्रशासन) की अध्यक्षता में गठित विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति में विभिन्न प्रभागों/अनुभागों/एककों के अधिकारियों द्वारा प्रतिनिधित्व किया जाता है। इसकी तिमाही बैठकों में विभाग, संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालय और स्वायत्त संगठनों में हिन्दी के प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्टों पर चर्चा की गई।

3.11 आलोच्य वर्ष के दौरान 14 संबद्ध अधीनस्थ कार्यालयों और स्वायत्त संगठनों के प्रतिनिधियों को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में आमंत्रित किया गया तथा उनके कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग में पायी गई कमियों को उनके ध्यान में लाया गया। संस्कृति विभाग के अधीन विभिन्न कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग में प्रगति का मूल्यांकन करने के उद्देश्य से इस वर्ष 8 अधिकारियों का एक निरीक्षण दल गठित किया गया। आलोच्य वर्ष के दौरान, दिल्ली, भोपाल, बड़ौदा, नागपुर और औरंगाबाद स्थित 11 कार्यालयों का निरीक्षण किया गया, ताकि राजभाषा अधिनियम और उसके अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुपालन का मूल्यांकन किया जा सके। विभाग के अधिकारियों ने इस विभाग के अधीन विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा संसदीय समिति की निरीक्षण बैठकों में भाग लिया। दिल्ली स्थित विभिन्न कार्यालयों की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में उप निदेशक/सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा भाग लिया गया। आलोच्य वर्ष के दौरान, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का एक क्षेत्रीय कार्यालय और संस्कृति विभाग के अधीन 2 स्वायत्त संगठनों को राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत भारत के राजपत्र में अधिसूचित किया गया। वर्ष 1993-94 के वार्षिक कार्यक्रम का विभाग और इसके संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों और स्वायत्त संगठनों में अनुपालन किया गया और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयास जारी रखे गए।

3.12 आलोच्य वर्ष के दौरान, 13 कर्मचारियों को हिन्दी कक्षा के लिए, 8 कर्मचारियों को हिन्दी आशुलिपि की कक्षा के लिए तथा 10 कर्मचारियों को हिन्दी टंकण की कक्षा के लिए नामित किया गया। इस वर्ष के दौरान, हिन्दी के 2 टाइपराइटर खरीदे गए।

3.13 संस्कृति विभाग ने 13.9.93 से 17.9.93 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया। उप मंत्री (शिक्षा व संस्कृति) ने हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन किया। इस सप्ताह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और हिन्दी भाषी तथा अहिन्दी भाषी कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

3.14 आलोच्य वर्ष के दौरान, अनुवाद के अन्य विभिन्न महत्वपूर्ण व वृहत् कार्यों के अलावा निम्नलिखित महत्वपूर्ण दस्तावेजों का अनुवाद किया गया ;—

- (1) 21 देशों के साथ अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम/करार/नयाचार
- (2) राष्ट्रीय संस्कृति नीति और विभिन्न सुप्रसिद्ध विभूतियों की टिप्पणियों, सिफारिशों और अभिमतों से संबंधित एक विवरणिका
- (3) भारत छोड़ो आंदोलन स्वर्ण जयंती समारोह से संबंधित दस्तावेज
- (4) विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं व संगठनों की सांख्यिकीय रूप-रेखा
- (5) बजट प्रस्तावों के लिए वार्षिक योजना संबंधी रिपोर्ट

3.15 संस्कृति विभाग के अधीन योजनाओं एवं संगठनों के संबंध में वित्तीय आवंटनों को दर्शाने वाला विवरण परिशिष्ट 2 में दिया गया है।



## पुरातत्व

### भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली

4.01 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की स्थापना दिसम्बर, 1861 में हुई थी और यह मानव संसाधन विकास मंत्रालय के संस्कृति विभाग में सम्मिलित एक कार्यालय है। इसके द्वारा देश के विभिन्न क्षेत्रों का व्यवस्थित ढंग से सर्वेक्षण-कार्य शुरू किया गया था; किन्तु इस कार्यक्रम के अन्तर्गत स्मारकों के संरक्षण का कार्य शामिल नहीं किया गया था; जबकि आज सर्वेक्षण का यह मुख्य कार्य है। यह कार्य स्थायी रूप से 1902 में शुरू किया गया था, जब स्मारकों/स्थलों के संरक्षण, उत्खनन और परिरक्षण, पुरालेख-संबंधी अन्वेषण और संग्रहालयों की स्थापना के स्पष्ट उद्देश्यों के साथ लार्ड कर्जन ने जॉन मार्शल की पुरातत्व महानिदेशक के पद पर नियुक्ति की थी। स्मारकों के संरक्षण-कार्य की व्यवस्था करने के लिए 1904 में "प्राचीन संस्मारक परिरक्षण अधिनियम" पारित किया गया था, और "प्राचीन स्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम" 1958 नामक एक विस्तृत कानून बनाया गया था।

4.02 पुरावशेषों और बहुमूल्य कलाकृतियों के निर्यात व्यापार को विनियमित करने के लिए "पुरावशेष तथा बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम, 1972" नामक एक नया अधिनियम बनाया गया था ताकि पुरावशेषों के धोखाधड़ी के व्यापार को रोका जा सके, सार्वजनिक स्थानों में परिरक्षित करने के लिए पुरावशेषों और बहुमूल्य कलाकृतियों के अनिवार्य अधिग्रहण की व्यवस्था की जा सके; इससे पहले समस्त भारत में "भारतीय निखात निधि अधिनियम 1978" नामक अधिनियम प्रचलित था।

4.03 इस विभाग का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है और यह महानिदेशक की देखरेख में दिल्ली में ही स्थित विभिन्न संकायों के निदेशकों की सहायता से सोलह मंडलों, दो लघु मंडलों, पांच उत्खनन शाखाओं, एक प्रागैतिहास शाखा, एक विज्ञान शाखा, बागवानी शाखा, एक पुरालेख शाखा एक संग्रहालय शाखा तथा मंदिर एवं भवन सर्वेक्षण परियोजनाओं के माध्यम से अपने उत्तरदायित्व को निभाता है। नई दिल्ली स्थित पुरातत्व संस्थान, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के रूप में कार्य करता है। पिछले कुछ दशकों के दौरान, सर्वेक्षण के कार्यों और उत्तरदायित्वों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। कुछ प्रमुख गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं।

### संरक्षण और परिरक्षण

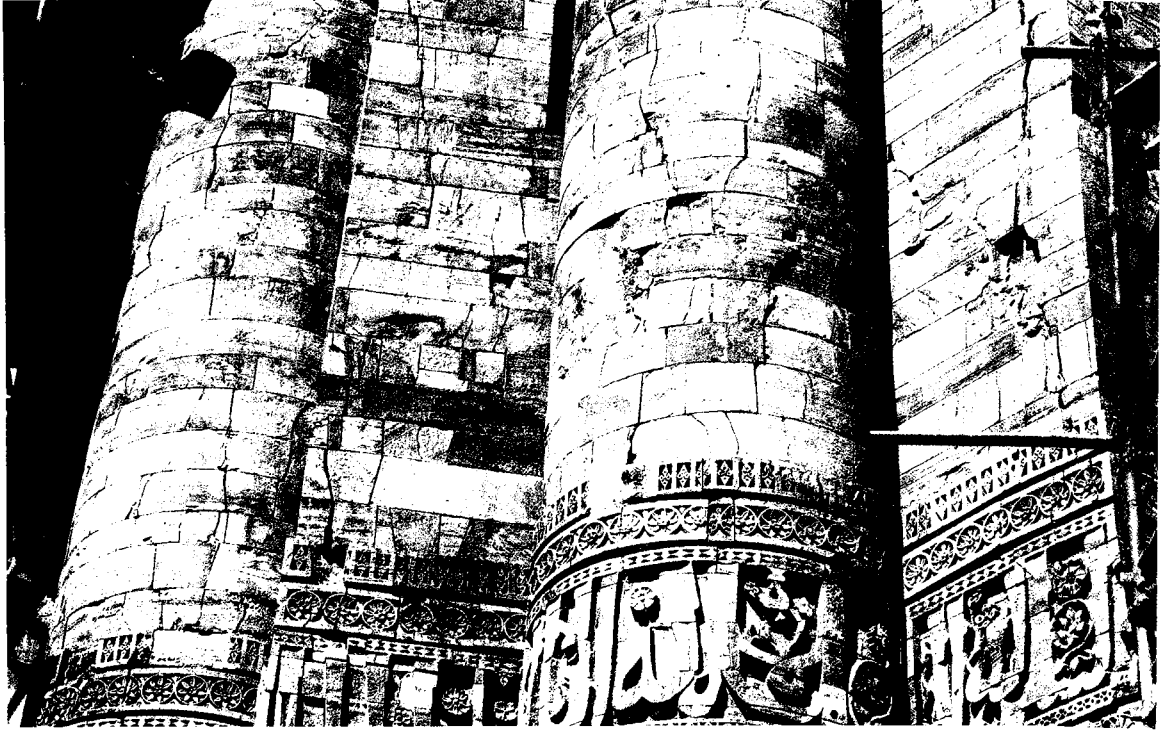
4.04 राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों/स्थलों का संरक्षण और परिरक्षण करना भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का एक बहुत बड़ा कार्य है। संरचनात्मक संरक्षण, रासायनिक परिरक्षण तथा पर्यावरण संबंधी विकास के अलावा, इस कार्य में आधारभूत ढाँचे का निर्माण शामिल है; जैसे महत्वपूर्ण स्मारकों के निकट कार्यालय के भवनों, पहरेदारों के क्वार्टरों का निर्माण ताकि स्मारकों की समुचित सुरक्षा की व्यवस्था की जा सके; खुली



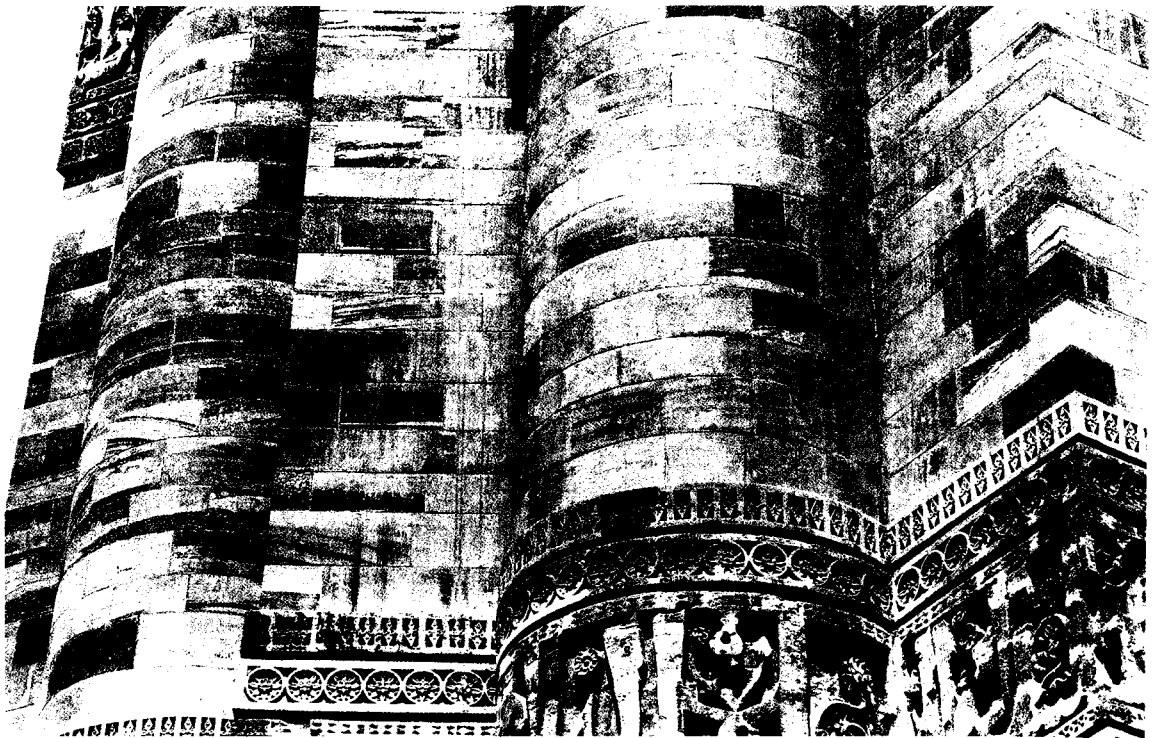
पड़ी मूर्तियों के प्रदर्शन हेतु मूर्ति-शेडों और संग्रहालयों का निर्माण, परिवेश के रख-रखाव और पर्यावरण में सुधार लाने के लिए स्मारकों के चारों ओर की भूमि का अर्जन। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने नई योजनाएं शुरू की हैं, जैसे वैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए प्रयोगशालाओं की स्थापना, असंरक्षित स्मारकों के परिरक्षण के लिए स्वैच्छिक संगठनों को आर्थिक सहायता प्रदान करना, मंडलों, शाखाओं और निदेशालय को सुदृढ़ करना, ओ० ई० सी० एफ० योजना, जापान के अधीन अजन्ता और एलोरा क्षेत्र के स्मारकों का विकास। जापान ट्रस्ट फंड के अधीन यूनेस्को के जरिये सैची और सतधारा स्मारकों का विकास।

4.05 वर्ष 1993-94 के दौरान, 500 स्मारकों के संरक्षण और परिरक्षण का कार्य शुरू किया गया है, जिनमें से 250 कार्यों को व्यापक संरक्षण कार्यों के लिए विशेष रूप से चुना गया है। सर्वेक्षण द्वारा जिन महत्वपूर्ण संरक्षण कार्यों को शुरू किया गया है, उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :—

आंध्र प्रदेश में, ताड़ीपत्री स्थित श्री चिन्ताला वेंकटरमन मंदिर का कल्याण मंडप; अनन्तपुर स्थित वीरभद्र स्वामी मंदिर, लेपाक्षी; गोलकुंडा किला के स्मारक हैदराबाद; चन्द्रगिरि किला, चारमीनार हैदराबाद; नन्दलूर स्थित श्री सौम्यनाद स्वामी मंदिर; बौद्ध स्थल अदुरु; श्री भीमेश्वर स्वामी मंदिर, द्वाक्षारम; पापानासी स्थित मंदिर; उदयगिरि स्थित मंदिर; अमरावती स्थित महास्तूप; नागार्जुन कोंडा स्थित पुनर्निर्मित स्मारक; वारंगल स्थित स्मारक। असम में, शिबसागर स्थित स्मारक; खासपुर स्थित कचार अवशेष; गरगाँव स्थित अहोम राजा का महल; जयसागर स्थित करेनधर महल और स्मारक। बिहार में, रोहतास स्थित किला; नालन्दा, सासाराम, अन्तिचक और कुम्हार स्थित स्मारक। दिल्ली में, लाल किले के स्मारक, पुराना किला और कुतुबमीनार का पुरातत्व संबंधी क्षेत्र; तुगलकाबाद स्थित किला; जफर महल महरौली; सुलतान गढ़ी का मकबरा, मलिकपुरा; हुमायूँ का मकबरा और नीला गुम्बद निजामुद्दीन; बादली सराय; मैगजीन कश्मीरी गेट; उग्रसेन की बावली गोवा में, वेल्हा गोवा स्थित स्मारक और फोर्ट अगोड़ा। गुजरात में, मुनसर तालाब बिनामगाम; खेड और रोडा स्थित स्मारक; द्वारका स्थित मंदिर; गोकेश्वर महादेव मंदिर, लोराली; पाटन स्थित रानी-का-वाव और अन्य स्मारक; पावागढ़ स्थित जामी मस्जिद; सैजाकपुर, भुज, जामनगर, सूरत स्थित स्मारक लोथल के डोकयाई और मोढेरा स्थित सूर्यकुंड हरियाणा में, लखारपुर स्थित सूरज कुंड; शेख चिल्ली का मकबरा, थानेसर; प्राचीन स्थल अग्रोहा और हिसार में फिरोजशाह का महल; रोहतक में मेहम स्थित शाहजहाँ की बावली; हर्ष का टीला, कुरुक्षेत्र; धरौडा स्थित सराय; गुड़गाँव स्थित बावली घोष अलीखान; हाँसी स्थित पृथ्वीराज चौहान का ध्वस्त किला और जलमहल नारनौल। हिमाचल प्रदेश में, त्रिलोकी नाथ मंदिर, मंडी; चम्बा स्थित शक्ति देवी और लक्ष्मीनारायण मंदिर; लाहौल एवं स्पीति घाटी में ताबो स्थित बौद्ध विहार और उदयपुर स्थित मिरकुला देवी मंदिर; शिवमंदिर, बैजनाथ। जम्मू और कश्मीर में, अनन्तनाग स्थित मुगल आर्कड और सूर्य मंदिर, भारतपण्ड; नरनाथ, श्रीनगर; बारामूला में परिहासपुर स्थित स्मारक; अखूर किला जम्मू; लद्दाख में लेह स्थित विहार; अलची, लामायुरु स्तूप, शेय और लेह के महल; शिव मंदिर बिलावर; मंदिर समूह, बावोर; ऊधमपुर स्थित किला और राम जगर का महल। केरल में, सेंट फ्रांसिस चर्च, कोचीन; सेंट अंजेलों के किले और बेकल कन्नूर और किला तेल्लीचेरी। कर्नाटक में, ऐहोले, बादामी बीदर किला, बीजापुर, लक्ष्मण, हालीबीडु, श्रवणबेलगोला, हम्पी, कमबडक्कली और बेलगाम स्थित स्मारक; संगीत और नारी महल, तोर्वी; प्राचीन जैन मंदिर, बेलगाम; मुसाफिरखाना और होंडा सन्तबेन्नूर, शिमोगा; अहमदशाहवली का मकबरा, अक्खूर बीदर और किला बेल्लारी। मध्य प्रदेश में, बौद्ध गुफाएँ बाघ खजुराहो, ग्यारसपुर, मांडू, सांची, खालियर, बुरहानपुर, बरहुत, बडोहपाथरी, अमरकंटक चंदेरी स्थित स्मारक; काकनमठ मंदिर, सुहानिया; उदयपुर मंदिर, उदयपुर शैविते मंदिर, भोजपुर; विजयमंडल, विदिशा; कान्ति देउल मन्दिर रतनपुर; पातालेश्वर मंदिर, मल्हार ओर रोहतगढ़ और रायसेन स्थित किले। महाराष्ट्र में अजन्ता, एलोरा, औरंगाबाद, पिथालखोरा और एलिफेंटा स्थित गुफाएँ; मार्कण्डेय मंदिर, मार्कण्डेय; शिव मंदिर, अम्बरनाथ; बीबी का मकबरा और औरंगजेब का मकबरा, औरंगाबाद; लोनार स्थित स्मारक पौनी, दौलताबाद, पनहाला, बेसिन, शिवनेरी रायगढ़, सिन्धुदुर्ग, विजयदुर्ग और गाविलगढ़ स्थित किले। नागालैण्ड में दीमापुर स्थित दीमापुर अवशेष। उड़ीसा में भगवान जगन्नाथ मंदिर, पुरी; सूर्य मंदिर, कोणार्क; उदयगिरि खंडगिरि, ललितगिरि स्थित उत्खनित स्थल, और बाराबती किला, अष्टशंभु मंदिर, ढंकेनाल; नीलमधावा और सिद्धेश्वर मंदिर, गांधारारी; पश्चिम सोमनाथ मंदिर बौध और वाराही मंदिर चौरासी। पंजाब में रामबागोट, अमृतसर भटिण्डा स्थित किला और नूरमहल सराय। राजस्थान में खाई की दीवार भरतपुर; जैसलमेर, चित्तौड़गढ़, रणथम्भौर और कुम्भलगढ़ स्थित किले; डोंग स्थित महल; देवसोमनाथपुर, डूंगरपुर, अनासागर बारादरी, अजमेर; झालावाड़ में कोलवी स्थित गुफाएँ; उत्खनित स्थल, काली बंगन; भानगढ़, अस्लवर स्थित स्मारक और महानाल मंदिर और मठ चित्तौड़गढ़। तमिलनाडु में मद्रास, गिंजी, मद्रास, बेल्लोर, रंजनगुडी, ट्रिची और अन्नूर सलेम स्थित किलों के परिसर; कांची पुरम स्थित स्मारक और पुडुविकोटे बृहदीश्वर मंदिर, भिंची; सुग्रीश्वर मंदिर, पेरियार; मरूगनाथ स्वामी मंदिर, कोयम्बटूर; शिवमंदिर, वलीकंटपुरम, भिंची, वालीश्वर मंदिर तेल्लै; कट्टाबोम्मम और भगवती मंदिर, कन्याकुमारी उत्तर प्रदेश में आगरा स्थित ताजमहल जामा मस्जिद, रामबाग, अकबर का मकबरा, सलाबत खान का मकबरा, हुमायूँ मस्जिद, फतेहपुर सीकरी परिसर, आगरा किला और इत्माद-उददौला; वृदावन स्थित मदन मोहन मंदिर; जोगेश्वर स्थित मन्दिर समूह; प्राचीन स्थल संकिस्सा; कलिंजर किलां झांसी किला, महल परिसर गनवारिया, नीलकंठ मंदिर, कलिंजर, राणा मानसिंह मंदिर, वाराणसी; आसफुददौला, रूमिगेट, कर्बला नसरूद्दीन हैदर, डालीगंज; लखनऊ स्थित रेजिडेंसी काम्पलेक्स और प्राचीन जामा मस्जिद, चौखडी स्तूप, सारनाथ; वाराणसी जौनपुर और कुशीनगर स्थित स्मारक पश्चिम बंगाल में, कलकत्ता में मुर्शिदाबाद विष्णुपुर कालना और गुप्तीपाड़ा स्थित स्मारक; कूच बिहार स्थित महल; मेटकाफ हाल, महाकृषि भवन, एशियाटिक सोसाइटी, भारतीय संग्रहालय और सोवा बाजार राजबाड़ी; नानूर स्थित मंदिर; मायेर घाट, बेलूर और उच कब्रिस्तान, चिन्सरियाह तथा दमन और दीव स्थित स्मारक।



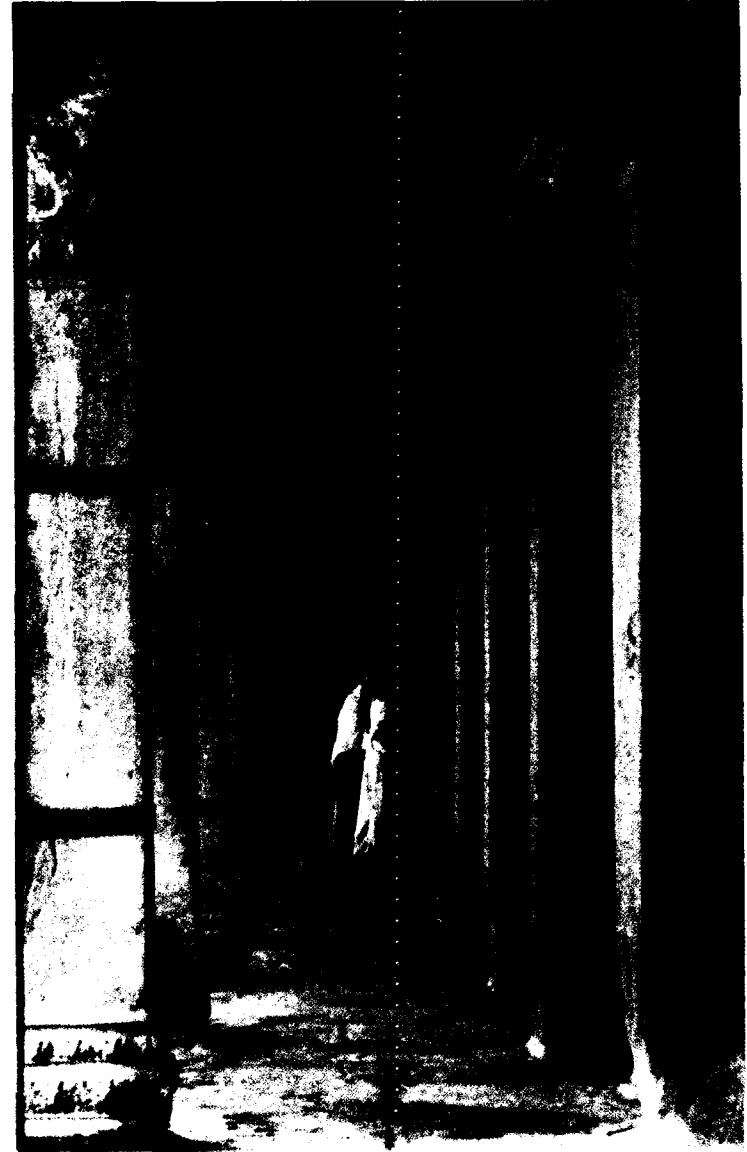
संरक्षण-कार्य के पूर्व, कुतुबमीनार, दिल्ली में बलुआ पत्थर की उभरी हुई लम्बी धारियां  
Bulged sand stone flutings of Qutb Minar, Delhi – Before Conservation



संरक्षण-कार्य के पश्चात, कुतुबमीनार, दिल्ली में उभरा हुआ बलुआ पत्थर  
Bulged sand stone flutings of Qutb Minar, Delhi – After Conservation



संरक्षण-कार्य के बाद - अंकोरवाट (कंबोडिया), सिमरीप  
Angkor-vat (Cambodia), Siemreap - After Conservation



संरक्षण-कार्य के पूर्व - अंकोरवाट (कंबोडिया), सिमरीप  
Angkor-vat (Cambodia), Siemreap - Before Conservation

4.06 इसके अलावा, जामा मस्जिद, दिल्ली और अरूणाचल प्रदेश के तावांग मठ, तावांग जैसे असंरक्षित स्मारकों के संरक्षण-कार्य, विशेष मामले के रूप में, शुरु किये गये हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण सरकारी/स्वायत्त शासी संस्थाओं के असंरक्षित स्मारकों पर भी कुछ डिपोजिट वर्क कर रहा है; जैसे रामपुर रजा पुस्तकालय, रामपुर; नेताजी सुभाष खेल संस्थान, पटियान्दा; विकटोरिया मेमोरियल हाल, कलकत्ता और लोधी गार्डन के स्मारक। जब कभी तकनीकी सलाह मांगी जाती है, वह भी दी जाती है।

## रासायनिक परिरक्षण

4.07 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की विज्ञान शाखा द्वारा जो रासायनिक उपचार और परिरक्षण कार्य किए गए हैं, वे इस प्रकार हैं:— गुजरात में अशोक शिलालेख, जूनागढ़ और रावलाखा छतरी भुज पश्चिम बंगाल में कालना स्थित लालजी मंदिर उत्तर प्रदेश में इत्माद-उद-दौला, लाल किले में खास महल और ताजमहल, आगरा; कर्नाटक में पंचलिंगेश्वर मन्दिर गोविन्दनहल्ली; मांड्या नित्यकल्याण; तमिलनाडु में स्वामी मन्दिर, थिरुवदासै में शिलालेख और हाथीदाँत की पालकी; तथा शिव मन्दिर महाबलीपुरम के बैठे हुए बैल, शेर मूर्तिया आदि। केरल में, नन्दी मंडप वडक्कुनाथन मंदिर, मिचुर में काष्ठ नक्काशी और चित्र। राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले में बड़ौली स्थित महिसापुर मंदिर तथा भरतपुर जिले में डींग महल परिसर, डींग में मूरज भवन। उड़ीसा में भगवान जगन्नाथ मंदिर पुरी का गहन संरक्षण, हिमाचल प्रदेश में पचवक्म मंदिर, मंडी। जम्मू और कश्मीर में लेह स्थित शेष महल, शेष। मध्य प्रदेश में गुफा नं० 4, बाथ गुफाओं की छत से चित्रों का खोलना। लाल किला, दिल्ली में सावन मंडप के संगमरमर के फर्श तथा चित्रित कक्ष खास महल के तथा सामने का हाल दिल्ली में लाल किले के दिवान-ए-खास, हीरा महल और हम्माम एवं शाहबुर्ज के बीच संगमरमर का मंडप; अमीरखुसरो का मकबरा, निजामुद्दीन और हुमायुँ का मकबरा। आन्ध्र प्रदेश के चिनौर जिला स्थित स्थल संग्रहालय, चन्द्रगिरि में पुरा सामग्री। गुजरात के बड़ोदरा में ताम्बेकनवाड़ा के चित्र; पाटन स्थित रानी का वाव तथा मेहसाना जिला में सूर्य मन्दिर, मोधेरा के सूर्य कुंड के छोटे मन्दिर, हिमाचल प्रदेश में चम्बा और नगार (कुलु) के लक्ष्मीनारायण मन्दिरों में गौरी शंकर मंदिर। कर्नाटक के दरिया दौलतबाग में चित्र और भित्ति चित्र श्री रंगपाटन और मांड्या जिले में पंचलिंगेश्वर मन्दिर गोविन्द नहल्ली तथा हसन जिला में गोमेश्वर मूर्ति, श्रवणबेलगोला। मध्य प्रदेश के रायपुर जिला में राजीव लोचन मंदिर, राजीव के मंडप का भीतरी भाग; खजुराहो मंदिर, छतरपुर का मूर्तियों का सुदृढीकरण तथा एकत्रीकरण; होशंगशाह का मकबरा, मांडु जिला धार रायसेन जिले में प्रस्तर चित्र भीमबेटिका तथा बिलासपुर जिले में महादेव मन्दिर का पालीधुरा; खालियर जिले में तेली का मंदिर, खालियर महाराष्ट्र में, गुफा नं० 16 के चित्र तथा एलोरा की गुफा नं० 32 प्रस्तर प्रतिमाएं, जिला थाणे में अमरनाथ की प्रस्तर प्रतिमाएं तथा बीबी का मकबरा, औरंगाबाद की बलुआ पत्थर की जालियाँ और फौवारे उड़ीसा में, भगवान जयनाथ मंदिर, पुरी के विमान की पलस्तर, उखड़ी हुई सतह; भास्करेश्वर मंदिर, भुवनेश्वर तथा रत्नगिरि संग्रहालय की वस्तुओं पर भी ध्यान दिया जा रहा है। राजस्थान के जयपुर जिले के जगत शिरोमणि मंदिर, आम्बेर; रणथम्भौर किला सवाई माधोपुर के अस्त्र-शस्त्र; चित्तौड़गढ़ जिले के सात-बीस, देवरिया परिसर को भी शामिल किया गया है। तमिलनाडु में, भुक्तेश्वर मंदिर, कांचीपुरम चेगाइन्का जिला की मूर्तियों; बृहदीश्वर मंदिर, तंजापुर के शिखर; उत्तर प्रदेश में, लखनऊ में मुर्शीदि जदी बेगम के मकबरे, अल्मोड़ा में गुजरदेव मंदिर द्वाराहाट तथा झांसी के रानी महल के भित्ति चित्रों को भी शामिल किया गया है।

4.08 फोटो प्रस्तुतीकरण के अलावा, अध्ययनों के दौरान मंगोलिया और लेह-लद्दाख के शेष महल से प्राप्त रंग द्रव्यों तथा इत्माद-उद-दौला आगरा के संगमरमर में जड़े हुए पत्थर का पूर्ण विश्लेषण करने के लिए विज्ञान शाखा की प्रयोगशालाओं में विभिन्न प्रकार कार्य किए गए हैं। ताम्बे की बुद्ध की मूर्ति का रासायनिक उपचार करने से पहले उसकी पूरी तरह से जाँच भी की गई है।

4.09 इस वर्ष, विज्ञान शाखा ने निम्नलिखित सामग्री प्रकाशित की है :

(i) ए रिपोर्ट ऑन एयर पोल्यूशन डेटा एट आगरा/ (1992), (ii) डस्ट पोल्यूशन एट ताज महल-ए केस स्टडी, 21 जून-2 जुलाई, 1993 को पेरिस में यूनेस्को की कार्यवाहियों में प्रकाशित, (iii) ए रिपोर्ट ऑन द स्ट्रेटिग्राफिक एंड आई० आर० मॅक्रोग्राफिक स्टडीज आफ पेंटिड प्लास्टर सैम्पल्स आफ बोगडो खान मोनस्ट्री, मंगोलिया तथा (iv) एकरिपोर्ट ऑन दि केमिकल क्लीनिंग एंड प्रिजर्वेशन आफ पेंटिग्स आफ शे पैलेस, शे।

## निर्माण कार्य

4.10 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के सिविल भवनों, जिनमें शहरों और दूरवर्ती स्थानों पर स्थित महानिदेशालय, शाखाएँ मंडल, रेंज आफिस भवन, स्थल संग्रहालय, मूर्ति शेड, प्रसाधन कक्ष, स्टाफ क्वार्टर आदि शामिल हैं; के रख-रखाव के अलावा, नए निर्माण कार्य शुरू किए गए हैं, ताकि स्मारकों में पर्यटकों तथा केन्द्रीय संरक्षित स्मारकों के रखरखाव और सुरक्षा में सुधार लाने के लिए खासतौर से सुदूरवर्ती स्थानों में गोदाम/कार्यालय और आवासीय जगहों के लिए आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था की जा सके। इन चालू वर्षों के कार्यक्रम में कुछ कार्य शामिल किए गए हैं, वे हैं कुमराहार, पटना स्थित प्रसाधन कक्ष; गोवा में साफा मस्जिद, पोण्डा, और मध्य प्रदेश में खालियर स्थित मोहम्मद गौस का मकबरा। बिहार के अन्तिचक, भागलपुर, राजगीर और नालन्दा, कर्नाटक के ऐहोले, बागली और हम्पी,

उत्तर प्रदेश के जगतग्राम, जौनपुर और सरधना; श्रीगनर के मार्तण्ड; तमिलनाडु के नांगुपट्टी, आन्ध्र प्रदेश के चन्द्रगिरि; और औरंगाबाद, महाराष्ट्र के ऐलोरा; गुजरात के खेडरोड़ा, हरियाणा के नारनौल; राजस्थान के रणथम्भौर, नीलकंठ, अर्धुना और भानगढ़, उड़ीसा के बारावती, असुरगढ़, सीताभांजी, गांधारारी और कोणार्क में पहरा एवं निगरानी कर्मचारियों के लिए कार्टरों का निर्माण-कार्य शुरू किया गया है। उत्तर प्रदेश में, देहरादून स्थित निदेशक (विज्ञान) के लिए प्रयोगशाला भवन; जम्मू और कश्मीर में किरामोही और बिल्लावेर स्थित संरक्षण सहायकों का कार्यालय और भंडार; आन्ध्र प्रदेश में गोलकुंडा, हैदराबाद स्थित उद्यान सहायक का कार्यालय; गुजरात में मोधेरा स्थित संरक्षण सहायक का कार्यालय, हिमाचल प्रदेश में मनाली स्थित गोवा में ओल्ड गोवा स्थित भंडार गृहों के निर्माण-कार्य भी शुरू किए गए हैं। मूर्ति शोडों का निर्माण-कार्य बीजापुर, थोबल, खरगोन, सुहानिया और नचोना में शुरू किए गए हैं, जबकि मध्य प्रदेश में खजुराहों के खुले जर्डीने संग्रहालय के ऊपर शेड की व्यवस्था की जा रही है। कर्नाटक में ऐहोले स्थित वर्तमान मूर्ति शेड का विस्तार किया जा रहा है। गुजरात के मोधेरा, पाटन और कायावारोहन, राजस्थान के नीलकंठ; उड़ीसा के तुमन, बारावती किला और जाजपुर तथा असम के उत्राकोटी में मूर्ति-शेडों का निर्माण-कार्य भी शुरू किया गया है।

4.11 महत्वपूर्ण कार्यों के अन्तर्गत, बड़े-बड़े परिसरों का निर्माण-कार्य केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के जरिये करवाया गया है; जैसे निदेशालय/मंडलों के लिए कार्यालय भवन, स्थल संग्रहालय तथा विभिन्न स्थानों पर अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए आवासी परिसर। इस समय जो कार्य चल रहे हैं; वे हैं: श्रीनगर, पटना, बड़ोदरा में कार्यालय भवन, आगरा में पुस्तकालय भवन और औरंगाबाद में फर्दपुर स्थित कर्मचारी कार्टर। अन्य कार्य ये हैं: भुवनेश्वर, लखनऊ, बंगलौर में कार्यालय भवन; पुरातत्व संस्थान, नई दिल्ली, खजुराहो, जयपुर, अल्मोड़ा; कालीबंगन, खजुराहो, बड़ोदरा में कर्मचारी कार्टर; घंटाशाल, हालेबिडु, नालन्दा, पिपराहा और खजुराहों में संग्रहालय भवन।

## बागवानी :

4.12 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की उद्यान शाखा सारे देश में केन्द्रीय संरक्षित स्मारकों के आसपास 132 पुरातत्व बगीचों का रखरखाव कर रही है, जिनमें से कुछ ये हैं :-

आगरा में ताजमहल और रामबाग, अकबर का मकबरा, सिकन्दरा; लखनऊ में; रेजीडेंसी; श्रावस्ती में साहेत; झांसी का किला; कानपुर में खचेड़ी कब्रिस्तान; गाजीपुर में लार्ड कार्नवालिस की कब्र; जौनपुर में साही किला; खजुराहो के मंदिर-समूह; बिजयमंडल; दिल्ली में लालकिला और पुराना किला; डींग का महल, भटिण्डा में किला; पावागढ़ में शहर-की-मस्जिद; अदालज स्थित स्टेपबैल; बड़ौदा में हजीरा मकबरा; सिहोल; नागार्जुनकोंडा, गोलकुंडा किला और पालमपेट में रामप्पा मंदिर, बीजापुर में गोलगुम्बद; हम्पी के स्मारक, हालेबीडु में होयोसालेश्वर मंदिर, पट्टडकल के स्मारक, औरंगाबाद में बी-बी का मकबरा, तंजाबुर में बृहदीश्वर मंदिर, महाबलीपुर में समुद्रतटीय मंदिर, मुर्शिदाबाद में हजारडौदी महल, सासाराम में शेरशाह का मकबरा, भुवनेश्वर में राजा-रानी और चित्रकर्णी मंदिर, कन्नारा, नालन्दा स्थित उत्खनित अवशेष सूर्यमंदिर कोणार्क, ओल्ड गोवा के चर्च, शनिवार वाड़ा पूना, मांडु, बुरहानपुर का किला और स्मारक आदि।

4.13 इस वर्ष, वेल्हा गोवा, कुमटगी में जल-मंडप, दौलताबाद किला, नागार्जुन सागर में अनुपु, कैदगंज कब्रिस्तान, इलाहाबाद, सिकन्दरबाग, लखनऊ, अरकिला बीजापुर, शाही हाता, हम्पी, शनिवारवाड़ा पूना, वेल्लोरे फोर्ट वेलेर, लक्ष्मीनारायण मंदिर, होसाहोलालु, जलकंठेश्वर मंदिर, वैल्लोर, खडगिरि, उदयगिरि, उड़ीसा, अडीना मस्जिद, माल्दा, ब्रह्मेश्वर मंदिर, भुवनेश्वर में उद्यान-विकास-कार्य शुरू किया गया है। ऐलोरा, नन्दनगढ़, बिहार में बगीचा बनाने की व्यवस्था की जा रही है। मल्लिकार्जुन मंदिर, पट्टडीकल में उद्यान-विस्तार; सिकन्दरा, आगरा में उद्यान-विस्तार का कार्य भी शुरू किया गया है।

## भारत के बाहर अंकोरवाट कम्बोडिया में स्मारकों का संरक्षण

4.14 कम्बोडिया सरकार और भारत के बीच हुए द्विपक्षी करार के अनुसार भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, अंकोरवाट मंदिर परिसर का कार्य कर रहा है। इसके लिए निधियाँ, विदेश मंत्रालय के द्वारा उपलब्ध कराई जा रही हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण दल ने, वर्षभर उन स्मारकों के परिरक्षण और संरक्षण के लिए मुख्य और महत्वपूर्ण प्रयास किया है, जिनकी सिफारिश अन्तर्राष्ट्रीय तौर पर मान्यता-प्राप्त पुरातत्वविदों एवं संरक्षणविदों द्वारा की गई है।

4.15 सातवें फेज (1992-93) में छठे फेज वर्ष (1991-92) में लिए गए कार्य निम्नलिखित विवरण के अनुसार पूरे किए गए :—

- (क) उत्तरी भाग की पश्चिमी और पूर्वी भाग की गैलरियाँ तथा तीसरे अहाते के पूर्वी ओर की गैलरी, जहाँ की अर्धमेहराबदार छत के सभी बाहरी स्तम्भ साहुल से बहार हो गए थे और मुख्य गैलरी के मुख्य स्तम्भ तथा बाहरी स्तम्भ के बीच की सभी धरनें जोड़ों से निकाल दी गई थी, स्तम्भों को उनकी पहली अवस्था में लाकर तथा धरनों को उनके पूर्व-रूप में जोड़कर और जहाँ जरूरी था, वहाँ स्टील की मेखों द्वारा मजबूत करके संरक्षित की गई।

- (ख) दक्षिणी केन्द्रीय प्रवेश डयोढ़ी तथा तीसरे अहाते के पूर्वी कोने पर दक्षिणी प्रवेश डयोढ़ी, जिन्हें क्रमशः 1990 और 1970 में गिरा दिया गया था, उनका उनके पूर्व-रूप में पुनर्निर्माण किया गया। इसके अतिरिक्त टूटे हुए वास्तुशिल्पी अंश जैसे स्तम्भों और शहतीरों की उपयुक्त मरम्मत की गई तथा उन्हें [— वर्ग के गार्डरों द्वारा मजबूत किया गया।
- (ग) तीसरे अहाते की पूर्वी दिशा में तीन भीतरी ड्योढ़ियाँ जो सुहाल से बाहर हो गई थी, पूर्ण-रूप से ढा दी गई थीं। तथा कुरसी की सारभाग को मजबूत करने के बाद, पूर्व-रूप के अनुसार पुनः निर्मित की गई।
- (घ) दूसरे अहाते की पूर्वी और दक्षिणी तरफ भारती जंगले सहित सात सोपान पंक्तियों वाले प्रवेश-स्थल, पूर्णतया संरक्षित तथा जलरूढ़ किए गए। दूसरे अहाते के दक्षिणी ओर की ढह चुकी प्रवेश डयोढ़ी पूर्व विनिर्देशन के अनुसार पूर्ण-रूप में पुनः निर्मित की गई।
- (ङ) पहले अहाते का दक्षिण पश्चिमी कोण बुर्ज तथा दूसरे अहाते के दक्षिण और पश्चिम कोण, उत्तर पश्चिम कोण बुर्ज पूर्णतया संरक्षित एवं जलरूढ़ किए गए। इन बुर्जों के निकाले गए पत्थरों को पुनः लगाया गया तथा जहाँ आवश्यक था, वहाँ अप्रकट-रूप में मेखें और स्टील की शलाकाएँ लगा कर संरचना को मजबूत किया गया।
- (च) तीसरे और चौथे अहाते के बीच के दक्षिणी पुस्तकालय के अस्सी गिरा दिए गए वास्तुशिल्पीय अंशों को उनकी उपयुक्त स्थिति में लगा कर, उसे और अधिक संरक्षित किया गया।
- (छ) पहला आहाता, जिसका विस्तार-क्षेत्र 700 वर्ग मीटर है, उसमें झलाईदार जाली लगाई गई। ताकि चमगादड़ और पक्षी उसे मैला न करें।
- (ज) इस बार, रासायनिक सफाई तथा परिरक्षण कार्य उस क्षेत्र में किया गया, जिसमें भीतरी कुरसी अंश, दक्षिण-पश्चिम कोण बुर्ज, पहले अहाते की बाहरी कुरसी के कुछ अंश, दूसरे और तीसरे अहातों के बीच के उपकक्ष की छत तथा बाहरी दीवारें, उपकक्ष के प्रांगण, दूसरे अहाते की भीतरी दीवारें और दूसरे अहाते के उत्तर-पश्चिम तथा दक्षिण-पश्चिम कोण बुर्ज आते हैं।।

## अन्वेषण

4.16 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा देश के विभिन्न भागों में प्रागैतिहासिक काल से लेकर मध्य-काल तक के बहुत से स्थल और अवशेषों की खोज की गई है, जो कि, कुछ समस्या-अभिमुख अन्वेषणों, गाँव-से-गाँव सर्वेक्षण के द्वारा पुरातत्व-विषयक अवशेषों के लिए खोज तथा आकस्मिक खोजों के परिणामस्वरूप है। नागपुर और भंडारा जिलों में बाणगंगा घाटी और इसकी उपघाटियों में समस्या-अभिमुख अन्वेषण को पिछले कार्य को जारी रखते हुए प्रारंभ करने का प्रस्ताव है। जिला धोलपुर में पार्वती और उतंगन नदी-घाटी; उत्तर-पूर्वी राज्य में प्रागैतिहासिक स्थलों का अन्वेषण जैसे अरूणाचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम आदि, पिछले कार्य को जारी रखते हुए कर्नाटक-केरल राज्यों का अन्वेषण, हरियाणा की घग्गर नदी-घाटी का अन्वेषण; राजस्थान में, कोट जिले में काली सिंध नदी-घाटी का अन्वेषण, गुजरात राज्य में दक्षिण पश्चिम कच्छ में अन्वेषण के पिछले कार्य को जारी रखते हुए प्रारंभ करने का प्रस्ताव है। सरदार सरोवर परियोजना और सत्राती, कर्नाटक के अन्तर्गत वदोदरा और भडूच जिलों में बांधों के निर्माण के कारण जो क्षेत्र जलमग्न हो जाने हैं, उनमें अन्वेषण, सर्वेक्षण, संचालन जारी रखना।

## उत्खनन

4.17 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने दिल्ली में लालकोट में तोमर शासक अनंग-पाल-II द्वारा 11 वीं शताब्दी ईसवी सन् के मध्य में निर्मित, दिल्ली की प्रथम सुसज्जित राजधानी की खोज की है। पिछले कार्य के साथ उत्खनन जारी है।

4.18 दक्षिण अर्कोट जिला, तमिलनाडु में जिंजी किले की सफाई प्रक्रिया में 16 वीं शताब्दी का महल एक भूमिगत मार्ग तथा एक सिंहासन चबूतरा पाए गए हैं। ममाल्यपुरम्, तमिलनाडु में सोपानपंक्ति के साथ एक दीर्घवृत्ताकार संरचना का पता चला है, जिस पर एक पंक्ति का शिलालेख है जिससे यह पता चलता है कि इसका निर्माण प्रसिद्ध पल्लव राजा नरसिंहा वर्मन-III (695-722 ईसवी सन्), जिसे सामान्यतया राजसिंहा कहा जाता था, के द्वारा कराया गया था। एक और, लेटे हुए विष्णु की एकाग्र मूर्ति, जो कि, नरसिंहा-I की तिथि निर्धारित करने योग्य है, इसके अतिरिक्त, वृषभ लिंग शिव के चित्र के साथ एक और एकाग्र मठ पहली बार प्राप्त हुआ। मीठे पानी के झरने वाले एक प्राचीन कुएँ का भी पता चला।

4.19 संत ऑगस्टाइन गिरजा परिसर, पुराना गोआ, जिसमें शिक्षणालय, कान्वेंट, नवशिक्षालय भी शामिल हैं तथा कालेज ऑफ पीपुल पोपुलो, जिसका ऑगस्टिनियों द्वारा 1833 के धार्मिक अवरोध के कारण परित्याग कर दिया गया था, सफाई प्रक्रिया द्वारा उपयुक्त-रूप

में प्रकाश में आए हैं। कान्वेंट में लिए गए कार्य से स्तम्भ-पंक्तियां, धँसा हुआ पानी का तालाब, एक सुन्दर बाग तथा दीवारों के सतही आलों में गच क्रास प्रकाश में आए, जो इस अंतिम यात्रा पर प्रभु यीशु के 14 स्थानों को दर्शाते हैं। यह कार्य जारी है।

4.20 राजस्थान के डोंडर खेड़ा, जिला धोलपुर का स्थल, अत्यधिक विस्तृत और पूर्णतया परिरक्षित प्राचीन टीलों में से एक है, यह कार्य पिछले कार्य काल के कार्यों को जारी रखते हुए सम्पन्न किया गया है।

4.21 श्रावस्ती (उ० प्र०) में उत्खनन, जो कि, जेतवन में उत्खनन के साथ इसके संबंध स्थापित करने के लिए अनुसंधान संस्थान, कन्सई विश्वविद्यालय, जापान के सहयोग से प्रारंभ किया गया था; आगामी कार्यकाल हेतु जारी है।

4.22 बाराबाटी किला, कटक, में उत्खनन से एक महल के अवशेष, एक मंदिर का मलबा, एक सभा-भवन, एक गढ़ी, एक स्तम्भों वाला सभा-भवन तथा एक चबूतरा, प्रकाश में आए हैं, यह कार्य एक और कार्यकाल के लिए जारी रहेगा।

4.23 हड़प्पन स्थल, गुजरात के धोलाबीर जिला में उत्खनन से एक और नगर मार्ग प्रकाश में आया है तथा कई आवासी संरचनाएं, प्रभावशाली तोरण जल-निकास तंत्र, मुहरें प्राप्त हुई हैं। यह कार्य 1993-94 के लिए जारी रहेगा।

4.24 जिला सतारा में जाखिनवादी गुफाओं के निकट हीनयान गुफाओं की ओर एक नए उत्खनन का प्रस्ताव है।

4.25 कर्नाटक राज्य में जिला बेल्लारी, तालुक होस्पेट में उत्खनन कार्य से दो आयताकार आलीशान संरचनाएं जो उत्तर और पूर्व की ओर अभिमुख हैं, प्रकाश में आई हैं। यह कार्य पिछले कार्यकाल के कार्य के साथ जारी है।

4.26 सत्राती में उत्खनन से इस क्षेत्र के सामान्य सांस्कृतिक अनुक्रम के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध हुई है। यह कार्य जारी है।

4.27 पिछले कार्यकाल के उत्खनन को जारी रखते हुए, 1993-94 के दौरान कोल्हुआ में कार्य निष्पन्न किया जाना है। इस स्थल के पिछले उत्खनन से मुख्य स्तूप तथा अशोक स्तम्भ परिसर के चारों ओर मन्त्र स्तूपों का एक समूह प्रकाश में आया है। कोल्हुआ, जिला मुजफ्फरपुर, बिहार, में अंगरेजी के जेड आकार का ईंटों से निर्मित तालाब भी पूर्णतः प्रदर्शित हुआ।

## मंदिर और भवन

### सर्वेक्षण परियोजना

4.28 उत्तर और दक्षिण भारत के प्राचीन मंदिरों के ऐतिहासिक अध्ययन के स्थापत्य अंशों के सर्वेक्षण, प्रलेखन और विस्तृत अध्ययन के लिए, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की तीन इकाइयां हैं तथा परियोजना अधिकारी क्रमशः मद्रास और भोपाल में स्थित हैं। इस समय, उपर्युक्त इकाइयों द्वारा क्रमशः मध्य भारत, राजस्थान और गुजरात में परामरा मंदिरों तथा कर्नाटक में चोल मंदिरों का सर्वेक्षण किया जा रहा है तथा उपर्युक्त कार्य आगामी कार्यकाल के लिए भी जारी रहेगा।

4.29 नई दिल्ली में स्थित भवन सर्वेक्षण परियोजना के कार्य; सर्वेक्षण करना, प्रलेख देना तथा भारत में मध्यकालीन भवनों का अध्ययन करना है। इस समय, इस इकाई ने पूर्वी राजस्थान के सर्वेक्षण के अतिरिक्त गुजरात में अहमदाबाद के निकट फतेहर के भवनों का इस क्षेत्र की उत्तम लकड़ी की संरचना, भवनों, हवेलियों, को ध्यान में रखते हुए, सर्वेक्षण प्रारंभ किया है।

### समुद्रीय पुरातत्व

4.30 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने राष्ट्रीय समुद्रविज्ञान संस्थान की समुद्रीय पुरातत्व इकाई के सहयोग से गुजरात में द्वारका, पश्चिम समुद्रतट में गोआ तथा पूर्वी समुद्रतट में पोम्पूहर में अन्तर्जलीय पुरातत्वीय संक्रिया निष्पन्न की है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के स्टाफ के तीन सदस्यों ने राष्ट्रीय समुद्र-विज्ञान संस्थान में प्रारंभिक प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

### पुरालेख और अन्वेषण

4.31 मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक के राज्यों से 300 शिलालेख एकत्रित किए गए हैं तथा अभी तक पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश और राजस्थान के राज्यों से अरबी और फारसी के 45 शिलालेखों की नकल की गई है। अब तक देश के विभिन्न राज्यों में 250 गाँवों का सर्वेक्षण किया गया है।

## एरियल फोटोग्राफी

4.32 भारत-अमरीका उप आयोग, शिक्षा तथा संस्कृति, के अन्तर्गत "कम ऊँचाई, व्यापक सर्वेक्षण" पर एक कार्यशाला 26.10.93 से 10.11.93 तक पुराना किला में हुई। इस कार्यशाला में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के कर्मचारियों ने भाग लिया। यह कार्यशाला दो अमेरिकन विशेषज्ञों यानी जेम्स डब्ल्यू. वाकर तथा थोमस केंट हिकले, ब्रिघम यंग यूनिवर्सिटी, उटाह, यू.एस.ए. के निर्देशन में आयोजित की गई थी।

## पुरावशेष

4.33 पुरावशेष तथा बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम, 1972, के कार्यान्वयन के संबंध में महत्वपूर्ण प्रगति की गई है। देश के विभिन्न भागों से प्राप्त रिपोर्टों से पता चलता है कि सितम्बर, 1993 तक 2381 पुरावस्तुएँ पंजीकृत की गई हैं। गैर-वस्तुओं के निर्यात के लिए विशेषज्ञ सलाहकार समिति की तैतीस बैठकें हुईं, जिनमें विभिन्न पार्टियों द्वारा 4333 वस्तुएँ जाँच के लिए प्रस्तुत की गईं। इनमें से 209 वस्तुओं की पुरावशेषों तथा शेष 4124 वस्तुओं की गैर-पुरावशेषों के रूप में पहचान की गई, जिनके लिए गैर-पुरावशेष प्रमाण-पत्र जारी किए गए। सीमाशुल्क-विभाग, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो, पुलिस प्राधिकारियों और पार्टियों/फर्मों, द्वारा पुरावशेषों के रूपमें रोकी गई वस्तुओं की जाँच के लिए, सितम्बर, 1993 तक कुल 13 अपील बैठकें की गईं। पुरावशेष तथा बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम, 1972 की धारा 24 के अन्तर्गत 406 वस्तुओं की जाँच की गई। इनमें से 188 वस्तुएँ पुरावशेष घोषित की गईं। विदेशों की प्रदर्शनियों में पुरावशेषों के प्रदर्शन के लिए 8031 पुरावशेषों हेतु आठ अस्थायी निर्यात अनुमति-पत्र जारी किए गए हैं। पाँच लाइसेंस नवीकृत किए गए हैं।

## स्थल संग्रहालय

4.34 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की संग्रहालयें शाखा, जिसका मुख्यालय कलकत्ता में है देश में सर्वत्र स्थित इकतीस पुरातत्व स्थल संग्रहालयों की देखभाल करती है। इसके चार क्षेत्रीय कार्यालय हैं जो दिल्ली (उत्तर), सारनाथ (पूर्व), मद्रास (दक्षिण) तथा वेल्हा गोआ (पश्चिम) में स्थित हैं। पुरातत्वीय संग्रहालय, ग्वालियर (म० प्र०), हजाराद्वारी महल, मुर्शिदाबाद संग्रहालय (पश्चिम बंगाल), पुरातत्वीय संग्रहालय, रोपड़ तथा रत्नागिरि में कलादीर्घाओं का प्रबंधात्मक कार्य जोरों पर है। रणधम्भौर किले में पुरातत्व-स्थल संग्रहालय, चन्देरी नगर क्षेत्र में चन्देरी संग्रहालय तथा वेल्होर में पुरातत्व-स्थल संग्रहालय स्थापित करने के लिए महानिदेशक द्वारा अनुमति दी जा चुकी है। सिंगरी पर्वत, असम में एक पुरातत्व-स्थल संग्रहालय के निर्माण का प्रस्ताव अनुमोदित है तथा भूमि के अधिग्रहण के कारण उसका निर्माण विचाराधीन पड़ा है।

4.35 विश्वदाय दिवस (18-4-1993), 14 स्मारकों में मनाया गया, जोकि विषय दाय सूची में दर्ज हैं। इस अवसर पर विभिन्न स्थानों पर, स्मारकीय दाय पर, फोटो प्रदर्शनियाँ लगाई गईं। भारत के राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री तथा मानव संसाधन विकास मंत्री से प्राप्त विशेष संदेश, सभी स्मारकों पर सुस्पष्ट रूप में हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रदर्शित किए गए।

## पुरातत्व संस्थान

4.36 पुरातत्व संस्थान, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का एक अलग भाग है, जो भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के कर्मचारियों को आवश्यक सेवारत प्रशिक्षण देता है, साथ ही युवा पुरातत्व शोधार्थियों का एक अलग संवर्ग बनाता है, जो पुरातत्व अन्वेषण तथा क्षेत्रीय कार्य करते हैं।

4.37 वर्ष के दौरान कन्याकुमारी (तमिलनाडु) में एक संरचनात्मक संरक्षण के सभी पहलुओं में प्रशिक्षण देने के लिए एक कैम्प लगाया गया। इसका उद्देश्य संस्थान के शोधार्थियों की सांस्कृतिक सम्पत्ति की देख-भाल करने के साथ-साथ स्मारकों का रासायनिक परिरक्षण करना था। इसमें भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के 15 प्रशिक्षार्थियों तथा केरल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा पंजाब राज्यों से पुरातत्व विभागों के शोधार्थियों ने भाग लिया।

4.38 मथुरा के जीव विज्ञान महाविद्यालय में 1992-94 के सत्र के विद्यार्थियों के लिए वरटेबरेट जुलाजी पर एक सप्ताह का एक कैम्प लगाया गया। इसमें प्रमुख वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षण दिया तथा प्रयोग करके दिखाए।

4.39 संस्थान में शैक्षणिक अनुसंधान की वृद्धि के लिए विशेष आख्यान का आयोजन किया गया। इसमें प्रमुख वक्ता यू.एस.ए. की पैनसिलवानिया यूनिवर्सिटी के डॉ० जी० पोशोली, यू.एस.ए. की विसकायनसिस यूनिवर्सिटी के डॉ० एम० केनोए, इन्डैक के महासचिव, प्रो० ई०एफ०एन० रीबेरो, और उत्कल यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर की श्रीमती उपाली अपराजिता ने भाग लिया।

4.40 भारत के स्मारकों, स्थलों तथा संग्रहालयों के लिए एक अध्ययन दौरा बनाया गया जिसका उद्देश्य 1991-93 के सत्र के विद्यार्थियों को एक प्रकार का प्रशिक्षण देना भी था। जूनियर बैच 1992-94 का दक्षिण भारत के स्मारकों, स्थलों, संग्रहालयों के लिए भी एक अध्ययन दौरा बनाया गया।



## सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

4.41 1993-94 के दौरान, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के दो अधिकारियों का एक दल एरियल फोटोग्राफी में प्रशिक्षण लेने के लिए संयुक्त राज्य अमरीका गया।

4.42 मानव संसाधन विकास मंत्रालय में, शिक्षा एवं संस्कृति उप मंत्री जी ने ऐतिहासिक स्थल अंगकोरवाट की सुरक्षा और विकास पर अन्तर-सरकारी सम्मेलन में भाग लेने के लिए टोक्यो का दौरा किया, जिसमें उनके साथ भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक और एक अन्य विशेषज्ञ थे।

4.43 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के दो विशेषज्ञों के एक दल ने मालदीव में पाँचवे सार्क पुरातत्व कांग्रेस में भाग लिया।

4.44 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के वरिष्ठ अधिकारी ने मंगोलिया के बोगडो खान महल संग्रहालय के स्मारकों और विहार के संरक्षण पर प्रारम्भिक रिपोर्ट तैयार करने के लिए मंगोलिया का दौरा किया।

4.45 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के एक अन्य विशेषज्ञ ने यूरोपियन एसोसिएशन ऑफ साउथ एशियन आर्कियोलोजी द्वारा आयोजित दक्षिण एशियाई पुरातत्व 1993 में भाग लेने के लिए और "इंडस सील्स एंड इंसक्रिप्शन्स सील्स-वॉल्यूम-3" के संग्रह संबंधी कार्य, जो भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और फिनिश एकेडेमी ऑफ साइंस का संयुक्त प्रकाशन होगा, के बारे में सी० ई० पी० के अन्तर्गत फिनलैण्ड का दौरा किया।

4.46 एक विशेषज्ञ को पेरिस (फ्रांस) में संरक्षण अनुसंधान में प्रशिक्षण लेने के लिए फ्रांस भी भेजा गया है।

## प्रकाशन

4.47 समीक्षाधीन अवधि के दौरान, एक्सकेवेशन्स एट नागार्जुन कोंडा, वाल्यूम II तथा एक्सकेवेशन्स एट भगवानपुरा 1975-76 का मुद्रण-कार्य तथा मेमायर सीरीज एंड इंडियन आर्कियोलोजी 1988-89-ए रिव्यू के अन्तर्गत दूसरे अन्वेषणों की छपाई के कार्य बहुत प्रगति पर हैं।

## संग्रहालय

### राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

5.01 राष्ट्रीय संग्रहालय संस्कृति विभाग के अर्न्तगत एक अधीनस्थ कार्यालय है। आलोच्य वर्ष के दौरान, अधिग्रहण, प्रदर्शनियों, संरक्षण, शिक्षा तथा प्रकाशनों के क्षेत्र में संग्रहालय के मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित पैराग्राफों में दिए गए हैं।

#### प्रदर्शनियां

5.02 राष्ट्रीय संग्रहालय में भारत कला भवन की 126 चुनी हुई उत्कृष्ट कलाकृतियों की अस्थायी प्रदर्शनी लगाई गई। माननीया शिक्षा तथा संस्कृति उपमंत्री कुमारी सैलजा ने 11 मार्च, 1993 को प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

5.03 उत्तर-पूर्वी क्षेत्र की जनजातीय जीवन-शैली की पूर्णतः नवीकृत और पुनः अभिकल्पित नयी वीथिका का उद्घाटन माननीया शिक्षा एवं संस्कृति उप-मंत्री कुमारी सैलजा ने 11 मार्च, 1993 को किया।

5.04 भारत में हंगरी के राजदूत ने 21 मार्च, 1993 को "मध्य एशियाई कला" पर एक विशेष प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

5.05 माननीय प्रधानमंत्री, श्री पी० वी० नरसिंह राव ने 17 मई, 1993 को राष्ट्रीय संग्रहालय में "राजा रवि वर्मा" के चित्रों, रेखाचित्रों, तैलचित्रों आदि की एक विशेष प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

5.06 "भारतीय कला में राग और रागनियाँ" विषयक एक विशेष प्रदर्शनी की योजना तैयार की गई है, जो इस वर्ष के दौरान राष्ट्रीय संग्रहालय में लगाई जायेगी। यह प्रदर्शनी अपने अद्वितीय स्वरूप के विषय के कारण अपनी तरह की पहली प्रदर्शनी होगी।

#### सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

5.07 राष्ट्रीय संग्रहालय सं० रा० अ०, यू० के०, फ्रान्स, चीन, जापान, रूस आदि सहित 97 देशों के साथ सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के जरिए सक्रिय रूप से सम्बद्ध है। भारत, मंगोलिया सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अर्न्तगत "द पाथ ऑफ बुद्ध" शीर्षक से एक प्रदर्शनी भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता द्वारा मंगोलिया भेजी गई है। उक्त प्रदर्शनी के लिए, भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता के अनुरोध

पर एक अवशेष मंजूषा और पांच पवित्र अवशेष ऋणस्वरूप भेजे गए, जिन्हें प्रदर्शनी की अवधि के दौरान प्रदर्शित किया जायेगा। यह प्रदर्शनी अगस्त में भेजी गई थी और इसका उद्घाटन 1 सितम्बर, 1993 को किया गया।

## शिक्षा और संस्कृति से संबंधित भारत-अमेरिका उप आयोग

5.08 इस कार्यक्रम के अर्न्तगत राष्ट्रीय संग्रहालय द्वारा "गॉड्स गार्जियन्स एंड लवर्स, टेम्पल स्कल्पचर्स फ्रॉम नार्थ इंडिया (700-1200 ई०)" नामक प्रदर्शनी के लिए 16 प्रस्तर प्रतिमाएँ एशिया सोसायटी मैलरी, न्यूयार्क (सं० रा० अ०) को भेजी गईं। यह प्रदर्शनी अक्टूबर, 1993 में नेल्सन ऐटकिन म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट, कैनेरस सं० रा० अ० में लगाई गई थी।

## सेमिनार

5.09 राष्ट्रीय संग्रहालय में 11 मार्च, 1993 को स्वर्गीय राय कृष्णदास के जीवन और कृषित्व पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। भारत में हंगरी के राजदूत ने 21 मार्च, 1993 को इंडिया एंड सेंट्रल एशिया, मिलेनिया ऑफ़ कान्टेक्टस" पर एक कार्यशाला का उद्घाटन किया।

5.10 राष्ट्रीय संग्रहालय ने भारतीय संग्रहालय परिषद् और राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान के सहयोग से 11 मार्च से 13 मार्च, 1993 तक 24वें अखिल भारतीय संग्रहालय अधिवेशन का आयोजन किया। इसका उद्घाटन शिक्षा तथा संस्कृति उपमंत्री कुमारी सैलजा ने किया।

## शैक्षिक गतिविधियाँ

5.11 संग्रहालय विज्ञान में 24 वां अल्पकालिक सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम 1 फरवरी, 1993 को समाप्त हुआ।

5.12 आलोच्य वर्ष के दौरान, प्रतिदिन 8 गाइडिड टूर और चार फिल्म प्रदर्शनों के साथ-साथ प्रत्येक बुधवार को वीथी-वार्ता का आयोजन नियमित रूप से किया गया।

5.13 संग्रहालय-विज्ञान में 25 वां अल्पकालिक सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम दिसम्बर, 1993 में आरम्भ हुआ।

## छायाचित्र प्रलेखन

5.14 आलोच्य अवधि के दौरान, जनसामान्य तथा विद्वानों आदि को 6546 फोटो प्रिंट उपलब्ध कराए गए। लगभग 1438 कलाकृतियों के श्वेत-श्याम और 682 कलाकृतियों के रंगीन छायाचित्र खींचे गए। 1958 नेगेटिव तैयार किए गए तथा जनरल नेगेटिव रजिस्टर में 1075 नेगेटिव का प्रलेखन किया गया और राष्ट्रीय संग्रहालय के फोटो अनुभाग में 605 नए नेगेटिव इंडेक्स कार्ड तैयार किए गए।

## मॉडलिंग अनुभाग

5.15 आलाच्य अवधि के दौरान, 2130 रॉ कास्ट तैयार किए गए, 2248 कास्टों को अन्तिम रूप दिया गया और 2095 पर रंग किया गया। 16 रबड़ मोल्ड और 6 मास्टर कॉपी प्लास्टर कास्ट के साथ तैयार की गईं। फाइबर ग्लास के साथ 156 रॉ कास्ट तैयार किए गए, 155 को अन्तिम रूप दिया गया तथा 153 कास्टों पर रंग किया गया। 16 रबड़ मोल्ड और 3 मास्टर कॉपी तैयार की गईं। नियंत्रक और महालेखा परीक्षक के कार्यालय के लिए मूल प्रतिमाओं से तीन नए प्लास्टर कास्ट तैयार किए गए।

## प्रकाशन

5.16 वर्ष के दौरान दिसम्बर, 1993 तक प्रकाशन संबंधी गतिविधियाँ निम्नवत् थीं :

- (क) हिन्दी में बाबरनामा
- (ख) नेशनल म्यूज़ियम बुलेटिन नं० 7 और 8
- (ग) न्यूजलैटर नं० 2
- (घ) मध्य एशियाई कला पर हिन्दी और अंग्रेजी में पुस्तिका
- (ङ) जनजातीय कला वीथिका पर अंग्रेजी में पुस्तिकाएं
- (च) राजस्थानी पेंटिंग्स पुस्तक के रंगीन ब्लॉक



राष्ट्रीय संग्रहालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में राजा रवि वर्मा की चित्रकारी को देखते हुए  
माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री अर्जुन सिंह  
Shri Arjun Singh, Hon'ble Minister for Human Resource Development, looking at the Paintings of  
Raja Ravi Varma in the Exhibition organised by the National Museum



मंगोलिया में आयोजित एक प्रदर्शनी में बुद्ध के पवित्र स्मृति-चिन्ह - भारतीय संग्रहालय  
Holy Relics of Buddha in an Exhibition organised in Mongolia - Indian Museum

## पुस्तकालय

5.17 आलोच्य वर्ष के दौरान, राष्ट्रीय संग्रहालय के पुस्तकालय संकलन में 513 पुस्तकों की वृद्धि हुई। लगभग 12000 पाठकों ने राष्ट्रीय संग्रहालय पुस्तकालय की शोध और संदर्भ ग्रंथ सुविधाओं का लाभ उठाया।

## संरक्षण

5.18 वर्ष के दौरान प्रयोगशाला अथवा वीथिकाओं अथवा स्टोर में विविध प्रकार की 400 से अधिक कलाकृतियों का संरक्षण संबंधी आवश्यक उपचार किया गया। अन्य 528 कलाकृतियाँ उपचार की प्रक्रिया में हैं। प्रदर्शनी के लिए भेजे जाने से पूर्व कलाकृतियों की स्थिति रिपोर्ट तैयार करने अथवा उपचार संबंधी प्राथमिकता निश्चित करने के लिए 592 कलाकृतियों का परीक्षण किया गया। संरक्षण प्रयोगशाला के कर्मचारियों ने लोक सभा में 54 चित्रफलकों का रासायनिक शोधन, सम्पिडन और परिरक्षण किया तथा प्रधानमंत्री निवास से प्राप्त तीन कलाकृतियों का रासायनिक शोधन और परिरक्षण भी किया। जैव प्रकृति की 246 कलाकृतियों का फंफूद और कीटाणुओं से बचाव हेतु धूम्रीकरण किया गया। वर्ष के दौरान रसजा फाउंडेशन और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संकलन का परीक्षण किया गया और कलाकृतियों के अनुरक्षण हेतु आवश्यक परामर्श दिया गया।

## शोध संबंधी गतिविधियां

5.19 बारह लघुचित्रों के वैज्ञानिक परीक्षण, प्रलेखन और प्रमाणीकरण संबंधी परियोजना को पूरा किया गया। प्रस्तर की चार और ताम्र मिश्र धातु की बत्तीस कलाकृतियों का विस्तृत परीक्षण और वैज्ञानिक प्रलेखन कार्य किया गया।

## छायाचित्र प्रलेखन

5.20 वर्ष के दौरान, कलाकृतियों के रासायनिक उपचार से पहले, उपचार के दौरान और बाद के 1031 नेगेटिव और 1472 प्रिंट तैयार किए गए। इसके अतिरिक्त, 24 एक्सरे और 234 स्लाइडें भी तैयार की गईं।

## वर्ष 1993-94 के दौरान अन्य विविध कार्य :

5.21 तेहरान प्रदर्शनी के लिए चुनी गई 160 कलाकृतियों का गौण उपचार किया गया। इसके अतिरिक्त, उनका पूरी तरह परीक्षण कर स्थिति-रिपोर्ट भी तैयार की गई।

5.22 वर्ष के दौरान, राष्ट्रीय संग्रहालय में आयोजित राजा रवि वर्मा प्रदर्शनी के लिए चुने गए श्री चित्रा आर्ट गैलरी, त्रिवेन्द्रम के 47 तैलचित्रों का परीक्षण किया गया तथा उनकी स्थिति रिपोर्ट तैयार की गई।

## भविष्य के लक्ष्य

5.23 1993-94 की शेष अवधि के दौरान, प्रयोगशाला द्वारा 250 कलाकृतियों का रासायनिक उपचार, प्रस्तावित प्रदर्शनीयों के लिए प्राप्त हुई कलाकृतियों की स्थिति रिपोर्ट और स्लाइडों का अभिज्ञान तथा वर्गीकरण किए जाने की संभावना है।

## राष्ट्रीय कला संरक्षण और संग्रहालय-विज्ञान इतिहास संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली

### भूमिका

5.24 संस्कृति विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण के अर्न्तगत भारत सरकार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय कला संरक्षण और संग्रहालय-विज्ञान इतिहास संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली 1860 के सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, XXI के अधीन सोसायटी पंजीयक के यहां पंजीकृत एक सोसायटी है। इसने जनवरी 1989 से कार्य करना शुरू किया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सिफारिश पर, संस्थान को मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग, नई दिल्ली द्वारा 28 अप्रैल, 1989 को इसे सम विश्व विद्यालय घोषित किया गया था। आलोच्य वर्ष के दौरान शुरू किए गए कार्यक्रमों और कार्यकलापों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :—

### कक्षाएं और छात्र

5.25 नये सेमेस्टर के लिए कक्षाएं 12 अगस्त, 1993 से शुरू की गईं। विभिन्न नये छात्रों को विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिया गया। "भारतीय कला निधि" नामक हिन्दी माध्यम का एक प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम मार्च, 1993 से शुरू किया गया।

## शिक्षण कार्यक्रम

5.26 एम० ए० और पी० एच० डी० छात्रों की कक्षाएं सप्ताह में छः दिन आयोजित की गयीं। कला संरक्षण और संग्रहालय-विज्ञान के क्षेत्र में व्याख्यान देने, सेमिनार आयोजित करने तथा पी० एच० डी० पाठ्यक्रमों का पर्यवेक्षण करने के लिए भारतीय तथा विदेशों के विख्यात विद्वानों को आमंत्रित किया गया।

## दीक्षान्त समारोह

5.27 संस्थान का द्वितीय दीक्षान्त समारोह अप्रैल, 1993 में आयोजित किया गया तथा विभिन्न विषयों में 9 छात्रों को स्नातकोत्तर उपाधि प्रदान की गई। "भारत कला और संस्कृति" में 80 छात्रों को और "कला मूल्यांकन पाठ्यक्रमों" में 69 छात्रों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

## स्लाइड लाइब्रेरी

5.28 संस्थान के शिक्षण कार्य में स्लाइड चित्रों तथा अन्य श्रव्य-दृश्य सामग्री की सदैव सहायता ली जाती है। अतः संस्थान ने रंगीन और श्याम-श्वेत स्लाइडों काफ़ी संख्या में तैयार करके उनको स्लाइड एलबमों और बक्सों में रखा।

## भूमि की खरीद

5.29 न्यू औखला औद्योगिक विकास, प्राधिकरण (नोएडा) ने संस्थान के लिए 3 एकड़ भूमि निर्धारित की है तथा भूमि इस वर्ष के दौरान प्राप्त हो जाने की संभावना है।

## सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद

5.30 सालारजंग संग्रहालय अधिनियम, 1961 की सं० 26 के अन्तर्गत हैदराबाद स्थित सालारजंग संग्रहालय को सालारजंग पुस्तकालय के साथ-साथ एक राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया गया था। इस अधिनियम के अन्तर्गत सालारजंग संग्रहालय बोर्ड के द्वारा इसका प्रबंध किया जाता है। संग्रहालय के मुख्य कार्यों में संग्रहालय की सांस्कृतिक और कलात्मक संपदाओं का संग्रहण, प्रलेखन, परिरक्षण तथा प्रतिपादन करना शामिल है। संग्रहालय आम जनता को शिक्षा प्रदान करने और जागरूक बनाने के उद्देश्य से अस्थायी प्रदर्शनियां, सेमिनार, व्याख्यान-माला और विभिन्न अन्य शैक्षिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित करता है। संग्रहालय, संस्कृति विभाग के अन्तर्गत पूर्णतः वित्तपोषित एक स्वायत्त संगठन है।

## चल-प्रदर्शनी

5.31 वर्ष 1992-93 के दौरान, 40 शिक्षा संस्थाओं में "हैदराबाद के स्मारक" विषय पर एक चल-प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसे 24,399 विद्यार्थियों ने देखा। अप्रैल से सितम्बर, 1993 तक यह प्रदर्शनी चलती रही और इसे 26 शैक्षिक संस्थाओं में लगाया गया तथा इसे लगभग 16,302 विद्यार्थियों ने देखा।

## विचार-गोष्ठी

5.32 अगस्त, 1992 के दौरान "हैदराबाद-ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य" विषय पर एक दो-दिवसीय विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें 20 अध्येताओं ने भाग लिया।

## प्रकाशन

5.33 आलोच्य वर्ष के दौरान, संग्रहालय द्वारा निम्नलिखित प्रकाशन निकाले गए:—

1. सालारजंग संग्रहालय मार्गदर्शिका (हिन्दी में)
2. फ़ारसी पाण्डुलिपियों की सूची खण्ड दस (वर्ष 1992-93 में प्रकाशित)
3. अरबी पाण्डुलिपियों की सूची खण्ड सात

## बाल सप्ताह

5.34 इस अवधि के दौरान स्कूल एवं कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए चार भाषाओं अर्थात् हिन्दी, तेलुगु, उर्दू और अंग्रेजी में निबन्ध लेखन तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताएं और चित्रकला प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में कुल 645 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

## संग्रहालय सप्ताह

5.35 संग्रहालय सप्ताह 8 से 14 जनवरी, 1993 तक मनाया गया। उपर्युक्त के अलावा, संग्रहालय में आने वाले दर्शकों को 5 दीर्घाओं अर्थात् प्रवर्तक-दीर्घा, धातु-पात्र दीर्घा, फ्रांसीसी कला, घड़ी तथा पाण्डुलिपि दीर्घा पर चार भाषाओं में विवरणियां बांटी गईं। रंगोली प्रतियोगिता, जो केवल महिलाओं के लिए थी, का आयोजन 13 जनवरी, 1993 को किया गया। कुल मिलाकर, विभिन्न आयु-वर्गों की 95 महिलाओं ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया।

## पाण्डुलिपियाँ

5.36 वर्ष के दौरान पाण्डुलिपि विभाग के अधिकारियों ने 6592 पाण्डुलिपियां (अरबी, फ़ारसी और उर्दू) का तथ्यात्मक सत्यापन किया तथा 551 पाण्डुलिपियों का सूची-पत्र तैयार किया। वर्ष के दौरान, 434 अध्येताओं को सहायता प्रदान की गई। स्टाफ ने 960 वर्गीकरण कार्ड भी तैयार किये, 552 पाण्डुलिपियों का धूम्रिकरण (फ्यूमीगेशन) किया गया और 55 पाण्डुलिपियों के 10,127 फोलियों की माइक्रो-फिल्में तैयार की गईं। पाण्डुलिपि विभाग के स्टाफ द्वारा उर्दू इतिहास की 1358 पाण्डुलिपियों की अनुक्रमणिका तथा 219 लेबल तैयार किये गये।

5.37 आलोच्य वर्ष के दौरान, सरकार ने विभिन्न वस्तुओं का सत्यापन करने के लिए एक स्टाफ सत्यापन समिति गठित की। अप्रैल से सितम्बर, 1993 के दौरान पाण्डुलिपि विभाग के अधिकारियों ने 1043 मुक्त सुलेख खण्डों का तथ्यात्मक सत्यापन किया, अरबी और उर्दू पाण्डुलिपियों की 195 श्रेणी विभाजन सूचियाँ तैयार की, लेखकों की अनुक्रमणिका तैयार करने के लिए 1299 प्रविष्टियाँ कीं, 28 पाण्डुलिपियों का धूम्रिकरण किया तथा 188 अध्येताओं को सहायता प्रदान की।

## संरक्षण प्रयोगशाला

5.38 वर्ष के दौरान, संरक्षण प्रयोगशाला के स्टाफ द्वारा लघु चित्रों सहित 2422 कला वस्तुओं को रसायनों द्वारा संसाधित किया गया तथा चित्रों का जीर्णोद्धार करने वाले ने 20 तैलचित्रों का जीर्णोद्धार किया।

## भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता

5.39 भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता संस्कृति विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा पूर्णतः वित्तपोषित एक सांविधिक निकाय है। यह देश के प्रमुख संग्रहालयों में से एक है। इसकी स्थापना भारतीय संग्रहालय अधिनियम, 1910 (1910 के अधिनियम 10) के अन्तर्गत की गई थी। इसके न्यासी मंडल के अध्यक्ष पश्चिम बंगाल के राज्यपाल पदेन रूप से होते हैं। वर्ष के दौरान, विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत भारतीय संग्रहालय के प्रमुख कार्यकलाप निम्नलिखित पैराग्राफों में दिए गए हैं :—

## हाल ही के अधिग्रहण

5.40 वर्ष के दौरान, नटराज की दसवीं शताब्दी की चोल कांस्य प्रतिमा, पाल सेन परम्परा से संबंधित विष्णु की प्रस्तर की प्रतिमा, अवेनेन्द्रनाथ द्वारा एक चित्रकला तथा नटराज परिवार की अलंकृत तलवार संग्रहालय द्वारा अधिग्रहीत की गईं। नटराज और विष्णु की प्रतिमाएं सीमाशुल्क विभाग द्वारा पकड़ी गई थीं और बाद में उन्हें भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के पास जमा करा दिया गया था। उन्हें भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संग्रहालय को उपहार स्वरूप भेंट कर दिया गया था। हाल ही के कुछ अधिग्रहणों को मासिक प्रदर्श के रूप में प्रदर्शित किया गया।

## जन-शिक्षा पाठ्यक्रम के अर्न्तगत व्याख्यान

5.41 आलोच्य अवधि के दौरान, प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, लघु पाठ्यक्रम तथा विशेष व्याख्यानों के संबंध में संग्रहालय द्वारा 55 व्याख्यानों की व्यवस्था की गई। पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री डा० प्रताप चन्द्र चुन्दर ने "कलकत्ता और राष्ट्रीयता का विकास" विषय पर 24 अगस्त, 1993 को इस वर्ष का कलकत्ता-व्याख्यान दिया।

## मासिक प्रदर्श

5.42 आलोच्य अवधि के दौरान अलंकृत बर्मी कटोरा, नटराज और भूटिया व लेपचा जनजातीय वेशभूषाओं तथा समकालीन रूचि के अन्य विषयों के संबंध में बड़ी संख्या में मासिक प्रदर्शों की व्यवस्था की गई। इसके अतिरिक्त, निम्नलिखित प्रदर्शनियां लगाई गईं :—

(क) मंगोलिया की बौद्ध कला पर प्रदर्शनी

(ख) सिंगापुर के बौद्ध-मार्ग पर प्रदर्शनी

- (ग) मंगोलिया में बुद्ध के पवित्र स्मृति चिन्हों से संबंधित प्रदर्शनी  
 (घ) भारत में रोमन पुरावस्तुओं पर अस्थाई प्रदर्शनी।

### इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद

5.43 इलाहाबाद संग्रहालय की स्थापना इलाहाबाद नगर पालिका बोर्ड द्वारा 1931 में की गई थी। इलाहाबाद संग्रहालय निगम ने इसे इलाहाबाद संग्रहालय सोसाइटी को 29.11.86 को औपचारिक रूप से सौंप दिया था। यह एक पंजीकृत स्वायत्त निकाय है, जो भारत सरकार द्वारा पूर्णतः वित्तपोषित है।

5.44 आलोच्य वर्ष के दौरान, संग्रहालय ने कई सेमिनारों, व्याख्यान और कार्यशालाएं आयोजित कीं। इसने पांच दीर्घाओं में नई प्रदर्शनियां भी आयोजित कीं। संग्रहालय की सभी दीर्घाएं पहली बार जन-सामान्य के लिए खोली गई हैं।

### पुस्तकालय

5.45 संग्रहालय में एक वातानुकूलित पुस्तकालय है, जो भारत के कोने-कोने से अध्येताओं और कला समालोचकों का ध्यान आकृष्ट करता है। समय के साथ-साथ पुस्तकालय की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। पुस्तकालय ने समीक्षाधीन अवधि के दौरान 413 पुस्तकों और 12 पत्रिकाओं को संग्रहीत किया। पुस्तकालय अध्येताओं और संस्थानों के लाभ के लिए “अतिरिक्त संग्रहों की सूची” जारी करने की तैयारी कर रहा है। पाठकों को बेहतर सेवा देने के लिए सूचियां बनाने और वर्गीकरण करने का कार्य शुरू किया गया है।

### संरक्षण प्रयोगशाला

5.46 वर्ष के दौरान, पांडुलिपियों के लगभग 550 पन्नों को समेकित किया गया और उन पर परत चढ़ाई गई। पत्थर की 23 मूर्तियों का रासायनिक उपचार किया गया। 2 टेराकोटा को रासायनिक रूप से साफ किया गया और उन्हें संरक्षित किया गया। विभिन्न अनुभागों के आरक्षित संग्रहों का निरीक्षण किया गया और कुछ वस्तुओं को फ्यूमीगेट किया गया।

### रेप्रोग्राफी प्रयोगशाला

5.47 समीक्षाधीन अवधि के दौरान रेप्रोग्राफी एकक ने उल्लेखनीय प्रगति की। टेराकोटा की 1500 से अधिक बड़ी मूर्तियों और छोटी मूर्तियों का प्रलेखन किया गया। एकक ने संग्रहालय के विभिन्न कार्यकलापों और कार्यक्रमों को भी शामिल किया।

## II समकालीन इतिहास और कला संग्रहालय

### विक्टोरिया स्मारक हॉल, कलकत्ता

5.48 मध्यकालीन और आधुनिक भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के विशेष संदर्भ में विक्टोरिया स्मारक एक संग्रहालय है। यह एक स्वायत्त संस्था है, जो पश्चिम बंगाल के राज्यपाल की अध्यक्षता में भारत सरकार, संस्कृति विभाग के तत्वावधान में न्यासी बोर्ड द्वारा अभिशासित है। राष्ट्रीय महत्व के इस स्मारक में चित्रों, मूर्तियों, हथियारों, पांडुलिपियों, दस्तावेजों, नक्शों, सिक्कों, मोहरों, वस्त्रों, शिल्प तथ्यों तथा राज के अन्य विभिन्न स्मरणीय तथ्यों तथा इनके प्रति भारत के प्रत्युत्तर के संबंध में बहुत ही अच्छा संग्रह है।

### राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली

5.49 राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय मुख्य रूप से हमारी समकालीन दृश्य कला की खान है, जिसमें तीन चरणों का प्रतिनिधित्व होता है: (1) 19वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, (2) 20वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध और (3) 20वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध। वस्तुतः लगभग 13,000 कलाकृतियों के एक बड़े संग्रह में रंग-चित्र, मूर्तियां, आरेखण, कला एवं प्रिंट्स शामिल हैं। इस संग्रह में प्रत्येक वर्ष क्रय करके लगभग 200 कलाकृतियों की बढ़ोतरी की जाती है।

### शैक्षिक कार्यक्रम

5.50 आलोच्य वर्ष के दौरान, 1534 छात्रों के 38 स्कूल दलों ने, जिनमें शिक्षक भी थे, राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय का दौरा किया। इनके अलावा 378 शिक्षकों का शिक्षक दल भी संग्रहालय देखने आया। जहां परिवहन संबंधी सुविधायें उपलब्ध नहीं हुई हैं, वहां के छात्रों को स्कूलों से लाने तथा उन्हें वापस भेजने के लिए 50 सीटों वाली बस प्राप्त करने का मामला विचाराधीन है।



## कला स्केच क्लब

5.51 दो भिन्न-भिन्न आर्यु-वर्गों, कनिष्ठ और वरिष्ठ के लिए 25 स्केच क्लब सम्मेलन आयोजित किए गए। अतिथि प्रतिष्ठित कलाकारों द्वारा उनको स्थल पर तुरंत व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

## फिल्म प्रदर्शन

5.52 रविवारों, द्वितीय शनिवारों तथा कार्य-दिवसों को 165 फिल्म प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। 8 और फिल्में खरीदने के प्रस्ताव के संबंध में कार्यवाही चल रही है।

## कला संदर्भ पुस्तकालय

5.53 आलोच्य अवधि के दौरान, नियमित रूप से मंगाई जा रही भारतीय और विदेशी पत्रिकाओं एवं दैनिक समाचार-पत्रों के अतिरिक्त पुस्तकालय में 104 कला-पुस्तकों की वृद्धि की गई। कला अध्येताओं सहित 625 पाठकों ने पुस्तकालय की मदद ली। कला समाचार से संबंधित कतरनों को नियमित रूप से परिरक्षित किया जाता रहा।

## कला मूल्यांकन पाठ्यक्रम

5.54 आलोच्य अवधि के दौरान, भारतीय समकालीन, आधुनिक एवं अंतर्राष्ट्रीय कला पर 32 सोदाहरण व्याख्यानों के दो पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। कला मूल्यांकन पर 60 व्याख्यानों का एक उन्नत पाठ्यक्रम भी वर्ष के दौरान शुरू किया गया।

## पुनरूद्धार प्रयोगशाला

5.55 वर्ष के दौरान, 11 कलाकृतियों का पुनरूद्धार किया गया और 50 कलाकृतियों की जांच की गई, कलाकृतियों की स्थिति-रिपोर्ट तैयार की गई और उनका धूम्रकरण किया गया।

## प्रकाशन

5.56 वर्ष के दौरान, दीर्घा पर एक रंगीन फोल्डर प्रकाशित किया गया। राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय के संग्रह, खंड 2 की ग्रंथ सूची के मुद्रण तथा तीन विख्यात भारतीय कलाकारों के विनिबंधों के पुनः मुद्रण के कार्यों के संबंध में कार्यवाही चल रही है।

## कला संग्रह

5.57 कला वस्तुओं के क्रय के सामान्य कार्य के अलावा, संग्रहालय ने अपने संग्रह में से "फोर पायनियर्स" और "न्यू अक्विजिसन्स" की प्रदर्शनियां आयोजित कीं। संग्रहालय ने अपने संग्रह पर कला फिल्मों के निर्माण तथा कला वस्तुओं के प्रेम आदि को तैयार करने का कार्य शुरू किया है।

## कला-फिल्मों का निर्माण

5.58 तीन कला-फिल्मों अर्थात् (I) आधिकारिक कला रूप, (II) बंगाल पुनर्जागरण और (III) चार पायनियर्स का निर्माण कार्य क्रमशः मैसर्स सुहासिनी मुले, सर्वजीत इन्टरनेशनल तथा देवव्रत राय को सौंपा गया। निर्माताओं द्वारा भेजी गई सूचना के अनुसार इन तीन फिल्मों में से दो फिल्में पूरी हो चुकी हैं। तीसरी फिल्म "आधिकारिक कला रूप" का निर्माण कार्य चल रहा है।

## फोटो स्टूडियो

5.59 150 निगेटिव, 176 श्वेत व श्याम और रंग छायाचित्र एवं 254 रंगीन स्लाइडें तैयार की गईं।

## संगणक केन्द्र

5.60 संग्रहालय में एक संगणक केन्द्र भी स्थापित किया गया है, जहां पर सभी कला वस्तुओं की प्रविष्टियों से संबंधित आकड़े पूरे कर लिये गये हैं। रंगीन स्कैनिंग का कार्य चल रहा है।

## केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग का कार्य

5.61 आरक्षित संग्रह सहित संपूर्ण संग्रहालय की दोनों मंजिलों को वातानुकूलित किया जा रहा है तथा विकलांगों के लिए एक लिफ्ट भी लगाई जा रही है।

## प्रदर्शनियां

5.62 आलोच्य अवधि के दौरान, राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय के संग्रह में से 75 रंग-चित्रों की एक प्रदर्शनी प्रदर्शित (गैरिया) भेजी गई है और प्रदर्शनी के साथ एक तकनीकी विशेषज्ञ भी भेजा गया है। तत्पश्चात् प्रदर्शनी काहिरा और एत्नेकजेन्द्रिय में भेजी जायेगी ताकि "मिस्र में भारतीय संस्कृति के दिवसों" का भाग बन सके।

5.63 आने वाली प्रदर्शनियों के अंतर्गत श्री राम कुमार की कृतियों की एक प्रदर्शनी राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय में इस वर्ष के दौरान आयोजित की गई है। भारत-मिस्र सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत मानव संसाधन विकास मंत्री जी के द्वारा समकालीन मिस्र कला की एक अन्य प्रदर्शनी का उद्घाटन दिसम्बर, 1993 में किया गया है।

## नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली

5.64 नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय में निम्नलिखित शामिल हैं: (1) जवाहरलाल नेहरू के जीवन और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित व्यक्तिगत संग्रहालय, (2) आधुनिक भारत के इतिहास से संबंधित मुद्रित सामग्री, पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और फोटोग्राफों का एक पुस्तकालय, (3) सुप्रसिद्ध भारतीयों के निजी पत्रों और संस्थाओं के अप्रकाशित रिकार्डों का एक भंडार, जिसमें ऐतिहासिक शोध के लिए मूल सामग्री प्राप्त होती है, (4) पुराने प्रलेखों, रिकार्डों और समाचार पत्रों के सूक्ष्म फिल्मों का एक लिए रिप्रोग्राफी एकक, (5) जिन लोगों ने मार्क्सवादी मामलों में भाग लिया है, उनके संस्मरणों के आधार पर लिखित अभिलेखों के अनुपम के रूप में एक मौखिक इतिहास प्रभाग और (6) एक अनुसंधान केन्द्र।

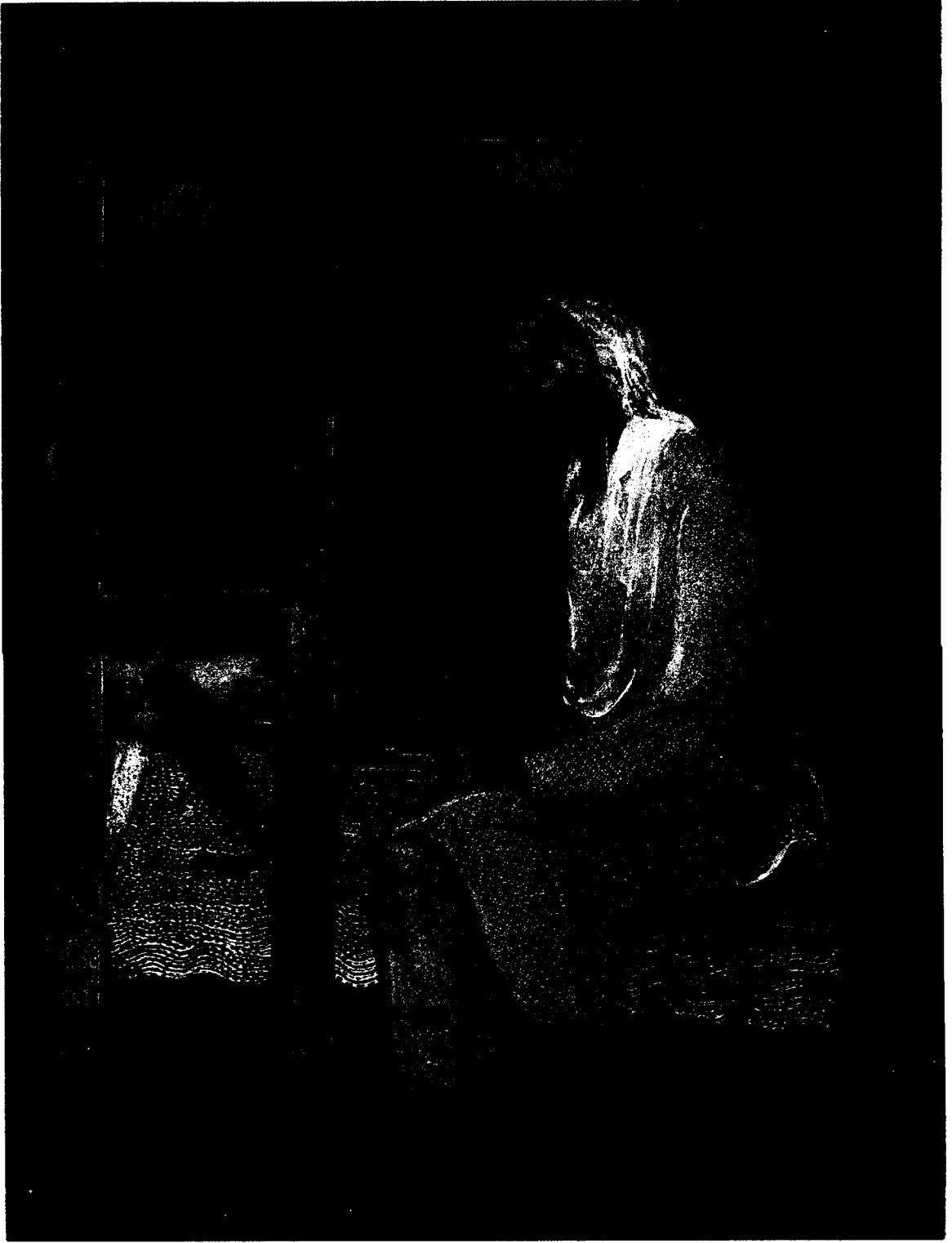
5.65 जवाहरलाल नेहरू के जीवन और उनके समय को दृश्य सामग्री के माध्यम से प्रदर्शित करने वाला यह संग्रहालय भारत और विदेशों से आने वाले आंगतुकों के आकर्षण का केन्द्र बना रहा। आलोच्य अवधि के दौरान, 3.71 लाख से भी अधिक आंगतुक संग्रहालय देखने आए। यह संग्रहालय भारत और विदेशों से राजधानी में आने वाले प्रतिष्ठित लोगों के यात्रा कार्यक्रमों में भी प्रमुख स्थान प्राप्त करता रहा। आलोच्य वर्ष के दौरान, विदेशों से जो प्रमुख आंगतुक इसे देखने आए, उनमें इस्वाइल के शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय के निदेशक के नेतृत्व में शिष्टमंडल, मोक्सको संसदीय शिष्टमंडल और नेपाली शिष्टमंडल शामिल हैं।

5.66 पुस्तकालय, जो कि आधुनिक भारतीय इतिहास तथा सामाजिक विज्ञान का प्रमुख केन्द्र है, के संग्रह में निरंतर वृद्धि हुई है और सेवाकोटि में सुधार हुआ है। सितम्बर, 1993 की अवधि तक 2491 पुस्तकें वर्तमान स्टॉक में जोड़ी गईं, जिनको मिलाकर अब कुल संख्या 1,76,321 हो गई है। "नेहरूआना" संकलन में शीर्षकों की संख्या बढ़कर 1346, "गांधीआना" संकलन में कुल संख्या 1836 और "इंदिराआना" संकलन में शीर्षकों की कुल संख्या 311 हो गई है। पुस्तकालय के फोटो अनुभाग में छायाचित्रों के संग्रह की संख्या बढ़कर अब 85,387 हो गई है।

5.67 अभिलेखागार के संकलनों में रिकार्डों की संप्राप्ति में वृद्धि होती रही। इनमें से कुछ इस प्रकार से थे:- महात्मा गांधी (1935-48, 1975), इंदिरा गांधी (1960-84), राजीव गांधी (1984-91), जी. एस. कोठारी (1991-93), एस. पी. मुखर्जी (1936-46), भगवत दयाल शर्मा (1941, 1951-84), डा. गोपाल सिंह (1961-90), बी. जी. खेर (1903-57, 1961), एस. पी. पी. थोर्ट (1920-22), के. बी. अन्तरोलिकर (1930-79), राममनोहर लोहिया (1945), मधु लिमये (1991-93), डैनियल लतीफी (1930-83), सजल बसु (1970-93), ई. एस. रेड्डी (1911-93) तथा उमा शंकर दीक्षित (1942-90)। मार्च 1994 तक प्राप्त होने वाले संभावित संग्रहों में ऑल इंडिया विमनस कान्फरेन्स, सेनापति बापत, पी. सी. सेन, एस. के. वानखेड़े, गिरिलाल जैन, जैनेन्द्र कुमार जैन, याश, अत्रामाहय शिंदे, यशपाल कपूर, बीरन राय और मद्रास अभिलेखागार से जवाहरलाल नेहरू के भाषण इत्यादि शामिल हैं। मौखिक इतिहास विभाग में साक्षात्कार के 70 सत्र रिकार्ड किए हैं। इसमें साक्षात्कार किए गए व्यक्तियों की संख्या बढ़कर 1,094 तथा रिकार्ड किए गए पत्रों की संख्या बढ़कर 3,800 हो गई है।

5.68 रिप्रोग्राफी एकक ने समाचार पत्र, निजी कागज-पत्र तथा पत्रिकाओं के 35 मि.मी. के लगभग 1,00,969 फ्रेम और 16 मि.मी. के 38,400 फ्रेम के नेगेटिव माइक्रो फिल्म तैयार करके शोध और संदर्भ के लिए पुस्तकालय के माइक्रोफिल्म मकानों का संवर्धन किया है। इसमें महात्मा गांधी के कागज-पत्रों की दूसरी और तीसरी किस्में शामिल हैं।

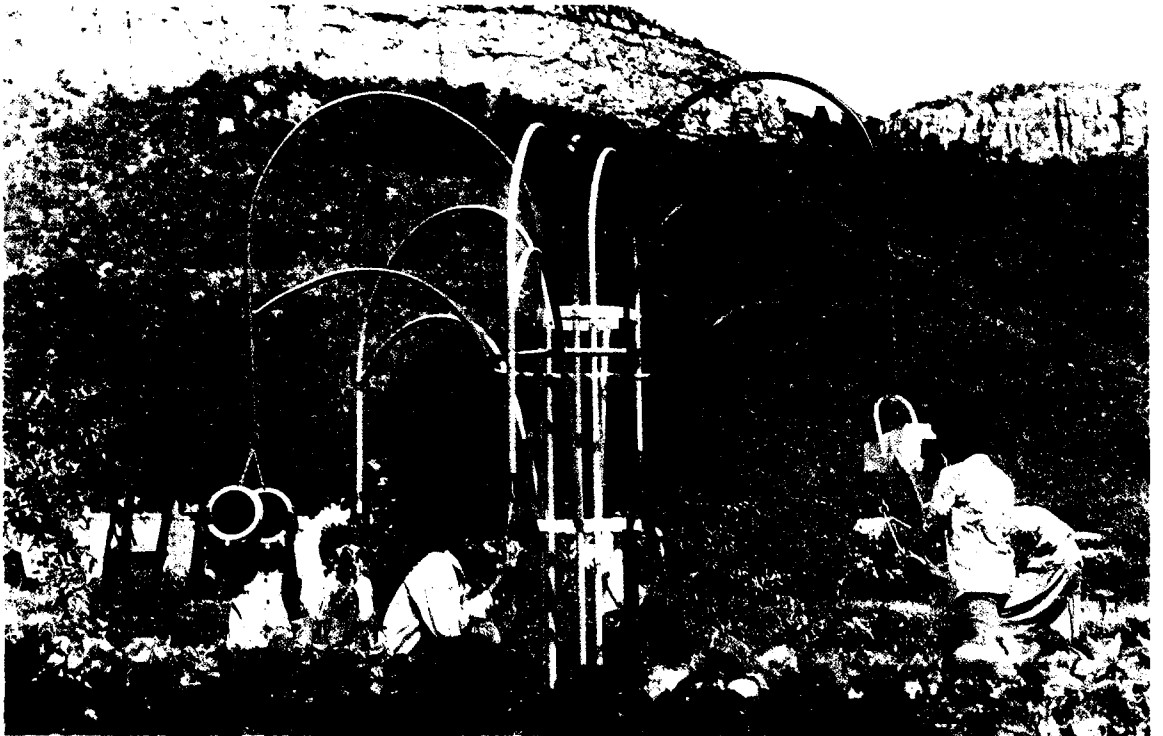
5.69 एकक ने लगभग 13,115 मीटर की पॉजिटिव माइक्रोफिल्म, पुराने छायाचित्रों के 10,44 नेगेटिव, 1064 छायाचित्र, माइक्रोफिल्मों की 14,902 हार्ड कॉपियाँ 1,29,476 जीरोकम प्रतियाँ तैयार कीं, जो अध्यात्मों और अन्य संस्थाओं को उपलब्ध कराई गईं तथा उनके रिकार्ड के लिए भी रखा गया।



अंजोली इला मेनन की चित्रकारी - माताजी, 1983 - राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय  
Painting by Anjolie Ela Menon - Mataji, 1983 - NGMA



एक भित्ति चित्र के संरक्षण-कार्य में लगे राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा संरक्षण अनुसंधानशाला, लखनऊ के वैज्ञानिकगण  
Scientists of NRLC, Lucknow in the process of Conserving a Wall Painting



विज्ञान केन्द्र, तिरुपति में विज्ञान पार्क प्रदर्श-ऑप्टिक ट्री  
Science Park Exhibit - Optic Tree - At Science Centre, Tirupati

5.70 परिरक्षण एकक में इतिहास और सभ्यता के विज्ञानों के क्षेत्र में वाडित्यपूर्ण शोध कार्यों के क्षेत्र में बहुमूल्य प्रलेखों की सम्पत्त एवं पुनर्स्थापना का संबंध में उपयोग्य सेवाएँ प्रदान करना जारी रखना। संग्रहालय ने भारतीय समाज की समझ और परिवर्तनों से संबंधित विषयों पर 12 सेमिनार/व्याख्यान आयोजित किए। संस्था ने तीन लोक शांति और निरस्त्रीकरण संघ के प्रतिनिधिमंडल के साथ (i) शांति और निरस्त्रीकरण विषय पर और (ii) "भारतीय राष्ट्रीयता और भारतीय एकता के समक्ष आज की चुनौतियाँ" नामक विषयों पर दो चर्चाएँ आयोजित की। इटली के विख्यात राजनीतिक विचारक, ग्राम्स्की की जन्म शती के अवसर पर "राज्य विचार धारा और सभ्य समाज" विषय पर तीन-दिवसीय मंगोरी का आयोजन किया गया।

## राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद्

5.71 संस्कृति विभाग के अधीन राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् नामक यह स्वायत्त संगठन मुख्यतः विविध अन्वयनक्रियात्मक कार्यक्रमों एवं कार्यक्रमलापों के जरिए विशेषतः छात्रों से और सामान्यतः आम जनता में विज्ञान व प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने के कार्य में लगा है।

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् के भटक

5.72 राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् देश भर के निम्नलिखित विज्ञान संग्रहालयों/केन्द्रों/पार्कों का संचालन और प्रबंधन करती है :

- (क) बिड़ला औद्योगिकी एवं प्रौद्योगिकी संग्रहालय (बि. औ. प्रौ. सं.) कलकत्ता।
- (ख) विश्वेश्वरैया औद्योगिकी और प्रौद्योगिकी संग्रहालय (वि. औ. प्रौ. सं.) बंगलौर।
- (ग) नेहरु विज्ञान केन्द्र (ने. वि. के.) बम्बई।
- (घ) राजीव गांधी राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र, दिल्ली (रा. गां. रा. वि. के., दि.)
- (ङ) केन्द्रीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण प्रयोगशाला (के. अ. प्र. प्र.), कलकत्ता।
- (च) श्रीकृष्ण विज्ञान केन्द्र, पटना।
- (छ) क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र, लखनऊ।
- (ज) क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र, भुवनेश्वर।
- (झ) रमण विज्ञान केन्द्र, नागपुर।
- (ञ) क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र, गुवाहाटी।
- (ट) क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र, भोपाल।
- (ठ) क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र, तिमपति।
- (ड) क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र, कालीकट।
- (ढ) जिला विज्ञान केन्द्र, पुरूलिया।
- (ण) जिला विज्ञान केन्द्र, गुलबर्गा।
- (त) जिला विज्ञान केन्द्र, धरमपुर।
- (थ) जिला विज्ञान केन्द्र, तिरुनेलवेली।
- (द) उप-क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र, धनकनाल (उड़ीसा)।
- (ध) विज्ञान पार्क, कपिलास (उड़ीसा)।
- (न) जिला विज्ञान केन्द्र और राष्ट्रीय छात्र विज्ञान शिविर, दीघा।
- (प) विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं पर्यावरण हॉल (हॉस्टे), दिल्ली।

## मारीशस में राजीव गांधी विज्ञान केन्द्र

5.73 वर्ष के दौरान राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् ने मारीशस में "टर्न की" के आधार पर एक पूर्ण विकसित विज्ञान केन्द्र विकसित करने से संबंधित परियोजना प्रस्ताव तैयार किया। प्रस्ताव को पूर्णतया स्वीकार कर लिया गया है और परियोजना का कार्य निरंतर प्रगति पर है। सलाई किए जाने वाले सभी प्रदर्शनों को संकल्पनाबद्ध और विकसित करने का कार्य राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् की विभिन्न इकाइयों में किया जा रहा है।

## कलकत्ता में विज्ञान शहर

5.74 कलकत्ता के निवासियों तथा इस महानगर में आने वाले राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए एक मुख्य आकर्षण के रूप में इस विज्ञान शहर की योजनाबद्ध स्थापना की जा रही है। पूर्वी महानगरीय उप मार्ग और पार्क सर्कस कनेक्टर के जंक्शन पर 40 एकड़ के भूखंड पर स्थापित होने वाला यह विज्ञान शहर विज्ञान व प्रौद्योगिकी को प्रस्तुत करने वाले विश्व के सर्वोत्तम व विशालतम शहरों में से एक होगा।

5.75 आलोच्यारवध के दौरान, राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद ने संग्रहालयों/केन्द्रों की स्थायी वीथियों में प्रदर्शनी के लिए नए प्रदर्शों की आयोजना पर, नई वीथियों व नए केन्द्रों की स्थापना करने पर विशेष जोर दिया। स्कूल विज्ञान कार्यक्रमों की संकल्पना को लोकप्रिय बनाने पर विशेष बल दिया गया।

## राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा संरक्षण अनुसंधान प्रयोगशाला, लखनऊ

5.76 राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा संरक्षण अनुसंधान प्रयोगशाला, लखनऊ संस्कृति विभाग के अंतर्गत एक अधीनस्थ कार्यालय है तथा इसे 1976 में अनुसंधान और परिरक्षण, परिरक्षण के क्षेत्र में प्रशिक्षण, पुस्तकालय और प्रलेखन तथा संग्रहालयों, पुरातत्व विभागों और अन्य को तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए स्थापित किया गया है।

### संरक्षण

5.77 संग्रहालय तथा अन्य संस्थाएं अपनी वस्तुओं के परिरक्षण और जीर्णोद्धार के लिए इस प्रयोगशाला से हमेशा अनुरोध करते रहते हैं। वर्ष के दौरान प्रयोगशाला द्वारा संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के पुरातत्व संग्रहालय से प्राप्त पंच-रत्नी-गीता के 200 पृष्ठों सहित विभिन्न वस्तुओं का संरक्षण किया गया, जो इस प्रकार हैं:—शीला अग्रवाल, इलाहाबाद से प्राप्त प्लाइवुड पर बनाए गए 2 तैलचित्र, तंजावुर कला वीथी, तंजावुर से प्राप्त धातु की 9 वस्तुएं, राज्य संग्रहालय, लखनऊ से प्राप्त पत्थर की 3 मूर्तियां तथा वर्मन शैली के 6 चित्र, रामकथा संग्रहालय अयोध्या, जिला फैजाबाद से प्राप्त 18 लघुचित्र तथा 10 सिक्के, लाइट इंफैन्टरी, फैजाबाद से प्राप्त 2 तैलचित्र तथा 1 मिट्टी की प्लेट और डोगरा रेजीमेंट, जबलपुर से प्राप्त 1 पुस्तक।

### पुस्तकालय और प्रलेखन

5.78 वर्ष के दौरान दिसम्बर, 1993 तक, 620 पुस्तकें अधिग्रहीत तथा दर्ज की गईं, पत्रिकाओं के 300 अंक प्राप्त तथा दर्ज किए गए, माइक्रोफिश रीडर-प्रिंटर के माध्यम से 100 माइक्रोफिश मुद्रित कराए गए और 30 दिसंबर, 1992 तक पुस्तकालय में प्राप्त पत्रिकाओं की एक सूची संकलित की गई।

### फोटो प्रलेखन

5.79 प्रयोगशाला द्वारा तीन फोटो प्रदर्शनियां आयोजित की गईं तथा निम्नलिखित फोटो प्रलेखन किया गया, श्याम और श्वेत कला वस्तुएं—1250 एक्सपोजर, रंगीन मुद्रण—1000 एक्सपोजर, रंगीन स्लाइड—700 एक्सपोजर, फोटो प्रिन्ट और संवर्धन-2100

### क्षेत्रीय एवं स्थानीय संग्रहालयों को प्रोन्नत एवं सुदृढ़ करना

5.80 चूंकि संस्कृति विभाग में भारत संघ के अन्य राज्यों के सांस्कृतिक पहलुओं के प्रतिनिधित्व की व्यवस्था करने वाले क्षेत्रीय संग्रहालयों को देश में स्थापित करने के संबंध में कोई योजना नहीं थी, अतः विभाग द्वारा एक ऐसी नई योजना शुरू करने का एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है। आठवीं पंचवर्षीय योजना के लिए योजना आयोग द्वारा गठित संस्कृति संबंधी कार्यदल ने उपरोक्त प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया था। अतः इस नई योजना को आठवीं पंचवर्षीय योजना में अपना कर विकसित किया जाना है।

## मानव विज्ञान और नृजाति विज्ञान संबंधी संस्थाएं

### भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण

6.01 भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण संस्कृति विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत एक वैज्ञानिक अनुसंधानात्मक संस्था है। 1945 के प्रारंभ से ही यह सर्वेक्षण भारतीय जनसंख्या पर जैव-सांस्कृतिक अनुसंधान करता आ रहा है। मानव राष्ट्रीय परियोजना प्राधिकारी द्वारा संदर्शित समकालीन मानव वैज्ञानिक विषयों का विकास तथा प्रवाह पर प्राथमिकता ब्रदान करना ही इसका उद्देश्य है।

6.02 परियोजना के अंतर्गत "भारत के लोग" परियोजना के सफल संपादन एवं रिपोर्ट के प्रस्तुतीकरण के साथ इस सर्वेक्षण ने समीक्षाधीन अवधि तक अपने प्रकाशनों का मुद्रण किया है। निर्धारित समय के अंतर्गत लक्ष्य प्राप्ति के लिए आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रैस को प्रकाशन सामग्री प्रेषित की गई तथा प्रकाशन में सहायता के लिए देश के विभिन्न भागों के प्रतिष्ठित प्रकाशकों को भी नियुक्त किया गया। इस परियोजना के द्वारा उपलब्ध सामग्री के परिणामस्वरूप 43 ग्रंथ, जिसमें 11 राष्ट्रीय तथा 32 राज्यों पर आधारित ग्रंथ हैं, जिनमें 4 ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं तथा बाकी 39 ग्रंथों का प्रकाशन विभिन्न स्तर पर चल रहा है। प्रकाशन की कार्यवाही के साथ रिपोर्ट का संपादन, आंकड़ों का संकलन, निरूपण तथा सूचनाओं के समाविष्टीकरण का कार्य सघन पर्यवेक्षण में पूरा किया जा रहा है। इसके अलावा, कलकत्ता में अनेक बार बैठकों का आयोजन किया गया, जिनमें चार ग्रंथों के प्रकाशन "बास्केट्री" "डोमोस्टिकेटड एनिमल्स", "अकुपेशन" एवं "फूड हैबिट" प्रकाशनार्थ, अंतिम चरण पर अवस्थित हैं। (i) रामकथा इन ट्राइबल एंड फोक ट्रेडिशन इन इंडिया, (ii) महाभारत इन ट्राइबल एंड फोक ट्रेडिशन (iii) ट्राइबल एथनोग्राफी कस्टमरी लॉज एंड चेंज (iv) एन्थ्रोपोलोजी ऑफ वीकर सेक्शन प्रकाशनार्थ संपादित एवं वर्गीकृत हो चुके थे। उपर्युक्त सभी ग्रंथों के प्रकाशित होने के उपरांत महाभारत के प्रकाशन की अपेक्षा की जाती है।

6.03 अन्य परियोजनाओं के कार्यान्वयन हेतु समुचित उपायों का प्रवर्तन किया गया है। अब तक एकत्रित किये गये आंकड़ों का विश्लेषण किया गया और क्रमबद्ध रिपोर्ट तैयार करने के लिए प्रयास जारी हैं। रांची क्षेत्रीय स्टेशन की दो परियोजनाओं "झारखंड आंदोलन एवं इसका प्रलेखन" तथा "रांची शहर का मानव वैज्ञानिक अध्ययन" की प्रगति संतोषजनक है।

6.04 भारतीय समाज, मैसूर तथा परिस्थिति विज्ञान केन्द्र, भारतीय वैज्ञानिक संस्था, बैंगलूर के सहयोग से भी कार्यक्रम शुरू किया गया। स्थान नाम समाज की सहायता से स्थान नाम एवं वैयक्तिक नाम पर मानव वैज्ञानिक अध्ययन पर सर्वेक्षणात्मक परियोजना को कार्यान्वित किया गया। इस योजना के अंतर्गत कम्प्यूटर फॉर्मेट का कार्य संपादित किया जा चुका है एवं अनुयाचन हेतु जांच के लिए प्रस्तुत है। खंड जिला एवं राज्य के स्तर पर "भारत के लोग" परियोजना से प्राप्त बहुचर परिमाणात्मक आंकड़ों के विश्लेषण की भी व्यवस्था की गई। इसमें भारतीय जन समुदाय का अन्य सूत्रों से संग्रहीत आंकड़ों का अणुस्तरीय विश्लेषण भी सम्मिलित किया गया है।

6.05 भारतीय मानव वैज्ञानिक सर्वेक्षण के कार्यक्रमलापों के प्रसार हेतु दशहरा उत्सव के अवसर पर उप-क्षेत्रीय केन्द्र, जगदलपुर में एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। अप्ठमान प्रशासन, पोर्ट ब्लेयर द्वारा आयोजित "आयलैंड ऑन द मार्च" प्रदर्शनी में सर्वेक्षण ने भाग लिया। इसके अलावा सर्वेक्षण ने शिशु उत्सव त्रिगटी 24 परगना, मिदनापुर मेला, मिदनापुर, भारतीय वैज्ञानिक कांग्रेस सभा का 80वां वार्षिक सम्मेलन गोवा, अखिल भारतीय आदिवासी परिषद के वार्षिक सम्मेलन में प्रदर्शनी का आयोजन किया।

6.06 सर्वेक्षण के प्रकाशन विभाग ने आठ पुस्तकों तथा हाउस जर्नल के दो भागों को प्रकाशित किया। इसके अतिरिक्त, भारत तथा विदेश के विभिन्न जर्नलों में सर्वेक्षण के सदस्यों के शोध-पत्र प्रकाशित हुए।

## इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल

6.07 संस्कृति विभाग, भारत सरकार के अंतर्गत स्वायत्त संगठन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (आई-जी आर एम एम) मानव जाति की कहानी को समय और स्थान के संदर्भ में वर्णन करने के लिए समर्पित है। सामान्य मानव विज्ञान के समग्र दृष्टिकोण पर विकसित किया जा रहा यह संग्रहालय एक खुला परिसर तैयार कर रहा है। इसके साथ-साथ यह वीथियों भी स्थापित कर रहा है। वर्ष 1993-94 के दौरान निष्पादित कार्यक्रमों और कार्यक्रमलापों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:—

### प्रदर्शनियां

6.08 ट्राइबल हैबिटेट-लगभग 40 एकड़ प्राकृतिक भूखंड पर फैली आदिवासी लोगों की संस्कृति को प्रस्तुत करने वाली खुली प्रदर्शनी में दो नए प्रदर्श जोड़े गए: मध्य प्रदेश के भील लोगों के घरों के प्रकार तथा कार्बी लोग और असम के जेमी नागा लोगों के विभिन्न प्रकार के घर। समूह में रहने वाले शिकारी घुमक्कड़ आदिवासियों का आवास-परिसर भी तैयार किया गया।

6.09 वर्ष के दौरान, तटीय गाँव-तटीय क्षेत्र की संस्कृति की समग्र प्रस्तुति और प्रस्तर कला विरासत, जो प्रागैतिहासिक चित्रित शल शरणस्थलियों की प्रस्तुति नामक दो अन्य स्थायी खुली प्रदर्शनियों को और अधिक विकसित किया गया। सभी खुली प्रदर्शनियां लोकप्रिय हो गई हैं तथा हजारों दर्शक इन प्रदर्शनियों को देखने के लिए आते हैं।

6.10 वर्ष के दौरान, आदिवासी कलाओं पर एक अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी "इटरनल वोजेज" तैयार की गई। इस प्रदर्शनी के लिए 8 देशों से प्रदर्श प्राप्त हुए हैं।

### बचाव कार्य (ऑपरेशन साल्वेज)

6.11 इस कार्यक्रम का लक्ष्य ऐसे क्षेत्रों और विषयों में, जहां तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता हो, संग्रह, बहुविध प्रलेखन और शोध के माध्यम से मानव-शास्त्रीय विरासत की वस्तुओं को परिरक्षित करना है। वर्ष के दौरान मध्य भारत के प्रागैतिहासिक शैल चित्रकारी के प्रलेखन पर एक 16 एम०एम० की वीडियो फिल्म तैयार की जा रही है। इस फिल्म के इस वित्त वर्ष के समाप्त होने तक पूरा हो जाने की संभावना है। 16 एम०एम० की जो एक दूसरी फिल्म तैयार की जा रही है, वह है-पूर्वी मध्य प्रदेश के प्राचीन आदिवासी समूह, पहाड़ी कोर्बा लोगों की जीवन-शैली का प्रलेखन।

6.12 संग्रहालय के वीडियो एकक ने मध्य प्रदेश के परंपरागत तल आरेखनों पर यू-मेटिक हाई बैंड वीडियो कवरेज को पूरा किया। इस कवरेज को बाद में वीडियो वृत्तचित्र के रूप में संपादित किया गया।

6.13 आलोच्य वर्ष के दौरान खुली प्रदर्शनियों में निर्मित घरों की किस्मों को प्रदर्शित करने तथा संग्रहालय के आरक्षित संग्रह में वृद्धि करने के लिए देश के विभिन्न भागों से वस्तुओं के संग्रह के लिए क्षेत्र कार्य निष्पादित किया गया। लगभग 750 वस्तुएं, किन्नर, खाड़ी, बंजारा, भील, कालवेलिया, गरासिया, वाल्मी, गमीत, लोधा, अंगमी नागा, जेमी नागा, आओ नागा, मुंडा, भत्रा, धुर्वा, गोंद, ओरांव, हो, संथाल, भोंटी, सओरा और राठवा आदिवासियों से संग्रहित किए गए।

6.14 प्रागैतिहास के क्षेत्र में सहयोगी परियोजनाएं हैं: (क) मध्य नर्मदा घाटी के चतुर्थयुगीन जीवाश्मों की टेफोनोमा और पुरा-पारिस्थितिकों और (ख) मेहताखेरी के पुरापाषाण कालीन ऊपरी स्थल की खुदाई तथा निमार क्षेत्र की आगे खोज चल रही है और वर्ष 1993-94 के दौरान इनके पूरा हो जाने की आशा है।

### संग्रहालय शिक्षा

6.15 इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय प्रदर्शनी के दौरों तथा विशेष शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से औपचारिक शिक्षा उपलब्ध कराता है: आम जनता और संस्थाओं, आदिवासी विकास, लोक प्रशासन आदि से संबद्ध संगठनों के प्रशिक्षणार्थी छात्रों के प्रायोजित दलों के



लिए निर्देशित दौरों की व्यवस्था की गई और मिट्टी के बर्तन बनाने की तकनीक सीखने का सुविज्ञ सहायता का एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें आजमगढ़ क्षेत्र में बर्तन बनाने की तकनीक के अभ्यास और प्रदर्शन के लिए एक माह के लिए छात्रों को प्रेरित किया गया।

6.16 वर्ष के दौरान, मिट्टी के बर्तन तथा मिट्टी के पके बर्तन की जीवित भारतीय परंपरा पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें कुंभकारों का सम्मेलन, कार्यशाला और "पड़ाव-93" नामक एक संगोष्ठी शामिल थी, जिसमें भारत के भिन्न-भिन्न भागों के 40 से भी अधिक कुंभकारों ने भाग लिया तथा अपने परंपरागत तकनीकों का प्रदर्शन किया। एक 10 दिवसीय कार्यशाला भी आयोजित की गई और इसमें सिरेमिक मिट्टी के पके बर्तन, ललित कला, मूर्ति कला आदि जैसे क्षेत्रों के 15 छात्रों तथा मिट्टी के बर्तन सिरेमिक के 10 विशेषज्ञों ने भी भाग लिया। हजारों दर्शकों ने इस कार्यक्रम का अवलोकन किया। इसमें से 500 से भी अधिक मिट्टी के पके बर्तन संग्रहालय लाए गए।

6.17 परंपरागत पहलुओं की सजीव प्रस्तुति के कार्यक्रम के अंतर्गत इस वर्ष संग्रहालय ने पूनम कार्यक्रम की श्रृंखला में संगीत गोष्ठी का आयोजन किया जिसमें बांसुरी वादक पंडित हरिप्रसाद चौरसिया ने बांसुरी बजाई, श्रीमती सुभा मुद्गल ने गीत गाया, वीणा वादक श्रीमती सुभा सुधीन्द्रा ने वीणा बजाई और बंगलौर के ताल तरंगिणी दल द्वारा ताल वाद्य काचेरी का प्रदर्शन किया गया। संग्रहालय परिसर में दो नाटकों का भी मंचन किया गया जो इस प्रकार हैं: श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित नाटक में अपनाया गया जगर मगर अंधेर नगर और राहुल सांकृत्यायन द्वारा रचित उपन्यास "बोल्सा से गंगा" नामक उपन्यास का नाट्य मंचन श्री सांकृत्यायन की जन्म शताब्दी पर उनके प्रति श्रद्धांजलि के रूप में था।

### बहु-माध्यम पुस्तकालय :

6.18 संग्रहालय के बहु-माध्यम पुस्तकालय में संदर्भ पुस्तकालय है, जिसमें संग्रहालय के वीडियो फिल्म संग्रह हैं। इस वर्ष संदर्भ पुस्तकालय के संग्रह में 275 नई पुस्तकें, विदेशी पत्रिकाओं के 286 खंड तथा भारतीय व्यावसायिक पत्रिकाओं के 288 खंड जोड़े गए। यह संग्रहालय के कर्मचारियों छात्रों और अध्येताओं को संदर्भ तथा रिप्रोग्राफी सेवा भी उपलब्ध कराता है।

6.19 वीडियो फिल्म एकक ने मध्य प्रदेश के सांस्कृतिक क्षेत्रों-मालवा, निमार, छनीसगढ़, बंदेलखंड, महाकौशल, बघेलखंड में चौक मानदाने के यू-मेटिक वीडियो कवरेज के लिए क्षेत्र कार्य किया। एकक ने महाराष्ट्र के गनजाद और बंदगढ़ और मंडला, मध्य प्रदेश के पतनगढ़ में आयोजित शैक्षिक तथा कलाकार सम्मेलन का वीडियो प्रलेखन किया। इन क्षेत्र कार्यों के दौरान लोगों की जीवन शैलियों को भी प्रलेखित किया गया। एकक ने संग्रहालय में आयोजित कार्यक्रमों तथा कार्यकलापों का भी प्रलेखन किया तथा उन्हें कवर किया।

### संग्रहालय लोकप्रिय व्याख्यान

6.20 इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय ने संग्रहालय लोकप्रिय व्याख्यानमाला के अंतर्गत मानव-जाति का विकास, प्रागैतिहास तथा अस्थायी संस्कृति, संग्रहालय पद्धतियों आदि के विभिन्न विषयों पर अद्यतन सूचना के प्रसार के लिए संग्रहालय लोकप्रिय व्याख्यान का आयोजन किया।

### संगोष्ठी

6.21 आलोच्य वर्ष के दौरान लोगों के परिप्रेक्ष्य को प्रक्षेपित करने में अपनी सतत रूचि के अनुरूप इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय ने दृश्य मानव विज्ञान में लोगों के परिप्रेक्ष्य पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। इस संगोष्ठी में 40 से भी अधिक मानव वैज्ञानिकों, अध्येताओं तथा सिनेमा निर्माताओं ने भाग लिया, जिन्होंने आदिवासी और ग्रामीण जनता पर वृत्तचित्र बनाए।

### आदिवासी तथा सदृश लोगों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

6.22 संग्रहालय ने अपने परिसर में 1993 के दौरान आदिवासी तथा सदृश लोगों के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन पर "इटरनल वोजेज" नामक एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। इस अवसर पर सृजनात्मक कलाओं पर प्रदर्शनी, सामूहिक औपचारिक चर्चाएं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति, शिल्पों का प्रदर्शन तथा आदिवासी जनता पर फिल्मों का प्रदर्शन, आदि शामिल होगा। इस सम्मेलन को आयोजित करने के लिए पुरे-जोर शोर से तैयारी चल रही है। संपूर्ण भारत से प्रतिभागियों के अलावा 20 देशों के प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लेने की पुष्टि कर दी है। लगभग एक दर्जन देशों द्वारा प्रदर्श भी भेजे जा रहे हैं।

6.23 इस प्रयोजन के लिए संग्रहालय परिसर में आयोजित कार्यशाला में तथा मांडला, मध्य प्रदेश के पतनगढ़ तथा महाराष्ट्र में आयोजित कलाकार शिविरों में आदिवासी कलाकारों द्वारा 250 से भी अधिक कलाकृतियां तैयार की गई हैं। मध्य प्रदेश, बिहार, नागालैंड, उड़ीसा और महाराष्ट्र के आदिवासी अनुसंधान संस्थानों के संग्रहालयों से लगभग 150 कलाकृतियां प्राप्त की गई हैं। इन कृतियों को अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया जाएगा।

## आदिवासी भाषाओं में साहित्य

6.24 इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय हाल ही में आदिवासी भाषाओं के साहित्य के संग्रह, विश्लेषणात्मक मूल्यांकन तथा बहु-माध्यमी प्रलेखन पर एक परियोजना शुरू कर रहा है। विभिन्न आदिवासी भाषाओं पर 3500 से भी अधिक साहित्यिक कृतियों का संग्रह किया गया है। इन साहित्यिक कृतियों पर सारांश तैयार करने का कार्य प्रगति पर है (1) कुरूक्स, मुंडारी, खादिया तथा संथाली भाषाओं पर केंद्रित चार समूह चर्चाएं नई दिल्ली में आयोजित की गईं, जिनमें इन भाषाओं के कवियों, लेखकों और विद्वानों ने भाग लिया। मैसूर, रांची तथा मणिपुर में भी सामूहिक चर्चाएं आयोजित की गईं।

## औपचारिक परिसंवाद एवं शैक्षिक सम्मेलन

6.25 “आदिवासी जनता की सांस्कृतिक विरासत” पर शैक्षिक सम्मेलन का आयोजन ऊटी, शिलांग, गुवाहाटी, वर्दवान, भुवनेश्वर गनजाद और बंधगढ़ (दहानू, महाराष्ट्र), हटगुडा (आंध्र प्रदेश), कोमलथावी और इफाल (मणिपुर) में किया गया।

## अन्य कार्यकलाप

6.26 आलोच्य वर्ष के दौरान इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय की फोटो यूनिट, क्यूरेटोरियल विंग, ग्राफिक यूनिट, संरक्षण यूनिट, जन-संपर्क यूनिट एवं कम्प्यूटर यूनिट ने भी अपने-अपने कार्यकलाप जारी रखे तथा संग्रहालय की विभिन्न परियोजनाओं/योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए सहायता प्रदान की।

## अभिलेख और प्रलेख

### राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली

7.01 राष्ट्रीय अभिलेखागार, (रा०अ०) भारत सरकार के स्थायी महत्व के प्रचलित अभिलेखों का अभिरक्षक है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान, राष्ट्रीय अभिलेखागार ने विदेशों से भारतीय अभिरूचि के अभिलेखों की माइक्रोफिल्म प्रतियां, राष्ट्रीय महत्व के निजी कागजातों और सार्वजनिक रिकार्डों को प्राप्त करने का कार्य जारी रखा। भारत सरकार के विभिन्न विभागों/मंत्रालयों आदि को उनके प्रलेखों के प्रबंधन कार्यक्रमों में सहायता देना, विभाग में शोध के लिए आनेवाले अध्येताओं को सुविधायें प्रदान करना और विभिन्न सार्वजनिक स्वैच्छिक संगठनों को उनके अभिरक्षण में मौजूद पाण्डुलिपियों का संरक्षण करने के लिए वित्तीय सहायता देना, साथ ही राज्य/संघ शासित प्रशासन अभिलेखागारों को उनके विकास कार्यक्रमों में सहायता देने के नियमित कार्यक्रम वर्ष 1993-94 के दौरान यथावत् जारी रहे। विभाग की संरक्षण अनुसंधान प्रयोगशाला द्वारा प्रलेखों के बेहतर रख-रखाव एवं संरक्षण की तकनीकों में सुधार हेतु अनुसंधान किए गए। विभाग के उल्लेखनीय क्रियाकलापों की विस्तृत समीक्षा निम्नलिखित है :—

### राष्ट्रीय अभिलेखागार का सौंध भवन

7.02 वातानुकूलन व्यवस्था से युक्त राष्ट्रीय अभिलेखागार का सौंध भवन ने कार्य करना प्रारम्भ कर दिया है। वर्ष 1992-93 के दौरान सौंध भवन तहखाने के शेष भाग में स्वचालित हेलन अग्निशामन व्यवस्था का कार्य पूरा हो जाएगा। शास्त्री भवन की तरफ चाहरदीवारी लगाने का कार्य पूरा कर लिया गया है। राष्ट्रीय अभिलेखागार परिसर की सुरक्षा सुनिश्चित करने के दृष्टिकोण से राजपथ की तरफ वाली चाहरदीवारी का नक्शा सी०पी०डब्ल्यू०डी० के वास्तुशिल्पीय प्रभाग से मांगा गया है। सी०पी०डब्ल्यू०डी० से अनुरोध किया गया है कि वे कैटिन गैराज और सब-स्टेशन कार्यों को शीघ्रता से अंजाम दें। सौंध भवन के सामने घास के मैदान के अधिकांश भाग को विकसित कर दिया गया है।

### अवाप्तियां

7.03 विभाग के संग्रह भण्डार को निम्नलिखित सरकारी/निजी अभिलेखों/माइक्रोफिल्म प्रतियों के अधिग्रहण से और अधिक समृद्ध किया गया है :—

(क) **सरकारी अभिलेख** : (1) ऐतिहासिक प्रभाग, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार से द्वितीय विश्व युद्ध की इण्डियन स्टेट फोर्सेस से संबंधित 85 युद्ध डायरियां प्राप्त की गयीं।

(2) भारत सरकार के गृह मंत्रालय की 11,206 फाइलें (1948-63)

(3) राष्ट्रपति सचिवालय, राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली की 17 फाइलें (1894-1911)

(ख) **निजी कागज-पत्र** : निम्नलिखित कागज-पत्रों की जिरोकस/फांटे प्रतियां प्राप्त की गयीं —

(1) डा० एम०ए० अजाजी स्मारक समिति के सचिव, डा० एस०डी० पाण्डे के माध्यम से डा० सैयद महमूद, प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी द्वारा डा० एम०ए० अजाजी को लिखे गए 7 पत्र (1951-56), 6 उर्दू में और एक अंग्रेजी में।

(2) महात्मा गांधी द्वारा कु० कैथराइन मायो और डा० जॉन और मट्ट को क्रमशः लिखे गए 4 पत्र (1926-27) और 3 पत्र (1934-38 और 1942), कैथराइन मायो द्वारा ब्रिटिश लाइब्रेरी के निदेशक को लिखे 3 पत्र (1926-27), 9 प्रेस कतरन (1917-18, 1921-22) **इण्डियन ओपिनियन एण्ड टाइम** से तथा सर एवलिन रैच द्वारा लिखा गया "इण्डिया एट दि क्रास रोड्स : मिस्टर गांधी" नामक एक लेख श्री ई०एस० रड्डी, न्यूयार्क (यू०एस०ए०) में प्राप्त किए गए।

(3) श्री सुमत प्रकाश शौक को रजा महमूद अली खान, जालिब देहलवी अख्तर शरानी, हकीम मुहम्मद यूसुफ हुसैन और अन्य द्वारा उर्दू में लिखे गए 11 पत्र (1923-63); साप्ताहिक समाचार पत्र **ताज** (उर्दू में) दिल्ली के 57 अंक; दिल्ली से प्रकाशित साप्ताहिक पत्रिका **परचम-ए-हिन्द** (उर्दू में) का एक अंक (26 दिसम्बर, 1969), कानपुर से प्रकाशित मासिक पत्रिका **जमाना** (उर्दू में) के पांच अंक (सितम्बर, 1928-फरवरी, 1929) और साहित्य से संबंधित उर्दू में 13 पुस्तकें, श्री सुमत प्रकाश शौक, नई दिल्ली से प्राप्त की गयीं।

(ग) **माइक्रोफिल्म** : (1) सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत में फ्रांस के इतिहास से संबंधित 40 माइक्रोफिल्म रोल (1884-1952) फ्रेंच भाषा में राष्ट्रीय अभिलेखागार फ्रांस से प्राप्त किए गए।

(2) पंजाब और राजस्थान स्टेट्स से संबंधित "पण्डा रिकार्ड्स" की 10 माइक्रोफिल्म रोल, जिनिओलोजिकल सोसाइटी ऑफ यूटाह (यू०एस०ए०) से भेंट स्वरूप प्राप्त किए गए।

## अनुसंधान एवं संदर्भ

7.04 विभाग के अनुसंधान कक्ष एवं पुस्तकालय की सेवाओं का शोधकर्ताओं द्वारा 4,100 बार से अधिक उपयोग किया गया। 193 नये शोधकर्ताओं को नामित किया गया। इनमें से आस्ट्रेलिया, कनाडा, डेनमार्क, जर्मनी, हांगकांग, जापान, कोरिया, नेपाल, यू०के० और यू०एस०ए० के 21 विदेशी शोधकर्ता थे।

7.05 शोधकर्ताओं से अभिलेखों, मानचित्रों और पुस्तकों के लिए प्राप्त 35,300 से अधिक मांगों पर कार्रवाई की गई। इसके अलावा, व्यक्तियों और सरकारी/गैर-सरकारी अधिकरणों से प्राप्त विभाग के संग्रहों में से मांगी गयी 88 सूचनाओं पर भी कार्रवाई की गई।

## संदर्भ माध्यम

7.06 वर्ष के दौरान जहां एक ओर इनायत जंग संग्रह के 5,483 दस्तावेजों की विवरणात्मक सूची तैयार की गयी, वहीं दूसरी ओर निम्नलिखित संग्रहों के 27,640 मदों की विषय-सूची/जांच-सूची तैयार की गयी।

(1) निम्नलिखित के निजी कागज-पत्र :

एस०एस० रावल (1910-66), एम०के० घोष (1956-63), एस०सी० बोस (1929-79), जोरवार सिंह निगम (1907-44), के०एम० मुंशी (1927-39), सेठ अचल सिंह (1937-38 और 1950), प्रनेन्द्र नारायण चौधरी (1922-56), राम मोहन राय (1833), एस०पी० शौक (1922-69), रबीन्द्र नाथ टैगोर (1918-30), मरदार वल्लभभाई पटेल (1934-50), सी०पी० रामास्वामी अय्यर (1938-62)

(2) बंगला देश कागज-पत्र (1966-72)

(3) राजनैतिक कैदी कागज-पत्र (1943)

(4) विविध कागज-पत्र (1631-1981) और

(5) इसी और यू एम क्लब कागज-पत्र

## अभिलेख एवं अभिलेख प्रबंध

7.07 निर्गलित मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों की 35,700 फाइलों का मूल्यांकन किया गया: रक्षा मंत्रालय, ऐतिहासिक प्रभाग (1890-1958); खाद्य मंत्रालय (1946-68), गृह मंत्रालय (1957-68), विदेश मंत्रालय (1946-48), गृह विभाग, पब्लिक (1937-1947); म्यूनिस्पलटीज पी. पी. अनुभाग (1944-47), बी एण्ड आई (1875-1910), युद्ध "बी" और "डी" (1918-20), स्थानीय बोर्ड "बी" और "डी" (1889-1910) और सेनेटरी "बी" और "डी" (1873-1910)। इनमें से 32,809 फाइलों को रखने एवं 2,917 फाइलों को नष्ट करने की सिफारिश की गयी।

7.08 निर्गलित मंत्रालयों/विभागों की अध्ययन रिपोर्टें, अभिलेख प्रतिधागण अनुसूची तथा प्रारम्भिक टिप्पणी के साथ उन्हें इनके कार्यान्वयन के लिए अंग्रेषित की गयी-सशास्त्र सेना चिकित्सा सेवा, रक्षा मनोविज्ञान अनुसंधान संस्थान और विदेशी भाषा स्कूल (सभी रक्षा मंत्रालय में), कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा (कृषि मंत्रालय), जन-प्रचार निदेशालय (मृचना एवं प्रसारण मंत्रालय), इलैक्ट्रॉनिकी विभाग (पन्द्रह तकनीकी प्रभाग), परिवार कल्याण विभाग एवं स्वास्थ्य विभाग (दोनों स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के), (राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड थ्योरा (गृह मंत्रालय), पेटेंट ऑफिस, डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल और सफदरजंग अस्पताल (दोनों नई दिल्ली में) और पेटेंट ऑफिस, कलकत्ता।

7.09 इस वर्ष के दौरान केन्द्रीय उर्वरक अनुसंधान संस्थान, फरीदाबाद (कृषि मंत्रालय) के अभिलेख प्रतिधागण अनुसूची की जांच हेतु मौके पर अध्ययन का कार्य पूरा किया गया।

## अभिलेखीय कानून

7.10 संसद के आगामी शरदकालीन सत्र में सरकारी अभिलेखों के बारे में एक विधेयक के प्रस्तुत किए जाने की सम्भावना है।

## अभिलेखीय अध्ययन पीठ

7.11 इस पीठ ने व्यावसायिकों एवं उप-व्यावसायिकों के लाभार्थ अभिलेखीय अध्ययन में एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम तथा आठ एवं चार सप्ताह की अवधि के विभिन्न अल्पावधिक पाठ्यक्रमों के आयोजन का कार्य जारी रखा।

7.12 12 प्रशिक्षार्थियों ने अभिलेखीय अध्ययन (1992-93) में एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा किया, जबकि अभिलेखीय अध्ययन में एक-वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम का दूसरा सत्र 1 सितम्बर, 1993 को आरम्भ हुआ, जिसमें 12 प्रशिक्षार्थियों ने प्रवेश प्राप्त किया।

7.13 अभिलेखीय प्रबंध (1 सत्र), पुस्तकों, पाण्डुलिपियों और अभिलेखों की देखभाल एवं संरक्षण (1 सत्र), रिप्रोग्राफी (2 सत्र) तथा अभिलेखों की परिचर्या एवं प्रतिमंस्कार (2 सत्र) जैसे 6 अल्पावधिक पाठ्यक्रम पूरे किए गए। इसके अलावा, अभिलेख प्रशासन, अभिलेख प्रबंध एवं पुस्तकों, पाण्डुलिपियों और अभिलेखों की देखभाल एवं संरक्षण में एक-एक, कुल मिलाकर तीन और अल्पावधिक पाठ्यक्रम 1993-94 के दौरान आयोजित किए जायेंगे।

## वित्तीय सहायता की योजना

7.14 "पाण्डुलिपियों के परिरक्षण हेतु वित्तीय सहायता योजना" के कार्यान्वयन हेतु अनुदान समिति ने विभिन्न राज्यों में 34 संगठनों/संस्थानों/विश्वविद्यालयों में कुल 19.75 लाख रुपए की राशि वितरित किए जाने की सिफारिश की।

## तकनीकी सेवायें

7.15 सरकार/व्यक्तियों और निजी संस्थानों को संरक्षण एवं रिप्रोग्राफी में तकनीकी सूचना प्रदान करने के अलावा, कुल मिलाकर 54,468 शीटों की मरम्मत की गयी और 1,383 वाल्यूमों/पुस्तकों/विविध मदों की जिल्दसाजी की गयी। इसके अलावा, दस्तावेजों की 58,571 जिरोक्स/परिवर्धित प्रतियां तैयार कर शोधकर्ताओं को उपलब्ध कराई गयीं।

7.16 नष्टोन्मुख दस्तावेजों की मरम्मत एवं पुनरुद्धार के लिए सेल्यूलोस ऐसीटेट प्राउडर की नव विकसित लेई की परिरक्षण शाखा में प्रायोगिक जांच की गयी और इसे उपयुक्त पाया गया। बाद में इसे जयपुर, पांडिचेरी एवं भोपाल अभिलेख केन्द्रों को व्यापक पैमाने पर

इसकी क्षमता की जांच करने के उद्देश्य से भेजा गया। पांडिचेरी और भोपाल ने सूचित किया है कि अभिलेखों की मरम्मत के लिए यह लेई उपयुक्त है। जयपुर की रिपोर्ट अभी प्रतीक्षित है।

## स्वतंत्रता की ओर परियोजना

7.17 “स्वतंत्रता की ओर परियोजना” के प्रस्तावित वाल्यूमों में शामिल करने के लिए निम्नलिखित अभिलेख शृंखलाओं के उद्धरणों के कुल मिलाकर 4,709 पृष्ठ भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली को भेजे गए: गृह विभाग, राजनीतिक (आन्तरिक) शाखा, भारत सरकार (1942), गृह विभाग, विशेष शाखा, बम्बई सरकार (1939-41) और राजेन्द्र प्रसाद कागज-पत्र (1938)।

## अन्तर्राष्ट्रीय संबंध

7.18 पूर्व अभिलेख महानिदेशक डा० राजेश कुमार परती, 12-15 जुलाई, 1993 तक एशियाई इतिहास के स्रोतों की निर्देशिका परियोजना के लिए अन्तर्राष्ट्रीय अभिलेख परिषद द्वारा गठित समिति की बैठकों में तथा “शिक्षा में अभिलेखों की भूमिका” के संबंध में स्वारबिका सेमिनार में भाग लेने के लिए कुआलालामपुर गये।

7.19 डा० (कु०) यशोधरा जोशी, वैज्ञानिक अधिकारी को पुस्तकालय एवं अभिलेखीय सामग्री के परिरक्षण एवं संरक्षण के बारे में अमेरिका अफ्रीका सम्मेलन में प्रतिनिधित्व के लिए 21-25 जून, 1993 को कीनिया भेजा गया। उन्होंने इस सेमिनार में “प्रदूषण के दुष्प्रभावों से संग्रहों की सुरक्षा” के बारे में एक पेपर प्रस्तुत किया।

## प्रकाशन

7.20 निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किए गए:—

- (1) दि इण्डियन आर्काइव्ज खण्ड 39, संख्या 1 (जनवरी-जून, 1990)
- (2) दि इण्डियन आर्काइव्ज खण्ड 39, संख्या 2 (जुलाई-दिसम्बर, 1990)
- (3) दि इण्डियन आर्काइव्ज खण्ड 40, संख्या 1 (जनवरी-जून, 1991)
- (4) राष्ट्रीय अभिलेखागार का वार्षिक प्रतिवेदन, 1992
- (5) स्वतंत्र स्वरम, (तेलगू में)
- (6) रेजिडेंसियों के अभिलेखों की निर्देशिका : उनके पूर्ववर्ती एवं उत्तरवर्ती निकाय, भाग 10, ('ए' से 'के' तक) 1756-1954। (अंग्रेजी में)
- (7) रेजिडेंसियों के अभिलेखों की निर्देशिका: उनके पूर्ववर्ती एवं उत्तरवर्ती निकाय भाग XI (एल० से जेड० तक) 1759-1954
- (8) फारसी दस्तावेजों की विवरणात्मक सूची, 1803, खण्ड-3
- (9) राजस्व मानचित्रों की तालिका, खण्ड 2, भाग 3

7.21 1993-94 के दौरान निम्नलिखित प्रकाशनों को प्रकाशित किए जाने का प्रस्ताव है:—

- (1) दि इण्डियन आर्काइव्ज, खण्ड 40, संख्या 2 (जुलाई-दिसम्बर, 1991)
- (2) दि इण्डियन आर्काइव्ज, खण्ड 41, संख्या 1 (जनवरी-जून, 1992)
- (3) बुलेटिन ऑफ रिसर्च थीसीस एण्ड डिसरटेशन्स, खण्ड संख्या 16।

- (4) भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख आयोग की कार्यवाहियां, खण्ड-54।
- (5) भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख आयोग संकल्प पर स्टेटस पेपर।
- (6) भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख आयोग-सिंहावलोकन, खण्ड-2।
- (7) भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख आयोग अधिवेशन में पढ़े गए पर्चों की सूची, खण्ड-3।
- (8) एशियाई इतिहास के स्रोतों की निर्देशिका, खण्ड 3.6।
- (9) विद्रोह संबंधी कागज पत्रों की विवरणात्मक सूची, खण्ड 6।
- (10) राजस्व मानचित्रों की तालिका, खण्ड-2, भाग 4।
- (11) अशोब (उर्दू में), खण्ड-1
- (12) खतूते-आजाद (हिन्दी में)

### अभिलेख सप्ताह/प्रदर्शनी

7.22 विभाग "अभिलेख एवं 1937 में भारतीय एकता की आवाज" नामक एक प्रदर्शनी आयोजित करने जा रहा है। यह प्रदर्शनी मूल दस्तावेजों एवं सम्कालीन छायाचित्रों पर आधारित होगी।

7.23 अभिलेखीय जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से नवम्बर-दिसम्बर, 1993 में एक "ओपन हाऊस" कार्यक्रम (परिक्रमा) भी आयोजित किया जाएगा, जिसका विषय "1957 में विश्वविद्यालय" रहेगा। इस अवसर पर आगन्तुकों को अभिलेखागार के प्रमुख अंगों को दिखाया जाएगा।

### क्षेत्रीय कार्यालय/अभिलेख केन्द्र

7.24 क्षेत्रीय कार्यालय/अभिलेख केन्द्र भोपाल, पांडिचेरी एवं जयपुर ने अपने-अपने क्षेत्र में सामान्य कार्यकलाप जारी रखे। इस वर्ष के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय/अभिलेख केन्द्रों ने दस्तावेजों की लगभग 11,981 शीटों की मरम्मत तथा 241 खण्डों/पुस्तकों, आदि की जिल्दसाजी की।

## एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता

7.25 मार्च 1992 से पूर्व, एशियाटिक सोसायटी को उसके कार्यकलापों में लगभग पांच वर्ष की अवधि तक विभिन्न कारणों से काफी घटका पहुँचा। उक्त वर्षों के दौरान सोसायटी में उपलब्ध स्रोत सामग्री के उपयोग द्वारा सतत शोध कार्यों के क्षेत्र में कार्यकलाप सर्वाधिक उपेक्षित रहे। वर्ष 1992-93 के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में शोध करने के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की गई। वरिष्ठ शोध अध्येताओं के दल में, प्रोफेसर रामरंजन मुखर्जी, प्रोफेसर अमिया मजूमदार, प्रोफेसर अशोक बागची, प्रोफेसर सुनीति पाठक, प्रोफेसर ए०के०एम० मसूमी, प्रोफेसर भावालोष दत्ता, प्रो० प्रणवेश सिन्हा राय, प्रोफेसर असित अन्धोपाध्याय, प्रोफेसर पी०टी० नायर, तथा डा० निनेल गफुरोवा के अतिरिक्त, कलकत्ता विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति तथा कृषि विज्ञान के क्षेत्र में एक ख्याति-प्राप्त वैज्ञानिक, प्रो० सुशील मुखर्जी, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर तथा भारत विद्या के एक प्रसिद्ध अध्येता, प्रो० देवव्रत सेन शर्मा, भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण विभाग के प्रो० ए०के०ए० सिद्दीकी तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय के इस्लामी इतिहास एवम् संस्कृति के पूर्व विभागाध्यक्ष, प्रो० अतुल राय सहित कुछ और उत्कृष्ट अध्येता शामिल हुए हैं। उन्हें समुचित सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से लगभग 15 शोध अध्येता आलोच्य अवधि के दौरान दल में शामिल हुए हैं। इनके अलावा, प्रो० सुधीर करन ने, जिन्होंने पश्चिमी बंगाल (सीमान्त रनली या झारखण्ड) के ग्रामीण बोलीगत लोक भाषा विषयक सर्वेक्षण के क्षेत्र में बहुत ही रोचक अध्ययन किया है, किन्तु यह महसूस किया गया कि कार्य का और विस्तार किये जाने से अध्ययन अधिक उपयोगी साबित होगा। अतः प्रो० करन को एक और वर्ष के लिए नियुक्त किया गया है। आशा है कि पूरी की गई पाण्डुलिपियों में इसको जोड़े जाने के परिणामस्वरूप इस विषय पर और सार्थक प्रभाव पड़ेगा, जो कि राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें कुछ संवेदनशील राजनीतिक मुद्दे निहित हैं।

## शोध कार्यकलाप

7.26 "भारत विद्या" सम्बन्धी परियोजना के कार्य में प्रो० गणारजन मुखर्जी की देखरेख में पर्याप्त प्रगति हुई है। इस परियोजना का प्रथम चरण "प्रकृति और सौंदर्य के संबंध में भारतीय ज्ञान पर पारिस्थितिकी और सौंदर्य परक मूल्यों के बारे में भारत की अवधारणा" सन्तोषजनक ढंग से पूरा हो गया है। शोध-प्रबंध प्रकाशन के लिए तैयार है।

7.27 आध्यात्मिक मूल्यों से संबंधित एक दूसरी परियोजना प्रो० अमिया मजूमदार की देखरेख में प्रगति पर है। वास्तव में, प्रो० मजूमदार ने कनिष्ठ अध्येताओं की सहायता से इस क्षेत्र में कार्य किया है। सांस्कृतिक तथा धार्मिक संगठनों के कुछ प्रमुखों के सलाहकार नियुक्त किए गए हैं और इस विषय पर उनके विचारों को संग्रहीत किया गया है। प्रो० अशोक बागची के मार्ग-दर्शन में "हिस्ट्री ऑन मेडिसन" संबंधी परियोजना के अंतर्गत मध्यकालीन भारत में औषधि के संबंध में अन्वेषण कार्य पूरा कर लिया गया है। "दि एनीमल्स ऑफ़ देअर एक्सप्लोरेशन्स ऑन ड्रग्स फ्रॉम फोरेस्ट" नामक प्रो० बागची का शोध निबन्ध प्रकाशन के लिए प्रस्तुत कर दिया गया है। "तिब्बती अध्ययन" नामक परियोजना के कार्य से अन्वेषण के विषय अर्थात् 'हिमालय वासी भोटिया जाति (भारत-तिब्बती), उनकी अस्मिता और मुख्य धारा के साथ उनके एकीकरण में प्रो० सुनीति कुमार की देखरेख में पर्याप्त प्रगति हुई है।

7.28 प्रो० एम०ए०के० मसूमी ने (क) भूगोल पर एक प्राचीन कृति, हाफ्त-इक-लिम तथा (ख) भरहामुल इल्लाल जैसे बहुमूल्य प्रकाशनों के अधूरे भाग को पूरा करने का बीड़ा उठाया है। "टैगोर अध्ययन" संबंधी परियोजना प्रोफेसर भावातोष दत्ता के मार्ग-दर्शन में प्रगति पर है, जिन्होंने "मानव और प्रकृति की रवीन्द्र नाथ की अवधारणा" के संबंध में अपनी जाँच पूरी कर ली है। इस परियोजना में रामायण और महाभारत के संबंध में टैगोर का मूल्यांकन नामक एक विनिबन्ध प्रकाशन के लिए तैयार है। "एक वृहद्-शब्द-कोश" सम्बन्धी परियोजना प्रो० अस्मित कुमार बंद्योपाध्याय के मार्गदर्शन में सन्तोषजनक प्रगति पर है।

7.29 प्रो० देवव्रत सेन-शर्मा ने "प्राचीन-भारतीय इतिहास" नामक परियोजना के अंतर्गत "भगवद्-गीता पर कश्मीर से चार शैव टीकाओं के आलोचनात्मक सम्पादन" से संबंधित अपने कार्य में पर्याप्त प्रगति की है। "सामान्य इतिहास" से संबंधित परियोजना के कार्य में श्री पी०टी० नायर के मार्गदर्शन में प्रगति हो रही है, जो एशियाटिक सोसायटी का द्वि-शताब्दी इतिहास तैयार कर रहे हैं।

7.30 सोसायटी ने प्रो० सुशील कुमार मुखर्जी के मार्गदर्शन में "विज्ञान का इतिहास" नामक दूसरी परियोजना शुरू की है, जो भारत में शरीर विज्ञान में शिक्षण और शोध के इतिहास पर कार्य कर रहे हैं। "मध्य-युग (आदि काल और उत्तर काल) के दौरान बंगाली समाज तथा संस्कृति" पर परियोजना के जाँच कार्य में प्रो० अतुल राय के मार्ग-दर्शन में प्रगति हो रही है। "आधुनिक तजाकिस्तान" पर कार्य डा० (सुश्री) निनेल गफरोवा के मार्गदर्शन में चल रहा है।

7.31 सोसायटी के योजना-बोर्ड के निर्णय के अनुसार सोसायटी ने विश्वकोष एशियाटिका तैयार करने के लिए एक अन्य महत्वपूर्ण योजना शुरू की है। यह एक बहुखण्डीय परियोजना होगी जिसका मुख्य उद्देश्य एशिया की भूमि तथा उसके लोगों, उनके इतिहास और उनकी संस्कृति के आज तक के विकास का एक सुव्यवस्थित लेखा-जोखा प्रस्तुत करना है। इसका आशय विभिन्न लघु-प्रविष्टियों वाला कोई शब्द-कोश बनाना नहीं है। अध्याय विषय-वस्तु से संबंधित होंगे, न कि निजी ऐतिहासिक विवरणों से संबंधित होंगे। तथापि, इस प्रकार की परियोजना में स्वाभाविक रूप से ऐतिहासिक पहलू प्रतिबिम्बित होंगे। किन्तु प्रत्येक क्षेत्र के विकास की प्रक्रिया के जन-सांख्यिकीय, स्थलाकृति भाषा तथा साहित्य, आर्थिक तथा राजनीतिक पहलुओं को उजागर करने में सावधानी बरती जाएगी। कार्य शीघ्र ही शुरू कर दिए जाने की संभावना है।

## अन्य परियोजनाएं

7.32 सोसायटी का "भारत की विरासत" नामक एक कार्यक्रम है। यह एक महत्वाकांक्षी और कल्पनाप्रवण परियोजना है जिसका उद्देश्य एशियाटिक सोसायटी के विभिन्न कार्यकलापों को इस प्रकार से संघटित करना होगा, जिससे उसमें भारत के लोगों की आकांक्षाएं और उपलब्धियाँ प्रतिबिम्बित हों। वह अवधारणा वर्ष 1984 में सोसायटी के द्विशताब्दी समारोह के अवसर पर श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा दिए गए अभिभाषण में देखी जा सकती है। उन्होंने कहा था, "विरासत की प्रशंसा करना और उसकी ओर आकर्षित होना ही काम ही नहीं है। इसका अध्ययन गहराई से किया जाना चाहिए और आत्म-ज्ञान के एक साधन के रूप में इसको परिष्कृत, आत्ममान प्रथम समृद्ध किया जाना चाहिए।"

7.33 सोसायटी का विचार प्राचीन कृतियों के अंग्रेजी में अनुवाद करने की अन्य परियोजना प्रारंभ करने का है। प्रत्येक पुस्तक के अनुवाद कार्य की दर साहित्य अकादमी तथा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली में प्रचलित दरों की तुलना में निर्धारित की



जायेंगे। प्रत्येक पुस्तक के लिए कार्य की अवधि 18 माह होगी। कुछ पुस्तकों के नाम अनुभूति प्रकाश, अलंकार-कौमुदी, काव्य-अनुशासन, मुबारक-शाही, कोदामावेन-जफर का नागदण धेर, आदि हैं।

7.34 एक अन्य शोध परियोजना जो सोसायटी की आठवीं योजना में शामिल की गई थी, उसे रूस में तथा स्वतंत्र राज्यों के राष्ट्र-कुल में, जो पहले सोवियत संघ के रूप में जाना जाता था, प्रासंगिक अभिलेखीय दस्तावेजों के संकलन के प्रयोजनार्थ स्थायी विन र्मिति द्वारा अनुमोदित किया जा चुका है। तदनुसार, परियोजना के कार्यान्वयन के लिए प्रशासनिक कार्यवाही शुरू की जा चुकी है।

## प्रशिक्षण कार्यक्रम

7.35 सोसायटी (क) प्राचीन भाषाओं तथा (ख) भारतीय संस्कृति और सभ्यता के पाठ्य-क्रम ढांचे पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करने वाली है। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्कृत, पाली, अरबी, फ़ारसी, तिब्बती, चीनी और मंगोलियाई में शुरू किये जायेंगे।

## कम्प्यूटरीकरण/आधुनिकीकरण

7.36 सोसायटी ने अपने पुस्तकालय में पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएं प्राप्त करने और उनके स्टॉक की जांच करने के कार्य को शीघ्र निपटाने के उद्देश्य से कम्प्यूटर का उपयोग करने के लिए अपेक्षित व्यवस्था की है। एशियाटिक सोसायटी की पत्र-पत्रिकाओं की विषय सूची, कार्यवाही आदि सकलित करने का कार्य शुरू किया गया। चूँकि सोसायटी की पत्र-पत्रिकाओं की स्थिति बहुत खराब है, अतः सोसायटी ने 1832 से 1935 तक की एशियाटिक सोसायटी की कार्यवाहियों और पत्र-पत्रिकाओं का माइक्रोफ़िश सेट खरीदा है।

7.37 माइक्रोफ़िल्म और माइक्रोफ़िश की प्रतियों के अध्ययन करने और उनको प्राप्त करने के उद्देश्य से, वर्ष के दौरान एक माइक्रोफ़िश रीडर प्रिन्टर प्राप्त किया गया।

7.38 सोसायटी ने कैलिबनेट (कलकत्ता लाइब्रेरी नेटवर्क) और सिरनेट कार्यक्रमों (वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान शोध नेटवर्क) में शामिल होने का निर्णय लिया है। यह नेटवर्क संस्थाओं और शोधकर्ताओं के दल के बीच तालमेल बैठाने को सुकर बनायेगा, चाहे उनकी भौगोलिक दूरियां कुछ भी हों और तदनुसार स्थल और कम्प्यूटरों की खरीद के बीच संयोजन की व्यवस्था की गई है।

## संरक्षण

7.39 सोसायटी के रंग चित्रों के परिरक्षण के लिए पुनरुद्धार कार्य प्रो॰ चिन्तामणि कार, प्रधानाचार्य ईसा मोहम्मद, प्रो॰ अशोक भट्टाचार्य, डा॰ हीरन चक्रवर्ती तथा डा॰ देवला मित्रा जैसे विख्यात विशेषज्ञों के मार्ग-दर्शन में चल रहा है। तैलचित्रों के फ्रेमों के पुनरुद्धार, पाण्डुलिपियों और दुर्लभ पुस्तकों की जीर्ण-शीर्ण और भंगुर शीटों का पटलन, पटलित पुस्तकों, दुर्लभ पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं आदि की जिल्दसाजी के लिए संरक्षण संबंधी उपाय किये गए। 9,50,300 (लगभग) से भी अधिक खण्डों को "पी॰आई॰पी॰" कीटनाशक दवा से रोगाणुओं से मुक्त किया गया है तथा 2864 खण्डों की प्रत्यक्ष रूप से जांच की गई है। चमड़े की जिल्द वाले खण्डों का चमड़े के संरक्षणात्मक मिश्रण से उपचार किया गया। 2780 खण्डों को पैराडाइ क्लोरोबेन्ज़िन से धूमित किया गया। 3619 शीटों को अम्लमुक्त किया गया और 549 शीटों को विपटलित किया गया। 2864 से अधिक खण्डों को उनके उपचार के बाद लौटा दिया गया।

## पाण्डुलिपियों का संग्रह/सूचीकरण

7.40 संस्कृत पाण्डुलिपियों के नियमित सूचीकारों ने विवरणात्मक सूची-पत्रों से संबंधित विभिन्न संग्रहों से 375 संस्कृत पाण्डुलिपियों को सूचीबद्ध किया है। इसके अलावा, उन्होंने पाण्डुलिपियों की जांच करने के बाद प्रेस कॉपी के लिए 114 संस्कृत पाण्डुलिपियों के विवरण को अंतिम रूप दिया है। आंशिक आधार पर लगाए गए अंशकालिक सूचीकारों ने सोसायटी के संग्रह से 1844 संस्कृत पाण्डुलिपियों को सूचीबद्ध किया है और पिछले छः माह के दौरान संस्कृत पाण्डुलिपियों की सूचियों के लिए इन पाण्डुलिपियों के संबंध में आंकड़े संबंधी कागजात तैयार किए हैं (1) जो तिब्बती पाण्डुलिपियां कई दशकों से सूची रहित पड़ी थीं, उनको सूचीबद्ध करने का कार्य इसी अवधि के दौरान शुरू किया गया। 617 तिब्बती पाण्डुलिपियों के संबंध में आंकड़े संबंधी कागजात एक अंशकालिक सूचीकार द्वारा तैयार किए गए हैं और तिब्बती पाण्डुलिपियों के लिए ही सूची प्रकाशित करने का प्रस्ताव हुआ है। वरिष्ठ सूचीकार व विभिन्न भाषाओं अर्थात् चीनी, अरबी, फारसी में तर्दथ आधार पर लगे विशेषज्ञ, संग्रहालय में जमा चीनी, अरबी, फारसी पाण्डुलिपियों तथा पुस्तकों को सूचीबद्ध करने का कार्य कर रहे हैं। 26 चीनी पाण्डुलिपियों/पुस्तकों, 44 अरबी/फारसी पाण्डुलिपियों को सूचीबद्ध किया गया है और अपेक्षित सूचना वाली आकड़ा शीटें इस अवधि के दौरान तैयार की गई हैं।

7.41 विभिन्न भारतीय भाषाओं को पाण्डुलिपियों को सूचीबद्ध करने का कार्य अंशकालिक सूचीकारों द्वारा किया गया है। 14 उर्दू की पाण्डुलिपियों तथा 28 उड़िया की पाण्डुलिपियों को इस अवधि के दौरान सूचीबद्ध किया गया है। इन पाण्डुलिपियों के बारे में अपेक्षित सूचना दर्शाने वाले आंकड़ा-पत्र तैयार किए गए हैं।

7.42 सोसायटी के संग्रहालय में पाण्डुलिपियों तथा अन्य संग्रहालय वस्तुओं के संग्रह में व्यक्तियों और संस्थाओं से प्राप्त उपहार के माध्यम से वृद्धि हुई है।

7.43 संग्रहालय में जमा पाण्डुलिपियों का अपेक्षित ब्यौरा दर्शाने वाले सूची कार्ड तैयार करने का कार्य चल रहा है। 465 कार्ड इसी अवधि के दौरान तैयार किए गए हैं। पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्म का प्रलेखन-कार्य चल रहा है।

### प्रयोक्ता सेवाएं

7.44 आलोच्य वर्ष के दौरान भारत तथा विदेश में सदस्यों, अध्येताओं तथा संस्थाओं को पुस्तकों, पाण्डुलिपियों, दस्तावेजों आदि की 41,636 ज़िरोक्स प्रतियां उपलब्ध कराए जाने के अलावा सोसायटी के रिप्रोग्राफी अनुभाग ने पुस्तकों और पाण्डुलिपियों से 2,887 माइक्रोफिल्म निगेटिव समान प्रयोजन के लिए तैयार किए। महत्वपूर्ण, दुर्लभ तथा दुर्बल पाण्डुलिपियों को बार-बार इस्तेमाल करने से रोकने के लिए 84 पाण्डुलिपियों से माइक्रोफिल्मों के 13,833 एक्सपोजर तैयार किए गए।

# बौद्ध एवं तिब्बती अध्ययन संस्थाएं

## केन्द्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

8.01 केन्द्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, सारनाथ, भारत में तिब्बती अध्ययन की एक प्रमुख संस्था है, जिसे महामहिम दलाई-लामा के साथ परामर्श करके भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू की पहल पर भारत सरकार द्वारा 1967 में स्थापित किया गया था।

8.02 वर्ष के दौरान, संस्था ने संगणक के साथ एक सुगठित तथा सुसज्जित पुस्तकालय की स्थापना, पी० एच० डी० के दाखिलों में हुई शैक्षिक प्रगति तथा मौलिक कृतियों के प्रकाशन, अनुवाद, सेमिनार, सामग्री, दुर्लभ पाठों तथा उन दुर्लभ बोध पाठ अनुसंधान परियोजनाओं की द्विवार्षिक पत्रिका से अपने विकास में त्वरित और निरन्तर प्रगति की है। इससे बोध और सांस्कृतिक विश्व विरासत के लिए कार्यरत समझे जाने वाले विश्वविद्यालय के स्तर के अनुरूप शिक्षा के स्तर को बढ़ाने में इन योजनाओं का पर्याप्त योगदान रहा है।

8.03 वर्ष 1993-94 के दौरान, संस्थान के सभी कार्यकलापों को, इसके निम्नलिखित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में, अग्रसर किया गया—

- (क) तिब्बती संस्कृति और परम्परा का परिरक्षण;
- (ख) तिब्बती भाषा में परिरक्षित, किन्तु मूल रूप में समाप्त हो गए, प्राचीन भारतीय विज्ञानों और साहित्य को पुनः प्राप्त करना।
- (ग) भारत को उन सीमावर्ती क्षेत्रों के छात्रों को वैकल्पिक शैक्षिक सुविधा प्रदान करना, जिन्होंने उच्च तिब्बती शिक्षा प्राप्त करने का पहले लाभ उठाया था;
- (घ) तिब्बती अध्ययन में डिग्रियाँ दिये जाने के प्रावधान वाली आधुनिक विश्वविद्यालय शैक्षिक प्रणाली के माध्यम से परम्परागत विषयों में शिक्षण और अनुसंधान के क्षेत्र का लाभ उठाना;

## शिक्षण

8.04 तीन श्रेणियों अर्थात् मध्यमा (अवर स्नातक), शास्त्री (स्नातक) और आचार्य (उत्तर-स्नातक) के अर्न्तगत संस्थान तिब्बती अध्ययन में नौ वर्ष की अवधि के पाठ्य-क्रम प्रदान करता है। इसमें तीन संकाय और छः विभाग हैं, अर्थात्

## संकाय

- (1) हेतु एवं अध्यात्म विद्या संकाय;
- (2) शब्द विद्या संकाय;
- (3) आधुनिक विद्या संकाय;

## विभाग

- (1) संस्कृति विभाग;
- (2) सम्प्रदाय शास्त्र विभाग;
- (3) सामाजिक विज्ञान विभाग;
- (4) तिब्बती भाषा विभाग
- (5) प्राचीन और आधुनिक भाषा विभाग
- (6) मूल-शास्त्र विभाग

8.05 संस्थान विदेशी शोध अध्येताओं को अनुसंधान में मार्ग-दर्शन और पुस्तकालय सुविधाएं प्रदान करता है। वर्ष के दौरान, कई विदेशी अध्येता संस्थान में आये और पुस्तकालय की सुविधा का लाभ उठाया। ये सुविधायें उनके लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुई हैं। संस्थान का शान्ता रक्षित पुस्तकालय नामक पुस्तकालय सभी आधुनिक और संगणकीकरण सुविधाओं से पूर्णतया सुसज्जित है और वह आसानी से सुलभ है। पुस्तकालय के संग्रह में 39,749 मैक्रो दस्तावेज और 8338 माइक्रो दस्तावेज हैं, जो कि इस पुस्तकालय का समृद्ध भण्डार है।

## नये संकाय :

8.06 विद्यमान संकायों के अलावा, संस्थान में चिकित्सा-विद्या और शिल्प- विद्या का एक नया संकाय शुरू किया गया है।

## भाषी योजनाएं एवम् परियोजनाएं :

8.07 संस्थान का प्रस्ताव आगामी वर्षों में तिब्बती कलाओं तथा पुरा-वस्तुओं का एक संग्रहालय स्थापित करने का है। बौद्धिक सम्पर्क, अध्येताओं के आदान-प्रदान तथा सम्मेलनों और सेमिनारों के आयोजनों को और अधिक प्रोत्साहित करने के लिए एक सुसज्जित भाषा-प्रयोगशाला स्थापित करने की भी एक योजना है।

## केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह (जम्मू और कश्मीर) :

8.08 जब बौद्ध दर्शन-शास्त्र तथा अध्यात्म-विद्या में अध्ययन शुरू करने के लिए युवा लामाओं तथा नौसिखियों को लद्दाख से तिब्बत भेजने की प्राचीन पद्धति 1959 में समाप्त हो गई, तो यह महसूस किया गया था कि बौद्ध दर्शन में विशेषज्ञता प्राप्त संस्थान भारत में स्थापित किया जाना चाहिए, जिसके लिए लेह को सर्वाधिक उपयुक्त स्थान के रूप में चुना गया और केन्द्रीय-बौद्ध अध्ययन संस्थान में पहले बौद्ध दर्शनशास्त्र स्कूल के अतिरिक्त नियमित शैक्षिक पाठ्यक्रम शुरू किए गए थे और इस संस्थान को सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के साथ सम्बद्ध कर दिया गया, ताकि छात्रों को पूर्ण-माध्यमा, उत्तर-शास्त्री, आचार्य और पी० एच० डी० जैसी कक्षाओं के लिए तैयार किया जा सके। सभी कक्षाओं में छात्रों की कुल संख्या 300 से अधिक है। इनमें संस्थान द्वारा संचालित मठों में 24 विभिन्न शाखा स्कूलों में अध्ययन करने वाले छात्र शामिल नहीं हैं।

8.09 यह संस्थान बौद्ध कला तथा संस्कृति को परिरक्षित तथा प्रोन्नत करने के लिए दुर्लभ और मूल्यवान बौद्ध पुस्तकें प्रकाशित करने में सक्रिय रूप से लगा हुआ है। हिन्दी भाषी लोगों के लाभ के लिए तिब्बती से हिन्दी में दुर्लभ और मूल्यवान पुस्तकों का अनुवाद कार्य भी शुरू किया गया है। इस संस्थान का एक पुस्तकालय है, जिसमें बड़ी संख्या में पुस्तकें, विशेष रूप से बौद्ध और हिमालयी अध्ययन विषयों की हैं।

8.10 इस संस्था का समूचे हिमालयी क्षेत्र में बौद्ध-धर्म और बौद्ध संस्कृति में उच्च अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में विस्तार हो रहा है।

## तिब्बती कृतियों का पुस्तकालय और अभिलेखागार, धर्मशाला :

8.11 तिब्बती कृतियों का पुस्तकालय और अभिलेखागार, जो एक स्वायत्त पंजीकृत अनुसंधान संस्था है, की स्थापना तिब्बती सभ्यता की समृद्ध राष्ट्रीय विरासत और भारत तिब्बती अध्ययन को परिरक्षित रखने तथा प्रोन्नत करने के लिए 1971 में परम श्रद्धेय दलाई लामा द्वारा की गई थी। प्राथमिकता के तौर पर इस व्यापक उद्देश्य को मद्दे नजर रखते हुए, इसकी सभी परियोजनाओं का **संवर्धन** किया गया है। आज यह संस्था तिब्बती विद्या और भारत-तिब्बती बौद्ध अध्ययन के एक केन्द्र के रूप में विश्वविख्यात हो गई है। इस संस्था के निम्नलिखित विभाग हैं :—

- (1) तिब्बती पुस्तक और पांडुलिपि में अमूल्य हस्तलिखित पांडुलिपियों सहित 70,000 से अधिक पुस्तकें और पुस्तकालय पांडुलिपियां हैं।
- (2) विदेशी भाषा संदर्भ पुस्तकालय में तिब्बती, हिमालयी अध्ययनों तथा बौद्ध-ज्ञान पर अंग्रेजी तथा अन्य यूरोपीय भाषाओं में 8000 पुस्तकें, पत्रिकाएं तथा न्यूजलेटर हैं।
- (3) संग्रहालय और अभिलेखागार विभाग में लगभग 700 प्रतिमाएं, चित्रकलाएं, स्तूप, कर्मकाण्डी वस्तुएं तथा 360 ऐतिहासिक दस्तावेज और 5000 प्राचीन तिब्बती फोटोग्राफ हैं, जो 13-19 वीं शताब्दियों से संबंधित हैं।
- (4) तिब्बती अध्ययन केन्द्र में भारत-तिब्बती बौद्ध अध्ययन स्कूल, तिब्बती भाषा तथा साहित्य स्कूल, थंका चित्रकला स्कूल और परम्परागत काष्ठ उत्कीर्ण कला स्कूल शामिल हैं। ये सभी भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं।

8.12 वर्ष के दौरान भारत तथा विदेशों से अनेक आंगतुंकों ने संग्रहालय का दौरा किया।

## सिक्किम तिब्बती-विद्या अनुसंधान संस्थान, गंगटोक

8.13 सिक्किम तिब्बती-विद्या अनुसंधान संस्थान, गंगटोक सिक्किम सरकार के अधीन एक स्वायत्त संगठन है, जिसके शासी निकाय के अध्यक्ष सिक्किम के राज्यपाल हैं। इसकी स्थापना तिब्बती विद्या में अनुसंधान तथा अध्ययन के लिए की गयी है। संस्थान ने अनुसंधान और प्रतिमा विज्ञान, चिकित्सा, ज्योतिष तथा इतिहास जैसे संबद्ध विषयों को प्रोन्नत करने में महत्वपूर्ण कार्य किया है। इसका एक विशेष अनुसंधान और प्रकाशन कार्यक्रम है।

8.14 तिब्बती विद्या का बुलेटिन संस्थान की नियमित अनुसंधान पत्रिका है, जो वर्ष में तीन बार प्रकाशित की जाती है।

8.15 वर्ष के दौरान अनेक विदेशियों और भारतीय अध्येताओं ने संस्थान का दौरा किया।

## बौद्ध/तिब्बती संगठनों को वित्तीय सहायता :

8.16 संस्कृति विभाग बौद्ध/तिब्बती संस्कृति, परम्परा तथा संबंधित क्षेत्रों में अनुसंधान के प्रचार तथा वैज्ञानिक विकास में संलग्न मठों सहित बौद्ध/तिब्बती संगठनों के विकास के लिए वित्तीय सहायता की एक योजना संचालित कर रहा है। अनुदानों में प्रत्येक संगठन के लिए अधिक से अधिक 2 लाख रुपये तक का अनावर्ती, व्यय शामिल होता है, जिसे केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार अथवा संगठन के बीच 3:1 के अनुपात में बाँटा जाता है। वर्ष 1993-94 के दौरान लगभग 170 संगठनोंको वित्तीय सहायता देने पर विचार किया जाएगा।



दिल्ली पब्लिक लाईब्रेरी में बच्चे  
Children at Delhi Public Library

## पुस्तकालय

### राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता

9.01 राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता मुख्य रूप से बेलवेदरे, कलकत्ता में संग्रहीत लगभग 2.36 लाख ग्रंथों वाला देश का सबसे बड़ा पुस्तकालय है। यह पुस्तक वितरण अधिनियम, 1954 (1956 में यथा संशोधित) के प्रावधानों के अंतर्गत प्राप्त पुस्तकालयों में से एक है और भारतीय मुद्रित सांस्कृतिक विरासत का एक प्रमुख भंडार है। यह शोधकर्ताओं के लिए संदर्भ केन्द्र के रूप में भी कार्य करता है। इसमें संयुक्त राष्ट्र संघ और उसकी एजेंसियों और अन्य विदेशी सरकारी एजेंसियों के प्रकाशनों का संग्रह है।

9.02 सदैव की भाँति राष्ट्रीय पुस्तकालय, वर्ष 1993-94 के दौरान भी, मुद्रित सांस्कृतिक विरासत के परिरक्षण तथा शोधकर्ताओं और सामान्य पाठकों को सूचना प्रसारित करने की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में लगा है। सितंबर 93 तक की अवधि के दौरान पुस्तकालय द्वारा निष्पादित महत्वपूर्ण कार्यक्रम निम्न प्रकार हैं:—

#### संग्रह निर्माण तथा संग्रह व्यवस्था

9.03 भारत में प्रकाशित सामयिक पुस्तकों, समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं को प्राप्त करने का महत्वपूर्ण स्रोत है—पुस्तक वितरण अधिनियम-I विदेशों में प्रकाशित अंग्रेजी की पुस्तकें तथा पत्रिकाएँ खरीदकर प्राप्त की जाती हैं। भारत सरकार के सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अर्न्तगत 87 देशों की 215 संस्थाओं के साथ इस पुस्तकालय का पुस्तक विनिमय कार्यक्रम है। सामान्य व्यापार के माध्यम से आसानी से प्राप्त न होने वाले विदेशी प्रकाशनों को प्राप्त करने का यह सर्वोत्तम तरीका है।

#### पाठक सेवा

9.04 पुस्तकालय अपने वाचनालयों तथा ऋण अनुभाग के माध्यम से पाठकों को सेवाएँ प्रदान करता है। पुस्तकालय में “वाचनालय सदस्यों” के रूप में 15,000 से अधिक पाठकों के नाम दर्ज हैं। ऋण अनुभाग पुस्तकें उधार लेने वाले स्थानीय और बाहरी—दोनों प्रकार के 67,809 पंजीकृत पाठकों से पुस्तकों का लेन-देन करता है। यह अंतर्राष्ट्रीय ऋण के लिए राष्ट्रीय केन्द्र के रूप में भी काम करता है। सितम्बर, 93 तक लगभग 11,000 पुस्तकें पाठकों को उधार दी गयीं थीं। राष्ट्रीय अवकाश के दिनों को छोड़कर, शेष सभी दिन पाठक सेवाएँ प्रदान की जाती हैं।

## पुस्तकालय सामग्री का संरक्षण

9.05 राष्ट्रीय पुस्तकालय के पास पुस्तकालय की सामग्री के संरक्षण के लिए एक सतत् रूप से चलने वाला कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत भौतिक परिरक्षण तथा माइक्रोफिल्म के माध्यम से पुराने और दुर्लभ दस्तावेजों को परिरक्षित करने के प्रयास किए जाते हैं। माइक्रोफिल्म तैयार करने के कार्यक्रम के अंतर्गत पुस्तकालय प्राचीन और अप्राप्य प्रकाशनों की विषय-वस्तु की माइक्रोफिल्म बनाकर उन्हें भावी पीढ़ियों के लिए परिरक्षित करता है। शोध सामग्री की फोटो प्रतियाँ और माइक्रोफिल्में भी तैयार की जाती हैं, ताकि उन्हें सस्ते मूल्य पर पुस्तकालय और शोधकर्ताओं को उपलब्ध कराया जा सके।

## पुस्तकालय के आधुनिकीकरण की योजना

9.06 पुस्तकालय आधुनिकीकरण योजना के अंतर्गत इस पुस्तकालय ने यूनीमार्क नामक अन्तर्राष्ट्रीय प्रारूप में अंग्रेजी भाषा के मोनोग्राफों का सूचीपत्र तैयार करने तथा पत्रिकाओं के स्वचालित नियंत्रण का काम शुरू किया। पुस्तकालय के व्यावसायिक कार्मिकों में से जन शक्ति का विकास करने के लिए उन्हें प्रशिक्षण दिया गया।

## व्यक्ति

9.07 राष्ट्रीय पुस्तकालय के निदेशक ने अगस्त 1993 में बार्सिलोना, स्पेन में आयोजित इफला (इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ लायब्रेरी एसोसियेशन) के महासम्मेलन तथा राष्ट्रीय पुस्तकालयों के निदेशकों के सम्मेलन में भाग लिया।

9.08 पुस्तकालय के महत्वपूर्ण संग्रह की तथ्यात्मक स्थिति पर एक नजर

मद का ब्यौरा	सितम्बर, 93 तक
1. पुस्तकें और जिल्दबद्ध पत्रिकाएं	20,80,000
2. भारतीय भाषाओं की पुस्तकें	4,80,500
3. नक्शे	80,655
4. पांडुलिपियां	3,182
5. पत्रिकाओं के जिल्दबद्ध खंड	1,12,500
6. उपहार और विनिमय के रूप में प्राप्त प्रकाशन	4,92,755
7. पुस्तक वितरण अधिनियम के अंतर्गत प्राप्त प्रकाशन	83,000
8. भारतीय सरकारी प्रकाशन	4,66,500
9. दुर्लभ संग्रह की पुस्तकें	5,190
10. माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश कार्ड	3,200/93,500

## केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कलकत्ता

9.09 केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कलकत्ता मुख्य रूप से दो योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए उत्तरदायी है, जो इस प्रकार हैं:—(1) भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथ सूची का संकलन और प्रकाशन (रोमन और संबंधित भाषाओं, दोनों की लिपियों में), जो भारतीय संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त अंग्रेजी सहित चौदह भाषाओं में वर्तमान भारतीय प्रकाशनों की ग्रंथसूची है और (ii) इंडेक्स इंडियाना (रोमन लिपि में) का संकलन और प्रकाशन—यह प्रमुख भाषाओं की सामयिक भारतीय पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले चुनिंदा लेखों की अनुक्रमणिका है। यह पुस्तकालय संस्कृति विभाग का एक अधीनस्थ संगठन है।

## भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथसूची

9.10 आलोच्य वर्ष के दौरान, वर्ष 1991 के सभी मासिक अंक निजी मुद्रक द्वारा छापे गए। वर्ष 1990 और 1991 के वार्षिक खंडों के संकलन और मुद्रण का कार्य भी आरंभ कर दिया गया है। इस समय, वर्ष 1992 के मासिक अंकों के मुद्रण और इनके वार्षिक संकलन का कार्य निजी मुद्रकों ने अपने हाथ में ले लिया है।



## भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथसूची की भाषा पुस्तिकाएं

9.11 वर्ष 1988-90 की उर्दू ग्रंथसूची और वर्ष 1989-91 की तमिल ग्रंथसूची के सग्रहीत खंडों का मुद्रण पूरा कर लिया गया है और वर्ष 1989 की हिन्दी ग्रंथसूची का वार्षिक खंड मुद्रणाधीन है। तकनीकी कार्मिकों की कमी के बावजूद अन्य भाषाओं की ग्रंथ सूचियों के प्रकाशन के लिए सतत प्रयास किए गए हैं।

## इंडेक्स इंडियाना

9.12 इस समय इंडेक्स इंडियाना का छः भारतीय भाषाओं अर्थात् बंगला, हिन्दी, गुजराती, मराठी, मलयालम और तमिल के वार्षिक संचित खण्ड के रूप में प्रकाशित किया जाता है। 1986-88 का संचित खंड मुद्रणाधीन है।

## सेमिनार, मेले और सम्मेलन

9.13 अप्रैल, 1993 में नई दिल्ली में भारतीय भाषा प्रकाशकों के राष्ट्रीय सम्मेलनों पर आयोजित एक कार्यशाला में पुस्तकाध्यक्ष ने भाग लिया। वर्ष 1993-94 के अंत में आयोजित किए जा रहे आइ०ए०एस०एल०आइ०सी० और आइ०एल०ए० के सम्मेलनों में एक सहायक संपादक और एक उप-संपादक भाग लेंगे।

## पुस्तकालय विज्ञान के छात्रों का दौरा

9.14 समीक्षाधीन अवधि के दौरान गुवाहाटी विश्वविद्यालय, रवीन्द्र भारती और जमशेदपुर विश्वविद्यालय के पुस्तकालय विज्ञान के छात्रों ने पुस्तकालय का दौरा किया तथा यहां किए जा रहे कार्य की प्रशंसा की। यह पुस्तकालय प्रायः आने वाले पुस्तकालय विज्ञान के स्नातक तथा स्नातकोत्तर छात्रों तथा शोधकर्ताओं को भी अपनी सेवाएं प्रदान करता है।

## केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय, नई दिल्ली

9.15 केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय परिसर में केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय, 'शास्त्री भवन' सभी चौदह प्रादेशिक भाषाओं में दस्तावेज संसाधनों सहित हिन्दी एवम् क्षेत्रीय भाषा खण्ड, बहावलपुर भवन तथा सरकारी संगठनों, सामान्य पाठकों तथा शोध अध्येताओं को संदर्भ तथा शोध सामग्री उपलब्ध कराने के मुख्य उद्देश्य से आर० के० पुरम् स्थित शाखा पुस्तकालय शामिल हैं।

9.16 हाल ही में इसके स्रोतों को अद्यतन बनाने के प्रयास किए गए। शास्त्री भवन स्थित मुख्य पुस्तकालय भवन में वातानुकूलन तथा लिफ्ट की स्थापना का कार्य आरंभ कर दिया गया तथा प्रगति पर है।

## सदस्यता

9.17 पुस्तकालय में केन्द्रीकृत सदस्यता प्रणाली है तथा वर्ष के दौरान 2,935 सदस्यों का नामांकन/नवीनीकरण किया गया है।

## अधिग्रहण

9.18 अंग्रेजी की 1,487 पुस्तकें, हिन्दी की 294 पुस्तकें प्राप्त करके तथा हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की 833 पुस्तकें खरीद कर पुस्तकालय के संसाधनों में वृद्धि की गई। इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय में गजट, वैधानिक निकायों की कार्यवाही, कानूनी दस्तावेज सहित केन्द्र एवम् राज्य सरकार प्रकाशनों के 47,721 दस्तावेज प्राप्त किए गए। इस अवधि के दौरान यूनेस्को, संयुक्त राष्ट्र, अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, इत्यादि जैसे विदेशी अभिकरणों तथा अन्य विदेशी सरकारों से 2,000 से अधिक सरकारी प्रकाशन प्राप्त किए गए। पुस्तकालय को माइक्रोफिश रूप में अमरीकी सरकार के 3000 प्रकाशन भी प्राप्त हुए हैं।

9.19 पुस्तकालय 40 दैनिक समाचार पत्रों का ग्राहक है तथा पुस्तकालय को चन्दा/उपहार के रूप में अंग्रेजी, हिन्दी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की कुल 462 पत्रिकाएँ प्राप्त हुईं।

## सेवाएं

9.20 वर्ष के दौरान, विभिन्न विषयों की 10,00,307 पुस्तकें जारी की गईं तथा तुलसी सदन पुस्तकालय द्वारा 65,000 पुस्तकें जारी की गईं।

## अन्तर पुस्तकालय ऋण सेवाएं

9.21 अन्तर पुस्तकालय ऋण पर 39 पुस्तकें प्राप्त करके पुस्तकालय के संसाधनों में वृद्धि की गई तथा उसी समय केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय द्वारा अन्तर पुस्तकालय ऋण पर 241 पुस्तकें जारी की गई तथा तुलसी सदन पुस्तकालय द्वारा अन्तर-पुस्तकालय ऋण पर 38 पुस्तकें प्राप्त की गई तथा 263 पुस्तकें जारी की गई।

## संदर्भ सेवाएं

9.22 वर्ष के दौरान, संदर्भ अनुभाग द्वारा 1950 संदर्भ प्रश्नावलियों के उत्तर वैयक्तिक रूप से, 6300 के टेलीफोन पर तथा 30 डाक द्वारा भेजे गए, 1735 प्रश्नावलियों के उत्तर आर. के. पूरम शाखा द्वारा, 180 प्रश्नावलियों के उत्तर भारतीय सरकारी दस्तावेज अनुभाग (आई ओ डी) द्वारा तथा 6013 प्रश्नावलियों के उत्तर विदेशी सरकारी दस्तावेज (एफ ओ डी) अनुभाग द्वारा दिए गए। इसके अतिरिक्त, तुलसी सदन पुस्तकालय द्वारा 1160 प्रश्नावलियों के उत्तर वैयक्तिक रूप से, 772 के फोन द्वारा दिए गए।

## माइक्रोफिल्मिंग

9.23 अवधि के दौरान माइक्रोफिल्मिंग इकाई ने दुर्लभ दस्तावेजों के 10,500 एक्सपोजर तैयार किए।

## संगणक अनुप्रयोग

9.24 पुस्तकालय में 1989 के बाद मुद्रित जो पुस्तकें शामिल की गई, उनके लिए हमारी एच. पी. 3000/37 कम्प्यूटर प्रणाली में यूनीमार्क विशिष्टियों सहित ग्रन्थ सूची आंकड़ा-आधार (कैटलाग) तैयार किया गया। पुस्तकालय में सीरियल नियंत्रण के लिए एक आंकड़ा आधार रखा जाता है और पत्रिकाओं के धारण की सूचना कम्प्यूटर पर उपलब्ध है। भारतीय सरकारी दस्तावेज (आई ओ डी), जिनमें गजट और रिपोर्ट शामिल रहती हैं, के लिए एक आंकड़ा-आधार रखा जाता है तथा इसे नियमित रूप से अद्यतन रखा जा रहा है। पुस्तकालय के सदस्यों से संबंधित व्यौर देने वाला 'मेंबरशिप' नामक एक दूसरा आंकड़ा-आधार परिचालन अनुभाग में उपयोग के लिए रखा जाता है।

## केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय की पुस्तकों के स्टैकों का वातानुकूलन और लिफ्ट की स्थापना

9.25 केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय की पुस्तकों के स्टैकों के वातानुकूलन तथा लिफ्ट की स्थापना का कार्य प्रगति पर है।

## महाभारत आंकड़ा-आधार परियोजना

9.26 सितंबर, 1993 तक लगभग 30,000 श्लोक मशीन द्वारा पढ़ने योग्य रूप में परिवर्तित कर लिए गए हैं।

## तंजावुर महाराजा सरफोज़ी सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजावुर

9.27 तंजावुर महाराजा सरफोज़ी सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजावुर विश्व में विद्यमान कतिपय मध्ययुगीन पुस्तकालयों में से एक है। संस्कृति के अमूल्य भंडार तथा कालजयी ज्ञान-निधि के प्रतीक इस पुस्तकालय का निर्माण तंजावुर के नायकों और मराठों के उत्तराचर राजवंशों द्वारा किया गया था। इस पुस्तकालय में कला, संस्कृति और साहित्य के सभी पहलुओं से संबंधित पाण्डुलिपियों का समृद्ध और दुर्लभ संग्रह है।

9.28 रॉयल पैलेस लायब्रेरी के नाम से अस्तित्व में आए इस पुस्तकालय को नायक राजाओं (1535-1673) ने बौद्धिक समृद्धि के लिए पोषित किया। इस पुस्तकालय को एक स्मारक संस्था के रूप में विकसित करने का श्रेय तंजौर के मराठा राजाओं (1676-1855) को जाता है। इन राजसी विभूतियों में राजा सरफोज़ी II (1798-1832) अत्यधिक बुद्धिमान, उच्चकोटि के विद्वान तथा बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। जब वह बनारस की तीर्थयात्रा पर थे, तब उन्होंने अनेक विद्वानों को उत्तर और अन्य क्षेत्रों में स्थित संस्कृत विद्या के सभी विख्यात केन्द्रों से बड़ी संख्या में रचनाओं को एकत्र करने, खरीदने तथा उनकी प्रतिलिपियाँ तैयार करने के काम में लगाया। इस कार्य के प्रति उनकी असाधारण निष्ठा के कारण उनके नाम के आधार पर इस पुस्तकालय का नाम तंजावुर महाराजा सरफोज़ी सरस्वती महल पुस्तकालय कहा जाता है।

## पांडुलिपि संग्रह

9.29 पुस्तकालय में पांडुलिपियों का अधिकतम समृद्ध संग्रह है, जो वास्तव में दक्षिण भारत की संस्कृति का द्योतक है। केन्द्रीय संग्रह के अतिरिक्त, इस पुस्तकालय में उन पुस्तकों को भी शामिल किया गया है, जो तंजावुर और आस-पास के क्षेत्रों में रहने वाले कई विद्वान

और सरक्षकों के निजी पुस्तकालयों से प्राप्त की गई थीं। इस पुस्तकालय में संस्कृत, तमिल, मराठी, तेलुगु, इत्यादि विभिन्न भाषाओं की अनेक विषयों पर, भोजपत्र और कागज, दोनों पर लिखी गई पांडुलिपियां उपलब्ध हैं।

9.30 इस पुस्तकालय में अधिकतर पांडुलिपियां संस्कृत भाषा में हैं, जिनकी संख्या 38,907 से भी अधिक है। ये पांडुलिपियां विभिन्न लिपियों जैसे ग्रंथ, देवनागरी, नंदीनागरी और तेलुगु में लिखी गई हैं। तमिल पांडुलिपियों की कुल संख्या 3,500 है, जिनमें 3000 पांडुलिपियां साहित्य और चिकित्सा शास्त्र से संबंधित विषयों पर हैं। साहित्य में व्याकरण, गणित, नीतिशास्त्र, गीतिकाव्य, महाकाव्य, चिकित्सा शास्त्र, और दर्शन विषयक शोध प्रबंध इत्यादि विविध विषय शामिल हैं। शैव, वैष्णव, जैन धर्मों, वास्तुकला, ज्योतिष, मंत्र इत्यादि से संबंधित धार्मिक साहित्य की पांडुलिपियां पुस्तकालय की शोभा बढ़ाती हैं। इन पांडुलिपियों का सूचीकरण किया गया तथा वर्णनात्मक रूप में बारह खंडों में प्रकाशित किया गया।

9.31 इस पुस्तकालय में मराठी भाषा की लगभग 3000 पांडुलिपियां हैं, जिनमें अधिकतर कागज पर तथा कुछेक भोजपत्र पर हैं। इन पांडुलिपियों को कई खंडों में विभाजित किया गया है जैसे वेदान्त, पुराण, इतिहास, कथा और काव्य, नाटक, कहानी, वैद्य, कामसूत्र, संगीत इत्यादि। तेलुगु भाषा की 1075 रचनाओं वाली 769 पांडुलिपियां हैं, जिनमें से अधिकतर भोजपत्र पर तथा कुछेक कागज पर हैं।

9.32 इस पुस्तकालय में मोदी पांडुलिपियों का अच्छा संग्रह है। इन्हें मराठा राज अभिलेख भी कहा जाता है। इस पुस्तकालय में ऐसे अभिलेखों के 850 बंडल हैं। इन अभिलेखों में मराठा प्रशासन से संबंधित दैनिक घटनाएं तथा अन्य व्यौर दर्ज हैं। ये केवल कागज पर हैं और अधिकतर मराठी भाषा में हैं।

## पुस्तक संग्रह

9.33 पुस्तकालय का विभिन्न स्रोतों से संग्रहीत 46,100 से भी अधिक पुस्तकों का संग्रह बहुत ही उत्कृष्ट है। अधिकतर प्राचीन पुस्तकें महाराजा सरफोजी ने अपने जीवन काल में संग्रह की थीं। उनके पसंदीदा संग्रह में अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन, इटालवी, ग्रीक और डेनिश भाषाओं की 4,500 से भी अधिक पुस्तकें हैं।

## संग्रहालय

9.34 पांडुलिपियों और पुस्तकों के अतिरिक्त, काष्ठ और कागज की सुसज्जित तंजोर पेंटिंग, गज-शास्त्र, अश्व-शास्त्र जैसी चित्रित पांडुलिपियां, पौराणिक पेंटिंग, वानस्पतिक निर्देश पेंटिंग, सैन्य वेशभूषा, चित्ररामायण के दुर्लभ रेखांकन एवं प्रिंट इस पुस्तकालय में हैं। अधिकांश रूचिकर तथा महत्वपूर्ण सामग्री संग्रहालय के प्रदर्शन-मंजूषाओं में दर्शकों के लिए प्रदर्शित की गई है, जिनकी संख्या प्रतिवर्ष 1.20 लाख से अधिक होती है।

## रोजमर्रा के कार्य

9.35 इस पुस्तकालय के प्रमुख कार्य परिरक्षण, प्रकाशन, सूचीकरण तथा पाठक सेवा हैं। कीड़ों, अम्ल तथा अन्य यांत्रिक कारणों से होने वाली क्षति से बचाव के लिए धूम्रकरण, लैमिनेशन तथा विअम्लीकरण जैसी संरक्षण की आधुनिक तकनीकें अपनाई जा रही हैं। भोजपत्रों के परिरक्षण के लिए सिट्रोनेला लुब्रीसिटी तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है। इस तकनीक के द्वारा पत्रों को लचीला बनाया जाता है तथा कीड़ों से बचाया जाता है। स्वीट फ्लैग, काला जीरा, लौंग, गोल मिर्च, दालचीनी की छाल, कर्पूर के पाउडर (चूर्ण) से तैयार किए गए मिश्रण को भी एक देसी प्रभावोत्पादक परिरक्षी विधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। पुस्तकालय के संरक्षण अनुभाग ने 983 कागज, 350 भोजपत्र की पांडुलिपियों को संरक्षित किया।

9.36 लोगों में ज्ञान के प्रसार के लिए पुस्तकालय दुर्लभ और अप्रकाशित पांडुलिपियों को केन्द्रीय सरकार की वित्तीय सहायता से प्रकाशित करवा रहा है। पुस्तकालय 1939 से एक पत्रिका भी प्रकाशित करता आ रहा है, जिसमें दुर्लभ पांडुलिपियों से ली गई लघु और पूर्ण रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं। इस पुस्तकालय ने अब तक 350 पुस्तकें प्रकाशित की हैं। वर्ष के दौरान पुस्तकालय ने पांडुलिपियों से 17 पुस्तकें प्रकाशित की तथा पूर्व प्रकाशनों के 7 पुनर्मुद्रण निकाले।

9.37 पुस्तकालय इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के माइक्रोफिल्म परियोजना का कार्य अपने हाथ में ले रहा है। इस वर्ष 850 से भी अधिक पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्में तैयार की गईं।

## वर्ष के दौरान अधिग्रहण

9.38 पांडुलिपियों का अधिग्रहण केवल उपहारों के रूप में किया जाता है, परन्तु मुद्रित पुस्तकों की प्राप्ति खरीद और दान के माध्यम से की जाती है। इस वर्ष के दौरान 66 पांडुलिपियां तथा 469 पुस्तकें उपहार स्वरूप प्राप्त की गईं। चतराम प्रशासन, तंजावुर से तंजोर

चित्रकला शैली की चार प्रतिकृतियां परिरक्षण तथा पुस्तकालय के संग्रहालय में प्रदर्शन के लिए प्राप्त की गईं। (क) राजा तुलाजा, साथ में दो रानियां, (ख) तंजावुर शिवाजी, (ग) भगवान शिव और (घ) राजा तुलाजा साथ में प्रताप सिंह के चित्र हैं।

9.39 तंजावुर जिले में स्थित ओरातानाडु के मुक्ताम्बल चतराम से कैनवस पर चित्रित 10×9-1/2 आकार में राजा सरफोजी की एक प्रतिकृति प्राप्त की गई और उसे क्षेत्रीय संरक्षण लेबोरेटरी, मैसूर के अधिकारियों की सलाह और मदद से संरक्षित तथा संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया।

9.40 राजा सरफोजी की 216वीं वर्षगांठ 5 अक्टूबर 1993 को मनाई गई।

## दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, दिल्ली

9.41 दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी (दि०प०ला०), दिल्ली के नागरिकों को निःशुल्क पुस्तकालय एवं सूचना सेवा प्रदान करने के लिए यूनेस्को के सहयोग से तत्कालीन शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत मार्गदर्शी परियोजना के रूप में 1951 में स्थापित की गई। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में स्थापित यह संस्था समय के साथ-साथ आधुनिक भारत के एक अग्रणी सार्वजनिक पुस्तकालय निकाय के रूप में विकसित हुई और दक्षिण-पूर्व-एशिया का व्यस्ततम सार्वजनिक पुस्तकालय बन गई है। दिल्ली में इसका जाल सर्वत्र फैला हुआ है, जिसके अंतर्गत केन्द्रीय पुस्तकालय में इसका मुख्यालय है, क्षेत्रीय पुस्तकालय, सरोजिनी नगर में, 4 शाखाएं-पटेल नगर, लक्ष्मी बाई नगर, करोल बाग और शाहदरा में, 17 उपशाखाएं-एंड्रयूजगंज, बवाना, जयरानी बाग, जोर बाग (बाल पुस्तकालय), कस्तूरबा गांधी मार्ग, मुखमेल पुर, नरेला, नेताजी नगर, नया रोहतक रोड, पुराना सचिवालय, पेशवा रोड, रामकृष्ण पुरम, सै० 8, श्री निवास पुरी, त्रिनगर, योजना विहार, मुंडका एवं जागृति एन्क्लेव में, समाज के कमजोर वर्गों में पठन अभिरूचियों को जागृत करने के लिए 22 पुनर्वास कालोनी पुस्तकाल-अरूणा नगर, दक्षिण पुरी, हस्तसाल, इन्द्रपुरी, ज्वाला पुरी, जहाँगीर पुरी, कल्याण पुरी, खान पुर, खिचड़ी पुर, ख्याला, मादी पुर, मंगोल पुरी (एस०) नन्द नगरी, पुरानी सीमा पुरी, नांगलोई (ए०), संगम पार्क, सत्य निकेतन, सीलम पुर, शकूर पुर, सुल्तान पुरी (एस०सी० 4) एवं त्रिलोक पुरी (झाक-22) में, 10 वाचनालय-गोकुल पुरी, मंगोल पुरी, नांगलोई, नई सीमा पुरी, रघुवीर नगर, सुल्तान पुरी, तीगरी, त्रिलोक पुरी एवं कमला मार्किट में, नेत्रहीनों के लिए ब्रेल पुस्तकालय एवं 18 चल सेवा केन्द्र, दिल्ली के प्रमुख तीन स्टेडियमों-नेशनल स्टेडियम, तालकटोरा स्टेडियम और इंदिरा गांधी स्टेडियम में उपशाखा के रूप में 3 खेल पुस्तकालय स्थापित हैं, पुस्तकालय की विशिष्ट सेवाओं के अंतर्गत गोविन्द बल्लभ पंत अस्पताल और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के रोगियों के लिए 2 अस्पताल पुस्तकालय और एक उपशाखा केन्द्रीय कारागार के बन्दियों और कर्मचारियों के लिए, विभिन्न संस्थाओं द्वारा संचालित 28 निःक्षेप केन्द्र तथा राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के सुदूर शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों की सेवा के लिए 69 चल पुस्तकालय सेवा केन्द्रों का जाल फैला हुआ है। हाल ही में दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के समीपस्थ कुछ क्षेत्रों जैसे नोएडा, गाजियाबाद, गुडगांव, फरीदाबाद और सोनीपत में नेत्रहीनों से संबंधित संगठनों में ब्रेल पुस्तकालय सेवा का विस्तार करने का निर्णय लिया। यह भी निर्णय लिया गया कि दि०प०ला० द्वारा क्रय किए गए भूखंड पर आर०के० पुरम सै०-2 में नेत्रहीनों के लिए एक पुस्तकालय का निर्माण किया जाए।

9.42 दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी न केवल पुस्तकें और पत्रिकाएं प्राप्त करने तथा उन्हें अपने पाठकों को जारी करने तक ही सीमित है, अपितु जब से यह पुस्तकालय स्थापित हुआ है, तभी से निरक्षरता-उन्मूलन एवं ज्ञान-प्रसार पर महत्व देने के साथ-साथ यह पुस्तकालय सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से अपने कार्यक्रमों में निरन्तर विविधता प्रदान कर रहा है।

9.43 पुस्तकालय में लगभग 76,000 पंजीकृत सदस्य हैं और इसका कुल पुस्तक संग्रह 11,22,484 है। यह लाइब्रेरी अपने 187 सेवा केन्द्रों के माध्यम से 8,000 पुस्तकें प्रतिदिन जारी करती है। 31.3.93 को समाप्त हुए वर्ष के दौरान, गृह पठन हेतु 20,95,995 पुस्तकें परिचालित की गईं। पुस्तकालय में ग्रामोफोन रिकार्ड तथा कैसेटों का बहुत अच्छा संग्रह है, जिसे सदस्यों को निःशुल्क जारी किया जाता है। ग्रामोफोन रिकार्ड तथा कैसेटों की कुल संख्या 5385 है। दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (दि०प०ला०) ने इस वर्ष दि०प०ला० में वीडियो कैसेट पुस्तकालय स्थापित करने का निर्णय लिया।

9.44 वर्ष 1993-94 के पूर्वार्द्ध में दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने 18,346 पुस्तकें क्रय कीं तथा 1668 पुस्तकें उपहार स्वरूप प्राप्त हुईं। इसके अतिरिक्त, पुस्तक वितरण अधिनियम के अंतर्गत 5905 पुस्तकें प्राप्त हुईं।

9.45 शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के प्रस्ताव पर दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने दिनांक 1.4.93 से पंजाबी अकादेमी के अधीन कार्यरत 58 कम्पोजिट पुस्तकालयों को उनकी परिसंपत्तियों, दायित्वों तथा कर्मचारियों सहित ग्रहण किया। ये पुस्तकालय पुनर्वास कालोनियों में रहने वाले समाज के कमजोर वर्गों की आवश्यकताओं को पूर्ण करते हैं।

9.46 कारागार महानिरीक्षक, तिहाड़ के अनुरोध पर दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (दि०प०ला०) ने केन्द्रीय कारागार, तिहाड़ के परिसर में एक उपशाखा पुस्तकालय-सह-वाचनालय-सह-आपूर्ति केन्द्र स्थापित करने का निर्णय लिया है, जिसका उद्घाटन शीघ्र ही गृह सचिव, दिल्ली

द्वारा किया जाएगा। यह पुस्तकालय बच्चों/बन्धियों और जेल कर्मचारियों की आवश्यकताओं को पूर्ण करेगा और सभी चारों कारागारों में रहने वालों को पुस्तकें प्रदान करने के लिए मुख्य केंद्र के रूप में कार्य करेगा।

9.47 दि०प०ला० प्रथम यूनेस्को मार्गदर्शी पुस्तकालय परियोजना होने के कारण तथा 1951 से कार्य करने के कारण दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड ने इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ लाइब्रेरी एसोसिएशन एंड इंस्टीट्यूशन (इफला) द्वारा दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की कार्य-प्रणाली का मूल्यांकन करने का अनुरोध स्वीकार किया।

एशियन डेवलपमेंट बैंक ने अपने प्रकाशनों के लिए दि०प०ला० का डिपोजिटरी लाइब्रेरी के रूप में चयन किया।

## राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान, कलकत्ता

9.48 राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान एक पूर्णतः वित्तपोषित स्वायत्त संगठन है, जो कि राज्य सरकारों, केन्द्रशासित क्षेत्र के प्रशासकों तथा इस क्षेत्र में कार्यरत अन्य संगठनों के सहयोग से संपूर्ण देश में पुस्तकालय सेवाओं का विकास करने में रत है। देश की सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाओं में सुधार लाने के लिए यह समतुल्य सहायता की कई योजनाओं का कार्यान्वयन कर रहा है। मार्च, 1993 को समाप्त वर्ष के दौरान, 272.60 लाख रुपये की सहायता-राशि प्रदान की गयी। इस वर्ष के दौरान, विभिन्न स्तरों के 3,500 से अधिक पुस्तकालयों को सहायता प्रदान की गयी।

9.49 सहायता कार्यक्रम के अतिरिक्त, देश में पुस्तकालय आंदोलन को प्रोत्त करने की दृष्टि से प्रतिष्ठान ने कई प्रोत्तपरक कार्यक्रमों को भी प्रारंभ किया है। श्री निखिल चक्रवर्ती ने 15 जुलाई, 1993 को राजा राममोहन राय स्मारक व्याख्यान-1993 प्रस्तुत किया।

9.50 प्रतिष्ठान एक त्रैमासिक समाचार पत्रिका प्रकाशित करता है, जो केवल इसके कार्यक्रमों से संबंधित सूचना ही नहीं देती है, अपितु देश-विदेश के विभिन्न भागों में पुस्तकालय सेवाओं संबंधी महत्वपूर्ण समाचार का भी प्रचार-प्रसार करती है। वर्ष के दौरान सभी चार अंक प्रकाशित किए गए। प्रतिष्ठान ग्रंथनः पुस्तकालय अध्ययन की भारतीय पत्रिका नामक एक छमाही पत्रिका भी प्रकाशित करता है, जिसमें पुस्तकालय एवं सूचना-विज्ञान तथा संबंधित विषयों पर महत्वपूर्ण लेख, टिप्पणी, समाचार, पुस्तकालय तथा सूचना-विज्ञान के क्षेत्र में होने वाली घटनाएं एवं पुस्तक समीक्षाएं होती हैं। वर्ष के दौरान दो अंक प्रकाशित हुए। पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन केन्द्र के रूप में एक विशेष पुस्तकालय को विकसित किया जा रहा है। प्रतिष्ठान देश के सार्वजनिक पुस्तकालयों के संबंध में आंकड़े एकत्र कर रहा है और इस संबंध में एक कंप्यूटरीकृत आंकड़ा-आधार भी तैयार कर रहा है।

9.51 प्रतिष्ठान ने मार्च, 1993 में अपनी स्थापना के दो दशक पूरे करने के उपलक्ष्य एक समारोह आयोजित किया। तीन-दिवसीय इस समारोह के अंतर्गत भारत में पुस्तकालय आंदोलन पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी, राजा राममोहन राय स्मारक व्याख्यान तथा सार्वजनिक पुस्तकालयों के राज्य प्रतिनिधियों के साथ बैठक शामिल थीं। इस समारोह का उद्घाटन 12 मार्च, 1993 को माननीय केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री अर्जुन सिंह द्वारा किया गया।

## खुदाबख्श ओरियन्टल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना

9.52 बिहार के एक प्रख्यात सपूत खुदाबख्श खाँ ने सन् 1891 ई० में अपने खानदान द्वारा एकत्रित की गई पाण्डुलिपियों तथा प्रकाशनों के व्यक्तिगत भण्डार से एक पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना की और उसी साल उन्होंने एक दानपत्र द्वारा अपना पूरा संग्रह जनता के हाथों सौंप दिया। यह सार्वजनिक पुस्तकालय, जो अब विश्व भर में खुदाबख्श ओरियन्टल पब्लिक लाइब्रेरी के नाम से प्रसिद्ध है, पूरे पूर्वी देशों में पाण्डुलिपियों के कुछ बड़े केन्द्रों में से एक बड़ा केन्द्र माना जाता है, और इस पुस्तकालय के संग्रहों में अठारह हजार से अधिक पाण्डुलिपियां हैं, एक लाख साठ हजार प्रकाशित पुस्तकें हैं और दो हजार से अधिक मुगल, राजपूत, इरानी तथा तुर्की शैली की मूलकृतियों के नमूने हैं। सन् 1969 ई० में संसद द्वारा पारित एक अधिनियम के अंतर्गत इसे एक राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया गया है और उसी वर्ष से भारत सरकार ने इसे अपने अधीन ले लिया है। अब इस पुस्तकालय का प्रबंध, बिहार के राज्यपाल की अध्यक्षता में गठित एक स्वतंत्र बोर्ड की देख-रेख में चल रहा है।

### पुस्तक प्राप्ति

9.53 खरीदारी, आदान-प्रदान या उपहार के द्वारा पाण्डुलिपियों की प्राप्ति पुस्तकालय का एक निरन्तर कार्य है। पुस्तकालय ने दूसरे संग्रहों में उपलब्ध बहुमूल्य पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपि प्राप्त करने का भी कार्यक्रम बनाया है। अब तक अलीगढ़, रामपुर, भागलपुर,

मनेर, फुलवारीशरीफ, आर्माफिया (हैदराबाद), ऐशियाटिक सोसायटी (कलकत्ता) के संग्रहों में से बहुमूल्य पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपि तैयार करने का काम पूरा किया जा चुका है। इंडिया ऑफिस में बरतानवी संग्रह तथा कैंब्रिज के संग्रहों में से भी उत्कृष्ट पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्मों प्राप्ति की जा चुकी है।

## जीवित समकालीन विद्वानों का संरक्षण

9.54 भारत की मिला जुली संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले महत्वपूर्ण व्यक्तियों को जीवित रखने के लिए ऑडियो और वीडियो कैसेट में उनके प्रारूप और उनकी बोलियों को सुरक्षित कर लेने का कार्य भी जारी है। इसके लिए ऑडियो-वीडियो टेप का एक अलग संग्रह तैयार किया जा रहा है। अब तक भारत के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सात सौ से अधिक ऑडियो तथा 450 वीडियो टेप तैयार हो चुके हैं। साथ ही इन प्रसिद्ध विद्वानों की हस्तलिपि को सुरक्षित करने और उसे प्रसारित करने का कार्य भी जारी है। उम्र प्रकार इन विख्यात विद्वानों के जीवन काल में एकत्रित किए गए मूल विवरण आने वाले वंशजों के लिए पुस्तकालय का सर्वोत्तम उपहार होगा।

## ज्ञान का प्रसार

9.55 ज्ञान के और अधिक व्यापक पैमाने पर प्रसार के लिए पुस्तकालय में सुरक्षित कीमती ज्ञान सामग्रियों के उन्नत प्रयोग की आंग भी पुस्तकालय प्रयत्नशील है। इस उद्देश्य हेतु पुस्तकालय शोधकर्ताओं को उनके शोध से संबंधित सामग्री की प्राप्ति में हर संभव सहायता उपलब्ध कराने के लिए एक बहु-आयामी कार्यक्रम बनाया है। लाइब्रेरी की सभी नई और पुरानी पत्रिकाओं के संग्रह की अनुक्रमणिका तैयार की जा रही है।

## वार्षिक/विस्तार व्याख्यान

9.56 वार्षिक/विस्तार वाद-विवाद, सेमिनार एवं सिम्पोजिया नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं। इस संबंध में प्रमुख विद्वानों को व्याख्यान देने एवं अपना शोधपत्र प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। कम से कम समय में अधिकाधिक ज्ञान प्राप्ति का यह एक सरल माध्यम है। ये व्याख्यान, जो पूरी आयु के शोध एवं अनुभव का निचोड़ होते हैं, नियमित रूप से प्रकाशित भी किए जाते हैं।

## खुदा बख्शा शोध फेलोशिप

9.57 शोध की गति को तेज करने के लिए एक नेशनल फेलोशिप, दो विजिटिंग, तीन सीनियर तथा सात जूनियर फेलोशिप भी यू.जी.सी की तरह आरंभ किए गए हैं, ये फेलोशिप, ज्ञान के छुपे हुए भण्डार पर जिस तेजी के साथ संभव हो सके, कार्य करने के लिए जारी हुए हैं, जिन पर पी.एच.डी./डी.लिट. की उपाधि मिलती है। इस पुस्तकालय को कश्मीर विश्वविद्यालय, गुलबर्गा विश्वविद्यालय, जामिया मिलिया इस्लामिया, मगध विश्वविद्यालय, बिहार विश्वविद्यालय, शान्ति निकेतन और जामिया हमदद ने अपने शोध केन्द्र के रूप में मान्यता प्रदान कर दी है।

## शोधन एवं प्रकाशन

9.58 पं. जवाहरलाल नेहरू जब 1953 ई. में पुस्तकालय में पधारें तो उन्होंने पुस्तकालय की अनमोल वस्तुओं से प्रभावित होकर यह इच्छा व्यक्त की थी कि यदि इन प्राचीन एवं दुर्लभ पाण्डुलिपियों में छिपा ज्ञान, आधुनिक उपकरणों के माध्यम से पुनः प्रकाशित हो जाता तो वे लोग जो पटना आने की सामर्थ्य नहीं रखते, वे भी इस ज्ञान से लाभान्वित होते। नेहरू जी की इस इच्छा के अनुसार ऐसी सभी दुर्लभ वस्तुओं का समालोचनात्मक सम्पादन और अनुवाद होता रहा है। इस प्रकार अब तक 64 दुर्लभ पाण्डुलिपिया का समालोचनात्मक सम्पादन एवं प्रकाशन का कार्य पूरा हो चुका है। अप्रैल 1993 से सितम्बर 1993 तक लाइब्रेरी ने तीन पाण्डुलिपियों के समालोचनात्मक सम्पादन को पुनः प्रकाशित किया। इसके अतिरिक्त दो अन्य पाण्डुलिपियाँ भी प्रकाशित की गईं। कुछ आउट आफ प्रिन्ट दुर्लभ पाण्डुलिपि को भी दोबारा प्रकाशित किया गया।

## पाण्डुलिपियों का विवरणात्मक सूचीकरण

9.59 सुदूर स्थित शोधकर्ताओं को शोध सामग्री की प्राप्ति को मुकर बनाने हेतु पुस्तकालय अपनी पाण्डुलिपियों के पूरे संग्रह के विवरणात्मक सूचीकरण का कर्तव्य निभाता रहा है। पाण्डुलिपियों की विवरणात्मक सूची के 34 उपखंड प्रकाशित हो चुके हैं। शेष खंडों को पूरा करने में विशेषज्ञ मेलग्न हैं जो आगामी कुछ वर्षों में प्रकाशित होकर लोगों के समक्ष आएंगे, कुछ खास विषयों जैसे चिकित्साशास्त्र, अध्यात्मवाद, जर्दू साहित्य एवं कुरानशास्त्र पर अरबी तथा फारसी पाण्डुलिपियों के यूनिजन कैटलॉग (हैर्डीलिस्ट) भी पूरे कर लिए गए हैं।

और वे इन विषयों पर आयोजित पाँच दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सम्मेलनों के अवसर पर प्रकाशित भी हो चुके हैं। 1993-94 के दौरान अब तक विवरणात्मक मूनी के पाँच खंडों की सामग्री छपने के लिए प्रेम को भंजी जा चुकी है।

## स्वतंत्रता आन्दोलन पर सामग्री का संग्रहण

9.60 पुरानी पत्रिकाओं में स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित अधिकतर सामग्री दबी पड़ी है, यदि उन्हें प्रकाश में लाया जाये तो इस उप महाद्वीप के स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में नई दिशाओं की वृद्धि हो सकती है। पुस्तकालय ऐसी सभी शोध-सामग्रियों को 30 खंडों में प्रकाशित करने के लिए एकात्रित कर रहा है। 60 पृष्ठ पर आधारित मोतीलाल नेहरू का एक दुर्लभ व्याख्यान पुस्तकालय से पहले ही प्रकाशित हो चुका है। इसके अतिरिक्त, पुरानी पत्रिकाओं के 4 खंड, जिनमें स्वतंत्रता संग्राम पर सामग्रियाँ हैं, प्रकाशित हो चुके हैं। "जमाना" और "हिन्दुस्तानी" नामक प्रसिद्ध राष्ट्रवादी पत्रिकाओं में परिश्रित स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित सामग्री को 25 खंडों में प्रकाशित किया जा रहा है।

## राष्ट्रीय एकता पर पुस्तकों का उर्दू से हिन्दी/हिन्दी से उर्दू अनुवाद

9.61 राष्ट्रीय एकता की कल्पनाओं को प्रभावित करने में साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। इसी हित को ध्यान में रखकर पुस्तकालय हिन्दी एवं अन्य राष्ट्रीय भाषाओं की महत्वपूर्ण पुस्तकों का उर्दू में अनुवाद तथा उर्दू से हिन्दी में अनुवाद अपने एक कार्यक्रम के अंतर्गत कर रहा है। सर्वप्रथम पुरस्कृत पुस्तकें चुनी गई हैं, साहित्य अकादमी से पुरस्कृत एक कश्मीरी पुस्तक "कट्ट" का उर्दू अनुवाद पुस्तकालय से प्रकाशित हो चुका है। तत्पश्चात् कुछ दूसरी महत्वपूर्ण पुस्तकें/पाण्डुलिपियाँ, जैसे "शम्सुल बेथान" (शाह आलम के काल का हिन्दी शब्द कोष तथा पहला हिन्दी शब्दकोष जो औरंगजेब के कहने पर बनाया गया, "औरंगजेब एक नया जाकिया नज़र" "पंडित मोती लाल नेहरू का उद्घाटन भाषण", "पंडित मदन मोहन मालवीय", "खुदाबख्श एक परिचय" और "दिलदार के दोहे" प्रकाशित हो चुके हैं।

## शैक्षणिक सार्क : प्रगति में

9.62 खुदाबख्श लाइब्रेरी, जो राष्ट्रीय महत्व की एक संस्था है और जो इस उप-महाद्वीप में ओरियन्टल भाषाओं की पाण्डुलिपियों के एक बड़े संग्रह के रूप में प्रसिद्ध है। कुछ विशेष विषयों की पाण्डुलिपियों पर ऐसे शोध कार्य का पुस्तकालय ने एक कार्यक्रम बनाया है जिनमें भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश समान रूप से रूचि रखते हैं। शोध-कार्य के इस कार्यक्रम को दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सम्मेलनों द्वारा कार्यान्वित किया जाता है। सम्मेलनों के विषयों में चिकित्साशास्त्र, कुरानशास्त्र, अध्यात्मवाद, अरबी तथा फारसी भाषाओं में वैज्ञानिक साहित्य, भारतीय इतिहास और उर्दू साहित्य उल्लेखनीय हैं। इन सम्मेलनों का कार्यक्रम यह है कि भारत, पाकिस्तान और अन्य मार्क-देशों के निजी और सरकारी संग्रहों में सुरक्षित बहुमूल्य एवं दुर्लभ पाण्डुलिपियों में से ऐसी अनमोल पाण्डुलिपियों को चुनना है जिनको समालोचनात्मक सम्पादन और अनुवाद करके प्रकाशित किया जा सके।

9.63 अब तक इस संबंध में पाँच सम्मेलन हो चुके हैं जो चिकित्साशास्त्र, अध्यात्मवाद, उर्दू, इतिहास और कुरानशास्त्र की पाण्डुलिपियों पर आधारित थे। शोधकर्ताओं ने अपने शोधपत्रों के अतिरिक्त उपरिक्त विषयों पर एशियाई देशों में फैली हुई पाण्डुलिपियों की संयुक्त सूची तैयार करने में भी महयोग दिया, विशेषतः यह सम्मेलन विद्या के स्तर पर दक्षिण क्षेत्रीय देशों के बन्धन को सशक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सबसे महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय बात यह है कि भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, नेपाल, जॉर्डन, सीरिया, मोरक्को जैसे देशों के शोधकर्ता प्रतिनिधि के रूप में इस बंधन को इस प्रकार मजबूत करने के लिए सहमत हो गए हैं कि लोगों की वह बहुमूल्य पूँजी, जो पाण्डुलिपियों के रूप में गुप्त है, एक टीम-वर्क के द्वारा उजागर की जाए।

## विशिष्ट उपलब्धियों पर पुरस्कार

9.64 पुस्तकालय ने एक पुरस्कार भी जारी किया है, जिसमें अरबी, फारसी, उर्दू, इस्लामियात, चिकित्साशास्त्र, आध्यात्मवाद, साउथ एशियन स्टडीज, वेस्ट एशियन स्टडीज, सैन्टरल एशियन स्टडीज, धर्म का तुलनात्मक अध्ययन एवं भारत की संयुक्त संस्कृति तथा सभ्यता जैसे पुस्तकालय के मुख्य विषयों पर प्रसिद्ध शोधकर्ता को सम्मानित किया जाएगा। यह पुरस्कार साहित्य अकादमी और ज्ञानपीठ पुरस्कार के पैटर्न पर एक लाख रुपये का होगा।

9.65 पहला खुदाबख्श पुरस्कार श्री बी.एन. पाण्डे को दिया गया, जो कि एक प्रसिद्ध इतिहासकार हैं। यह पुरस्कार उन्हें राष्ट्रीय एकता के कार्य को बढ़ावा देने के संबंध में उनकी उपलब्धियों पर दिया गया था। यह पुरस्कार राष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा ने 10 अगस्त, 1993 को राष्ट्रपति भवन के एक समारोह में दिया था। यह वह दिन था जब भारत छोड़ो आन्दोलन का स्वर्ण जयंती समापन समारोह हो रहा था।

9.66 दूसरा खुदाबख्श पुरस्कार "संयुक्त भारतीय संस्कृति" के लिए सुरक्षित किया गया है।

## रामपुर रज़ा पुस्तकालय, रामपुर (उ०प्र०)

9.67 रामपुर रज़ा पुस्तकालय वर्ष 1794 में स्थापित किया गया था। भारत सरकार ने इस पुस्तकालय को 1.7.1975 को संसद के एक अधिनियम के माध्यम से एक "राष्ट्रीय महत्व" की संस्था के रूप में घोषित करके इसका नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया था। इसके कार्यकलापों का प्रबंधन रामपुर रज़ा पुस्तकालय बोर्ड द्वारा किया जाता है, जो इस अधिनियम के अंतर्गत स्थापित किया गया है। पुस्तकालय में अरबी, फारसी, संस्कृत, पश्तो, उर्दू, हिन्दी तथा मलयालम इत्यादि भाषाओं की पाण्डुलिपियों का नायाब तथा दुर्लभ संग्रह है। इसमें मुगल, ईरानी, राजपूत तथा कांगड़ा शैली के दुर्लभ भिनिचर रंगचित्रों का भी समृद्ध संग्रह है। यह भारत तथा एशिया, यूरोप, अफ्रीका एवं अमेरिका के देशों के अध्येताओं और शोधकर्ताओं द्वारा भ्रमण करने के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण केन्द्र है।

9.68 आलोच्य वर्ष के दौरान, दान और खरीद द्वारा पुस्तकालय के संग्रह में अनेक मुद्रित पुस्तकें जोड़ी गई हैं। एक सूचना सेवा अनुभाग भी खोला गया है, ताकि अध्येताओं के लिए अपनी ज्ञानवृद्धि करना पत्राचार के माध्यम से भी सुकर हो सके। शैक्षिक कार्यकलापों पर एक सेमिनार आयोजित किया गया, जिसमें भारत के सुप्रसिद्ध अध्येताओं द्वारा व्याख्यान दिए गए। आलोच्यवर्ष के दौरान अनेक आगंतुकों और शोधकर्ताओं ने पुस्तकालय का दौरा किया।





नलचरितम् में नल के रूप में  
कलामंडलम् गोपी - संगीत नाटक  
अकादेमी  
Kalamandalam Gopi as Nala in  
Nalacharitam - Sangeet Natak  
Akademi

ढाक (पश्चिम बंगाल),  
लोक उत्सव-  
संगीत नाटक अकादेमी  
Dhak (West Bengal),  
Lok Utsav -  
Sangeet Natak Akademi



# अकादेमियां और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

## संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली

10.01 संगीत, नृत्य और नाटक की राष्ट्रीय अकादेमी "संगीत नाटक अकादेमी" की स्थापना 1953 में की गई थी। इसका उद्देश्य भारत की प्रदर्शन कलाओं को प्रोत्साहित करना है। इस संबंध में यह देश भर में राज्यों में अपने समान संगठनों और स्वैच्छिक संगठनों को सहयोग प्रदान करती है। प्रायोजना, शोध और प्रचार-प्रसार के जरिये यह भारतीय प्रदर्शन कलाओं के हित में विचारों और तकनीकों के द्रुत विनिमय के साथ-साथ संगीत, नृत्य और नाटक को सार्वजनिक मान्यता दिलवाने का भी प्रयास करती है। इन लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए पिछले वर्षों के दौरान, कई योजनायें तैयार और कार्यान्वित की गई हैं।

10.02 अकादेमी कथक और मणिपुरी नृत्य में शिक्षण प्रदान करने के लिए क्रमशः कथक केन्द्र, नई दिल्ली और जवाहर लाल नेहरू मणिपुरी नृत्य अकादेमी, इम्फाल नामक दो प्रशिक्षण संस्थाएं भी संचालित करती है।

## अकादेमी पुरस्कार और शिक्षा वृत्तियाँ

10.03 संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार और शिक्षावृत्तियाँ 1953 में संस्थापित की गई थीं। ये सम्मान प्रदर्शन कलाओं में सतत व्यक्तिगत योगदान के मान्यता स्वरूप प्रदान किए जाते हैं। पुरस्कार प्रति वर्ष प्रदान किए जाते हैं जबकि शिक्षावृत्तियाँ 30 जीवित व्यक्तियों तक ही सीमित होती हैं। दोनों सम्मानों में 25 हजार रुपये की राशि प्रदान की जाती है। वर्ष 1993 के लिए शिक्षावृत्तियाँ/पुरस्कारों की घोषणा अभी की जानी है।

## उत्सव/कार्यशाला

10.04 वर्ष के दौरान, 25 से 30 मई, 1993 तक नृत्योत्सव का आयोजन किया गया।

नृत्योत्सव युवा पीढ़ी के नर्तकों और संगीतज्ञों को राष्ट्रीय मंच प्रदान करके उन्हें प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से संगीत नाटक अकादेमी द्वारा आयोजित उत्सव-श्रृंखला का ही एक भाग है। इसे संस्कृति विभाग केरल सरकार के सहयोग से त्रिवेन्द्रम में आयोजित किया गया था और इसमें भारतीय शास्त्रीय नृत्यों-भरत-नाट्यम, कथक, मणिपुरी, कथकली, कुचिपुड़ी, ओडिसी और मोहिनी-अट्टम की सम्पूर्ण श्रृंखला को शामिल करते हुए देश के विभिन्न भागों के चुनिन्दा नर्तकों ने प्रदर्शन किया। इस उत्सव की प्रमुख विशेषताएं मयूरभंज के छाऊ नृत्य और मणिपुरी के सरईकेला, पुंगचोलम और ढोल चोलम तथा भारतीय नृत्य तकनीक द्वारा प्रेरित समकालीन नृत्य का प्रदर्शन रहीं।

10.05 अकादेमी द्वारा केरल के पारम्परिक नृत्य थिएटर—कथकली पर विशेष रूप से बल देने वाले दूरगामी महत्व के उत्सव “कथकली महोत्सवम्” का आयोजन 27 अक्टूबर से 1 नवम्बर, 1993 के बीच दिल्ली में किया गया। इस कार्यक्रम में सार्वकालीन प्रदर्शन और दिन के दौरान व्याख्यान प्रदर्शन शामिल थे जिनमें लगभग सभी मौजूदा सम्मानिय गुरुओं तथा प्रमुख प्रदर्शकों ने भाग लिया। उत्सव के प्रदर्शनों में कथकली के प्रतिनिधि नाटककारों के 10 नाटक शामिल थे, जिनमें आज के युग में कथकली की यथा प्रदर्शित वृहत् तस्वीर थी।

रवीन्द्र भवन में 30 अक्टूबर के और अयप्पा मन्दिर, आर० के० पुरम में एक नवम्बर के रातभर के प्रदर्शन इस उत्सव की एक विशेषता थी। प्रातः कालीन व्याख्यान-प्रदर्शन श्रृंखला में सुविख्यात गुरुओं ने कथकली के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट और प्रदर्शित किया। उनकी और दक्षिणी केरल के कथकली के विभिन्न घराने और उसकी विभिन्न शैलियाँ इस उत्सव में प्रदर्शित की गईं। इसमें कला के प्रशिक्षण एवम् अभ्यास में लगी महत्वपूर्ण संस्थाओं ने भी भाग लिया, जिनमें से केरल के विभिन्न भागों और दिल्ली के 70 से अधिक कलाकारों ने भाग लिया।

10.06 इस उत्सव का एक महत्वपूर्ण पहलू यह था कि इसने विभिन्न गुरुओं आदि की प्रस्तुतियों, प्रदर्शनों, माक्षात्कारों और उनके रंग-पटल के विशेष-विषयों की व्यापक रिकार्डिंग करने का अवसर प्रदान किया, जिसे अकादेमी के अभिलेखागार में रखा जा सकेगा। 60 से अधिक घंटे की दृश्य/श्रव्य रिकार्डिंग अभिलेखागार में जोड़ी गयीं, जो छात्रों और शोध अध्येताओं के लिए समृद्ध शोध सामग्री के रूप में कार्य करेगी।

10.07 इस उत्सव के उपलक्ष्य में अकादेमी ने डी० अय्युकुट्टन नायर और के० अय्युप पाणिक्कर द्वारा संपादित “कथकली : अलौकिक कला” नामक कला पुस्तक के प्रकाशन को भी सह-प्रायोजित किया, जिसका प्रकाशन मार्ग पब्लिकेशन, बम्बई द्वारा किया गया। इस अवसर पर कथकली के छायाचित्रों की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। इस उत्सव के प्रति बड़ी संख्या में दर्शक गण आकर्षित हुए और प्रेम ने भी इसे व्यापक कवरेज दिया तथा संजीदा कला के प्रेमियों द्वारा भी इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

## कार्यशाला

10.08 संगीत नाटक अकादेमी, ब्रिटिश उच्चायोग के ब्रिटिश काउन्सिल डिवीजन और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा संयुक्त रूप से एक ताल-वादन कार्यशाला का, आयोजन 25 नवंबर 1993 को ब्रिटिश काउन्सिल प्रेक्षागृह, नई दिल्ली में किया गया। इस कार्यक्रम ने ब्रिटेन की सुप्रसिद्ध ताल-वादक सुश्री एब्लिन ग्लेनी को सुप्रसिद्ध भारतीय ताल-वादकों, टी० एच० विनायक राम (घटम), तेजप्रकाश तुलसी (पखावज), गोविन्द चक्रवर्ती (तबला), गाजी खान (करताल) के साथ एक मंच पर ताल-वादन करने का सुअवसर प्रदान किया। प्रख्यात संगीतज्ञ व रचनाकार भास्कर चन्दावरकर ने कार्यशाला का संचालन किया और चर्चा-परिचर्चा का सभापतित्व किया।

## योजनाएं

### युवा थिएटर कर्मियों को सहायता

10.09 इस योजना का मुख्य लक्ष्य युवा निर्देशकों द्वारा प्रायोगिक थिएटर को सहायता प्रदान करना है। अकादेमी अपने चार वार्षिक क्षेत्रीय थिएटर उत्सवों में मंचित प्रस्तुतियों के लिए आर्थिक सहायता और राष्ट्रीय थिएटर उत्सव (युवा नाट्य समारोह) के लिए चयनित नाटकों को अतिरिक्त सहायता प्रदान करती है। इन क्षेत्रोत्सवों में सहभागिता के लिए प्राप्त आवेदन-पत्रों की जांच देश भर के विख्यात निर्देशकों, नाटककारों, अभिनेताओं और समालोचकों की एक विशेष समिति द्वारा की जाती है। केवल नई प्रस्तुतियों पर ही विचार किया जाता है।

### उत्तरी संभाग युवा नाट्योत्सव—93

10.10 वर्ष 1993-94 के चार क्षेत्रोत्सवों में से प्रथम उत्तरी संभाग युवा नाट्योत्सव-93 का आयोजन पंजाब संगीत नाटक अकादेमी, चण्डीगढ़, गुरुनानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर और उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, पटियाला के सहयोग से 30 अगस्त से 3 सितंबर, 1993 तक किया गया। इस उत्सव में प्रदर्शित पांच नई प्रस्तुतियाँ इस प्रकार थीं : (क) लटकमेलकम (हिन्दी), निर्देशक जयन्त देशमुख, एक रंग, भोपाल, (ख) डाकू (हिन्दी), निर्देशक रविन्द्र मिश्रा, कल्पना आर्ट ग्रुप, लखनऊ, (ग) महानिर्वाण (पंजाबी), अनिल दत्त, थेसियन थिएटर, चण्डीगढ़, (घ) अनन्त गाथा (गुजराती), निर्देशक मनविता बड़ाड़ी, गैरिज स्टूडियो थिएटर, अहमदाबाद और (ङ) किस्मत या चक्रान्त (हिन्दी), निर्देशक अविजित दत्त यांत्रिक, नई दिल्ली।

### पश्चिमी संभाग युवा नाट्योत्सव, 93 : गोआ

10.11 द्वितीय क्षेत्रोत्सव “पश्चिमी संभाग युवा नाट्योत्सव, 93 का आयोजन कला अकादेमी, गोआ और पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर के सहयोग से 4 से 9 अक्टूबर, 1993 तक दीनानाथ मंगेशकर कलामंदिर, पणजी में किया गया। इस उत्सव में प्रदर्शित पांच

नई प्रस्तुतियाँ इस प्रकार थीं: (क) निकल (कोंकणी), निर्देशक मैनिनों मरियो आराजो, क्राउन क्लब, गोआ, (ख) जो कुमारस्वामी (मराठी), निर्देशक योगेश श्रीनिवास स्मान, स्नेह, पुणे, (ग) खेजदी की बेटी (हिन्दी), निर्देशक अशोक राही, इन्डियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन, जयपुर, (घ) कुशंकु (गुजराती), निर्देशक प्रभाकर दाभडे, बडौदा एमैच्योर्स ड्रमैटिक क्लब, बडौदा और (ङ) सत्यशोधक (मराठी), निर्देशक शरद एम, भूथादिया, प्रत्यय हाउशी नाट्य कला केन्द्र, कोल्हापुर।

### पूर्वी संभाग युवा नाट्योत्सव, 93 : जमशेदपुर

10.12 तृतीय क्षेत्रोत्सव "पूर्वी संभाग युवा नाट्योत्सव, 93 का आयोजन पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, कलकत्ता और सेल्युलाइड चैएर, जमशेदपुर के सहयोग से 31 अक्टूबर से 4 नवंबर, 1993 तक रविन्द्र कला मंदिर, जमशेदपुर में किया गया। इस उत्सव में प्रदर्शित पांच नई प्रस्तुतियाँ इस प्रकार थीं:—(क) रास (बंगला), निर्देशक अम्बर रे, समकालीन शिल्पी दल, कलकत्ता, (ख) नदी-एक कथा (हिन्दी), निर्देशक राजकमल नायक, कौतुक, रायपुर, (ग) परलीन (उड़िया), निर्देशक लल्ला वीरिन प्रसाद रे, आमि सृष्टि, भुवनेश्वर, (घ) नुमति कप्या (मणिपुरी), निर्देशक क्षेत्री जुगिन्द्रो, मणिपुर रंगमंडली, इम्फाल और (ङ) नयन नचैया (हिन्दी), निर्देशक फरीद बाजमी, रंगविदूषक, भोपाल।

### दक्षिण क्षेत्रोत्सव, दक्षिणी संभाग युवा नाट्योत्सव, 93

10.13 चौथे क्षेत्रोत्सव का आयोजन दक्षिण सांस्कृतिक केन्द्र, तंजावुर और नाट्य विभाग, तमिल विश्वविद्यालय, तंजावुर के सहयोग से दिसंबर, 93 में **मदुरै** में किया गया। प्रदर्शित नई प्रस्तुतियाँ इस प्रकार थीं:—

(क) पाणिवाल (तमिल), निर्देशक वेलू सवर्णन, आजी, पाण्डिचेरी, (ख) मनुष्यकम् (मलयालम), निर्देशक बेक्कन, वेकोम तिरुनाल, केरल, (ग) परिक्रमा (कोंकणी) श्रीधर कामत बमोलकर, रंग संगति, गोआ और (घ) महाचैत्य (कन्नड़), निर्देशक इकबाल अहमद, समुदाय, बंगलौर।

10.14 युवा निर्देशकों के लिए "युवा नाट्य समारोह" नामक राष्ट्रीय थिएटर उत्सव उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र और पंजाब संगीत नाटक अकादेमी के सहयोग से फरवरी, 1994 में चण्डीगढ़ में आयोजित किया जायेगा जिसमें चारों क्षेत्रोत्सवों में मंचित चुनिन्दा नाटकों को पेश किया जायेगा।

### पारंपरिक प्रदर्शन कलाओं के दुर्लभ रूपों की प्रोन्नति और परिरक्षण

10.15 दुर्लभ रूपों से संबंधित यह योजना संगीत, नृत्य और थिएटर के उन रूपों में उन्नत प्रशिक्षण को बढ़ावा देती है, जो कि अब अप्रचलित होते जा रहे हैं। अकादेमी द्वारा प्रतिष्ठित शिक्षकों को शुल्कों और छात्रों को वृत्तिकाओं का भुगतान करके इन कलाओं को पारंपरिक शैक्षिक प्रक्रिया के जरिये अनुरक्षित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। प्रशिक्षण के ब्यौरों की रिपोर्ट नियमित रूप से अकादेमी को भेजी जाती है और छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन प्रति वर्ष किया जाता है। पिछले वर्षों के दौरान, इस योजना के जरिये लगभग 25 प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सहायता प्रदान की गयी है। वर्तमान कार्यक्रम पखावज, सारंगी, नाद-स्वरम्, नक्कारा, ताबिल और कर्नाटक कण्ठ संगीत की अरियाकुडी परंपरा तथा राजस्थान के दुर्लभ सुशिर वाद्ययंत्रों से संबंधित है।

### व्यक्तियों को परियोजना अनुदान

10.16 यह नयी योजना प्रदर्शन कला में शोध एवं प्रदर्शन कलाओं में व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है। इस वर्ष वित्तीय सहायता के लिए कुल पाँच परियोजनाओं का अनुमोदन किया गया है। इनमें नृत्य की आन्ध्र परम्पराओं, मयूर भंज छाऊ, कथक, कुचिपुडी तथा बनारस की संगीत व नृत्य-परंपराओं में शोध से संबंधित परियोजनाएँ शामिल हैं।

### कुडियट्टम को प्रोत्साहन

10.17 अकादेमी ने केरल की शास्त्रीय थियेटर परंपरा, कुडियट्टम को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 1991 में पूर्ण देख-रेख का एक प्रमुख कार्यक्रम प्रारंभ किया था। इस कार्यक्रम में इरिजलकुडा में गुरु अम्मानुर माधव चकयार के मार्गदर्शन में कुडियट्टम और नंगियार कुडु में प्रशिक्षण प्रदान किया जाना: गुरु पी० के० नंबियार के मार्गदर्शन में मिझाऊ वादन में प्रशिक्षण तथा तिरुवनन्तपुरम में मार्गी नामक संस्था को बढ़ावा दिया जाना भी इसमें शामिल है, ताकि इसको प्रशिक्षित कलाकारों के लिए नियमित प्रदर्शन केन्द्र के रूप में विकसित किया जा सके। अप्रैल, 1993 में इस कार्यक्रम के 2 वर्ष पूरे हो गए हैं। यह कार्यक्रम प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन दोनों में संतोषजनक प्रगति कर रहा है। अब अकादेमी अगले वित्त वर्ष में परियोजना से संबंधित अन्य मुद्दों को प्रारंभ करने की योजना बना रही है।

## छाऊ नृत्यों को प्रोत्साहन

10.18 मयूरभंज और सरायकेला के छाऊ नृत्यों को पर्याप्त सहयोग देने के प्रस्ताव को कार्यरूप देने की दिशा में शुरुआत की गई है। प्रारंभिक तैयारी से संबंधित कार्य और गुरुओं और विशेषज्ञों से और आगे विचार-विमर्श, कलाकारों की पहचान एवं चयन में संबंधित विस्तृत सर्वेक्षण का कार्य मयूरभंज जिले और इसके पड़ोसी इलाके में किया गया, जिसमें मई, 1993 में 26 गांव के किए गए दौर भी शामिल हैं। मयूरभंज छाऊ के क्षेत्र में प्रारंभ किये जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम चरण में मयूरभंज जिले के बारीपाड़ा और 5 ग्रामीण केन्द्रों के प्रमुख गुरुओं और अकादेमी पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं के अधीन नृत्य और तत्संबंधी संगीत में प्रशिक्षण प्रदान करने की परिकल्पना की गई है, जिसमें कुल 20 शिक्षक और संगत करने वाले संगीतज्ञ तथा लगभग 70 छात्र शामिल हैं। इस कार्यक्रम को जनवरी, 1994 से प्रारंभ कर दिए जाने की संभावना है। सरायकेला शैली के लिए छात्रों आदि के चयन से संबंधित इसी प्रकार का प्रारंभिक कार्य शीघ्र ही शुरू किया जाएगा।

## सांस्कृतिक संस्थाओं को वित्तीय सहायता

10.19 अकादेमी ने अपनी स्थापना के समय से ही संगीत, नृत्य और थिएटर संस्थाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की है। अनुदान समिति ने, जो देश भर की संस्थाओं से प्राप्त आवेदन-पत्रों पर विचार करती है वित्तीय वर्ष 1993-94 के दौरान 235 सांस्कृतिक संस्थाओं को 31,63,000.00 रुपये के अनुदान की सिफारिश की।

## सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

### अन्तर-राज्यीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

10.20 इस कार्यक्रम में देश भर के सभी राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों के बीच प्रदर्शन रंगमंडलियों और व्यक्तिगत कलाकारों के आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया जाता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय प्रदर्शन कलाओं की परंपरा के प्रति एकीकृत जागरूकता उत्पन्न करना है। राज्य/संघ शासित क्षेत्रों का 17वां वार्षिक सम्मेलन 16-18 अप्रैल, 1993 तक मद्रास में आयोजित किया गया, ताकि 1992-93 के दौरान किए गए कार्यान्वयन की समीक्षा की जा सके और वर्ष 1993-94 के लिए कार्यक्रमों की समय सूची को अंतिम रूप प्रदान किया जा सके। नवंबर, 1993 तक 10 दौर किए जा चुके हैं और मार्च 1994 तक 25 और दौर किए जाने की संभावना है।

### भारत और अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

10.21 एक विशेषज्ञ प्रदर्शन कला निकाय के रूप में अकादेमी भारत और अन्य देशों के बीच होने वाले सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के करारों में परिकल्पित कुछ कार्यों के लिए उत्तरदायी है। अकादेमी मुख्यतः भारतीय प्रदर्शन कलाओं, पुस्तकों, दृश्य-श्रव्य कैसेटों और अन्य प्रकाशित/अभिलेखीय सामग्री से संबंधित सूचना के संबंध में एक निकासी गृह के रूप में कार्य करती है। कुछ अवसरों पर अकादेमी विशिष्ट कार्यक्रम-उपबंधों के अंतर्गत विदेशों में भारतीय विशेषज्ञों और प्रदर्शन कलाकारों को प्रायोजित भी करती है और विदेशी कलाकारों और विशेषज्ञों को भारत आने का निमंत्रण भी देती है।

10.22 अप्रैल से नवंबर, 1993 के दौरान, अकादेमी ने भारतीय प्रदर्शन कलाओं से संबंधित चुनिंदा दृश्य-श्रव्य कैसेट/प्रकाशन/छायाचित्र जर्मनी, पाकिस्तान और सीरिया स्थित संस्थाओं को भेजे। सितार और सरोद के तार कनाडा भेजे गए। जर्मनी, इंडोनेशिया, नीदरलैंड, श्रीलंका और संयुक्त राज्य अमेरिका से अकादेमी में आने वाले आगंतुकों को संगीत नाटक अकादेमी के प्रकाशन और दृश्य-श्रव्य कैसेट भेंट किए गए।

## प्रलेखन/प्रचार-प्रसार

10.23 लगभग 8200 छायाचित्र/पारदर्शी चित्र और लगभग 230 घंटे की दृश्य-श्रव्य रिकार्डिंग को अकादेमी के अभिलेखागार में जोड़ा गया, जो कि अब कुल 16 मि० मी० की 1 लाख फुट से अधिक की फिल्मों, 95000 छायाचित्रों, 32000 पारदर्शी चित्रों, 5535 घंटे की श्रव्य रिकार्डिंग, 1540 घंटे की दृश्य रिकार्डिंग का संग्रह हो गया है— जो कि मुख्यतः भारतीय संगीत, नृत्य एवं थिएटर से संबंधित हैं।

10.24 सुविख्यात संगीतज्ञों और नर्तकों की रोजमर्रा की रिकार्डिंग के अतिरिक्त प्रलेखन एकक ने विशेष कर मदनमोहन लेका, श्री हरि नायक, श्रीकांत सेन आदि जैसे प्रख्यात गुरुओं के संबंध में उड़ीसा के मयूरभंज जिले के छाऊ नृत्य का व्यापक प्रलेखन-कार्य भी किया। गुरु पंकज चरण दास द्वारा ओडिसी नृत्यों के प्रदर्शन और उनके साक्षात्कार की भी भुवनेश्वर और पुरी में रिकार्डिंग की गई। पुरी स्थित श्री जगन्नाथ मंदिर की कुछ वृद्ध महारियों द्वारा किए गए नृत्य व संगीत को रिकार्ड किया गया।

10.25 श्रीमती रेबा विद्यार्थी द्वारा कथक के शिक्षण के प्रदर्शन और उनमें व्यापक भेंटवार्ता को भी दिल्ली में रिकार्ड किया गया।

10.26 मणिपुर में विभिन्न गुरुओं द्वारा किए गए शिक्षण कार्य को रिकार्ड करने के अतिरिक्त सुप्रसिद्ध थांगटा गुरु, श्री दामो सिंह के शिक्षण कार्य को भी अभिलेखागार के लिए रिकार्ड किया गया। संकीर्तन गुरु, श्री कालियादमन सिंह, श्री के० इबोम्बा शर्मा और श्रीमन्नी एल० टोम्बी देवी से की गई भेंटवार्ता को भी रिकार्ड किया गया।

10.27 ग्रेम, पेरिस के साथ "गंगा तीर संगीत" नामक एक सहयोगात्मक परियोजना के अंतर्गत बिहार, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल के क्षेत्रों में श्री जेवियर बेलेंगर द्वारा डिजिटल श्रव्य रिकार्डिंग की गई।

10.28 इनके अतिरिक्त, अकादेमी ने कलकत्ता में एक कार्यशाला और यक्षदान उत्सव तथा श्री के० एस० कारंत से साक्षात्कार को रिकार्ड किया। श्री बादल सरकार और खालिद चौधरी के साक्षात्कारों को भी रिकार्ड किया गया। लाई हरोबा, मणि माधव, चकयार एवं मलिकार्जुन मंसूर तथा जोवाई मेघालय में बेहदिनखाम उत्सव से संबंधित कार्य को वर्ष 1993-94 के दौरान पूरा कर लिए जाने की आशा है।

## दृश्य-श्रव्य पुस्तकालय

10.29 दृश्य-श्रव्य पुस्तकालय में मुख्यतः भारतीय शास्त्रीय एवं लोक संगीत के श्रव्य-दृश्य कैसेटों और डिस्कों का प्रतिनिधि संग्रह है। इसमें 6 श्रोताओं/दर्शकों के लिए समकालिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। इस अवधि के दौरान दृश्य-श्रव्य पुस्तकालय के संग्रह में 9677 डिस्कें, 921 श्रव्य और 39 दृश्य कैसेट मौजूद थे।

## वाद्य यंत्रों का संग्रह

10.30 अकादेमी के संग्रह में मुख्यतः भारत के लोक एवं शास्त्रीय वाद्य यंत्रों से संबंधित लगभग 250 वस्तुएं अवलोकनार्थ रखी गई हैं। संग्रह में मुखौटों, कठपुतलियों, वेश-भूषा और आभूषणों का पर्याप्त संग्रह भी है। संग्रहालय के संग्रह में से मुखौटों, कठपुतलियों और अन्य कलाकृतियों की विभिन्न प्रदर्शनियां भारत और विदेश में पिछले वर्षों के दौरान आयोजित की गईं।

10.31 संग्रहालय के सम्पूर्ण संग्रह के छायाचित्र और रंगीन स्लाइडें तैयार की जा रही हैं। अकादेमी अपने संग्रह में से छाया कठपुतलियां जनवरी, 1994 में आयोजित की जाने वाली अन्तर्राष्ट्रीय छाया कठपुतली प्रदर्शनी के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को उधार देगी।

## प्रकाशन

10.32 1953 में अकादेमी की स्थापना के शीघ्र पश्चात् ही अकादेमी द्वारा प्रारंभ किए गए प्रकाशन कार्यक्रम में प्रदर्शन कलाओं से संबंधित पुस्तकें एवं विनिबंध, 'संगीत नाटक' नामक तिमाही पत्रिका तथा संगीत नाटक अकादेमी का "समाचार बुलेटिन" शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, संगीत, नृत्य और नाटक से संबंधित प्रकाशन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से, अकादेमी लेखकों को अनुदान प्रदान करती है तथा लेखकों और प्रकाशकों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से उनको निःशुल्क वितरण करने के लिए पुस्तकें भी खरीदती है। अंग्रेजी और हिन्दी में प्रकाशन को अकादेमी की मोहर के अधीन जारी किया गया और मैथिली व तमिल में पुस्तकों की एक लघु सूची भी प्रकाशित की गई है।

## संगीत नाटक अकादेमी के घटक एकक

### कथक केन्द्र, नई दिल्ली

10.33 संगीत नाटक अकादेमी का एक संघटक एकक, कथक केन्द्र देश की प्रमुख नृत्य-शिक्षण संस्थाओं में से एक है। 1964 में स्थापित यह केन्द्र कथक नृत्य तथा कंठ संगीत एवं पखावज जैसे संबंधित विषयों में व्यापक पाठ्यक्रम प्रदान करता है। इन पाठ्यक्रमों की आयोजना व्यावसायिक कार्यक्रमों के लिए एक आधार-पाठ्यक्रम के रूप में की जाती है। कथक केन्द्र एक उत्पादन एकक का अनुरक्षण भी करता है, जो कि प्रायोगिक कार्य के माध्यम से कथक के रंगपटल व प्राविधि को समृद्ध करने का प्रयास करता है। केन्द्र के स्टाफ में विभिन्न विधाओं के अग्रणी शिक्षक हैं।

10.34 केन्द्र 1990 से छात्रोत्सव का आयोजन करता आ रहा है, जिसमें केन्द्र के प्रशिक्षण के विभिन्न स्तरों के छात्र प्रदर्शन करते हैं। केन्द्र के प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य व्यावसायिक स्तर के रंगमंच कलाकार तैयार करना है। शिक्षण स्टाफ के सदस्य और नृत्य

रचना दल के सदस्य अपने-अपने एकल प्रदर्शनों के साथ-साथ सामूहिक प्रदर्शन भी करते हैं। इस वर्ष यह छात्रोत्सव 29-30 सितंबर, 1993 के दौरान कमानी प्रेक्षागृह, नई दिल्ली में आयोजित किया गया।

10.35 1984 से केन्द्र ने प्रति वर्ष सितंबर-अक्तूबर में शरद चन्द्रिका उत्सव आयोजित करना प्रारंभ किया है, जिसमें उदीयमान नर्तकों को अधिक अनुभवी नर्तकों के साथ नृत्य करने का अवसर प्राप्त होता है। इस वर्ष यह उत्सव 25-27 अक्तूबर, 1993 के दौरान श्रीराम कला व संस्कृति केन्द्र, नई दिल्ली में आयोजित किया गया, जिसमें 25 अक्तूबर को लखनऊ की आकांक्षा शुक्ला, कलकत्ता की शीला मेहता, दिल्ली की अदिति मंगल दास, दिल्ली की मालती श्याम और बंबई की नन्दिता पुरी के एकल नृत्य, 26 अक्तूबर को रायगढ़ की बसंती वैष्णव, दिल्ली की जयश्री आचार्य, कलकत्ता की लुना पान और मालविका मित्रा तथा दिल्ली की कल्याणी चक्रवर्ती के एकल नृत्य तथा 27 अक्तूबर को दिल्ली की पूजा राजेश, पुणे की प्रेरणा चन्द्रकान्त पारखी, दिल्ली की मधुमिता राय और जाफ़ा तथा बंबई की गौरी शर्मा त्रिपाठी के एकल नृत्य शामिल थे।

10.36 केन्द्र ने महाराष्ट्र के भूकंप पीड़ितों की मदद करने के लिए कमानी प्रेक्षागृह में 10-11 नवंबर, 1993 को "कुमार संभव" और "रूपमती" नामक नृत्य-नाटक प्रस्तुत किए।

10.37 केन्द्र ने 12-13 अप्रैल 1993 के दौरान कथक केन्द्र, नई दिल्ली में एक कथक सेमिनार भी आयोजित किया। देश भर के सुप्रसिद्ध कथक गुरुओं ने इस सेमिनार में भाग लिया।

## जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादेमी, इम्फाल

10.38 संगीत नाटक अकादेमी का एक घटक एकक जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादेमी मणिपुरी नृत्य में शिक्षण प्रदान करने वाली एक अग्रणी संस्था है। 1954 में स्थापित यह अकादेमी मणिपुरी नृत्य संगीत और लय हरोबा और थांगटा जैसे संबद्ध विषयों में विभिन्न व्यापक पाठ्यक्रम संचालित करती है। पाठ्यक्रमों की अभिकल्पना व्यावसायिक कलाकारों के लिए आधार पाठ्यक्रमों के रूप में की जाती है। संस्था के स्टाफ में प्रतिष्ठित शिक्षक हैं। इसमें एक निर्माण एकक भी है।

## रवीन्द्र रंगशाला

10.39 अकादेमी ने उत्तर-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद से 2 अप्रैल, 1993 को रवीन्द्र रंगशाला, नई दिल्ली का प्रबंध-कार्य अपने हाथों में ले लिया।

### आगामी कार्यक्रम

10.40 वर्ष 1993-94 के आगामी कार्यक्रमों में से कुछ इस प्रकार हैं: अकादेमी पुरस्कार सम्मान समारोह और संगीत, नृत्य व थिएटर उत्सव, मद्रै में क्षेत्रीय थिएटर उत्सव, चंडीगढ़ में राष्ट्रीय थिएटर उत्सव-युवा नाट्य समारोह, गुवाहाटी में कठपुतली कला कार्यशाला और उत्सव, भोपाल में पारंपरिक थिएटर उत्सव, सारंगदेव के संगीत रत्नाकारा पर संगीत उत्सव व सेमिनार, कथक केन्द्र द्वारा कथक महोत्सव और होली, मार्च 1994 में जवाहरलाल नृत्य अकादेमी द्वारा इम्फाल में रास उत्सव।

## साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

10.41 साहित्य की उन्नति के लिए कार्यशील शीर्ष राष्ट्रीय संस्था होने के नाते साहित्य अकादेमी ने अपने को पूरी तरह "साहित्य क्षेत्र में विख्यात व्यक्तियों का सम्मान करने, उदीयमान साहित्यकारों को प्रोत्साहन देने, जनता की अभिरूचि को परिष्कृत करने और साहित्य तथा साहित्यिक आलोचना का मानदण्ड ऊंचा करने के प्रति समर्पित कर रखा है। (इन लक्ष्यों को दृष्टिगत रखकर अकादेमी ने पिछली पंचवर्षीय योजनाओं में विभिन्न कार्यक्रमों को अपने हाथों में लिया और उन्हें सफलतापूर्वक क्रियान्वित किया।) साहित्य अकादेमी द्वारा हाथों में ली गयीं वर्धित गतिविधियों ने निःसंदेह राष्ट्रीय परिदृश्य पर एक छाप छोड़ी है। इसके प्रमुख कार्यक्रम हैं: 22 भाषाओं में वार्षिक पुरस्कार देना, संगोष्ठियों, साहित्यिक गोष्ठियों और कार्यशालाओं का आयोजन, नई दिल्ली स्थित पुस्तकालय का उन्नयन और अनुरक्षण तथा क्षेत्रीय पुस्तकालयों की स्थापना और विकास। इसके अतिरिक्त, अकादेमी का वृहत् प्रकाशन कार्यक्रम भी है।

10.42 देश में अनुवाद के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य हो रहा है, किन्तु बहुत से भाषाओं को संयोजित करने वाली सक्षम अनुवादकों की कमी है। इसलिए अनुवाद ब्यूरो की व्यापक रूप में परियोजना बनायी गयी है। इसी प्रकार साहित्य अकादेमी द्वारा चार खण्डों में प्रकाशित "भारतीय साहित्य की राष्ट्रीय ग्रंथ सूची" अब तक असमिया, मराठी, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिन्धी, तमिल, तेलुगु और उर्दू को 1901-1953 तक की अवधि के लिए समेट चुकी है। 1901-1980 तक की अवधि के लिए डोगरी, कोंकणी, मैथिली, मणिपुरी,

राजस्थानी और नेपाली को समेटने वाली भारतीय साहित्य की राष्ट्रीय ग्रन्थ सूची का पांचवां खण्ड 1990-91 में प्रकाशित हो चुका है। 1954-1980 तक की अवधि के लिए अन्य भाषाओं की भारतीय साहित्य की राष्ट्रीय ग्रन्थ सूची को प्रकाशित करने का प्रस्ताव है।

10.43 8वीं योजना के नये कार्यक्रमों में विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनूदित रूप में श्रेष्ठ बाल साहित्य का प्रकाशन शामिल है। साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाओं की लगभग 50 पुस्तकों को प्रतिवर्ष दूसरी 21 भाषाओं में प्रकाशित करने की योजना है और इसे 1990-92 की वार्षिक योजनाओं में लिया गया है। यह एक महत्वाकांक्षी योजना है। पुरुषों व पुस्तकों एवं विचारों के इतिहास जैसी अन्य योजनाएं भी वर्ष 1990-91 से प्रारंभ की गयीं, जोकि 8वीं योजना के दौरान भी जारी हैं।

10.44 अकादेमी कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में लेखकों के साथ विचारों के आदान-प्रदान अथवा पारस्परिक आधार पर गौरव ग्रन्थों के अनुवाद के माध्यम से सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के उपबंधों को कार्यरूप दे रही है।

10.45 जनवरी, 1993 से सितम्बर, 1993 तक की साहित्य अकादेमी की प्रमुख गतिविधियां इस प्रकार हैं :

- \* 21 लेखकों को अकादेमी पुरस्कार प्रदान किये गये।
- \* 16 अनुवादकों को अनुवाद पुरस्कार प्रदान किये गये।
- \* 140 पुस्तकें प्रकाशित हुईं।
- \* 29 पुस्तक प्रदर्शनियां आयोजित की गयीं।
- \* 27 साहित्यिक मंच गोष्ठियां आयोजित की गयीं।
- \* 6 संगोष्ठियों का आयोजन किया गया।
- \* “लेखक से भेंट” श्रृंखला में 5 कार्यक्रमों का आयोजन।
- \* 3 कार्यशालाओं का आयोजन।

## आगामी कार्यक्रम

10.46 शेष वर्ष के दौरान (I) पांच दशकों की मराठी कविता, (II) राहुल सांकृत्यायन (III) अफ्रीकी-एशियाई लेखन और (IV) 20वीं शताब्दी के महत्वपूर्ण भारतीय वाद-विवाद पर सेमिनारों को गोआ, कलकत्ता और नई दिल्ली में आयोजित किए जाने का प्रस्ताव है।

10.47 “लेखक से भेंट” नामक कार्यक्रम के अन्तर्गत नीलमणि फुकन, गुलाब दास ब्रोकर और चिंतामणि कर क्रमशः कलकत्ता, बंबई और कलकत्ता में लोगों से मुलाकात करेंगे।

10.48 वर्ष 1993-94 के दौरान, “साहित्यिक मंच एवं सम्मेलन” नामक कार्यक्रम के अन्तर्गत अखिल भारतीय डोगरी लेखक सम्मेलन, मलयालम् लघुकथा पाठ, कन्नड़ लघुकथा पाठ और तेलगु लघुकथा पाठ को क्रमशः जम्मू, त्रिचूर, बंगलौर और हैदराबाद में आयोजित किए जाने का प्रस्ताव है।

10.49 शेष वर्ष के दौरान, काव्यानुवाद कार्यशाला, डोगरी काव्यानुवाद कार्यशाला और कश्मीरी काव्यानुवाद कार्यशाला आयोजित किए जाने का भी प्रस्ताव है।

## ललित कला अकादेमी, नई दिल्ली

10.50 ललित कला अकादेमी, जोकि राष्ट्रीय कला अकादेमी है, की स्थापना दृश्य एवं रूपंकर कलाओं के विकास का समन्वय करने के उद्देश्य से 1954 में की गई थी। अकादेमी के क्षेत्रीय केन्द्र भुवनेश्वर, कलकत्ता, लखनऊ और मद्रास में स्थित हैं और इसका एक लघु कार्यालय बंबई में भी स्थित है। आलोच्य वर्ष के दौरान, अकादेमी के कार्यकलाप निम्नानुसार रहे:

## प्रदर्शनियां

10.51 फ्रांसीसी दूतावास के सहयोग से चित्रकलाओं, मूर्तिकलाओं और प्रिंटों की एक प्रदर्शनी 17-22 अप्रैल, 1993 के दौरान भारत में आयोजित की गई थी। इसमें 40 से अधिक भारतीय कलाकारों ने भाग लिया। प्रदर्शनी का उद्घाटन फ्रांस के राजदूत द्वारा किया गया था।

10.52 अकादेमी ने 2 नवंबर, 1993 से एक माह के लिए ढाका, बंगलादेश में छठी एशियाई कला द्विवार्षिकी में भाग लिया। इसमें



भारत के निम्नलिखित सहभागियों ने प्रतिनिधित्व किया :---

1. श्री अन्वास बाटलीवाला
2. श्री ए०पी० पनीरसेलवम
3. बाबु नम्बुदिरि के
4. श्री जयन्त पारिख
5. श्री मदन लाल
6. सुश्री प्रफुल्ल धानुकर
7. श्री पी०एस० चन्द्रशेखर
8. सुश्री रत्नाबली कान्त
9. श्री स्वप्न कुमार दास
10. विद्या सागर उपाध्याय
11. श्री विनोद शाह
12. श्री सुनीत चोपड़ा (इन्होंने उद्घाटन के समय सेमिनार में भाग लिया)

10.53 सृजनात्मक छायाचित्रों की दूसरी भारतीय द्विवार्षिकी का आयोजन 24 सितम्बर से 3 अक्टूबर, 1993 तक किया गया। इसके विशेष अनुभाग में 38 छायाचित्रकारों ने अपने 69 छायाचित्रों को प्रदर्शित किया जबकि सामान्य अनुभाग में 62 छायाचित्रकारों के 84 छायाचित्र प्रदर्शित किए गए। छायाचित्रों का चयन सर्वश्री अविनाश पसरीचा और एस० पॉल की दो सदस्यीय ज्युरी द्वारा किया गया।

10.54 अकादमी के सहयोग से सभी 7 क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों द्वारा लोक कला और शिल्प पर एक संयुक्त बिक्री-सह-प्रदर्शनी का आयोजन 1-8 नवंबर, 1993 तक किया गया।

## आगामी कार्यक्रम

10.55 1993-94 के दौरान 37वीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी का आयोजन जनवरी, 1994 के तीसरे सप्ताह में किसी समय मद्रास में किया जा रहा है। उत्कृष्ट कौटि की 10 कृतियों को 25-25000/- ₹ का पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। इसके अतिरिक्त 10 सम्मानीय उल्लेख भी होंगे। इस प्रदर्शनी के दौरान, अकादमी अपने स्थायी संग्रह के लिए 3 लाख ₹ से अधिक मूल्य की कला कृतियों का अधिग्रहण करने की योजना बना रही है।

10.56 शोध पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की कृतियों की एक परिचालन प्रदर्शनी लखनऊ में आयोजित की जाएगी, जिसे तत्पश्चात् कलकत्ता, भुवनेश्वर, मद्रास और दिल्ली भेजा जाएगा। एक अन्य प्रदर्शनी फरवरी/मार्च 1994 में किसी समय जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में आयोजित की जाएगी।

10.57 स्वर्गीय श्री विमल कुमार की कृतियों की एक प्रदर्शनी 25-31 जनवरी, 1994 तक भुवनेश्वर में आयोजित की जाएगी।

10.58 कलाकारों का एक शिविर भी फरवरी-मार्च, 1994 में किसी समय आयोजित किया जाएगा।

10.59 सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत, चालू वित्त वर्ष के दौरान समकालीन चित्रकारी की एक प्रदर्शनी चीन भेजी जाएगी।

10.60 अकादमी द्वारा फरवरी/मार्च, 1994 में 4 सप्ताह की अवधि के लिए "8वीं त्रैवार्षिकी-भारत" का आयोजन करने की योजना है। विदेशी कलाकारों की सहभागिता प्राप्त करने के उद्देश्य से अकादमी ने 97 देशों को अपना निमंत्रण भेजा है, जिसके संबंध में सहमति पत्र प्राप्त हो रहे हैं। पहली बार भारत और विभिन्न देशों के बीच सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत कई विदेशी देशों की सहभागिता सुनिश्चित की जाएगी। त्रैवार्षिकी-भारत के एक अंग के रूप में अकादमी फरवरी/मार्च, 1994 में निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित करेगी :—

## क) अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार

10.61 राष्ट्रीय संग्रहालय में एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया जाएगा। इसके आयोजन संबंधी व्यौरों को लगभग अंतिम रूप प्रदान कर दिया गया है।

## ख) अन्तर्राष्ट्रीय शिविर

10.62 अकादमी जवाहर कला केन्द्र, जयपुर के सहयोग से अपने परिसर में एक अन्तर्राष्ट्रीय बहु-माध्यमी शिविर आयोजित करेगी। इसके आयोजन संबंधी ब्यौरे भी अंतिम चरणों में हैं और भारतीय व विदेशी सहभागियों को निमंत्रण पत्र शीघ्र भेज दिए जाएंगे।

10.63 आठवीं त्रैवार्षिकी कार्यक्रमों के साथ-साथ 7वें राष्ट्रीय कला मेला का आयोजन फरवरी, 1994 के तीसरे सप्ताह से नई दिल्ली में किया जाएगा। इस मेले की विषय वस्तु है-“किसी भी देश के लोगों की सर्जनात्मक कला प्रतिभा को किसी भी तथा प्रत्येक रूप में प्रदर्शित करना”।

10.64 अकादमी ने वाराणसी में आयोजित हिन्दी पुस्तक मेला में तथा फ्रैंकफर्ट और मेडिसन (संयुक्त राज्य अमेरिका) के पुस्तक मेलों/प्रदर्शनियों में भाग लिया। वर्ष के दौरान निम्नलिखित पुस्तक मेलों में भाग लेने का प्रस्ताव है :—

(क) विश्व पुस्तक मेला-नई दिल्ली-फरवरी, 1994

(ख) कलकत्ता पुस्तक मेला-जनवरी, 1994

(ग) कोट्टायम पुस्तक मेला-जनवरी, 1994

10.65 वर्ष के दौरान अकादमी ने विभिन्न क्षेत्रीय केन्द्रों से संबद्ध 30 कलाकारों को शोध अनुदान प्रदान किया है। प्रत्येक शोध अनुदान में 12 माह की अवधि तक 1500/रु० प्रति माह का मानदेय प्रदान किया जाता है।

10.66 वर्ष के दौरान, अकादमी ने युवा छात्रों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक में अध्यापक नियुक्त किए। हिमाचल प्रदेश के 4 छात्र और कर्नाटक के 5 छात्र क्रमशः पहाड़ी चित्रकारी तथा पारंपरिक चित्रकारी की मैसूर शैली के क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

10.67 अकादमी ने वर्ष के दौरान निम्नलिखित शोध परियोजनाएं प्रारंभ कीं/प्राप्त कीं :

(1) ऋतुसंहार-नारायण तिवारी की बारहमासा चित्रकारी का सचित्र विवरण।

(2) गुजरात के कुछ हिस्सों के दुर्लभ प्राचीन भित्तिचित्र-रमेश पांड्या द्वारा।

(3) उत्तर पश्चिम भारत की लोक, जनजातीय और पारंपरिक कलाओं का सर्वेक्षण एवं प्रलेखन।

(4) बिहार की जनजातीय कला का सर्वेक्षण और प्रलेखन।

(5) पश्चिम बंगाल, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उड़ीसा व जम्मू और कश्मीर की लोक, जनजातीय और पारंपरिक कलाओं का सर्वेक्षण व प्रलेखन।

10.68 वर्ष के दौरान, अकादमी द्वारा निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किए गए :—

(1) सृजनात्मक छायाचित्रों की भारतीय द्विवार्षिकी

(2) समकालीन कला सं० 13 और 14 (हिन्दी)

(3) ललित कला (क) सं० 27

(4) ललित कला (ग) सं० 38

(5) कला संवाद (हिन्दी) सं० 28 (जुलाई-1993) और चुनाव विशेष पर कला संवाद (अंग्रेजी)-अक्तूबर, 1993

(6) VIII वीं त्रैवार्षिकी-भारत के लिए नियमावली फोल्डर

10.69 चालू वित्त वर्ष के दौरान निम्नलिखित प्रकाशन भी प्रकाशित किए जाने की संभावना है :—

### विनिबंध

- (1) रेडप्पा नायडू (अंग्रेजी)
- (2) बी० एन० आर्य (अंग्रेजी)
- (3) कंवल कृष्ण और देवयानी कृष्ण (अंग्रेजी)

### पोर्टफोलियो

- (1) ग्राफिक प्रिंट पोर्टफोलियो

### पुस्तकें

- (1) राजस्थान के लोक कांस्य
- (2) डा० ए०एस० रमन द्वारा समालोचनात्मक दृष्टि

### सूचीपत्र

- (1) बंगलादेश द्विवार्षिकी सूचीपत्र
- (2) राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी 93-94 का सूचीपत्र
- (3) 8वीं त्रैवार्षिकी-भारतीय सूचीपत्र

### विविध

- (1) त्रैवार्षिकी विवरणिका
- (2) 37वीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी-विवरणिका
- (3) चुनाव प्रक्रिया
- (4) मतदाता सूची-93
- (5) कला मेला पुस्तिका

## राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली

### शैक्षिक कार्यकलाप :

10.70 विद्यालय 19 जुलाई, 1993 को पुनः खुल गया। इस वर्ष दाखिले के लिए 20 छात्रों का चयन किया गया। विद्यालय के नियमित पाठ्यचर्या कार्यकलाप, समय-समय पर आयोजित की जाने वाली सार्वजनिक प्रस्तुतियों के रूप में परिणत होते हैं। वर्तमान वर्ष



यम गाथा नाटक, रंगमंडली की प्रस्तुति - राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय  
Play Yum Gatha, Rep. Co. Production - National School of Drama



शाही शिकार नाटक, विद्यालय की प्रस्तुति - राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय  
Play Shahi Shikar, School production - National School of Drama

की प्रस्तुतियां इस प्रकार हैं:

- (1) तृतीय वर्ष के छात्रों के लिए पीटर शाफर के "एक्स" का प्रो० मोहन महर्षि द्वारा "ऐताश" के रूप में रूपांतरण और निर्देशन किया गया। इसका मंचन 16-17 अप्रैल, 1993 को किया गया था।
- (2) द्वितीय वर्ष के छात्रों ने श्री बी०वी० कारंत के निर्देशन में 28 से 31 जुलाई 1993 के दौरान "चन्द्राहास" नाटक के चार प्रदर्शन किये।
- (3) अंतिम वर्ष के छात्रों के लिए श्रीमती अमल अलाना ने ब्रेच के "आतंक के साये" का अक्तूबर, 1993 में निर्देशन किया।
- (4) तृतीय वर्ष के छात्रों द्वारा शेक्सपीयर का एक नाटक श्री रघुनन्दन के निर्देशन में प्रस्तुत किया गया।

10.71 शैक्षिक प्रशिक्षण के भाग के रूप में कई छात्र प्रस्तुतियों, आमंत्रित प्रदर्शनों, प्रस्तुति अभ्यासों, मंच सजा कार्यों का भी आयोजन किया गया।

### राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंगमंडल दल :

10.72 "सहमत" के आमंत्रण पर दल ने 1 अप्रैल, 1993 को लखनऊ में श्री एम० के० रैना द्वारा निर्देशित "मुआवजे" का प्रदर्शन किया। इसने श्री त्रिपुरारी शर्मा द्वारा निर्देशित "आधे-अधूरे" के प्रदर्शन के साथ, साहित्य कला परिषद् द्वारा आयोजित 1992 के सर्वश्रेष्ठ नाटक-उत्सव में भी भाग लिया। इसके अलावा, दल ने मई-जून, 1993 में **ग्रीष्मकालीन नाट्योत्सव** का आयोजन किया। श्री विजय तेंदूलकर के "घासी राम कोतवाल" का श्री राजिन्दरनाथ द्वारा किया गया निर्माण, "आषाढ़ का एक दिन" "मुआवजे," "खबसूरत बहू", "आधे-अधूरे", "कैद-ए-हयात", "करमावाली" और "लहरों-के राजहंस" इस उत्सव में दिखाए गए प्रमुख नाटक थे।

10.73 ग्रीष्मकाश के बाद 3 अगस्त, 1993 को रंगमंडली पुनः सक्रिय हो गई। इसने सितम्बर में "नटी बिनोदनी" का और 16 नवम्बर, 1993 को "मसखरा मोलियर" का प्रदर्शन किया। इन नई प्रस्तुतियों के अलावा, दल ने अपनी कई पूर्व प्रस्तुतियों को भी पुनः प्रदर्शित किया। वर्ष के दौरान, यह दल मोहन राकेश के तीन नाटकों का प्रदर्शन करने के लिए मारीशस जाएगा।

### शिक्षा में थिएटर मंडली

10.74 "शिक्षा-में-थिएटर" मण्डली ने अप्रैल में दिल्ली के विभिन्न स्कूलों में "रजिया सुल्तान" का प्रदर्शन किया। इसने 16 से 18 अप्रैल, 1993 तक थिएटर अकादमी, पुणे और मैक्समूलर भवन के साथ संयुक्त रूप से "ग्रिप्स थियेटर" पर एक सेमिनार की मेजबानी की। शनिवार क्लब, जिसे पुनः चालू किया गया, ने चार लघु नाटकों का मंचन किया। जून, 1993 में एक ग्रीष्म कालीन कार्यशाला भी आयोजित की गयी, जिसमें लगभग 200 बच्चों ने भाग लिया। मण्डली की नवीनतम प्रस्तुति, श्री अब्दुल लतीफ खटाना के "डिजायर" का दिल्ली के विभिन्न स्कूलों में मंचन किया जा रहा है।

### विस्तार कार्यक्रम :

10.75 विस्तार कार्यक्रम के अर्न्तगत विद्यालय ने देश भर के विभिन्न भागों के थिएटर कर्मियों के लिए कई गहन थिएटर कार्यशालाएं आयोजित कीं। वर्तमान वर्ष के दौरान, कार्यशालाएं बीजापुर, नैनीताल, जम्मू, बंगलौर, इलाहाबाद, फरीदाबाद, पुणे और सहारनपुर में आयोजित की गईं। थिएटर-तकनीकों पर एक माह की एक कार्यशाला दिल्ली में आयोजित की गई।

### रंग यात्रा

10.76 रंग यात्रा प्रदर्शनी, जिसे दिसम्बर, 1992 में पुनः शुरू किया गया, बड़ी संख्या में दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करती आ रही है। 10,000 से भी अधिक लोगों ने इस प्रदर्शनी को देखा और यह प्रदर्शनी अभी भी लोगों के लिए खुली है। उदयपुर, जयपुर, चंडीगढ़ और अमृतसर में इस प्रदर्शनी को ले जाने की योजना बनायी जा रही है।

### अतिथि संकाय :

10.77 विद्यालय में व्याख्यान, प्रदर्शनों के लिए आये विख्यात थिएटर विभूतियों में सर्वश्री महेश एलकुंचवर, हबीब तनवीर, सतीश आलेकर, वी० राममूर्ति, सत्यदेव दुबे, नसीरुद्दीन शाह, स्यू० वेस्टन (ब्रिटेन), नरेन्द्र श्रीवास्तव प्रसन्ना, कीर्ति-शिलेदार और सुरेन्द्र वर्मा

शामिल हैं। शैक्षिक कार्यकलापों के भाग के रूप में, शैक्षिक दौरों, अतिथि-प्रदर्शनों और अल्पावधिक पाठ्यक्रमों की भी विद्यालय में व्यवस्था की गई। अक्तूबर-नवम्बर, 1993 में आस्ट्रेलिया की सुश्री बिकी फिश (नीडा) ने छात्रों को "अभिकल्पना" के बारे में शिक्षण दिया।

### **प्रशिक्षु शिक्षावृत्तियां :**

10.78 उत्तीर्ण स्नातकों में से आठ को प्रशिक्षु शिक्षा-वृत्तियां प्रदान की गईं। इनमें से तीन अधिसदस्यों ने 6 से 12 नवम्बर, 1993 के दौरान दिल्ली में आयोजित उत्सव में अपने-अपने नाटक प्रस्तुत किये।

10.79 वर्तमान वर्ष के दौरान, विद्यालय ने एक शोध और प्रकाशन कार्यक्रम शुरु किया है, जिसके अर्न्तगत पाठ्य-पुस्तकों, नाट्य-पाठों, आलोचनात्मक कृतियों और क्षेत्रीय नाटकों के इतिहास का प्रकाशन किया जाएगा। थिएटर के विभिन्न पहलुओं पर लिखने में सक्षम अध्येताओं का चयन करने और तत्संबंधी कार्य शुरु करने के साथ इस कार्यक्रम की शुरुआत की गई है। बुनियादी पुस्तकों के अंग्रेजी/हिन्दी रूपांतर को प्रकाशित करने के संबंध में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के साथ हुए करार का कार्यान्वयन इस वर्ष प्रारंभ कर दिया गया।

10.80 इस वर्ष, रामलीला, मणिपुर/कर्नाटक की पारंपरिक कलाओं का अध्ययन करने के लिए, द्वितीय और तृतीय वर्ष के छात्रों के लिए बनारस, इम्फाल और कर्नाटक के शैक्षिक दौरे आयोजित किए गए।

10.81 सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अर्न्तगत, वेश-भूषा/ मंच-सज्जा अभिकल्पना में अल्पकालिक पाठ्यक्रम के लिए श्रीमती डॉली अहलुवालिया और श्री बापी बोस को नीडा, आस्ट्रेलिया भेजा गया।

## संस्कृति का उन्नयन और प्रचार

### आदिवासी लोक कला एवं संस्कृति के उन्नयन और प्रचार के लिए वित्तीय सहायता

11.01 इस योजना में आदिवासी तथा गैरआदिवासी—दोनों प्रकार के स्वैच्छिक सांस्कृतिक संगठनों, संस्थाओं तथा व्यक्तियों को वित्तीय सहायता दिए जाने का प्रावधान है, ताकि वे आदिवासी/लोक कला और संस्कृति के परिरक्षण, विकास और प्रचार पर लगभग एक वर्ष की अवधि की अल्पकालीन तथा निम्न से सम्बद्ध परियोजनाएं अपने हाथों में ले सकें।

- (1) कलात्मक प्रदर्शनों का प्रलेखन, अनुसंधान, सर्वेक्षण और छायाचित्र रिकार्ड तैयार करना,
- (2) औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा पद्धति के माध्यम से आदिवासी संस्कृति और जीवन की समृद्धता के प्रति जागरूकता का प्रसार करना,
- (3) आदिवासी उत्सवों एवं आनंदोत्सवों सहित आदिवासी सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन तथा आदिवासी कला, शिल्प, वाचिक परंपराओं आदि का परिरक्षण एवं प्रचार।

11.02 वर्ष 1993-94 के दौरान स्वैच्छिक संगठनों तथा अन्य से आवेदन पत्र आमंत्रित किए गए। विशेषज्ञ समिति की एक बैठक पहले ही आयोजित की जा चुकी है और वित्तीय सहायता के लिए अनेक संगठनों का चयन किया जा चुका है।

### हिमालय क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत के परिरक्षण और विकास के लिए वित्तीय सहायता

11.03 इस योजना के अंतर्गत स्वैच्छिक सांस्कृतिक संगठनों, विश्व-विद्यालयों के संबद्ध विभागों सहित संस्थाओं, संग्रहालयों, पुस्तकालयों तथा अनुसंधान निकायों और इस क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों को निम्नलिखित से संबंधित अल्पकालीन परियोजनाओं के लिए अनुदान दिए जाते हैं :

- (1) हिमालय क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत के सभी पहलुओं का अध्ययन और अनुसंधान,
- (2) कला और शिल्प कृतियों का संग्रह और हिमालय के लोक संगीत, नृत्य और साहित्य सहित सांस्कृतिक कलाकृतियों का प्रलेखन,
- (3) श्रव्य-दृश्य कार्यक्रमों के माध्यम से हिमालय की कला और संस्कृति का प्रसार।

(4) हिमालय क्षेत्र की पारंपरिक और लोक कलाओं में प्रशिक्षण, और

(5) हिमालय क्षेत्र की संस्कृति के संग्रहालयों एवं पुस्तकालयों आदि की स्थापना तथा सहायता।

11.04 वर्ष 1993-94 के दौरान स्वैच्छिक संगठनों तथा अन्य से आवेदन पत्र आमंत्रित किए गए। विशेषज्ञ समिति की एक बैठक पहले ही आयोजित की जा चुकी है और वित्तीय सहायता के लिए अनेक संगठनों का चयन किया जा चुका है।

## सांस्कृतिक कार्यकलापों में कार्यरत स्वैच्छिक संगठनों को अनुसंधान सहायता के लिए वित्तीय सहायता

11.05 इस योजना में ऐसे स्वैच्छिक संगठन शामिल हैं, जो भारतीय परंपराओं और दर्शन आदि से संबंधित भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं के सांस्कृतिक कार्यकलापों में कार्यरत हैं। अनुदान हेतु पात्र होने के लिए यह आवश्यक है कि संगठन अखिल भारतीय स्वरूप के या राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हों। ऐसे संगठनों का अस्तित्व कम से कम तीन वर्षों का होना चाहिए तथा सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत होना चाहिए। तथापि, यह योजना धार्मिक संस्थाओं के रूप में कार्य कर रहे संगठनों या संस्थाओं, सार्वजनिक पुस्तकालयों, विश्वविद्यालयों या स्कूलों के मामले में लागू नहीं होगी।

11.06 निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए वित्तीय सहायता दी जा सकती है :

(क) महत्वपूर्ण सांस्कृतिक विषयों पर सम्मेलनों, सेमिनारों और संगोष्ठियों का आयोजन,

(ख) सर्वेक्षणों, मुख्य प्रायोगिक परियोजना आदि जैसे विकासात्मक कार्यक्रमों के व्यय को पूरा करना।

11.07 विनिर्दिष्ट परियोजनाओं के लिए अनुदान व्यय के 75% तक होगा किन्तु शर्त यह है कि अनुदान की राशि विशेषज्ञ समिति द्वारा यथाअनुशंसित प्रति परियोजना के लिए अधिक से अधिक 50,000 रुपये तक की होगी।

## सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली

11.08 सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (सी० सी० आर० टी०) एक स्वायत्त संगठन है, जो कि मुख्यतः शिक्षा को संस्कृति के साथ जोड़ने के संबंध में प्रशिक्षण देने के लिए जिम्मेदार है। निम्नलिखित विभागों द्वारा सां० स्रो० प्र० के० के कार्यकलाप किए जाते हैं :

- (क) प्रशिक्षण एवं मूल्यांकन
- (ख) समुदाय एवं विस्तार सेवा
- (ग) संसाधनों का संग्रह
- (घ) शैक्षिक सामग्री का उत्पादन
- (ङ) प्रकाशन
- (च) सांस्कृतिक प्रतिभा शोध छात्रवृत्ति योजना
- (छ) प्रशासन
- (ज) वित्त

11.09 प्राथमिक, मिडिल और उच्च विद्यालयों के शिक्षकों के लिए सां० स्रो० प्र० के० द्वारा आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम हैं—प्रबोधन पाठ्यक्रम, प्रशिक्षित शिक्षकों के लिए पुनश्चर्चा पाठ्यक्रम, शिक्षा के लिए कठपुतली पर कार्यशालाएं, पाठ्यक्रम और सेमिनार। ये कार्यक्रम सेवाकालीन शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, प्रशासकों और विद्यार्थियों के लिए आयोजित किए जाते हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम की अवधि अलग-अलग होती है और इनमें व्याख्यान, व्याख्यान-प्रदर्शन, व्यावहारिक कक्षाएं और प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक महत्व के स्थानों के शैक्षिक भ्रमण जैसे विविध कार्यक्रम शामिल हैं।

प्रशिक्षण का उद्देश्य इस प्रकार है :

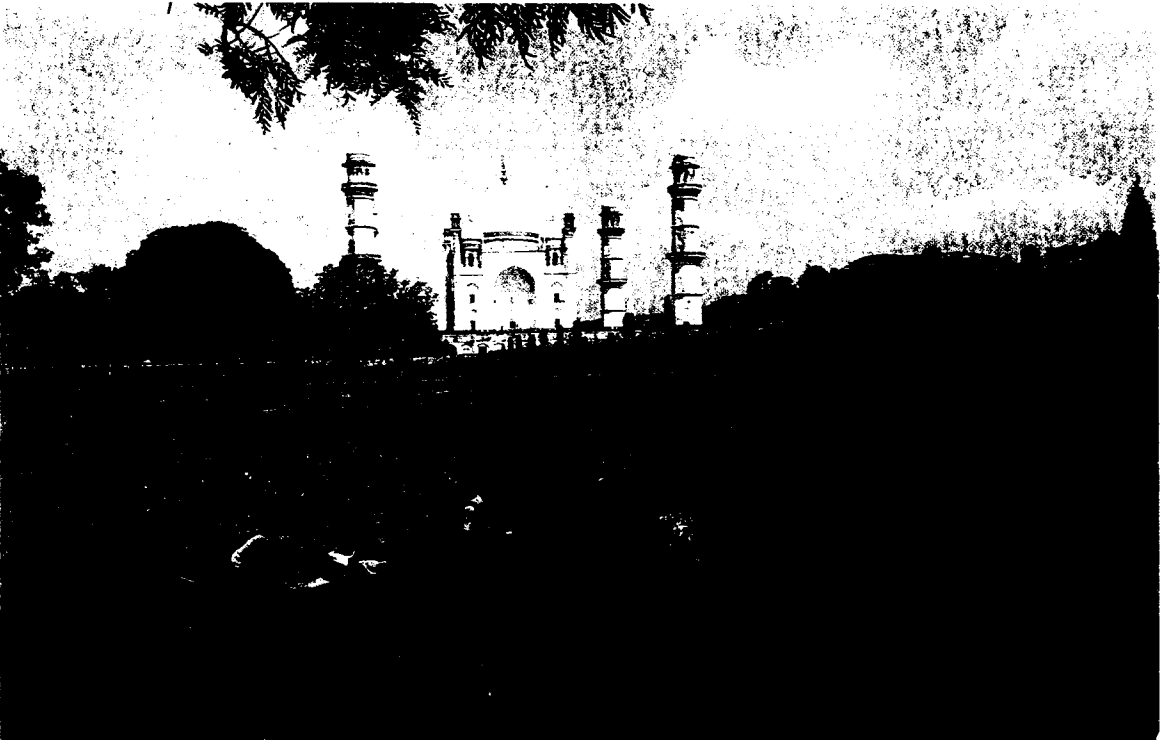
— राष्ट्रीय एकता की भावना जगाने के लिए भारतीय संस्कृति के विकास के बुनियादी सिद्धांतों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना;





छाऊ नृत्य के मुखौटे की तैयारी का प्रलेखन - पुरुलिया, पश्चिम बंगाल - सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली

Documentation of the preparation of Chau Dance Mask - Purulia, West Bengal - CCRT, New Delhi



भारत में विश्व सांस्कृतिक दाय स्थलो पर प्रशिक्षण कार्यक्रम - बीबी का मकबरा, औरंगाबाद - सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली

Training Programme at World Cultural Heritage Site in India  
- Bibi ka Makbara, Aurangabad - CCRT, New Delhi

- ऐसी पद्धतियों को तैयार करने का अवसर प्रदान करना, जिनमें भारतीय संस्कृति और रचनात्मक कार्यकलापों के पहलू पठन-पाठन की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग हों,
- शिक्षा को एक संपूर्ण अनुभव बनाने के उपायों को तैयार करने के लिए शिक्षकों को विद्वानों और कलाकारों के साथ विचारों के आदान-प्रदान करने का अवसर प्रदान करना,
- कक्षा-कक्ष की शिक्षण तकनीकों में सुधार के लिए रचनात्मक कार्यकलापों में कौशल एवं प्रशिक्षण प्रदान करना, और
- विभिन्न विषयों के शिक्षण के लिए देश के सभी भागों के शिक्षकों को एक साथ कार्य करने का अवसर प्रदान करना।

11.10 उपर्युक्त लक्ष्यों के आधार पर तैयार पाठ्यक्रमों के ढाँचे में निम्नलिखित शामिल हैं (i) कला एवं संस्कृति का सैद्धांतिक अध्ययन, (ii) कलाओं एवं शिल्पों में व्यावहारिक प्रशिक्षण, (iii) सांस्कृतिक शिक्षा एवं कक्षा-कक्ष के शिक्षण की सहायता के लिए शैक्षिक सहायक सामग्री तैयार करना, (iv) ऐतिहासिक स्मारकों, संग्रहालयों और पार्कों के शैक्षिक भ्रमण, तथा (v) मूल्यांकन सत्र। वर्ष 1993-94 में (सितंबर, 93 तक) 92 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

### विश्व सांस्कृतिक विकास दिवस

11.11 सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र को विश्व सांस्कृतिक विकास दिवस के समारोह का आयोजन करने के लिए मुख्य एजेंसी के रूप में नामित किया गया। इस दिवस को मनाने के लिए सां० स्त्रो० प्र० के० ने 24 मई, 1993 को आंध्र प्रदेश भवन में एक कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसका उद्घाटन माननीय शिक्षा एवं संस्कृति उप मंत्री कुमारी सैलजा ने किया।

### सामुदायिक एवं विस्तार सेवाएं

11.12 सां० स्त्रो० प्र० के० अपने सामुदायिक और विस्तार कार्यक्रमों के अन्तर्गत विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए विभिन्न शैक्षिक कार्यकलापों का आयोजन करता है। इन कार्यक्रमों में ऐतिहासिक स्मारकों, संग्रहालयों, चिडियाघरों और कला दीर्घाओं के शैक्षिक दौरे, स्कूलों में कलाकार और शिल्पों तथा प्रदर्शन कलाओं को सीखने के लिए 5 दिनों की अर्वाध के कार्यशिविर शामिल हैं। इस वर्ष के दौरान (सितंबर, 93 तक) सां० स्त्रो० प्र० के० ने लाल किला, कुतुब परिसर, राष्ट्रीय संग्रहालय, शिल्प संग्रहालय, पुराना किला, आदि जैसी जगहों के 30 से अधिक शैक्षिक दौरों का आयोजन किया और इनमें लगभग 1300 विद्यार्थी शामिल हुए।

11.13 केन्द्र ने अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों और स्वैच्छिक संगठनों के बच्चों के लिए भी अनेक शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन किया।

### संसाधनों का संग्रह :

11.14 इस वर्ष के दौरान (सितंबर, 93 तक) सां० स्त्रो० प्र० के० द्वारा आयोजित कुछ प्रलेखन कार्यक्रम निम्नानुसार हैं :

- श्री मधुप मुद्गल के भक्ति गीतों की श्रव्य-रिकार्डिंग,
- 24 मई, 1993 को विश्व सांस्कृतिक विकास दिवस के अवसर पर एक कार्यक्रम का आयोजन जिसमें देश के विभिन्न भागों में निबंध एवं चित्रकारी प्रतियोगिताओं, संगीत गोष्ठियाँ, नृत्य और नाटक के आयोजन किए गए। इन कार्यक्रमों की एक वीडियो फिल्म तैयार की गई और इस अवसर पर दिखाई गई। कार्यक्रमों को वीडियो और आडियो पर भी रिकार्ड किया गया। कार्यक्रम के छायाचित्र भी लिए गए।

11.15 सां० स्त्रो० प्र० के० ने "कांचीपुरम् : मंदिरों का नगर" पर एक श्रव्य-दृश्य शैक्षिक माड्यूल भी तैयार किया है। इस श्रव्य-दृश्य माड्यूल में (क) 127 रंगीन स्लाइडें, (ख) एक 160 मिनट की श्रव्य कैसेट टेप जिसमें वृतांत और नेपथ्य संगीत है तथा (ग) एक पुस्तिका जिसमें कार्यक्रम की पृष्ठभूमि, सूचना व वृतांत शामिल हैं।

### शैक्षिक सामग्री का उत्पादन

11.16 सां० स्त्रो० प्र० के० देश भर के स्कूलों में निःशुल्क वितरण के लिए शिक्षण सहायक सामग्री, सांस्कृतिक किट और मुद्रित सामग्री के रूप में विभिन्न प्रकार की शैक्षिक सामग्री तैयार करता रहा है। सामग्री केवल ऐसे शिक्षकों को दी जाती है, जिन्हें पाठ्यक्रम शिक्षण और विस्तार कार्य के लिए स्कूल में विभिन्न स्थितियों में उस सामग्री के प्रयोग का प्रशिक्षण दिया गया है। सितंबर, 93 तक

सां. स्त्रो. प्र. के. ने 600 सांस्कृतिक किट तैयार की हैं और 217 किटों को ऐसे संस्थानों के बीच वितरित किया है, जहां के शिक्षकों ने सां. स्त्रो. प्र. के. से प्रशिक्षण प्राप्त किया है। केन्द्र ने “कांचीपुरम् : मंदिरों का नगर” पर 200 श्रव्य-दृश्य मांड्यूल भी तैयार किए हैं और उनमें से 75 का वितरण किया है।

11.17 इस वर्ष के दौरान (सितंबर, 93 तक) सां. स्त्रो. प्र. के. ने एशिया और प्रशांत क्षेत्र के लोक नृत्य के 200 किट तैयार किए हैं और संपूर्ण देश के चुने हुए स्कूलों में 43 का वितरण किया है। एशिया और प्रशांत क्षेत्र के लोक नृत्यों के 500 किट भी तैयार किए गए और 153 का वितरण किया गया है।

## प्रकाशन

11.18 सां. स्त्रो. प्र. के. के प्रकाशनों में भारतीय कला और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्रदान करने और उन्हें सराहने का प्रयास होता है। इन प्रकाशनों में कलात्मक अभिव्यक्तियों पर प्रकृति के प्रभाव के महत्व के बारे में भी बताया जाता है, ताकि सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों पर पारस्थितिकी के प्रभाव की समझ पैदा की जा सके। केन्द्र विषय से संबंधित विस्तृत जानकारी के साथ प्रदर्शन कार्डों सहित शैक्षिक/सांस्कृतिक पैकेज भी तैयार करता है। प्रत्येक पैकेज में विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए सूचना की एक पुस्तिका और रचनात्मक कार्यकलाप भी होते हैं। समीक्षाधीन अवधि के दौरान निम्नलिखित पैकेज तैयार किए गए :

- (1) कांचीपुरम्—मंदिरों का नगर I
- (2) कांचीपुरम्—मंदिरों का नगर II

## सांस्कृतिक प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति योजना

11.19 चालू वर्ष के दौरान 300 से अधिक नई छात्रवृत्तियां प्रदान की गईं, जिससे छात्रवृत्ति प्राप्तकर्ताओं की कुल संख्या 2667 हो गई।

## सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

11.20 सां. स्त्रो. प्र. के. सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत अनेक देशों के साथ संपर्क में है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान दो देशों ने जवाब दिया है। निकट भविष्य में सां. स्त्रो. प्र. के. को तुर्कमेनिस्तान से एक विशेषज्ञ मिलेगा और केन्द्र एक विशेषज्ञ वियतनाम भेजेगा।

## क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र

11.21 नवंबर, 1985 से दिसंबर, 1987 के दौरान देश में स्थापित सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र पिछले कुछ वर्षों में लोक एवं आदिवासी कला तथा संस्कृति को बढ़ावा देने और इसके प्रसार के लिए सरकार के अग्रणी क्षेत्र संस्थाएं बन गए हैं। क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र संस्कृति से संबंधित विभिन्न कार्य संभालते हैं। इनके लक्ष्यों में देश के ग्रामीण और अल्पज्ञात क्षेत्रों में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देना शामिल है। क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों के विविध कार्यक्रमों (वर्ष 1993-94 के दौरान) का अनुमान निम्नलिखित आयोजनों से लगाया जा सकता है। :---

## 11.22 पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, शांति निकेतन

- (क) विभिन्न राज्यों में बच्चों के लिए आदिवासी, लोक, पारंपरिक और शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य कार्यक्रम और निबंध प्रतियोगिता सहित 20 कार्यक्रम आयोजित किए गए और पुरस्कार प्रदान किए गए। सबसे अच्छे पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को मई-जून, 1993 में “अपनी मातृभूमि को जानो” कार्यक्रम के अंतर्गत देश के विभिन्न स्थानों पर घूमने ले जाया गया।
- (ख) दिल्ली में महान चित्रकारों, मूर्तिकारों के कार्य आदि की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई।
- (ग) आदि कवि भानु भक्त की स्मृति में 12-13 जुलाई, 1993 को गंगटोक में पूर्व क्षेत्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- (घ) पोर्ट ब्लेयर में एक रंगमंच कार्य शिविर का आयोजन किया गया।
- (ङ) कलकत्ता में विकलांग बच्चों के लिए एक “बैठो और चित्र बनाओ” प्रतियोगिता आयोजित की गई।

### 11.23 दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, तंजावुर

- (क) तंजावुर में दिनांक 15.01.93 से दिनांक 20.1.93 तक तंजाई नृत्य उत्सव आयोजित किया गया।
- (ख) मद्रास में 18.01.93 से 27.01.93 तक कला मेले का आयोजन किया गया।
- (ग) एर्नाकुलम, केरल में 2.04.93 से 4.04.93 तक भारतोत्सव का आयोजन किया गया।
- (घ) 16.08.93 से 21.08.93 तक फेटे-डी-पांडिचेरी का आयोजन किया गया।
- (ङ) 14.09.93 से 30.09.93 तक मद्रास में एक अखिल भारतीय कला-शिल्प और लोक उत्सव का आयोजन किया गया।

### 11.24 पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर

- (क) भीलवाड़ा, और बाड़मेर में लांगा और मंगनियार बच्चों पर एक कार्य शिविर, गोप नृत्य और गेयर नृत्य का आयोजन किया गया।
- (ख) मुखावरण और मृगपात्र बनाने के लिए एक शिल्प कार्य शिविर का आयोजन किया गया।
- (ग) संगीत नाटक अकादेमी और कला अकादेमी के सहयोग से पणजी, गोवा में एक नाट्य समारोह रंगमंच उत्सव का आयोजन किया गया।
- (घ) जयपुर और गोवा में लघु चित्रों पर एक व्याख्यान-सह-प्रदर्शन का आयोजन किया गया।
- (ङ) अहमदाबाद में 28.12.92 से 10.01.93 तक "भारत में चीनी उत्सव" कार्यक्रम के अंतर्गत चीनी शिल्प प्रदर्शन में भाग लिया।

### 11.25 उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद

- (क) वर्ष 1993 में बच्चों की एक उत्पादनोन्मुखी रंगमंच कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- (ख) जुलाई, 1993 में इलाहाबाद में गज़ल कव्वाली समारोह में भाग लिया।
- (ग) जुलाई, 1993 में मद्रास में अखिल भारतीय यूनिफेस्ट-93 में भाग लिया।
- (घ) अगस्त, 1993 में लखनऊ में सद्भाव उत्सव में भाग लिया।
- (ङ) सितंबर, 1993 में मिर्ज़ापुर में नवोदय विद्यालय में लोक संगीत पर कार्यशाला में भाग लिया।

### 11.26 उत्तर पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, दीमापुर

- (क) जुलाई, 1993 में दीमापुर में सी०आर०पी०एफ० स्थापना दिवस समारोह में भाग लिया।
- (ख) जुलाई-अगस्त, 1993 में डिब्रुगढ़ में रंगमंच उत्सव में भाग लिया।
- (ग) 24-26 सितंबर, 1993 में पुणे में पुणे उत्सव में भाग लिया।
- (घ) जून, 1993 में असम में लोक गीत/नृत्य उत्सव में भाग लिया।
- (ङ) सितंबर, 1993 में गोलाघाट, असम में घरेलू पाक-क्रिया में भाग लिया।

## 11.27 उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, पटियाला

- (क) बनरास कला दीर्घा, पटियाला में 1.01.93 से 7.01.93 तक चित्रों (एक विकलांग लड़के द्वारा) की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई।
- (ख) फरवरी, 1993 में आगरा में ताज महोत्सव में भाग लिया।
- (ग) राष्ट्रीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत कलाकारों, शिक्षकों और विद्यार्थियों को अन्य क्षेत्रों में भेजा।
- (घ) भटिडा में राष्ट्रीय स्तर के लोक नृत्य उत्सव में भाग लिया।
- (ङ) अक्तूबर, 1993 में चंडीगढ़ में राष्ट्रीय स्तर के शिल्प मेला में भाग लिया।

## 11.28 दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर

- (क) मई-जून, 1993 में ऊटी में शिल्प मेला।
- (ख) जून, 1993 में सिरसा और दिल्ली में सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- (ग) अगस्त, 1993 में कलकत्ता के रवीन्द्र सदन में सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- (घ) अक्तूबर, 1993 में भटिडा और 7 अन्य स्थानों पर लोक नृत्य उत्सव।
- (ङ) अक्तूबर, 1993 में बंगलौर में लोक नृत्य उत्सव।
- (च) नवंबर, 1993 में शिल्पग्राम, उदयपुर में गली में प्रदर्शन करने वालों का राष्ट्रीय उत्सव।

11.29 इसके अलावा, क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों ने जनवरी, 1993 में दिल्ली में आयोजित गणतंत्र दिवस लोक नृत्य उत्सव और शिल्प मेला में भाग लिया। गणतंत्र दिवस, 1994 के लिए इन दो कार्यक्रमों के लिए तैयारियां चल रही हैं।

## सांस्कृतिक संगठनों को भवन निर्माण अनुदान

11.30 इस योजना का उद्देश्य स्वैच्छिक सांस्कृतिक संगठनों को भवनों के निर्माण तथा उपस्कर की खरीदारी के लिए अनुदान प्रदान करना है। इस योजना में धार्मिक संस्थानों, सार्वजनिक पुस्तकालयों, संग्रहालयों, नगरपालिकाओं, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और केन्द्रीय/राज्य सरकार द्वारा पूर्णतया वित्तपोषित संस्थानों को शामिल नहीं किया गया है। इसमें ऐसे संस्थानों को शामिल किया गया है, जो स्थानीय निकायों/नगरपालिकाओं, नगर-निगमों द्वारा चलाए जाते हैं और जो विशेष तौर पर नृत्य, नाटक, संगीत, ललित कलाओं, भारत-विद्या और साहित्य के सांस्कृतिक क्षेत्रों में कार्य करते हैं।

11.31 वर्ष 1993 में इस योजना के अंतर्गत, प्रति संगठन अधिकतम अनुमत्य अनुदान 3 लाख रु० से बढ़ाकर 5 लाख रु० कर दिया गया है। इस लिए किसी भी संगठन को अब अधिकतम 5 लाख रु० का अनुदान मिल सकता है, बशर्ते कि यह राशि कुल व्यय का 50% हो।

11.32 पिछले वर्ष की तरह इस योजना के लिए विभिन्न सांस्कृतिक संस्थानों से राज्य सरकारों के माध्यम से आवेदन आमंत्रित किए गए। अभी तक इस वर्ष 20 संगठनों को भवन निर्माण अनुदान संस्वीकृत किए गए हैं और वित्तीय वर्ष के अंत तक और अधिक संगठनों को ऐसा अनुदान दिए जाने की संभावना है।

## नृत्य, नाटक और थिएटर मंडलियों को वित्तीय सहायता

11.33 इस शीर्ष के अंतर्गत दो योजनाएं चल रही हैं। इस योजना के अंतर्गत प्रदर्शन कलाओं के क्षेत्र में सुस्थापित संस्थाओं को उनके गुरुओं तथा कलाकारों के वेतन के लिए वित्तीय सहायता दी जाती है, जिससे कि वे संबंधित क्षेत्रों में राष्ट्रीय अथवा क्षेत्रीय संसाधन केन्द्र बन सकें। वर्ष 1993-94 में 82 संस्थाओं को ऐसी वित्तीय सहायता प्रदान की गई।

11.34 योजना के दूसरे भाग का उद्देश्य विशिष्ट प्रदर्शन कला परियोजनाओं के लिए व्यावसायिक दलों और व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है। इस योजना के तहत अनुदान दिए जाने के लिए नाट्य दलों, संगीत मण्डलियों, आर्केस्ट्रा दलों, बाल थिएटरों, कठपुतली थिएटरों और प्रदर्शन कला कार्यक्रमों की सभी विधाओं पर विचार किया जाता है। 1993-94 के दौरान, इस योजना के तहत 50 से अधिक दलों और व्यक्तियों ने इसका लाभ उठाया है। इस वित्त वर्ष के अंत तक इस संख्या में वृद्धि होने की संभावना है।

## राज्यों में बच्चों के लिए बहुमुखी सांस्कृतिक परिसरों सहित सांस्कृतिक परिसरों की स्थापना की योजना

11.35 अपने युवकों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने और समाज में जो कुछ सौंदर्य एवं नैतिक दृष्टि से उत्तम है, उसके प्रति उनको संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से विभाग द्वारा वर्ष 1992-93 से राज्यों में बच्चों के लिए बहुमुखी सांस्कृतिक परिसरों सहित सांस्कृतिक परिसरों की स्थापना की योजना कार्यान्वित की जा रही है। इस योजना के तहत राज्य सरकार द्वारा स्थापित स्वायत्त निकाय को इसलिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, ताकि वह ऐसे सांस्कृतिक परिसरों की स्थापना करें, जो कि सृजनात्मक कलाओं में उत्कृष्टता और/या युवा प्रतिभाओं को प्रशिक्षण देने वाले केन्द्रों के रूप में कार्य करें। इस योजना के तहत सभा भवनों, पुस्तकालय, संग्रहालय, प्रदर्शन क्षेत्र, दीर्घा, खुले आकाश के नीचे थिएटर आदि जैसी बुनियादी सुविधाओं के प्रस्तावों के लिए भी सहायता दी जाती है।

11.36 वर्ष 1992-93 के दौरान, पश्चिम बंगाल और सिक्किम राज्यों द्वारा गठित स्वायत्त निकायों को इस योजना के तहत सांकेतिक अनुदान दिए गए। सभी शर्तों पर सहमति होने, अंतिम रूप-रेखा के फिर से तैयार हो जाने आदि जैसी औपचारिकताओं के पूरा हो जाने पर उन्हें आगे और अनुदान दिए जाएंगे। वर्ष 1993-94 के लिए अनेक राज्यों से अनुदान के लिए अनुरोध प्राप्त हुए हैं।

## राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिसर, नई दिल्ली

11.37 सांस्कृतिक समुदाय की लम्बे समय से चली आ रही मांग को पूरा करने के लिए एक नई योजना तैयार की गई है, जिसका उद्देश्य देश की राजधानी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का एक सांस्कृतिक परिसर प्रदान करना है। इसे ध्यान में रखते हुए "परिसर" के नाम से एक स्वायत्त निकाय गठित किया गया है और उसे सोसायटी पंजीकरण अधिनियम के तहत पंजीकृत किया गया है। मानव संसाधन विकास मंत्री परिसर के महापरिषद् के अध्यक्ष हैं और कला एवं संस्कृति के क्षेत्र की सुविख्यात हस्तियां-श्री अकबर पद्मसी, श्री अमिताभ बच्चन, उस्ताद अमजद अली खान, प्रोफेसर यू०आर० अनंतमूर्ति, श्री चार्ल्स कोरिया, श्री एम०एन० देशपांडे, प्रोफेसर आर०सी० गांधी, श्री ओ०पी० जैन, श्री बी०वी० कारंत, श्री कुंवर नारायण, डा० मुकुंद लथ, श्री रघु राय, श्री जे० स्वामीनाथन और श्री विजय कुमार किचलू इसके सदस्य हैं। "परिसर" का कार्यकारी बोर्ड भी सचिव (संस्कृति) की अध्यक्षता में गठित किया गया है।

11.38 ऐसा सोचा गया है कि राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिसर स्थापित हो जाने पर इसमें सभा भवन, विशेष प्रदर्शन हॉल, मंडलियों के लिए पूर्वाभ्यास स्थल, प्रदर्शनी दीर्घाएं, शिल्प प्रदर्शनी स्थल, सेमिनार कक्ष, लघु थिएटर, पुस्तकालय आदि हो और यह मुख्य नगर में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के एक महत्वपूर्ण केन्द्र की भूमिका निभाए।

11.39 भूमि का आवंटन और परिसर के निर्माण का कार्य, जिसमें कुछ समय लग सकता है, होने तक चालू वर्ष 1993-94 से कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के शुरू किए जाने का प्रस्ताव है।

## श्रीमंत शंकर देव कलाक्षेत्र, गुवाहाटी

11.40 अगस्त, 1985 में एक समझौता जापान, जिसे सामान्यतया असम समझौता के नाम से जाना जाता है, पर हस्ताक्षर किए गए, जिससे विदेशियों के मुद्दों पर असम में चल रहा छः वर्ष लम्बा आन्दोलन समाप्त हुआ। समझौते के खंड-6 में असम के लोगों की सांस्कृतिक, सामाजिक, भाषाई पहचान और विरासत को संरक्षित, परिरक्षित और प्रोत्त करने के लिए कतिपय सुरक्षा प्रदान करने का प्रावधान है।

11.41 इस खंड को कार्यान्वित करने के लिए मार्च, 1989 में केन्द्रीय/राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों की एक अधिकारी स्तर की समिति गठित की गई, ताकि असम की संस्कृति को परिरक्षित करने और प्रोत्त करने के लिए कुछ ऐसे ठोस कार्यक्रम/योजनाएं तैयार की जा सकें। अप्रैल, 1990 में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में समिति ने सिद्धांत रूप में गुवाहाटी में "श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र" के नाम से एक सांस्कृतिक परिसर स्थापित करने के लिए परियोजना को कार्यान्वित करने की सिफारिश की। परियोजना के वित्तपोषण का प्रश्न मानव संसाधन विभाग के संस्कृति विभाग पर छोड़ दिया गया।

11.42 योजना आयोग, वित्त और गृह मंत्रालयों के अनुमोदन के बाद प्रस्ताव को मंत्रिमंडल के समक्ष रखा गया। मंत्रिमंडल ने 2 सितंबर, 1993 को हुई अपनी बैठक में वर्ष 1993-94 से चार वर्षों की अवधि में भारत सरकार के संस्कृति विभाग से किरातों में दी जाने वाली 10.00 करोड़ रु० की वित्तीय सहायता से श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र की स्थापना करने के प्रस्ताव को अनुमोदित कर दिया। परिसर को चलाने और इसके रख-रखाव का आवर्ती व्यय राज्य सरकार द्वारा अपने संसाधनों से वहन किया जाएगा।

## कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान, मद्रास

11.43 भारत सरकार ने 29.9.1993 को घोषित अपने एक अध्यादेश के माध्यम से कलाक्षेत्र, मद्रास को एक राष्ट्रीय महत्व के संस्थान के रूप में घोषित किया और कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान की स्थापना भी की। भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री आर० वेंकटरमण को कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान का प्रथम अध्यक्ष नियुक्त किया गया। भारत सरकार द्वारा गठित शासी निकाय में सरोद वादक, अमजद अली खां, प्रसिद्ध हिन्दुस्तानी गायक, पंडित जसराज, कथक केन्द्र निदेशक, श्री जीवन पाणि, संगीत नाटक अकादमी के पूर्व सचिव, श्री बी०वी०के० शास्त्री, संगीत एवं नृत्य समालोचक, सुश्री लीला वेंकटरमण, प्रमुख नर्तकी, सुश्री लीला संमसन, उद्योगपति, श्री आर०वी० रमानी, श्री एन० कृष्णन, आई०एफ०एम० (सेवा निवृत्त) वर्तमान में यूनेस्को के निदेशक और श्री बंशीधर सदस्य हैं। संस्कृति विभाग के सचिव और मानव संसाधन विकास मंत्रालय के वित्तीय सलाहकार इसके दो पदेन सदस्य होंगे।

11.44 शारदकालीन सत्र के दौरान संसद के दोनों सदनों में अध्यादेश के प्रतिस्थापन का विधायक पेश किया गया है।

## शिक्षावृत्ति, छात्रवृत्ति व वित्तीय सहायता की योजनाएं

### प्रदर्शन, साहित्य और रूपंकर कलाओं के क्षेत्रों में अत्यधिक उत्कृष्ट कलाकारों को सेवानिवृत्ति-शिक्षावृत्तियां

12.01 सेवानिवृत्ति-शिक्षावृत्ति की योजना उन कलाकारों को वित्तीय सहायता देने के लिए तैयार की गई है, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में अत्यधिक उत्कृष्टता प्राप्त कर ली है, किन्तु अब व्यवसाय से सेवानिवृत्त हो चुके हैं, ताकि वे धन की कमी महसूस न करते हुए अपने कला संबंधी प्रयोग जारी रख सकें। उपयुक्त मामलों में प्रतिवर्ष नौ शिक्षावृत्तियां प्रदान की जाती हैं, जो 5000 रुपए प्रतिमाह की होती हैं तथा आकस्मिक खर्चों के लिए 10,000 रुपए प्रतिवर्ष भी दिए जाते हैं। प्रत्येक की अवधि 2 वर्ष की होती है। विशिष्ट मामलों में, शिक्षावृत्ति की अवधि इस शर्त पर बढ़ाई जा सकती है कि शिक्षावृत्ति प्राप्तकर्ताओं की कुल संख्या किसी भी वर्ष 30 से अधिक न हो।

### कुमार गंधर्व शिक्षावृत्ति :

12.02 वर्ष 1992-93 से पंडित कुमार गंधर्व की स्मृति में एक शिक्षावृत्ति आरंभ की गई है। यह शिक्षावृत्ति, सेवानिवृत्ति-शिक्षावृत्ति के समकक्ष है और प्रति वर्ष सरकार द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में सुविख्यात वरिष्ठ कलाकारों को प्रदान की जाती है। शिक्षावृत्ति की राशि प्रति माह 5000 रु० है और इसकी अवधि 2 वर्ष की है। इसके अतिरिक्त, शिक्षावृत्ति प्राप्तकर्ता को यात्रा खर्चों तथा शोध खर्चों को वहन करने के लिए प्रतिवर्ष 10,000/- रु० की एक-मुश्त अनुदान राशि दी जाती है।

### साहित्य, कला और जीवन के ऐसे ही अन्य क्षेत्रों के उन उत्कृष्ट कलाकारों एवं उनके आश्रितों को वित्तीय सहायता प्रदान करना, जो अभावग्रस्त परिस्थितियों में रह रहे हैं :

12.03 योजना में उन विशिष्ट साहित्यकारों और कलाकारों को वित्तीय सहायता प्रदान करने की व्यवस्था है, जो अभावग्रस्त परिस्थितियों में रह रहे हैं और 58 वर्ष से अधिक आयु के हैं। योजना के अन्तर्गत उनके आश्रितों को वित्तीय सहायता प्रदान करने पर भी विचार किया जाता है, जिनका और कोई साधन नहीं है। व्यय भार सामान्यतः भारत सरकार और संबंधित राज्य सरकार द्वारा 2:1 के अनुपात में वहन किया जाता है। विशिष्ट मामलों में, पूर्ण व्यय भारत सरकार द्वारा वहन किया जाता है। एक व्यक्ति को दी जाने वाली अधिकतम राशि 1500/- रुपए प्रति माह है। अब तक इस योजना के अन्तर्गत 564 कलाकारों ने लाभ उठाया है।



## विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में युवा कार्यकर्ताओं को छात्रवृत्ति प्रदान करना :

12.04 इस योजना का उद्देश्य संगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला, मूर्तिकला, चित्र एवं काष्ठ शिल्प, अभिकल्पना तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यकलापों के क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रतिभा वाले 18-28 आयु वर्ग के युवा कलाकारों को भारत में उच्च प्रशिक्षण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है। प्रति वर्ष दी जाने वाली छात्रवृत्तियों की संख्या 200 है। यद्यपि इन छात्रवृत्तियों की अवधि सामान्यतः दो वर्ष है, किन्तु विशिष्ट मामलों में इसे एक वर्ष के लिए और बढ़ाया जा सकता है। 1 जनवरी, 1993 से छात्रवृत्ति की राशि 600/- रु. में ब्यक्रर 1000 रु. प्रतिमाह कर दी गई है।

## प्रदर्शन, साहित्य और रूपंकर कलाओं के क्षेत्रों में उत्कृष्ट कलाकारों को शिक्षावृत्तियां प्रदान करना :

12.05 योजना में 3000/- रु. प्रतिमाह की राशि की वरिष्ठ शिक्षावृत्तियां एवं 1500/- रुपए प्रतिमाह की राशि की कनिष्ठ शिक्षावृत्तियां प्रदान करने की व्यवस्था है। सामान्यतया, शिक्षावृत्ति की अवधि दो वर्ष की होती है, किन्तु विशिष्ट मामलों में इसमें एक वर्ष की वृद्धि और की जा सकती है। प्रतिवर्ष 50 वरिष्ठ शिक्षावृत्तियां और 150 कनिष्ठ शिक्षावृत्तियां प्रदान की जाती हैं। योजना का मुख्य उद्देश्य साहित्य, रूपंकर और प्रदर्शन-कला क्षेत्रों के 25-65 वर्ष की आयु वर्ग के उत्कृष्ट कलाकारों को अत्यंत उच्च प्रशिक्षण अथवा परम्परागत कला-रूपों के पुनरुद्धार के लिए आधारभूत वित्तीय सहायता प्रदान करना है।

## सांस्कृतिक संगठनों को अनुदान :

12.06 अखिल भारतीय स्वरूप की जो संस्थाएं सांस्कृतिक कार्यकलापों के विकास में कार्यरत हैं, उन्हें वित्तीय सहायता दी जाती है, ताकि वे अनुरक्षण और विकास कार्यकलापों पर होने वाले अपने-अपने व्यय का भाग वहन कर सकें। जिन संस्थाओं को सहायता प्रदान की गई वे हैं : रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान, कलकत्ता, ऐतिहासिक अध्ययन संस्थान, कलकत्ता, भारतीय मुद्रा शास्त्र सोसायटी, वाराणसी, पारंपरिक सांस्कृतिक संस्थान, मद्रास, भारतीय विद्या-भवन, बम्बई एवं मुद्राशास्त्र अध्ययन संस्थान, नासिक।



गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति द्वारा आयोजित एक राष्ट्रीय बाल कार्यक्रम - बच्चे सद्भावना के पथ पर  
Children for Harmony - one of the National Children's Programme organised by Gandhi Smriti and Darshan Samiti

## स्मारक

### गांधी स्मृति एवम् दर्शन समिति, नई दिल्ली

13.01 गांधी स्मृति एवम् दर्शन समिति (गां० स्मृ० एवं द० स०) की स्थापना 1984 में निम्न दो उद्देश्यों से की गई थी :—(1) द० स० का परिरक्षण, अनुरक्षण एवं रखरखाव और (2) सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महात्मा गांधी के जीवन, संदेश, व विचारों का प्रचार करना।

13.02 1993-94 के दौरान, गां० स्मृ० एवं द० स० ने विभिन्न कार्यक्रम एवं कार्यक्रमलाप आयोजित किए जिनमें बच्चों, युवकों, महिलाओं, गांधीवादी कार्यकर्ताओं, शिक्षाविदों और अध्येताओं ने भाग लिया। इस अवधि के दौरान, "साम्प्रदायिक सद्भाव एवम् राष्ट्रीय एकता" नामक विषयों पर कुरुक्षेत्र और राजौरी में दो युवा सम्मेलन शिविर आयोजित किए गए। गांधी स्मृति एवम् दर्शन समिति गांधी जी के संदेश को विभिन्न वर्गों में प्रचार के लिए अपने प्रयासों के एक भाग के रूप में गांधी दर्शन (राजघाट) और गांधी स्मृति (5, तीस जनवरी मार्ग), दोनों जगहों पर नियमित आधार पर चरखा-कताई का आयोजन करती रही है। इन दोनों ही जगहों पर जनता को कताई की निःशुल्क सुविधाएं दी जाती हैं।

13.03 गां० स्मृ० एवं द० स० की विधियां भारत और विदेशों से बड़ी संख्या में आए दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र बनी रहीं। समिति के पास प्रमुख राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए एक स्थायी एवं व्यापक प्रदर्शनी एकक, पूर्ण विकसित प्रेक्षागृह, एक सम्मेलन कक्ष और शिविर संबंधी पर्याप्त सुविधाएं हैं। यह त्रैमासिक समाचार-पत्र तथा विभिन्न प्रकाशन नियमित रूप से प्रकाशित करती हैं। आलोच्य अवधि के दौरान, इसने निम्नलिखित प्रकाशन निकाले :—

(क) शांति के लिए अहिंसात्मक विश्वव्यापी जागरूकता में गांधी जी का योगदान—(प्रो ग्लेन डी० पेज)

(ख) युद्ध विहीन विश्व की ओर : गांधीवाद और आधुनिक विश्व—(डा० डायसाकू इकेडा)

(ग) सद्भावना के प्रहरी : गणेश शंकर विद्यार्थी—(जन्म शताब्दी स्मृति भावांजलि)

(घ) सद्भावना के अमर शहीद—(श्री बी० एन० पांडे)

## नव नालन्दा महाविहार और ह्वेन सांग स्मारक, नालन्दा

13.04 पचास के दशक के अन्त में चीन सरकार ने पंडित नेहरू को एक मंजूषा में ह्वेनसांग के स्मृति चिह्न के साथ-साथ एक चैक और नालन्दा स्मारक निर्माण योजना भेंट की थी। भारत सरकार (संस्कृति विभाग) ने वहां एक स्मारक बनवाया है। तथापि, ह्वेनसांगकी स्मृति से जुड़ी उस मंजूषा को स्मारक में अभी तक नहीं लाया गया है, जबकि बिहार सरकार ने बिहार में पाली और बौद्ध दर्शन में अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए नव नालन्दा महाविहार की स्थापना की है। हाल के वर्षों में बिहार सरकार से इस संस्था का अधिग्रहण करने और इसे ह्वेनसांग स्मारक के साथ मिलाने के प्रस्ताव पर विचार किया गया था। अभी हाल ही में बिहार सरकार ने अधिसूचना के द्वारा भारत सरकार को इसकी समस्त परिसंपत्तियों और देयताओं सहित इसके अधिग्रहण का प्रस्ताव किया है। उपनियम बनाए गए हैं और विधि मंत्रालय द्वारा उनका पुनरीक्षण किया गया है।

## मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान, कलकत्ता

13.05 मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान, संस्कृति विभाग के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन है। यह संस्थान मौलाना अबुल कलाम आजाद के जीवन और कृतियों पर अनुसंधान और प्रशिक्षण का केन्द्र है, जहां पर 19वीं शताब्दी के मध्य से एशिया में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा आर्थिक आन्दोलन के अध्ययन की व्यवस्था है। पुस्तकों, समाचार पत्रों, छायाचित्रों और आधुनिक भारत के धर्म निरपेक्ष परंपराओं से संबंधित सामग्री तथा 19 वीं शताब्दी की घटनाओं से संबंधित सामग्री संस्थान के पुस्तकालय में विद्यमान है जो अध्ययन और अनुसंधान के लिए जनसाधारण को उपलब्ध करायी जाती है। यह संस्थान मौलाना अबुल कलाम आजाद के पूर्व निवास स्थान पर एक निजी संग्रहालय भी संचालित करता है। संग्रहालय में एक विशिष्ट राजनीतिक नेता तथा विचारक के रूप में मौलाना अबुल कलाम आजाद के जीवन और कृतियों को प्रदर्शित किया जाता है।

## राष्ट्रीय स्मारकों का विकास एवं अनुरक्षण

13.06 इस योजना का लक्ष्य उन विख्यात राष्ट्रीय विभूतियों की भूमिका के बारे में स्मरणोत्सव आयोजित करना तथा उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व को उजागर करना है जिन्होंने देश के इतिहास में ऐतिहासिक भूमिका अदा की है तथा ऐसी महान विभूतियों से युवा पीढ़ी को परिचित कराना है।

13.07 इस योजना के अंतर्गत (1) केन्द्र सरकार (2) राज्य सरकारों, तथा (3) स्वैच्छिक संगठनों की पहल पर स्थापित किए गए स्मारक शामिल हैं। वित्तीय सहायता की अधिकतम सीमा 5.00 लाख रुपये है। वित्तीय सहायता के लिए आवेदन करने वाले स्वैच्छिक संगठन सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के अंतर्गत पंजीकृत होने चाहिए।

## शताब्दियां और जयंतियां

14.01 भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में से एक कार्यक्रम भारत की उन विशिष्ट विभूतियों की शताब्दियों के समारोह आयोजित करना रहा है, जिन्होंने हमारे देश के इतिहास और जीवन पर अमिट छाप छोड़ी है।

14.02 राष्ट्रीय महत्व की शताब्दियों के आयोजन के लिए राष्ट्रीय समितियों का गठन किया जाता है। ये समितियां शताब्दी वर्ष के दौरान क्रियान्वयन के लिए वार्षिक कार्यक्रम तैयार करती हैं। इन कार्यक्रमों में सामान्यतः राष्ट्रीय सेमिनारों के आयोजनों, प्रतिमा-स्थापना कार्यक्रमों, अन्य समारोहों, डाक टिकट विमोचनों, प्रकाशनों और प्रदर्शनीयों आदि को भी शामिल किया जाता है।

14.03 संस्कृति विभाग पंजीकृत स्वैच्छिक संगठनों को उन विशिष्ट विभूतियों के शताब्दी/वर्षगांठ समारोहों के आयोजन के लिए भी वित्तीय सहायता प्रदान करता है, जिनका आयोजन भारत सरकार नहीं करती है।

14.04 शताब्दियां आयोजित करने की एक अन्य पद्धति के अर्न्तगत राज्य सरकारों से शताब्दी आयोजन समिति गठित करने का अनुरोध किया जाता है और भारत सरकार अपनी ओर से स्मारक डाक टिकटों के विमोचन, सेमिनारों/व्याख्यानो/प्रकाशनों आदि जैसे कुछ कार्यक्रमों का आयोजन करती है।

### वर्तमान कार्यक्रम

14.05 भारत छोड़ो आंदोलन स्वर्ण जयंती के समापन-समारोह के अवसर पर एक कार्यक्रम इंदिरा गांधी स्टेडियम, नई दिल्ली में 9 अगस्त, 1993 को आयोजित किया गया था। इस अवसर पर स्मारक सिक्कों का विमोचन किया गया।

14.06 महा पण्डित राहुल सांकृत्यायन का जन्म शताब्दी समारोह भी आयोजित किया गया।

14.07 (क) महात्मा गांधी और (ख) रफी अहमद क़िदवई की जयन्तियां मनाने के लिए राष्ट्रीय समितियां गठित की गईं।



## अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंध

### सांस्कृतिक करार/सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम :

15.01 विदेशों के साथ सांस्कृतिक संबंधों का विकास और भारत की सांस्कृतिक छवि को उसके सही परिप्रेक्ष्य में प्रदर्शित करने का कार्य वर्ष के दौरान जारी रहा। इस समय 95 देशों के साथ हमारे सांस्कृतिक करार हैं। यद्यपि, सांस्कृतिक करार सांस्कृतिक तालमेल की व्यापक सामान्य संकल्पनाएं हैं किन्तु सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के अन्तर्गत प्रदर्शन कलाओं पर विशेष बल देते हुए संस्कृति खेल/कूद, युवा कार्यक्रमों जैसे कई कार्यकलापों से संबंधित विनिर्दिष्ट समय-बद्ध विषय शामिल किए जाते हैं।

15.02 चालू वर्ष के दौरान, 7 देशों अर्थात् चिली, रूस, ताज़िकिस्तान, मालदोवा इस्त्राइल, बेला रूस और एस्तोनिया के साथ सांस्कृतिक करार किए गए हैं। इस संदर्भ में, 18 मई, 1993 को इस्त्राइल के साथ पहली बार किए गए सांस्कृतिक करार के महत्व को उजागर करना प्रासंगिक होगा। भारत सरकार की ओर से मानव संसाधन विकास मंत्री श्री अर्जुन सिंह जी ने तथा इस्त्राइल सरकार की ओर से विदेश मंत्री श्री साइमन पेरेज द्वारा इस करार पर हस्ताक्षर किए गए। इस सांस्कृतिक करार में शैक्षिक कार्यकलाप सहित कला, संस्कृति, शिक्षा के विषयों में तथा खेल-कूद एवं युवा कार्यकलापों, पत्रकारिता, रेडियो, टेलीविज़न और सिनेमा के क्षेत्रों में तालमेल बिठाने जैसे महत्वपूर्ण विषय शामिल हैं।

15.03 सांस्कृतिक करारों के ढांचे के अन्तर्गत, नियमित समयबद्ध विनिमय-कार्यक्रम अनेक देशों के साथ विकसित किए गए हैं। इस समय, इनकी संख्या 69 है। इनमें विदेशों में स्थित संबंधित भारतीय मिशनों की सिफारिशों पर हस्ताक्षरित/नवीकृत किए गए 11 सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम भी शामिल हैं। कुछ चुनिंदा भारतीय मिशनों को अनुदान दिए गए, जिससे कि भारतीय मूल की स्थानीय जनता के बीच सांस्कृतिक कार्यकलापों को प्रोत्साहित किया जा सके।

15.04 विशेष रूप से मध्य एशियाई गणराज्यों के साथ तालमेल को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया गया। इस संदर्भ में, सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम पर निगरानी रखने तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में भावी सहयोग के अन्य क्षेत्रों को शामिल करने की संभावना का पता लगाने के संबंध में 30.10.93 से 6.11.93 तक 8 सदस्यीय कजाक सांस्कृतिक सहयोग संयुक्त आयोग का भारत दौरा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कजाक आयोग का नेतृत्व कज़ाकिस्तान के प्रथम उप संस्कृति मंत्री, महा-महिम श्री ए०टी० सिगेव द्वारा किया गया, जबकि भारतीय पक्ष का नेतृत्व संस्कृति विभाग के सचिव श्री एस०के० महापात्र द्वारा किया गया।

15.05 दोनों पक्षकार संस्कृति, कला, साहित्य, जनप्रचार माध्यम, पर्यटन, खेल-कूद के अनेक क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग के लिए सिद्धांततः सहमत हुए।

## पुस्तकों/कला-वस्तुओं को भेंट करना और निबंध प्रतियोगिताएं :

15.06 संस्कृति विभाग ने विदेशी सरकारों, संगठनों, पुस्तकालयों, और व्यक्तियों को पुस्तकें और कला वस्तुएं भेंट करने के लिए तथा भारतीय मिशनों के माध्यम से विदेशों में निबंध प्रतियोगिताएं आयोजित करने के लिए भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् को धन प्रदान करना जारी रखा ।

15.07 संस्कृति विभाग विदेशों में स्थित संबंधित भारतीय मिशनों की सिफारिशों पर इन सोसाइटियों/संघों को वित्तीय सहायता प्रदान कर रहा है। भारतीय मूल के स्थानीय जनसंख्या के बीच सांस्कृतिक कार्यकलापों को प्रोत्साहित करने हेतु चुनिंदा भारतीय मिशनों को अनुदान दिया गया ।

15.08 भारत सरकार ने सिटी विश्व विद्यालय, पेरिस के परिसर में भारतीय छात्रों के लिए एक छात्रावास का निर्माण किया है, जिसे 1960 में विश्व विद्यालय को दान में दे दिया गया। "मैसन डे इन ए" के नाम से विख्यात इस छात्रावास में 104 छात्रों के लिए आवासीय सुविधा है। तथापि, इस का प्रबंध भारत सरकार ने अपने पास रखा है।

## अन्तर्राष्ट्रीय बैठकों/सम्मेलनों में सहभागिता

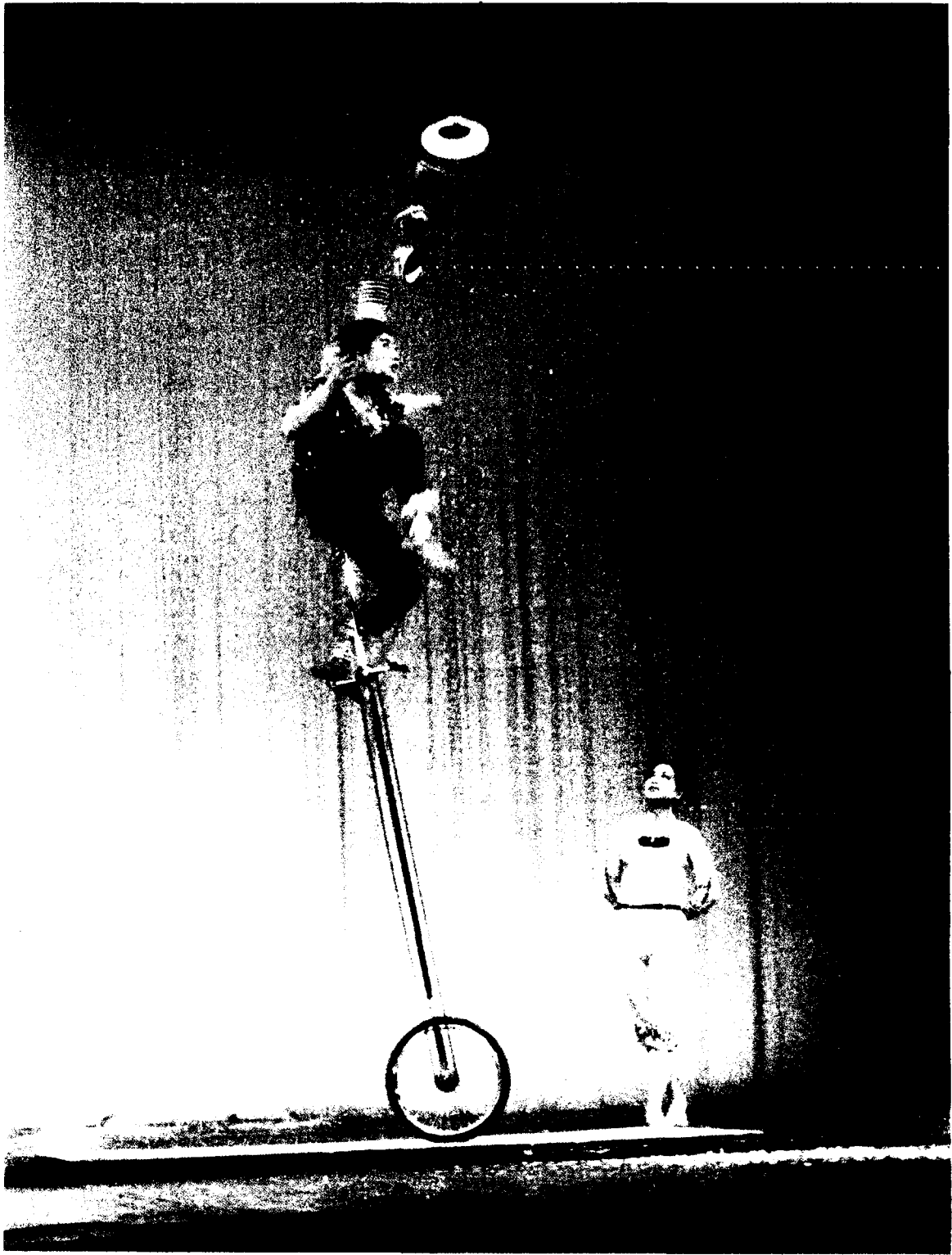
15.09 राष्ट्रीय संस्कृति नीतियों के मूल्यांकन के संबंध में, बैकाल में 15 से 20 जुलाई 1992 तक आयोजित उप-क्षेत्रीय परामर्शदात्री बैठक में भारत सरकार का प्रतिनिधित्व संस्कृति विभाग के संयुक्त सचिव द्वारा किया गया। विभाग ने काठमांडू में 14 से 18 सितम्बर, 1992 तक विश्व सांस्कृतिक विकास दशक की राष्ट्रीय समितियों की उप-क्षेत्रीय बैठक में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए योजना आयोग के सलाहकार (शिक्षा) को भेजा था।

15.10 पेरिस में अक्टूबर-नवम्बर, 93 के दौरान आयोजित यूनेस्को के महा सम्मेलन के 27 वें सत्र में संस्कृति विभाग के एक संयुक्त सचिव द्वारा भाग लिया गया।

## सांची तथा सतधारा स्थित बौद्ध स्मारकों के संरक्षण और परिरक्षण संबंधी परियोजना के लिए यूनेस्को की सहायता :

15.11 एक संविदा के अन्तर्गत, यूनेस्को सांची और सतधारा स्थित बौद्ध स्मारकों के संरक्षण एवं परिरक्षण संबंधी परियोजना के लिए पांच लाख अमरीकी डालर तक की वित्तीय सहायता चार वर्ष (1993-1996) की अवधि के दौरान प्रदान करेगा।





गेद-संतुलन, शैडोंग ऐक्रोबैटिक ट्रूप - भारत मे चीन महोत्सव  
Bowl Balancing, Shandong Acrobatic Troupe - Festival of China in India

## भारत महोत्सव

16.01 वर्ष 1993-94 के दौरान, "रिटर्न स्वीडिश मैनीफेस्टेशन" नामक चल रहे कार्यक्रम के अन्तर्गत दो सेमिनार आयोजित किए गए। ये सेमिनार "कामकाजी माहौल" तथा "बच्चों के खेलने के अधिकार" पर केन्द्रित थे। स्वीडन संस्थान, स्टॉकहोम के सहयोग से गांधी श्रम संस्थान द्वारा अहमदाबाद में और एस०एन०डी०टी० विश्व विद्यालय द्वारा पुणे में क्रमशः अप्रैल और जून, 1993 में विचार-गोष्ठियां आयोजित की गईं।

16.02 चीन में भारत महोत्सव अप्रैल, 1994 के माह में शुरू होगा, जो 6 सप्ताह की अवधि तक चलेगा। महोत्सव में प्रदर्शन कला कार्यक्रम, प्रदर्शनियां, सेमिनार और फिल्मोत्सव शामिल होंगे, जिनके चीन में विभिन्न स्थानों पर आयोजित किए जाने की संभावना है।



प्रकृति पर प्रदर्शनी का एक दृश्य - इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली  
A View of the Exhibition on Prakriti - IGNCA, New Delhi

## इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र :

17.01 इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (इ.गा.रा.कें.) की स्थापना पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति में की गई थी। केन्द्र नवम्बर, 1985 में प्रारम्भ किया गया था और इसका गठन 19 मार्च, 1987 के एक सरकारी संकल्प के तहत एक स्वायत्त-न्यास के रूप में किया गया था। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में पांच मुख्य प्रभाग हैं अर्थात् (1) कलानिधि, (2) कला-कोष, (3) जनपद सम्पदा, (4) कला दर्शन और (5) सूत्रधार।

17.02 इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में कला, मानविकी और सांस्कृतिक विरासत पर कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली और आंकड़ा-बैंक होने के साथ-साथ बहुप्रचार माध्यमों के संग्रहों का सांस्कृतिक सन्दर्भ पुस्तकालय भी है, ताकि वह मानविकी और कलाओं में शोध कार्य के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य कर सके। सन्दर्भ-पुस्तकालय में विश्व-कोषों, प्राथमिक मूल पाठों, दुर्लभ-पुस्तकों और विश्व की विभिन्न भाषाओं में विख्यात भारतीय और विदेशी विद्वानों की व्यक्तिगत संग्रह जैसी महत्वपूर्ण मुद्रित तथा गैर-मुद्रित सन्दर्भ सामग्री शामिल है।

17.03 इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का कला-कोष प्रभाग शोध और प्रकाशन प्रभाग के रूप में कार्य करता है, जिसका उद्देश्य भारतीय विश्व-दृष्टि के संदर्भ के अन्तर्गत कलाओं को समझना है। यह भारतीय कलाओं से सम्बन्धित बुनियादी अवधारणाओं और मूल पाठों की श्रृंखलाओं, कलाओं और शिल्पों से सम्बन्धित बुनियादी तकनीकी शब्दावलियों के शब्द समूहों/शब्द कोषों का प्रकाशन तथा भारतीय कलाओं पर समालोचनात्मक लेखों और भारतीय कलाओं के अंतर-विषयक बहुखण्डीय विश्व-कोषों का पुनः मुद्रण करता है।

17.04 इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का जनपद-सम्पदा प्रभाग निम्नलिखित कार्य करता है : लोक और जनजातीय कलाओं और शिल्पों पर सामग्री और प्रलेखन का कोर-संग्रह तैयार करना; जनजातीय समुदायों की बहुविषयक जीवन शैली का अध्ययन प्रारम्भ करना, ताकि भारतीय सांस्कृतिक सम्पदा का इसकी समग्रता में अध्ययन करने के लिए वैकल्पिक प्रतिरूप तैयार किये जा सकें और पर्यावरणीय, पारिस्थितिकीय, कृषीय, सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्राचलों को एक-दूसरे से जोड़ना।

17.05 इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का कला-दर्शन प्रभाग एकीकृत विषय-वस्तुओं और संकल्पनाओं पर अन्तर-विषयक सेमिनारों, प्रदर्शनियों और प्रदर्शनों के लिए एक मंच प्रदान करता है।

17.06 इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का सूत्र-धार प्रभाग नीति निर्माण, योजना, प्रशासन, समन्वय, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के वित्त के प्रबन्ध और लेखाओं के समुन्धान के लिए उत्तरदायी है।

17.07 आलोच्य वर्ष के दौरान, कला-निधि प्रभाग के सन्दर्भ पुस्तकालय के संग्रह में प्रख्यात लेखकों की 2750 चुनिन्दा कृतियाँ जोड़ी गई। माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश अधिग्रहण कार्यक्रम के अन्तर्गत विदेशी संग्रह में से दुर्लभ भारतीय पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्मों के 117 रोल और इनियोन, मास्को, स्टार्ट्स विद्विद्योथेक पीके (एसबीपीके) बर्लिन एवम् रूस पर वाणिज्यिक माइक्रोफिल्म प्रकाशकों से 13000 माइक्रोफिशों अधिग्रहीत की गई। देश के विभिन्न पाण्डुलिपि-पुस्तकालयों/केन्द्रों की अप्रकाशित पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्में तैयार करने की अपनी महत्वपूर्ण योजना के अन्तर्गत सन्दर्भ पुस्तकालय ने 1601 रोल (100,000 फोलियों से अधिक) तैयार किये। अपने प्रमुख स्लाइड अधिग्रहण कार्यक्रम के अन्तर्गत संदर्भ पुस्तकालय ने ब्रिटिश पुस्तकालय, लन्दन आदि से 4327 स्लाइडें और 36 श्रव्य-कैसटें भी अधिग्रहीत कीं।

17.08 आलोच्य वर्ष के दौरान, कला-कोष प्रभाग ने मात्रलक्षणम्, श्री हस्तमुक्तावली, बृहदेशी, दतिलाम आदि जैसी समालोचनात्मक ढंग से सम्पादित 11 पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन किया और कलामूल शास्त्र नामक श्रृंखला के अधीन निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकें मुद्रणाधीन हैं-कण्व, सतपथ ब्राह्मण, कालिका-पुराण, मायामाता, नर्तना निर्णय, बृहदेशी खण्ड II, शिल्प रत्न कोष, स्वयंभू-सूत्र संग्रह, क्रियाक्रमद्योतिका और रिसालेराग दर्पण। द्वितीय सामग्री से संबंधित कृतियों के पुनर्मुद्रण/अनुवाद कार्यक्रम के अन्तर्गत, पांच कृतियों (प्रारंभिक भारतीय वास्तुकला, इलोरा-संकल्पना एवम् शैली, कुचिपुड़ी, धर्म और पर्यावरणीय संकट और आध्यात्मिक प्राधिकार और अनुष्ठानिक शक्ति के प्रबंधन से सम्बन्धित निबन्ध) का मुद्रण और प्रकाशन किया जा चुका है। भारत के मुद्राशास्त्र कला कार्यक्रम के अन्तर्गत, 90,000 सिक्कों का प्रलेखन कार्य पूरा किया जा चुका है, जिनमें से 1800 सिक्कों को कला-नमूनों के रूप में चुना गया है।

17.09 आलोच्य वर्ष के दौरान जनपद-सम्पदा प्रभाग (लोक परम्परा के अन्तर्गत) ने निम्नलिखित मार्गदर्शी परियोजनाओं से सम्बन्धित रिपोर्टों को पूरा कर लिया है:— उतर-कन्नड़ के पवित्र उपवन और पवित्र वृक्ष, मनुष्य, जानवर और प्रकृति के बीच सहजीवी सम्बन्ध, निर्वाह और परिवर्तन की गुजर विधि; गढ़वाल का धार्मिक लोक-थियेटर और पंच तत्वों पर विश्वकर्मा शिल्पियों के विचार। क्षेत्र-सम्पदा की व्रजनाथद्वारा परियोजना के अन्तर्गत "सांख्यिकालीन मंजरी: वृन्दावन में सांझी कला की मन्दिर परम्परा" नामक एक विनिबन्ध को अन्तिम रूप दिया गया है। चोल मन्दिरों के वास्तुशिल्पीय आरेखणों से सम्बन्धित विनिबन्ध पूरा कर लिया गया है।

17.10 जनपद सम्पदा प्रभाग के नृजातीय अनुभाग ने श्रीमती सत्तोकबा दुदहत द्वारा चित्रित महाभारत के प्रसंगों से संबंधित 1200 मीटर कपड़े के चौरक रंगचित्रों और गांधी जी के जीवन से सम्बन्धित 25 मीटर चौरक रंग चित्र का अधिग्रहण किया। "चित्रावली" नामक इन रंग चित्रों को अप्रैल, 1993 में बाल-भवन सोसायटी के परिसर में प्रदर्शित किया गया। रबारी महिलाओं के कशीदाकारी कार्यों और मोती की जड़ाई की वस्तुओं का अधिग्रहण किया गया और उन्हें "दैनिक जीवन और जीवन शैली में महिलाओं की सृजनात्मकता" नामक योजना के अन्तर्गत प्रलेखित किया गया।

17.11 प्रागैतिहासिक और आदिवासी कला संबंधी आदि-दृश्य कार्यक्रम के अंतर्गत "भारत की शैल कला में हरिण" नामक एक विनिबन्ध तैयार किया गया। ध्वनि के रूप पर आधारित, वाद्ययंत्रों, समुदाय, भौगोलिक प्रदेश आदि से संबंधित व्यौरों को ध्यान में रखते हुए लोक वाद्य यंत्रों के लिए आदि-श्रव्य आंकड़ा-आधार का सृजन किया गया।

17.12 कठपुतली कला कार्यक्रम के अंतर्गत, प्रसिद्ध कठपुतली प्रदर्शक दादी पदमसी और उनके इशारा समूह के कठपुतली कला-प्रदर्शनों का आयोजन गांधी स्मृति और गांधी दर्शन में और कुछ बाल विद्यालयों में किया गया।

17.13 सांस्कृतिक तादात्म्य और विकास के अन्तरापृष्ठ से संबंधित एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार यूनेस्को के तत्वावधान में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा अप्रैल, 1993 में आयोजित किया गया। चालू वित्त वर्ष के दौरान आयोजित किए जाने वाले "शैल-कला पर अन्तर्राष्ट्रीय विश्व विशेषज्ञ सम्मेलन" के लिए तैयारियां चल रही हैं।

17.14 इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के मनुष्य, पर्यावरण और कलाओं के फोकस कार्यक्रम के एक अंग के रूप में "मनुष्य-प्रकृति-समग्र दृष्टि" पर बहुविषयक सेमिनारों की श्रृंखला आयोजित की गई। कला-दर्शन प्रभाग ने "प्रकृति-तत्वों के साथ मनुष्य सामंजस्य में" नामक एक प्रदर्शनी आयोजित की। छाया-चित्र प्रदर्शनी की सतत् श्रृंखला में "राजा दीन दयाल की धरोहर-छायाचित्रों" नामक एक प्रदर्शनी अक्टूबर 93 में प्रस्तुत की गई। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा प्रारंभ किए गए स्मारक व्याख्यानो के क्रम में प्रख्यात विद्वानों, स्व आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और स्वर्गीय प्रो. एनके बोस पर दो व्याख्यान आयोजित किए गए।

17.15 "सूचना 2000+" नामक परियोजना के अंतर्गत एक कार्यक्रम के रूप में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, भारतीय अमरीकी शिक्षा एवम् संस्कृति उप-आयोग द्वारा संयुक्त रूप से "दिमाग का भविष्य, भविष्य का दिमाग" नामक एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

17.16 सरकार इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कोर्पस निधि में 25 करोड़ रुपये की और बढ़ाने करने के लिए सहमत हुई है ताकि केन्द्र इस पर आने वाले व्यय से अपने गेजमर्ग के व्यय को वहन कर सके।

## राष्ट्रीय संस्कृति नीति

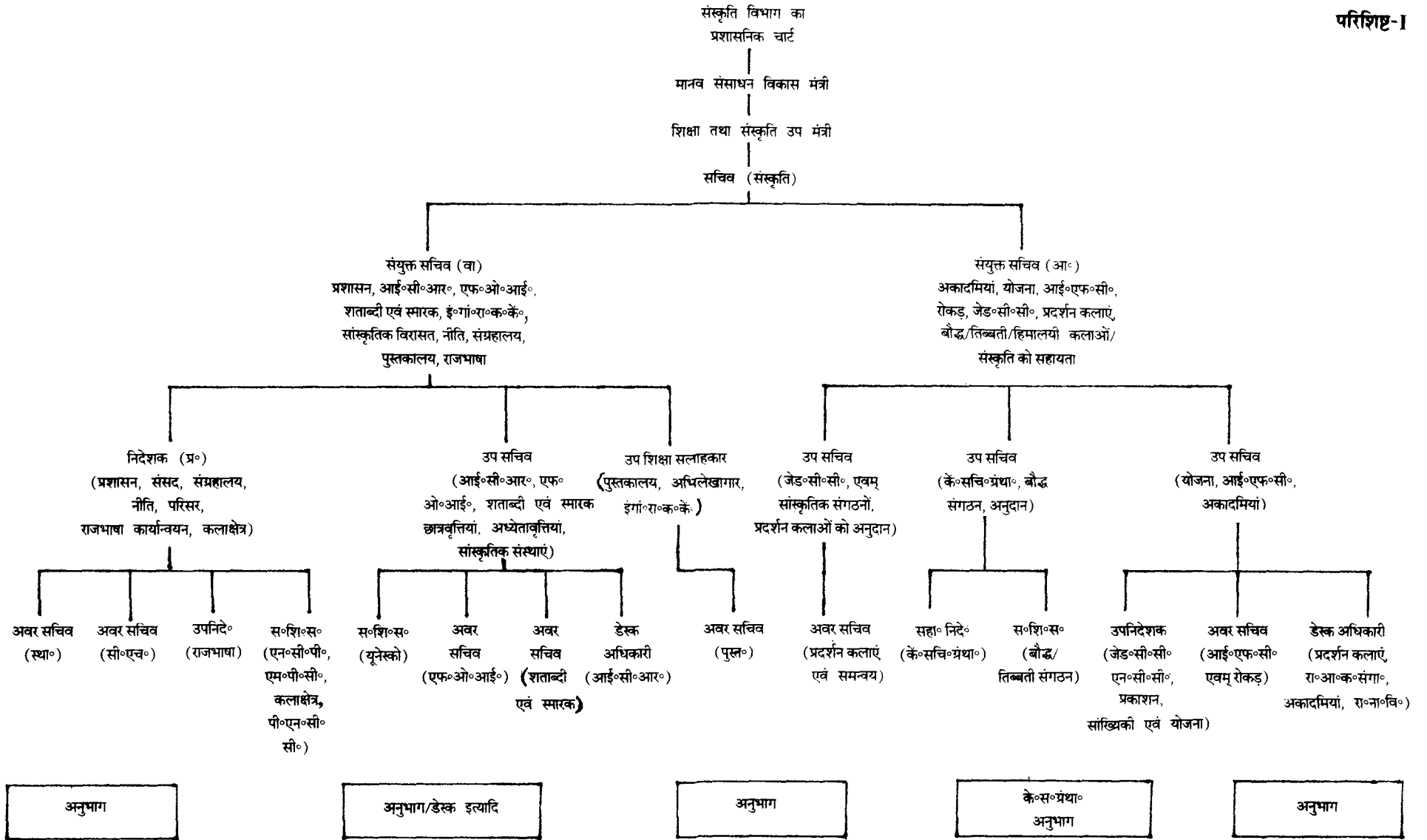
18.01 राष्ट्रीय संस्कृति नीति का प्रारूप तैयार करने के लिए संस्कृति विभाग पिछले कुछ समय से कला व संस्कृति के क्षेत्र के विशेषज्ञों, समालोचकों, प्रशासकों आदि के विचार जानने के कार्य में लगा हुआ है। इस दिशा में प्रथम कार्रवाई के रूप में, विभाग ने देश के विभिन्न भागों में सितम्बर, 1990 में 10 क्षेत्रीय सेमिनार आयोजित किए, जिनमें कला व संस्कृति, जन-प्रचार माध्यमों आदि के क्षेत्र के लगभग 460 सुविख्यात व्यक्तियों ने भाग लिया। इन सेमिनारों में की गई सिफारिशों का एक संक्षिप्त टिप्पणी के रूप में संकलन किया गया, जिसे मई, 1992 में नई दिल्ली में आयोजित राज्यों के संस्कृति मंत्रियों व संस्कृति सचिवों की बैठक में प्रस्तुत किया गया।

18.02 राज्यों के संस्कृति मंत्रियों व सचिवों की बैठक में की गई सिफारिशों के आधार पर राष्ट्रीय संस्कृति नीति पर एक प्रारूप तैयार किया गया और उसे संगीत, नृत्य, नाटक, जन-प्रचार माध्यम, फिल्म, साहित्य, शिक्षा, पुरातत्व, मानव-विज्ञान और पुस्तकालय आदि क्षेत्रों के बहुत से सुविख्यात व्यक्तियों में परिचालित किया गया। इस प्रारूप पर अगस्त, 1992 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय से संबद्ध संसदीय परामर्शदात्री समिति की दो बैठकों में भी चर्चा की गई। प्रारूप की एक-एक प्रति सभी संसद सदस्यों को उपलब्ध करायी गई थी।

18.03 नवम्बर, 1992 के दौरान नई दिल्ली में प्रारूप पर चर्चा के लिए एक राष्ट्रीय परिसंवाद आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न व्यक्तियों से प्राप्त सिफारिशों/सुझावों को देते हुए एक सार-संग्रह परिचालित किया गया। जन-प्रचार माध्यम, दृश्य-कला, छायांकन, वास्तुकला, पुरातत्व, मानव-विज्ञान, साहित्य, पुस्तकालय, संग्रहालय, शिक्षा, संगीत, नृत्य व थिएटर आदि के क्षेत्र के लगभग 100 सुविख्यात व्यक्तियों ने इसमें भाग लिया और अपने सुझाव दिए।

18.04 प्रारूप को सभी संसद सदस्यों के बीच परिचालित कर दिया गया है और संसद के दोनों सभा-पटलों पर रख दिया गया है। प्रारूप पर 1993 के शरद-कालीन संसद सत्र के दौरान विचार किये जाने की संभावना थी। संसद सदस्यों की सिफारिशों तथा प्राप्त हुए विभिन्न सुझावों के आधार पर प्रारूप नीति तैयार करके मंत्रिमंडल के समक्ष विचारार्थ प्रस्तुत की जायेगी।





**संक्षेपण :** आई०सी०आर०—अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंध; एफ०ओ०आई०—भारत महोत्सव; आई०एफ०सी०—आंतरिक वित्त सैल; जेड०सी०सी०—क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र; सी० एण्ड एम०—शताब्दी एवं स्मारक; इ०गां०रा०क०के०—इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र; एन०सी०पी०—राष्ट्रीय संस्कृति नीति; एम०पी०सी०—बहुउद्देश्यीय सांस्कृतिक परिसर; एन०सी०सी०—राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिसर, दिल्ली; के०सचि०ग्रंथा०—केंद्रीय सचिवालय ग्रंथागार; रा०आ०क०सं०—राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय; रा०ना०वि०—राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय; स०शि०सं०—सहायक शिक्षा सलाहकार;





## विभिन्न अध्यायों में विचारित मदों के लिए वित्तीय आबंटन

(रुपये लाखों में)

क्रम सं०	मद	योजनागत योजनेतर	बजट अनुमान 1993-94	संशोधित अनुमान 1993-94	बजट अनुमान 1994-95
1.	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण	योजनागत योजनेतर	1200.00 3060.00	1200.00 3209.00	1300.00 3300.00
2.	राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली	योजनागत योजनेतर	200.00 259.00	200.00 353.00	190.00 360.00
3.	भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता	योजनागत योजनेतर	200.00 85.50	200.00 85.50	190.00 94.05
4.	सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद	योजनागत योजनेतर	200.00 32.75	200.00 32.75	250.00 36.19
5.	नेहरू केन्द्र सहित संग्रहालयों के पुनर्गठन और विकास के लिए वित्तीय सहायता	योजनागत योजनेतर	15.00 —	15.00 —	15.00 —
6.	विक्टोरिया मेमोरियल हाल, कलकत्ता	योजनागत योजनेतर	100.00 43.25	100.00 43.25	100.00 45.00
7.	रत्न और जेवरात के संग्रहालय की स्थापना	योजनागत योजनेतर	— 1.00	— 1.00	— 1.00
8.	राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली	योजनागत योजनेतर	140.00 38.10	140.00 38.10	150.00 42.00
9.	नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली	योजनागत योजनेतर	100.00 162.20	100.00 162.20	75.00 185.00
10.	इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद	योजनागत योजनेतर	40.00 30.50	40.00 30.50	45.00 35.00
11.	राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, कलकत्ता	योजनागत योजनेतर	1300.00 419.00	1300.00 469.00	1400.00 480.00
12.	राष्ट्रीय सांस्कृतिक संरक्षण अनुसंधान प्रयोगशाला, लखनऊ	योजनागत योजनेतर	90.00 33.55	90.00 33.55	90.00 37.00
13.	कला कृतियों की प्रदर्शनीयों का अन्तर संग्रहालय विनिमय	योजनागत योजनेतर	6.00 —	6.00 —	6.00 —
14.	भारतीय मानव शास्त्रीय सर्वेक्षण, कलकत्ता	योजनागत योजनेतर	150.00 286.00	150.00 286.00	140.00 300.00
15.	राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल	योजनागत योजनेतर	250.00 54.00	250.00 54.00	300.00 54.00
16.	भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली	योजनागत योजनेतर	153.00 203.00	153.00 243.00	180.00 250.00
17.	खुदाबख्श प्राच्य सार्वजनिक पुस्तकालय, पटना	योजनागत योजनेतर	38.00 18.50	38.00 18.50	40.00 29.21
18.	टी०एम०एस०एस०एम० पुस्तकालय, तंजावुर	योजनागत योजनेतर	30.00 —	30.00 —	30.00 —
19.	रामपुर रजा पुस्तकालय, रामपुर	योजनागत योजनेतर	15.00 5.50	15.00 5.50	20.00 19.75
20.	एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता	योजनागत योजनेतर	341.00 92.70	341.00 92.70	200.00 95.00
21.	केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह	योजनागत योजनेतर	50.00 46.50	50.00 46.50	50.00 55.00
22.	केन्द्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, वाराणसी	योजनागत योजनेतर	100.00 89.60	100.00 89.60	100.00 90.00
23.	तिब्बती कृति और अभिलेख पुस्तकालय, धर्मशाला	योजनागत योजनेतर	— 8.40	— 8.40	— 12.00

क्रम सं०	मद	योजनागत योजनेतर	बजट अनुमान 1993-94	संशोधित अनुमान 1993-94	बजट अनुमान 1994-95
24.	सिक्किम तिब्बती शास्त्र अनुसंधान संस्थान, गंगटोक	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	17.00	17.00	17.00
25.	बौद्ध और तिब्बती संगठनों के विकास के लिए वित्तीय सहायता	योजनागत	45.00	145.00	45.00
		योजनेतर	—	—	—
26.	राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता	योजनागत	100.00	100.00	120.00
		योजनेतर	304.00	304.00	310.00
27.	केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कलकत्ता	योजनागत	14.00	14.00	15.00
		योजनेतर	28.30	28.30	32.00
28.	केन्द्रीय पुस्तकालय, बम्बई	योजनागत	5.00	5.00	5.00
		योजनेतर	8.00	8.00	8.00
29.	केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय, नई दिल्ली	योजनागत	30.00	30.00	30.00
		योजनेतर	17.00	17.00	21.00
30.	दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, दिल्ली	योजनागत	60.00	60.00	80.00
		योजनेतर	156.55	156.55	172.20
31.	कत्रेमरा सार्वजनिक पुस्तकालय, मद्रास	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	9.00	9.00	14.00
32.	राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान, कलकत्ता	योजनागत	250.00	250.00	275.00
		योजनेतर	46.35	46.35	53.50
33.	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली	योजनागत	150.00	150.00	200.00
		योजनेतर	82.00	82.00	89.00
34.	संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली	योजनागत	270.00	270.00	290.00
		योजनेतर	127.00	127.00	134.00
35.	ललित कला अकादेमी, नई दिल्ली	योजनागत	135.00	135.00	150.00
		योजनेतर	89.00	150.00	90.00
36.	राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली	योजनागत	150.00	150.00	160.00
		योजनेतर	116.65	116.65	125.00
37.	सांस्कृतिक स्रोत और प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली	योजनागत	200.00	200.00	260.00
		योजनेतर	81.35	81.35	82.00
38.	स्वैच्छिक सांस्कृतिक संगठनों को भवन निर्माण अनुदान	योजनागत	100.00	100.00	120.00
		योजनेतर	—	—	—
39.	नृत्य, नाटक और थियेटर मण्डलियों को वित्तीय सहायता	योजनागत	180.00	180.00	200.00
		योजनेतर	35.00	35.00	40.00
40.	कला प्रदर्शनियां (भारत महोत्सव)	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	100.00	300.00	100.00
41.	शंकर अंतर्राष्ट्रीय बाल प्रतियोगिता	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	1.75	1.75	1.75
42.	सांस्कृतिक संगठनों का विकास	योजनागत	18.00	18.00	20.00
		योजनेतर	—	—	—
43.	भारत के सांस्कृतिक संगठन	योजनागत	55.00	55.00	55.00
		योजनेतर	35.00	35.00	39.57
44.	साहित्यिक गतिविधियों से सम्बद्ध व्यक्ति और संस्थान	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	8.00	8.00	10.00
45.	हिमालयी कलाओं की प्रोन्नति के लिए वित्तीय सहायता	योजनागत	10.00	10.00	15.00
		योजनेतर	—	—	—
46.	जनजातीय लोक-कलाओं की प्रोन्नति के लिए वित्तीय सहायता	योजनागत	30.00	30.00	40.00
		योजनेतर	—	—	—
47.	संस्कृति को शिक्षा, जनसंपर्क आदि के साथ जोड़ने के लिए परियोजना	योजनागत	40.00	40.00	—
		योजनेतर	—	—	—
48.	क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र	योजनागत	175.00	175.00	200.00
		योजनेतर	—	—	—

क्रम सं०	मद	योजनागत योजनेतर	बजट अनुमान 1993-94	संशोधित अनुमान 1993-94	बजट अनुमान 1994-95
49.	विभिन्न क्षेत्रों में युवा कार्यकर्ताओं को छात्रवृत्तियाँ	योजनागत योजनेतर	— 13.50	— 13.50	— 18.00
50.	मिथ्यादत्त, सांहीत्यिक तथा प्लास्टिक कलाओं के क्षेत्र में उत्कृष्ट कलाकारों को छात्रवृत्तियाँ	योजनागत योजनेतर	85.00 13.50	85.00 43.50	100.00 50.50
51.	साहित्य, कलाओं और जीवन के ऐसे ही अन्य क्षेत्रों में ऐसे उत्कृष्ट व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान करना, जो अभावग्रस्त हों	योजनागत योजनेतर	35.00 34.00	35.00 49.00	45.00 52.00
52.	इमेरिटस शिक्षावृत्तियाँ	योजनागत योजनेतर	— 7.50	— 7.50	— 7.50
53.	गांधी स्मृति और दर्शन स्मृति	योजनागत योजनेतर	100.00 70.00	130.00 70.00	130.00 70.00
54.	नव नालंदा महाविहार और हृवेनसांग स्मारक का संभक्ति विकास	योजनागत योजनेतर	10.00 —	10.00 —	10.00 —
55.	राष्ट्रीय स्मारकों का विकास और अनुरक्षण	योजनागत योजनेतर	— 30.00	— 30.00	— 30.00
56.	शताब्दियाँ/ज्यूर्यान्तियाँ	योजनागत योजनेतर	— 285.00	— 285.00	— 135.00
57.	अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक गतिविधियाँ	योजनागत योजनेतर	— 13.00	— 13.00	— 20.00
58.	पुस्तकों और कलाकृतियों का प्रस्तुतीकरण	योजनागत योजनेतर	— 10.00	— 10.00	— 10.00
59.	अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और विश्वदाय निधि	योजनागत योजनेतर	— 3.50	— 3.50	— 4.50
60.	शिष्टमंडल	योजनागत योजनेतर	— 7.00	— 7.00	— 7.00
61.	यात्रा सहायता, यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता और अन्य मदें	योजनागत योजनेतर	— 4.00	— 4.00	12.00 10.00
62.	बहु-उद्देशीय सांस्कृतिक परिसरों की स्थापना	योजनागत योजनेतर	200.00 —	200.00 —	200.00 —
63.	इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र	योजनागत योजनेतर	1000.00 2.00	1000.00 2.00	2000.00 2.00
64.	संस्कृति विभाग सचिवालय	योजनागत योजनेतर	48.00 264.00	48.00 264.00	42.00 279.00
65.	प्रिंस आर्फ वेल्स संग्रहालय, बम्बई की स्थापना	योजनागत योजनेतर	50.00 —	50.00 —	10.00 —
66.	कलाक्षेत्र, मद्रास	योजनागत योजनेतर	50.00 —	50.00 —	50.00 —
67.	राष्ट्रीय संस्कृति नीति का कार्यान्वयन	योजनागत योजनेतर	50.00 —	50.00 —	— —
68.	श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र, गुवाहाटी	योजनागत योजनेतर	— —	— —	200 —



# CONTENTS

1. Introductory	1
2. An Overview 1993-94	9
3. Organisation	17
4. Archaeology	21
5. Museums	31
6. Institutions of Anthropology and Ethnology	43
7. Archives and Records	47
8. Institutions of Buddhist and Tibetan Studies	55
9. Libraries	59
10. Academies and National School of Drama	69
11. <b>Promotion and Dissemination of Culture</b>	<b>81</b>
12. Schemes for Fellowships, Scholarships and Financial Assistance	89
13. Memorials	91
14. Centenaries and Anniversaries	93
15. International Cultural Relations	95
16. Festival of India	97
17. Indira Gandhi National Centre for the Arts	99
18. National Policy on Culture	101
Appendix-I - Organisational Chart	103
Appendix-II - Financial Allocations of Items discussed in various chapters.	105

## CHAPTER 1

# INTRODUCTORY

## GENERAL

1.01 Ministry of Human Resource Development was set up in 1985 with the objective of integrating efforts towards the development of human potential in the areas of education, women and child development, arts, culture, youth affairs and sports. During 1993-94 the Ministry continued its endeavour in fulfilling this objective. This Report covers the activities of the four departments which constitute the Ministry and is presented in four parts :—

Part-I	Department of Education
Part-II	Department of Culture
Part-III	Department of Youth Affairs and Sports .
PartP-IV	Department of Women and Child Development.

## DEPARTMENT OF EDUCATION

1.02 The most historic event of the year 1993-94 was hosting of an EDUCATION FOR ALL (EFA) Summit of Nine High Population Countries in New Delhi on 16th of December, 1993. These nine countries are Bangladesh, Brazil, China, Egypt, India, Indonesia, Mexico, Nigeria and Pakistan. They account for more than half the world's population and 70% the world's illiterates. The Heads of three UN agencies viz. UNESCO, UNICEF, and UNFPA also participated in the Summit. The Nine High Population Countries adopted the Delhi Declaration and Framework of Action.

1.03 The Declaration calls for ensuring a place for every child in a school or an appropriate education programme according to his or her capabilities, consolidating efforts towards basic education for children, youth and adults from public and private sources, improving and extending literacy and adult education programmes within the context of an integrated strategy of basic education for all people, for eliminating disparities of access to basic education, for improving the quality and relevance of basic education and in all actions to accord to human development the highest priority at national and other levels ensuring that growing share of national and community resources is dedicated to basic education and improving the management of existing resources for education.

1.04 The NPE 1986 and the POA 1992 had in fact in essence anticipated the provisions of the Delhi Declaration and Framework of Action. The NPE resolved to ensure that free and compulsory education of satisfactory quality is provided to all children upto 14 years of age before the 21st Century. Action for intensification of the NPE/POA implementation programme is already on. Some of the specific steps taken in pursuance of the Delhi Declaration include developing a collaborating mechanism for distance education among the nine countries, periodic consultations among the nine countries with a view to sharing experiences, introduction of decentralised management of structures in education with a view to giving greater authority to communities and parents and making the school more accountable to the community for its performance, development of performance norms and code of conduct for teachers and development of district specific education programmes.

1.05 The Prime Minister convened a Special Conference of Chief Ministers of all States and Union Territories on 15 February, 1994 to consider the follow up of the Education For All Summit, the Reports of the NDC Committee on Literacy and CABE (Central Advisory Board of Education) Committee on Decentralised Management of Education. The Chief Ministers decided to supplement the efforts of the Central Government in the mobilization of resources for education and to accord higher priority to primary and adult education.

1.06 The NPE 1986, as updated in 1992, provides for several key strategies. These include (i) shifting of focus from State to the District as the unit of planning for implementation of elementary education and adult literacy; (ii) increasing reliance on social mobilisation to promote basic education and (iii) integration of adult literacy and non-formal education programmes with vital themes such as small family norms, health care, environment and nutrition. In the context of universalisation of elementary education the strategies adopted for 8th Plan are :

- a disaggregated approach, with the focus on preparation of district-specific, population-specific plans for UEE within the broad strategy frame of micro-planning through people's participation; and
- introduction of Minimum Levels of Learning (MLLs) in schools to improve learner's achievement. Micro-planning will provide the frame-work of universal access and universal participation while MLLs would be the strategy frame for universal achievement.

1.07 The focus shall be two fold : firstly, achieving universal access through opening of new schools in unserved habitations, expanding the non-formal learning centre network to cater to those who cannot attend formal schools. Secondly, universal retention and achievement by improving the school environment through better infrastructure and activity-based, child-centred, competency-oriented teaching learning process.

1.08 The existing institutional framework is to be made fully functional and work at higher levels of efficiency. Given the centrality of teacher training, the focus would be on operationalizing DIETs, CTEs and IASEs as quickly as possible and ensure they are manned by professionally sound and highly motivated personnel. The scheme of Operation Blackboard would be implemented in right earnest. Location of NFE centres, monitoring and supervision of their functioning would be given attention so that the disadvantaged groups derive maximum advantage from the scheme.

1.09 A two pronged approach of Universalisation of Elementary Education and Universal Adult Literacy is being adopted for achieving total literacy. District specific programme have been evolved both in Primary Education and in Adult Education. A major new initiative to achieve UEE is the District Primary Education Programme (DPEP) launched in 1993-94 which seeks to operationalise the strategy of district level plan. The programme takes a holistic view of Primary Education development and lays great emphasis on participatory planning and management. It has a marked gender focus and seeks to enhance school effectiveness through inputs in teacher's training and decentralised management. The programme emphasises capacity building at all levels, be it national state or local, and seeks to evolve strategies which are replicable and sustainable. The programme has already been launched in 19 districts in Madhya Pradesh. The attempt would be to start the programme in atleast 110 districts during the Eighth Plan.



1.10 The Total Literacy Campaign has now emerged as the most favoured strategy and also as an effective and viable model for eradication of adult illiteracy. The Total Literacy Campaign has made increasing strides by taking into its fold areas which are educationally very backward. The focus of these campaigns is now being increasingly concentrated in the northern states where bulk of the illiterate population resides.

1.11 To assess the present position of school education facilities in the country, the Sixth All India Educational Survey is being conducted through NCERT, NIC and State level agencies during this financial year with 30 September, 1993 as the reference date. The National Advisory Committee under the chairmanship of Prof. Yashpal submitted its Report on 15 July, 1993 to suggest ways and means to reduce the academic burden on school students.

1.12 In pursuance of the 73rd and 74th Constitutional Amendments regarding Panchayati Raj and Nagar Palika institutions the Department took immediate initiatives for preparation of guidelines for states for introduction of decentralised management structures in education. It is expected that the introduction of decentralised management structures would enhance community participation in education. This will definitely result in higher participation in education by all sections of society and improved quality of education.

1.13 Vocationalisation of Secondary Education has been a major thrust area in school education. The scheme of Vocationalisation of Secondary Education at plus Two level was started in February, 1988 with the objective of providing diversification of educational opportunities so as to enhance individual employability, reduce mismatch between demand and supply of skilled manpower and providing an alternative for those pursuing higher education without particular interest or purpose. It is hoped that by the end of 1995 it will be possible to achieve NPE target of 10% diversion. In addition a scheme of pre-vocational education at the lower secondary stage has been started from 1993-94 to prepare students in class IX and X for participation in work as a desired dimension of academic education. It is proposed to cover 1000 schools during the VIIIth Plan.

1.14 Women's education has always been a priority area and NPE envisages the entire educational system to work for women's education and empowerment. It has been emphasized that gender concerns must be built into all educational processes. Emphasis has been laid on enrolment and retention of the girl child in formal and non-formal schooling, recruitment of rural women as teachers and removal of gender bias in the curriculum: Special provisions have been incorporated in various schemes; e.g. the revamped Blackboard Scheme provides that atleast 50% of the teachers recruited should be women; under NFE programme 90% assistance is given for centres exclusively for girls. A new scheme for strengthening of boarding and hostel facilities for girl students of secondary and higher secondary schools was launched during the current year with the objective of boosting retention of girls. Under the scheme assistance is provided to existing girl's hostels or boarding houses run by voluntary agencies for food, furniture, utensils, recreational aids, etc. The Mahila Samakhya Project launched in April 1989, which presupposes that Education can be a decisive intervention toward women's equality, has been quite successful. This strategy is being incorporated in some other basic education projects. There has been phenomenal expansion of educational opportunities for women in the field of higher education—both general and technical.

1.15 With a view to accentuating the educational development of minorities, an Area Intensive Programme for educationally backward minorities has been launched. To begin with, the programme would focus on the districts which have a concentration of educationally backward minorities.

## **DEPARTMENT OF CULTURE**

1.16 The preservation, promotion and enrichment of the Cultural traditions of the country is the vital concern of the Department of Culture. The Department has sought to maintain the vibrancy of these traditions through a network of institutions and initiating new schemes encompassing a wide range of

activities including excavation, conservation, protection of monuments of historic sites, developing libraries, museums, promoting literary, plastic and performing arts, facilitating and awarding talents in the cultural field. These are only a few of the various activities undertaken by the Department of culture to make people aware of the rich cultural heritage of the country. The Department in its efforts to bring the people of India, enter into Cultural Exchange Programme with various countries and organises cultural festival of other countries. In the following paragraphs some of the important activities and achievements of Department of Culture during 1993-94 have been presented.

1.17 During the year 1993-94, the Archeological Survey of India (ASI) took up around 500 monuments for conservation and preservation in different parts of the country, out of which about 250 works were specially identified for comprehensive conservation works. The ASI teams continued its works on preserving and conserving the monuments of Angkorvat, Combodia, which has been commended by internationally recognised archaeologists and conservationists. A large number of sites and remains ranging from pre-historic to the medieval times has been discovered by the ASI in different parts of India. Exploration work in a number of sites including Parbati and Utangan river valley in District Dholpur and prehistoric sites in North Eastern States were carried out. At Lalkot in Delhi the ASI has unearthed the first fortified capital of Delhi, constructed in the middle of the 11th Century A.D. by Tomar ruler Anang Pal-II. The clearance operations of Gingee Fort in South Arcot district Tamil Nadu has revealed the palace of 16th century, a subterranean passage and a throne platform. An elliptical structure with flight of steps has been found at Mamallapuram, Tamil Nadu which has a one line inscription indicating that it was built by famous Pallava King Narasimha Verman III (695-722 AD) popularly called as Rajasimha.

1.18 The Indian Museum, Calcutta during the year, organised an exhibition of Buddhist art objects depicting the life and message of Lord Buddha in the Fine Arts Museum of Mongolia. It organised another exhibition "On the way to Buddha" in Singapore with about sixty outstanding and representative art objects showing various aspects of Buddha's life. The National Museum, New Delhi organised a special exhibition on Raja Ravi Verma's paintings, drawings and Oleographs. A new gallery completely renovated and redesigned on Tribal life style of North East was also inaugurated. Under INDO-US Sub-commission on Education and Culture the National Museum, sent 16 stone sculptures to Asia Society Gallery, New York for installing an exhibition entitled "Gods, Guardian and Lovers : Temple sculptures from North India". The National Council of Science Museums, Calcutta got the coveted "Dibner Award" for the year 1993 from the Society for the History of Technology, US for its exhibit "The Information Revolution" installed in National Science Centre at Delhi.

1.19 The Libraries, under the Department of Culture continued its activities of procurement of books/journals & providing Readers services besides their literary activities. The Central Secretariat Library under its Mahabharath data base project converted around 30,000 slokas into machine readable form.

1.20 The Anthropological Survey of India has initiated steps for publication of its Report "People of India". The entire gamut of information that has been generated under this project has resulted in the production of 43 volumes of which 11 are National and 32 are State series. During the year, the Indira Gandhi Rashtriya Manav Sangrahalaya organised a symposium on the "People perspective in visual Anthropology". It plans to organise an international meet "Eternal Voyage" on Tribal and Analogous peoples. Academic meet on "Cultural Heritage of Tribal People" was organised at Ooty, Shillong and many other places. The Sangrahalaya also organised a programme on living Indian traditions of pottery and terra-cotta comprising of a potters meet, a workshop and symposium, in which over 40 potters from different parts of India participated and demonstrated their traditional techniques.

1.21 The Sahitya Akademi, the national academy of literature has published 140 titles and organised 29 Book Exhibitions during the year. Besides, 27 literary forum meetings and "5 meet the Author" meetings have also been organised by the Akademi. The Sangeet Akademi, the National Academy for music, dance and drama organised a Kathakali Mahotsavam in Delhi, which included 10 plays by representative Kathakali playwrights providing a comprehensive picture of Kathakali tradition as performed today. The Academy besides organising 4 Zonal theatres is planning to organise a Yuva Natya Samorah, the national theatre Festival for young Directors, featuring selected plays staged in

the four Zonal festivals during the year 1993-94. The Lalit Kala Akademi, the National Academy for Art, participated in the 6th Asian Art Biennale held at Dhaka, Bangladesh. In collaboration with the Embassy of France it organised an Exhibition of paintings, sculptures and prints in New Delhi. The Repertory company of National School of Drama performed Muavze in Lucknow. The company also organised Summer Drama Festival.

1.22 During the year, it was decided to set up a Cultural complex at Guwahati, named "Srimanta Sankaradeva Kalakshetra" with central assistance of Rs. 10.00 crore over a period of time. It is hoped that this will meet the long standing demand of the people of Assam in preserving their cultural heritage—"Assam Accord" signed few years back.

1.23 In order to meet the long standing demand of the Cultural Community, the Department proposes to set up a Multi Arts National Cultural Complex, in Delhi which will serve as nerve centre of the cultural and creative activities of the city. The complex, which has been named as PARISAR will be equipped with all the facilities, matching international standards wherein facilities for holding seminars, exhibitions, theatre, performing arts including ballet etc. will be available at one place.

## **DEPARTMENT OF YOUTH AFFAIRS & SPORTS**

### **YOUTH PROGRAMMES**

1.24 The Department of Youth Affairs and Sports is implementing a number of schemes of Youth Development. The Schemes are designed keeping in view the fact that youth is the most vital human resource of the Nation on whom the present and future of the country depend. Many new initiatives taken during the year have given a new thrust to the Youth programmes for channelising the abundant energy of the Youth into constructive activities. The important ones are enumerated below.

1.25 The scheme for Promotion of Adventure has been redesigned to include a large number of adventure activities on land, sea and air. On the one hand, certain entitlements under the scheme have been increased. On the other, the procedure for taking assistance from the Department has been simplified.

1.26 For giving recognition to adventure activities, three Adventure Awards at par with the Arjuna Awards have been introduced from this year.

1.27 It has been decided to establish Rajiv Gandhi National Institute of Youth Development at Sriperumbudur as an apex institution and resource agency for providing training, research, documentation and extension services on various subjects related to youth. The Prime Minister of India laid the foundation stone for the campus of the institute at Sriperumbudur on 1 September, 1993.

1.28 An Action Plan has been formulated for the Nehru Yuva Kendras emphasising decentralisation at the programme implementation level. Such decentralisation will help devising new programmes keeping in mind the local conditions and needs.

1.29 The Silver Jubilee Year of the NSS, one of the largest student Youth programme for community service and personality development of students, was launched by the Prime Minister of India on 24 September, 1993. Many programmes to be implemented during the year have been devised to involve the students in various developmental activities. The major health related programme—Universities Talk AIDS—has been expanded to cover 158 universities where the NSS units exist.

1.30 End of the Rashtriya Chetna Varsh on August 9, 1993 celebrated by all field units by honouring the local freedom fighters. In order to promote inter-community, inter-faithy and mutual goodwill, Sadbhavana Diwas was celebrated throughout the country on 20th August, 1993. Functions were

organised in all universities by NSS volunteers and in all districts by the Nehru Yuva Kendras. The main function in Delhi took place at the Indira Gandhi Stadium. Awards to three outstanding Youth Clubs were also distributed on this occasion.

## **SPORTS AND PHYSICAL EDUCATION**

1.31 India has a long tradition for sports and physical fitness. High recognition to this subject was accorded when a separate Department of Sports was created in 1982 prior to the commencement of the 9th Asian Games. Subsequently, the first ever National Sports Policy was announced in 1984. A fresh Programme of Action for implementation of this policy was laid before Parliament (in the monsoon session) in 1992.

1.32 During the year 1993-94, the Department has geared up its total efforts for preparation of teams and sports persons for the Asian Games, 1994. Revised guidelines have been issued which provide for training of probables in coaching camps, purchase of sports equipment, international exposure by way of competitions and training abroad and introduce more incentive for encouraging higher performance in sports. A committee has been set up under the chairmanship of Minister of State to monitor the preparation of the contingent for the next Asian Games.

1.33 In order to broad-base sports right from the school age, the Government set up a sub-committee of Central Advisory Board of Education under the chairmanship of Shri K.P. Singh Deo, Minister of State for Information and Broadcasting, to suggest measures for making sports and physical education an integral part of the learning process at all stages of education. The committee has completed its deliberations and submitted the report to the Department.

1.34 A number of measures were introduced during the year to encourage investment in sports and make the import of sports goods easier and cheaper for the sports persons. Section 35 (A) (C) of the Income Tax Act 1961 has been amended. This would enable the expenditure incurred by Industrial House on Sports promotion or development programme to be counted for the benefit of 100% deduction. Further, a public notice has been issued by the Ministry of Commerce which specifies sports goods/equipment that can be imported by the specified organisations without any import license.

## **DEPARTMENT OF WOMEN AND CHILD DEVELOPMENT**

1.35 All round development of Women and Children constitutes an important component in the country's human resource development efforts. The Department of Women and Child Development—one of the constituent departments of the Ministry of Human Resource Development—is charged with the responsibility of functioning as the nodal agency to guide, coordinate, promote and review the efforts of both governmental and non-governmental, in the field of women and child development.

1.36 Gender inequality throughout the world is among the most all-pervasive though deceptively subtle forms of inequality. The Government realises that real development can not take roots if it bypasses women who not only represent nearly half of our population but represent the very kernel around which social change must take place. The concern, therefore, is to remove all gender-biases and guarantee women equal status in the real sense as is enshrined in our Constitution. All the efforts of the Government have been, therefore, directed towards main-streaming of women into the national development process by raising their overall status—social, economic, legal and political—at par with that of men. A number of programmes in this direction entailing employment and income generation, welfare and support services, gender sensitisation and awareness generation campaigns are being implemented. The programmes implemented by the Department in the above sectors are supplementary and complementary to the other general development programmes for women in the sectors of health, education, labour and employment and in poverty alleviation programmes.

1.37 In January 1992, the Government has set up a statutory National Commission for Women with

a specific mandate to study and monitor all matters relating to the constitutional and legal safeguards provided to women; review the existing legislations to suggest amendments wherever necessary; and to look into the complaints involving deprivation of rights of women. The Commission is playing a significant role as a watch-dog body to check the atrocities against women. The Commission is also contributing in a substantial way to increase awareness and mobilisation of women through the organisation of conferences, seminars, workshops, meetings etc. Similar Commissions are being set up at State levels. The State of Maharashtra, West Bengal, Orissa and Kerala have set up the Commissions.

1.38 Recently a Rashtriya Mahila Kosh has been set up. The Kosh, as visualised, aims to reach the poorest of the poor and assetless women who are in need of credit but cannot reach the formal banking or credit systems. This would help to develop a national net work of credit services for women in the informal sector and expect to boost the self-employment ventures of women.

1.39 Another initiative to empower women by raising their economic status undertaken is by launching the Mahila Samridhi Yojana (MSY) on 2 October 1993. MSY aims to promote amongst the rural women the habit to save and improve their financial assets. This, infact, will provide an opportunity for women to exercise greater control over their own household resources. Under MSY, if a rural women deposits upto Rs. 300/- for a lock-in period of one year shall receive the governmental incentive of 25 percent on the deposit. This is one of the most innovative experimental projects for the economic betterment of rural women all over the country.

1.40 During 1990s, the strategy will be to ensure that the benefits of development from different sectors do not bypass women and special programmes with greater gender sensitivity are implemented to complement the general developmental programmes. The flow of benefits to women in the three core sectors of education, health and employment are being kept under close vigil and surveillance as these contribute a great deal towards main streaming women into development.

1.41 A National Plan of Action for Children (1992) and a National Plan of Action for the Girl Child (1991–2000 A.D.) have been formulated. These two Action Plans are both integrated and multi-sectoral in their approach to ensure 'Survival' 'Protection' and 'Development' of children with an ultimate objective of building up better future for children. While the Girl Child, being an integral part of the total target group of children, is expected to derive full benefits from the general Plan of Action, her gender-specific needs will be taken care of by the Plan of Action for the Girl Child with a focus on adolescent girls.

1.42 The Nation's Children are a supremely important asset says the National Policy for Children adopted by Government of India in August 1974. Accordingly, the Department has been implementing a nation-wide programme of Integrated Child Development Services (ICDS) which ensure fulfilment of the basic needs of children of age group 0–6 years and expectant and nursing mothers living in the most backward rural areas, tribal areas and the urban slums. The ICDS provides a package of services comprising health check-up, immunisation, referral services, supplementary nutritional feeding, pre-school education to children in the age group 3–6 years and health and nutrition education to women. This integrated package of services is provided in a convergent manner for holistic development of the child. At present, there are 3066 ICDS projects benefiting 16.3 million children and 3.2 million mothers all over the country.

1.43 In addition to the regular ICDS programme, the Department is also implementing, since 1991-92, World Bank assisted ICDS projects in 110 blocks of Andhra Pradesh and 191 blocks of Orissa, in the pre-dominantly tribal/backward areas, providing additional components such as skill development training for employment for women, Women's Integrated Learning for Life (WILL), services for adolescent girls, nutritional rehabilitation of severely malnourished etc. Recently in 1993-94, similar World Bank assisted ICDS projects have been sanctioned for states of Bihar and Madhya Pradesh and their implementation has commenced.

1.44 The Department has undertaken a novel initiative to provide much needed services to the hitherto neglected group of adolescent girls, particularly the school drop-outs through the ICDS system.

The services include health and nutrition care, functional literacy and vocational training. These interventions are being extended in 507 ICDS blocks. When fully operationalised it will cover over 4.5 lakh adolescent girls in the age of 11-18 years.

1.45 Besides the ICDS programme, the other programmes implemented by the Department in the area of Child Development include Early Childhood Education, Balwadi Nutrition Programme, Creches etc. catering to the special needs of children with a special focus on children belonging to special groups like Scheduled Castes, Scheduled Tribes and other backward communities.

1.46 Considering the increasing demand for Creches, a National Creche Fund has been set up. The Fund will extend financial assistance to voluntary organisations for opening new creche centres. This will be done largely out of the interest accrued to the Fund and to some extent from the Corpus Fund.

1.47 In fulfilment of the constitutional commitment to ensure adequate nutrition to our people, a National Nutrition Policy was framed and adopted for implementation. Nutrition, being a multi-faceted problem, the policy envisages a multipronged attack involving different sectors. The Policy recognised both women and children as priority groups to receive special attention.



सुनहरे रंग से चित्रित बुद्ध की काष्ठ प्रतिमा - 20वीं सदी बर्मा  
Buddha, Wood, painted with gold colour - 20th Century Burma

# AN OVERVIEW 1993-94

2.01 The main thrust of the Department of Culture is the dissemination and promotion of Indian culture in its rich and varied imagery. The idea is that through arousing cultural consciousness among the people, their creative energies should be utilised for expressions in various art forms. During the year 1993-94, the Department continued to address itself to the preservation, promotion and enrichment of the rich and historic cultural heritage and traditions of the land through a network of institutions working in the field of Archaeology, Archives, Museums, Libraries, Anthropology, Buddhist Studies/Tibbetology etc. A National Policy on Culture has also been submitted to Parliament for consideration. The following paragraphs seek to summarise the major activities of 1993-94 under the aegis of the Department of Culture.

## ARCHAEOLOGY

2.02 Conservation and preservation of monuments/sites of national importance is one of the major functions of Archaeological Survey of India (ASI). During the year 1993-94, the conservation and preservation of as many as 500 monuments has been taken up, out of which 250 works were specially identified for comprehensive conservation works. Some of the important conservation works taken up by the Survey during the year are : monuments in Golkonda Fort, Hyderabad; Charminar, Hyderabad; Buddhist site at Aduru; Temples at Udaygiri; Monuments at Warrangal in A.P.; Monuments at Nalanda, Sasaram, Antichek & Kumrahar in Bihar; Monuments in Red Fort, Purana Qila, Qutab Minar, Tughlaquabad Fort, Humayun's Tomb at Delhi; Monuments at Velha Goa and Fort Auguada in Goa; Temples at Dwaraka; Jami Masjid at Pawagadh; Sheikh Chilli's Tomb, Thanesar; Shahjahan Ki Baoli at Meham in Haryana; Laxmi Narain Temples at Chamba in HP; Monastaries at Leh, Alchi, Lamayuru, Stupas, Shey and Leh Palace in Ladakh; St. Francis Church at Cochin; Monuments at Bijapur, Hampi and Belgaum in Karnataka; Monuments at Khajuraho; Caves at Ajanta, Ellora, Aurangabad; Dimapur Ruins at Dimapur in Nagaland; Lord Jagannath Temple at Puri; Rambagh Gate, Amritsar (Punjab); Forts at Jaisalmer, Palaces at Deeg, Caves at Kolvi in Jhalawar in Rajasthan; Fort complexes at Madras, Vellore, Attur Salem, Monuments at Kachipuram in Tamil Nadu; Fatehpur Sikri, Agra Fort in U.P.; Monuments at Murshidabad, Vishnupur Kalna and Guptipara in West Bengal, etc.



2.03 In accordance with the bilateral agreement between the Governments of Cambodia and India, the ASI has been working on the temple complex at Angkorvat. The ASI team has over the years made a major and significant effort in preserving and conserving those monuments which have been commended by internationally recognised archaeologists and conservationists.

2.04 A large number of sites and remains ranging from prehistoric to the medieval times have been discovered by ASI during the year in different parts of the country as a result of some problem-oriented investigations and search for antiquarian remains through village to village surveys. The explored sites include Parbati and Utangan river valley in Dholpur, pre-historic sites in North-Eastern States, Ghaggar river basin in Haryana etc. At Lalkot in Delhi, the ASI has unearthed the first fortified capital of Delhi constructed in the middle of the 11th century A.D. by Tomar ruler Anangpal-II. The clearance operation of Gingee Fort in South Arcot district, Tamil Nadu has revealed the palace of 16th century, a sub-terranean passage and a throne platform. An elliptical structure with flight of steps has been found at Mamallapuram, Tamil Nadu which has a one line inscription indicating that it was built by famous pallava king Narasimha Verman III (695-722 AD) popularly known as Rajasimha. Another Monolithic sculpture of reclining Vishnu, dateable to Narasimha-I, and one monolithic shrine was also found with the figure of Vrishaba linga Siva. St. Augustin Church Complex, old Goa with Seminary convent, novitiate and the college of people populò which was deserted by Augustinians due to religious repression in 1833, has been exposed properly by clearing operations.

2.05 During the year, the ASI, in collaboration with the Marine Archaeology unit of National Institute of Oceanography, carried out underwater archaeological operation at Dwarka in Gujarat, Goa at the West Coast and Pompoohar at the East Coast.

## MUSEUM

2.06 During the year, the National Museum organised a special exhibition on 'Central Asian Art' which was inaugurated by Hungarian Ambassador to India. A special exhibition on Raja Ravi Varma's paintings, drawings and oleographs was inaugurated by the Hon'ble Prime Minister during the year at the National Museum. The National Museum also renovated and redesigned a new gallery "Tribal life style of North East" during the year. Under the Cultural Exchange Programme, an exhibition entitled 'Indian Bronzes' was sent to Hungary. Under the Indo-US Sub-commission on education and culture, the National Museum sent 16 stone sculpture to Asia Society Gallery, New York (USA) during the year for installing an exhibition entitled "Gods Guardians and Lovers; Temple Sculptures from North India". In collaboration with the Museum Association of India and the National Museum Institute, it organised 24th All India Museums conference under the theme "Modern Display Techniques in Museums"

2.07 The Indian Museum, Calcutta introduced "Museum on Wheels" which is designed to carry the message of the museum to the door steps of the rural area. Under the Cultural Exchange programme between the Government of India and the Government of Republic of Mongolia, an exhibition of Buddhist art objects was organised at the Fine Arts Museum of Mongolia in Ulan Baatar in November 1993. The Indian Museum organised an exhibition on the "Way of Buddha" with about sixty outstanding and representative art objects showing various aspects of Buddhas life. Under the inter-State exchange of exhibition programme, the Indian Museum received an exhibition on Roman Antiquities in India from the collection of the Government Museum, Madras. The excavated finds from Arikamedu, the treasure trove of Roman gold, silver and copper coins and the Roman jewellery items were put on show. It also organised a 3 day seminar to discuss the historical background of the Indo-Roman Trade and Cultural Contacts as well as the discovery of remains of Roman arts and crafts in India. During the year, the Museum has added to its collection a 10th century Cholo Bronze image of Nataraja and a stone sculpture of Vishnu belonging to the Pala Sena School, a painting by Abanendranath as well as a decorated sword of the Nator Raj Family.

2.08 The Salarjung Museum, Hyderabad organised an exhibition with the theme "Asian Ivory in Art" It has published a catalogue of Arabic manuscripts Vol. VII during the year. The National Council of Science Museum, Calcutta, (NCSM) an autonomous organisation under the Department of

Culture is primarily engaged in the task of popularising science and technology among students in particular and the masses in general. A notable achievement of NCSM during the year was to get the coveted 'Dibner Award' for the year 1993 from the Society for the History of Technology, USA for its exhibit "The Information Revolution" installed in the National Science Centre at Delhi. The NCSM is initiating steps to construct a Science City in Calcutta which is being planned as a major attraction to the residents of Calcutta and international visitors to the metropolis. Besides these, NCSM prepared a project proposal for development of a full-fledged Science Centre named Rajiv Gandhi Science Centre in Mauritius on turn key basis. The NCSM supplied 30 participatory exhibits during the year on physical science for the new science centre in Queensland Museum, Brisbane, Australia. All the exhibits were conceptualised and developed in the Central Research & Training Laboratory which is the think tank of NCSM.

2.09 The Allahabad Museum, Allahabad organised a painting-workshop for a fortnight from 25th July to 8th August 1993 which became so popular that it continued for 2 months. It also organised a painting exhibition entitled "Krti-1993" under the joint auspices of the University of Allahabad and the North-Central Zone Cultural Centre. A seminar entitled "Smaran Evam Shradhanjali Parv (Prayag ke Sahityik Sarjakon Ke Sandarbhn Mein)" was also organised by the Museum during the year.

2.10 The Nehru Memorial Museum and Library, New Delhi organised two discussions on themes (i) 'Peace and Disarmament' with the Chinese delegation of the Chinese Peoples' Association for peace and disarmament, and (ii) "Challenges to Indian Nationalism and Indian Unity Today". A three day seminar on "State Ideology and Civil Society" was organised on the occasion of the birth centenary of the renowned Italian political thinker Gramsci. The Library which focuses on modern Indian History and Social Sciences continued to grow in holdings as well as in the quality of service during 1993-94. More than two thousand four hundred books were added to its existing stock upto Sept. 1993. In the same period, approximately 13,115 meters of positive microfilm, 1044 negatives of old photographs, 1064 photographs, 14902 hard copies for microforms, 1,29,476 xerox copies were prepared for record as well as for supply to scholars and other institutions.

## **ANTHROPOLOGY**

2.11 The Anthropological Survey of India, Calcutta is a scientific research organisation, the thrust of its research being contemporary anthropological issues. During the year, the Survey initiated steps for publication of the report 'People of India'. The entire gamut of information that has been generated under this project has resulted in the production of 43 volumes of which 11 are National and 32 State series. Four volumes have already been published and the remaining 39 volumes are in various stages of publication. Editing of volumes (i) The Ram Katha in Tribal and Folk Tradition in India; (ii) The Mahabharata in Tribal and Folk Traditions; (iii) Tribal Ethnography, Customary laws and Change; and (iv) Anthropology of Weaker Secions has been done and arrangements have been made for their publication. All the volumes have been brought out except the volume on the Mahabharata, which is expected to be released shortly. The Survey proposes to launch a project on Anthropological Study of Place Names and Personal Names in collaboration with the 'Place Name Society of India' Mysore, and another project on "Ecological Science" in collaboration with the Centre for Ecological Science in Indian Institute of Science, Bangalore.

2.12 The Indira Gandhi Rashtriya Manav Sangrahalaya Bhopal (IGRMS) is an autonomous organisation dedicated to the story of humankind in time and space. During 1993-94, the IGRMS further developed its open air exhibition "Tribal Habitat" by adding two new exhibits namely the dwelling types of Bhil people of Madhya Pradesh, Karbi people and dwelling type of Zemi Naga people of Assam. The dwelling complex of a nomadic haunting gathering tribe was also prepared. An international meet on "Tribal and Analogous People" is scheduled to be held during the year. The meet entitled "Eternal Voyage" will have an exhibition on creative arts, colloquia, group discussion, presentation of cultural programmes, etc. Other than participants from all over India, representatives from about 20 countries have confirmed their participation. Exhibits are also being sent by about a dozen countries. The Sangrahalaya organised a programme 'Padav' on living traditions of pottery and terra-cotta comprising

of potters meet, a workshop and a symposium in which over 40 potters from different parts of India participated and demonstrated their traditional techniques. In the programme of live presentation of aspects of traditions this year, the Sangrahalaya organised music concerts in the programme series 'Poonam' featuring live performances of noted artists like Pt. Hari Prasad Chaurasia's flute recital. Vocal performance by Smt. Subha Mudgal etc. Two plays were also enacted in the museum premise in which 'Jagar Magar Andher Nagar' was adopted from a play written by Shri Bharatendu Harishchandra and 'Volga se Ganga' was dramatised from a novel of the same name by Rahul Sanskritayan. The Sangrahalaya organised a symposium on the Peoples Perspective in Visual Anthropology during the year. This symposium was attended by over 40 Anthropologist Scholars and cinema makers who had prepared documentaries on tribal and rural people. Academic meets on cultural heritage of tribal people were organised during the year at Ooty, Shillong, Guwahati, Vardhman, Bhubaneswar, Gangad and other places.

## ARCHIVES

2.13 The National Archives of India (NAI), which is the Custodian of non-current records of permanent value of the Government of India, further enriched its holdings by acquisition of private and public records, microfilm copies of records including 85 war diaries pertaining to Indian State Forces of World War II received from History Division, Ministry of Defence, Government of India. During the year, the NAI received 11,206 files (1948-63) of Ministry of Home Affairs; 17 files (1894-1911) of President's Secretariat, private papers written by Dr. Syed Mahamud and Miss Katherine Mayo, etc. Forty microfilm rolls (1884-1952) in French relating to History of the French in India were received from National Archives of France under cultural exchange programme. Ten microfilm rolls of "Panda-Records" relating to States of Punjab and Rajasthan were received as gift from Genealogical Society of Utah (USA).

2.14 The Asiatic Society, Calcutta during the year made considerable progress on the project "Indology". The first phase of this project "India's Perception of Nature and Beauty" has been completed. The investigation on medicine in Medieval India in the project on "History on Medicine" was completed. The work on the project "Tibetan Studies" has made considerable progress in the subject on investigation viz; "The Bhatia (Indo-Tibetan) inhabitants of Himalayas : their identity and integration with the main stream. The Society has undertaken an important project during the year to prepare Encyclopaedia Asiatica. It would be a multivolume project primarily aiming at presenting a systematic account of the evolution of the history and culture of the lands and people of Asia till the present time.

## LIBRARY

2.15 The National Library, Calcutta is the biggest library in the Country and is one of the recipient libraries under the provisions of the Delivery of Books Act 1954 and is the foremost repository of the Indian printed cultural heritage. The library renders readers services through its Reading Rooms and lending section. The library has an ongoing programme for conservation of library materials. Under the programme "Microfilming", the Library preserves the contents of rare and out-of-print publications by microfilming them for future generation. During the year, under library modernisation scheme, the library initiated cataloguing of English language monographs on international format-UNIMARK and automated serial control were taken up.

2.16 The Delhi Public Library, on a proposal received from the Directorate of Education, Govt. of the National Capital Territory of Delhi, has taken over 58 composite libraries being run under the Punjabi Academi. At the request of Inspector General of Prisons, Tihar Jail, the Delhi Public Library has decided to set up a Sub-branch/Library-cum-Reading Room-cum-Supply Station in the premises of the Central Jail, Tihar.

2.17 The Khuda Bakhsh Oriental Public library has a scheme of acquiring copies of rare manuscripts available in other collections. So far, collections of Aligarh, Rampur, Bhagalpur, Maner, Phulwari

sharif, Asafiya (Hyderabad) and Asiatic Society (Calcutta) have been covered. The British Collection of India Office and Cambridge have also been covered by acquiring microfilms of choicest of manuscripts. The Library has acquired 24 manuscripts and 876 printed books by the end of Sept. 1993. The library plans to achieve its target of at-least 100 manuscripts by the end of the year. The library has laminated around 100 manuscripts besides repairing and binding around 800 printed books by the end of Sept. 1993.

2.18 The Raja Rammohun Roy library Foundation, Calcutta is an autonomous body engaged in the promotion of library services. During the year, the Library celebrated completion of two decades of its establishment by organising seminar on Library Movement in India as also Raja Ram Mohun Roy memorial lecture.

## **ACADEMIES AND THE NATIONAL SCHOOL OF DRAMA**

2.19 The Sangeet Natak Akademi, the National Academy of Music, Dance and Drama during the year organised Nrityotsava at Trivandrum in association with the Department of Culture, Govt. of Kerala. The Nrityotsava featured selected dancers from various parts of the country covering the entire range of Indian classical dance. The Akademi also organised 'Kathakali Mahotsavam' a programme focussing exclusively on Kathakali—the traditional dance theatre of Kerala. The programme included performances in the evening and lecture cum demonstrations during the day time where almost all the venerable gurus and leading performers of today were featured. A percussion workshop was jointly organised by the Sangeet Natak Akademi, the British Council Division of the British High Commission and the Indian Council for Cultural Relations at the British Council Auditorium. The event brought together an eminent percussionist Ms. Evelyn Glennie from U.K. who interacted and played with well known Indian percussionists T.H. Vinayak Ram, Govinda Chakrabarty, etc. The Akademi, with a view to support experimental theatre by young Directors, offers subsidies for production staged at its four Annual Zonal Theatre Festivals and further assistance for plays chosen for the National Theatre Festival. During the year, the North Zonal Festival was held at Chandigarh, the West Zonal Festival at Panaji, the East Zonal Festival at Jamshed Pur, and the South Zonal Festival is scheduled to be held at Madurai. The Akademi has a plan to organise YUVA NATYA SAMAROH featuring selected plays staged in the four zonal festivals.

2.20 The Lalit Kala Akademi which is the National Academy of Art, is promoting and co-ordinating the development of visual and plastic arts. During the year under report, the Akademi organised an exhibition of paintings, sculptures and prints in collaboration with the Embassy of France, in which more than 40 Indian Artists participated. The Akademi participated in the 6th Asian Art Biennale held at Dhaka, Bangladesh. The Akademi is initiating steps to organise an exhibition of contemporary paintings in China under the Cultural Exchange Programme. The Akademi has plans to organise VIII Triennale-India during Feb./March 1994 for a duration of four weeks and has extended invitation to 97 countries. As a part of the Triennale-India exhibition, the Akademi plans to organise an International seminar and an International Camp. The Akademi plans to organise the 7th Rashtriya Kala Mela in New Delhi during February, 1994. The theme of the mela is "To Expose the Creative Talent of the People of a Country in Any and Every Form"

2.21 The Sahitya Akademi is the apex national body for the promotion of literature. The major programmes of the Akademi are to confer annual awards in 22 languages, hold seminars, Literary gatherings and workshops etc. The Akademi, as implementing agency, has been executing the provisions under the Cultural Exchange Programmes regarding interaction with writers or undertaking translations of classics on reciprocal basis. During the year 1993-94, the Akademi has awarded 21 Awards to writers, 16 translation Awards to translators, published 140 books and organised 29 book exhibitions. Besides these the Akademi has organised 6 seminars, 27 'Literary Forum' meetings, 5 "Meet the Author" meetings and 3 workshops. The Akademi plans to organise a seminar on "Marathi Poetry in five decades" during the remaining part of the year and also organise a seminar on 'Afro-Asian Writing'.

2.22 The Repertory company of the National School of Drama during the year performed 'Muavze' at Lucknow. It also participated in the festival of best plays of 1992 organised by the Sahitya Kala Parishad with the play 'Adhe Adhoore'. The company organised Summer Drama Festival in the month of May-June 1993, staging noted plays like "Ghasi Ram Kotwal", 'Muavze', 'Adhe Adhoore' etc. Under the Extension programme, the school organised a number of intensive theatre workshops for the benefit of theatre workers in different parts of the country. In the current year, these workshops were held in Bijapur, Nainital, Jammu, Bangalore, and many other places. A month long workshop on theatre techniques was organised in Delhi. "Rang Yatra" exhibition has been opened and it is attracting visitors in large numbers. More than 10,000 people have seen the exhibition. The School is planning a tour of this exhibition to Udaipur, Jaipur, Chandigarh and Amritsar.

## **PROMOTION AND DISSEMINATION OF CULTURE**

2.23 The Department of Culture has been implementing a number of schemes for promotion, preservation and dissemination of art and culture. Under the schemes for promotion and dissemination of Tribal/Folk Art and Culture and Preservation and Development of Cultural Heritage of Himalayas, the Department provides grants/subsidies to voluntary cultural organisations.

2.24 The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) is an autonomous body under the Department of Culture which is conducting training programmes and other activities to create an awareness of our cultural heritage. The training programmes of the CCRT organised for Primary, Middle and High School teachers are : Orientation Courses, Refresher Courses for trained teachers, workshops, courses on "Puppetry for Education" and seminars. The training programmes are organised for in-service Teachers, Educators, Administrators and Students. During 1993-94, so far the Centre has organised 4 Orientation Courses involving around 300 teachers. The Centre has organised workshop on "Museum and Schools" in Madras and Delhi, workshop on "Creative Dramatics" in Bombay, and a workshop on Study of Cultural Heritage" in Kanchipuram. The Centre has also organised courses on "Puppetry for Education" in New Delhi which was attended by about 350 teachers. The Centre was nominated as the nodal agency for celebration of the world Day for Cultural Development. To celebrate the day, the Centre organised essay and painting competitions and concerts of music, dance and theatre in different parts of the country. During the year, the CCRT has produced an audio visual educational module on "Kanchipuram : the city of Temples". 200 copies of the audio-visual module have been prepared and 75 have been distributed. During the period, the CCRT produced 600 cultural kits and distributed 217 of them to institutions from where teachers have received training at CCRT. The centre has also produced a cultural kit on "Folk Dances of Asia and the Pacific" of which 200 copies have been made, 43 of which have been distributed to selected schools throughout the country.

2.25 The seven Zonal Cultural Centres (ZCCs) inaugurated in the country between November, 1985 and December, 1987 have over the years become premier field institutions for encouraging and disseminating folk and tribal culture. The goal of ZCCs include the encouragement of diverse cultural activities in rural and low profile regions of the country. During the year 1993-94, the East Zone Cultural Centre, Shantiniketan organised 20 programmes which included tribal, folk, traditional and classical music and dance programmes. Best awardees were taken on an excursion tour "Know your Motherland", in May-June 1993 at different places of the country. The Centre also organised an exhibition of work of great masters of paintings, sculptors etc. at Delhi. Kavi Sammelan of the eastern region was organised at Gangtok. The South Zone Cultural Centre, Thanjavur, organised Thanjai Dance Festival at Thanjavur. The Centre also organised Kala Mela in Madras and Bharatotsav at Ernakulam. The West Zone Cultural Centre, Udaipur organised crafts workshop for mask making and pottery making. A Natya Samaroh (Theatre Festival) was also held at Panaji in collaboration with Sangeet Natak Akademi. The Centre also organised a lecture cum demonstration on miniature paintings at Jaipur and in Goa. The North Central Zone Cultural Centre, Allahabad participated in Ghazal qawwali Samaroh at Allahabad besides organising a children's production oriented theatre workshop. The North East Zone Cultural Centre, Dimapur took part in CRPF Raising Day Celebrations at Dimapur and Drama Festival at Dibrugarh. The North Zone Cultural Centre, Patiala organised a

National level Folk Dance Festival at Bhatinda and a National level crafts mela at Chandigarh. The Centre also participated in the Taj Mahotsava at Agra. The South Central Zone Cultural Centre, Nagpur organised a Crafts Mela at Ooty. Cultural programme at Sirsa besides organising Folk Dance festival at Bhatinda and Bangalore.

## **MEMORIALS**

2.26 The Gandhi Smriti and Darshan Samiti which is an autonomous organisation under Department of Culture engaged in propagating the life mission and thoughts of Mahatma Gandhi; during the year presented a musical tribute to the Father of Nation as a curtain raiser for his 125th Birth Anniversary. The musical programme held at Delhi included songs on Gandhiji by different authors. A National convention of the "Authors Guild of India" was held during 15-17 May, 1993 and was inaugurated by the Hon'ble Speaker of Lok Sabha. It was attended by 300 eminent writers and intellectuals who discussed the prevailing situation in the country in the light of Gandhian philosophy and thoughts.

## **FESTIVAL OF INDIA**

2.27 During the year 1993, under the return Swedish Manifestation, two seminars on "Working environment" and "Children's right to play" were organised. Symposiums were also organised at Ahmedabad by the Gandhi Labour Institute and at Pune by the SNTD University in conjunction with the Swedish Institute, Stockholm in April and June respectively. The Festival of India in China is to begin on 9th May, 1994 for a period of 6 weeks. Preparations for this are being made.

## **INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS**

2.28 The Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), comprises five main divisions viz. (1) Kala Nidhi (2) Kala Kosa (3) Janapada Sampada (4) Kala Darshana (5) Sutra Dhara. During the year 1993-94, in the reference library of Kala Nidhi Division, 2750 selected works of eminent authors were added to its collection. 117 rolls of Microfilms of rare Indian manuscripts from collection abroad and 13,000 microfiches from places like Moscow, Berlin etc. have been added. Under Kala Kosa Division, 11 critically edited texts such as Matralaksanam, Sri Hastamuktavali etc. have been printed and published. The Janapada Sampada Division has completed reports on the projects "Sacred groves and Sacred Trees of Uttara-Kannada", "Symbiotic relationship between Man, Animal and Nature" and on many other relevant topics. An International Seminar on "Interface of Cultural Identity and Development" was organised by IGNCA under the aegis of UNESCO. It plans to organise an international meeting "Global Specialists Conference on Rock Art". As part of IGNCA's focus of man, environment and arts, a series of multi-disciplinary seminars were held on "Man-Nature-Integral Vision". Kala Darshana Division organised an exhibition titled "Prakriti—Man in harmony with elements". A symposium on "Future of the Mind : Mind of the Future", was organised during the year as a programme under the project "Information 2000" jointly by IGNCA, ICCR, Indo US Sub-Commission on Education and Culture"



## CHAPTER 3

# ORGANISATION

3.01 The Department of Culture is one of the four Departments of the Ministry of Human Resource Development. This Department was set up in 1985 through the 174th amendment of the Government of India (Allocation of Business) Rules 1961.

3.02 The Department is under the overall charge of the Minister of Human Resource Development. The Secretariat of this Department is headed by the Secretary, assisted by two Joint Secretaries. The Festival of India Cell which had been given a separate identity has now been merged with the Department. The detailed set up of the Department of Culture has been indicated in the Organisational Chart at Appendix-1.

3.03 The Department has two attached offices, namely, the Archaeological Survey of India and the National Archives of India. It has 6 Subordinate Offices and 21 Autonomous Organisations, fully or partially funded by it. The Subordinate Offices and Autonomous Organisations are as under :

## SUBORDINATE OFFICES

1. Anthropological Survey of India, Calcutta.
2. National Museum, New Delhi.
3. National Gallery of Modern Art, New Delhi,
4. National Library, Calcutta.
5. National Research Laboratory for Conservation of Cultural Property, Lucknow.
6. Central Reference Library, Calcutta.

## AUTONOMOUS ORGANISATIONS

1. Indira Gandhi Rashtriya Manav Sangrahalaya, Bhopal.
2. National Council of Science Museums, Calcutta.
3. Nehru Memorial Museum and Library, New Delhi.



4. Sangeet Natak Akademi, New Delhi.
5. Sahitya Akademi, New Delhi.
6. Lalit Kala Akademi, New Delhi.
7. National School of Drama, New Delhi.
8. Centre for Cultural Resources and Training, New Delhi.
9. Gandhi Smriti and Darshan Samiti, New Delhi.
10. Allahabad Museum, Allahabad.
11. Delhi Public Library, Delhi.
12. Raja Ram Mohan Roy Library Foundation, Calcutta.
13. Central Institute of Higher Tibetan Studies, Varanasi.
14. Central Institute of Buddhist Studies, Leh (Ladakh).
15. Victoria Memorial Hall, Calcutta.
16. **Indian Museum, Calcutta.**
17. The Asiatic Society, Calcutta.
18. Salar Jung Museum, Hyderabad.
19. Khuda Baksh Oriental Public Library, Patna.
20. Rampur Raza Library, Rampur.
21. Thanjavur Maharaja Serfoji's Saraswati Mahal Library, Thanjavur.

3.03 The Department of Culture is also looking after the Indira Gandhi National Centre for Arts which was being **looked after** formerly by the Department of Arts.

## **PROMOTION & DISSEMINATION**

3.04 The Department of Culture plays a vital role in the promotion and dissemination of art & culture. It directly operates several schemes for the promotion of specific performing, literary and visual arts. It provides assistance for the development of voluntary action in these fields through grants, training programmes etc. It also endeavours to promote and develop traditional crafts and skills, especially folk art and crafts.

## **MATERIAL HERITAGE**

3.05 The Department also looks after the preservation, conservation and protection of the **material heritage**, namely archaeology, anthropology, museums etc. through specialised agencies like the **Archaeological Survey of India, Anthropological Survey of India, Rashtriya Manav Sangrahalaya** etc. It administers a number of museums and galleries of national importance. The Department also promotes organisations working in specialised fields such as Buddhist and Himalayan studies.

## **ARCHIVES**

3.06 The Department is concerned with the formulation of Archival Policy of the Government of India, development and protection of archives both at the Centre and at the States, a responsibility which it is implementing through the National Archives. It is also concerned with the development of public libraries and administers the National Library at Calcutta and a number of other libraries of national importance.

## **SCHOLARSHIPS/FELLOWSHIPS**

3.07 A number of scholarships, fellowships and grants are given by the Department of Culture to promote excellence in the various fields of art and culture. Anniversaries and centenaries of important personalities are organised, memorials commemorating certain important persons or a particular period of history are maintained.

## **INTERNATIONAL CULTURAL RELATIONS**

3.08 The Department coordinates all matters relating to the international cultural relations. It acts as the nodal agency for executing cultural exchange programmes with different countries, organises incoming and outgoing exhibitions, and undertakes programmes envisaged in the programmes of UNESCO in the field of art and culture.

## **PROGRESSIVE USE OF HINDI**

3.09 The work relating to implementation of Official Language Policy in the Department of Culture and in its attached/subordinate offices and autonomous Organisations is looked after by a Deputy Director (OL) assisted by an Assistant Director (OL) and other supporting staff. The Departmental Official Language Implementation Committee headed by the Joint Secretary (Admn) is represented by the Officers of various Divisions/Sections/Units and in its quarterly meetings progress reports regarding use of Hindi relating to the Department, attached/subordinate offices and autonomous organisation were discussed.

3.10 During the year under report, representatives of 14 attached/subordinate offices and autonomous organisations were invited to the meetings of OLIC and shortcomings found in the use of Hindi in those offices were brought to their notices. With a view to assessing the progress of use of Hindi in various offices under the Department of Culture an inspection team consisting of 8 officers, was constituted this year. During the year under report, 11 offices located in Delhi, Bhopal, Baroda, Nagpur and Aurangabad were inspected to assess the compliance of official Language Act and the rules made thereunder. Officers of the Department represented the Inspection meetings of the Committee of Parliament on Official Language in various offices under the Department of Culture. Meetings of the Official Language Implementation Committee of various offices located in Delhi were attended by Dy. Director/Asstt. Director (OL). During the year under report, a field office of Archaeological Survey of India and 2 autonomous organisations under the Department of Culture were notified in the Gazette of India under rule 10(4) of Official Language Rules, 1976. Annual Programme for the year 1993-94 was complied in the Department and in its attached/subordinate offices and Autonomous Organisations and efforts were continued to achieve the targets.

3.11 During the year under report, 13 employees were nominated for Hindi class, 8 employees for Hindi stenography class and 10 employees for Hindi type-writing class. 2 Hindi type-writers were purchased during this year.

3.12 The Department of Culture organised Hindi week from 13.09.93 to 17.09.93. The Deputy Minister (Education & Culture) inaugurated the Hindi Week. During this week various competitions were organised and prizes were given to Hindi speaking and non-Hindi speaking employees.

3.13 During the year under report, among other several important and voluminous items of translation work, the following documents translated are worth mentioning :

- (1) International Cultural Exchange Programmes/Agreements/Protocols with 21 countries.
- (2) A brochure on Observations, Comments and Recommendations of different eminent personalities on National Culture Policy.
- (3) Documents relating to Quit India Movement Golden Jubillie Celebrations.
- (4) Statistical Profile of various Cultural Institutions and Organisations
- (5) Report on Annual Plan for Budget proposals.

3.14 A statement indicating the financial allocations in respect of various schemes and organisations under the Department of Culture is at Appendix-II



# ARCHAEOLOGY

## ARCHAEOLOGICAL SURVEY OF INDIA, NEW DELHI

4.01 The Archaeological Survey of India, an attached office of the Department of Culture, Ministry of Human Resource Development, came into being in December, 1861 and took up a systematic survey of the various regions of the country, but the conservation of the monuments, which is today the main function of the survey was left outside the scope of its programmes. It was placed on a permanent footing in 1902, after the appointment of John Marshall as Director General of Archaeology by Lord Curzon, with the clear cut purpose of conservation of monuments/sites, exploration and preservation, epigraphical research and setting up of museums. In 1904 the Ancient Monument Preservation Act was passed to provide for the preservation of the monuments, and a comprehensive legislation known as the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act 1958 was enacted.

4.02 A new Act called the Antiquities and Art Treasure Act 1972 was enacted to regulate the export trade in Antiquities and Art Treasures to provide for the prevention of and fraudulent dealings in Antiquities, to provide for the compulsory acquisition of antiquities and art treasures for preservation in public places. Prior to that, an Act called Indian Treasure Trove Act 1878 was in vogue throughout India.

4.03 The Survey under the over all charge of a Director-General, with head quarters at New Delhi and with the assistance of the Directors of Different faculties, also stationed at New Delhi, discharges its responsibilities through sixteen Circles, two Mini Circles, five excavation Branches, a Pre history Branch, a Science Branch, a Horticulture Branch, an Epigraphy Branch, Museum Branch and Temple and Building Survey Projects. The Institute of Archaeology at New Delhi functions as the training wing of the ASI. During the past few decades there have been a phenomenal increase in the functions and responsibilities of the Survey. Some of the main activities during 1993-94 are described below.

## CONSERVATION AND PRESERVATION

4.04 Conservation and preservation of monuments/sites of national importance is one of the major functions of Archaeological Survey of India. Besides structural conservation, chemical preservation and environmental development the task includes creating an infrastructure, such as construction of office

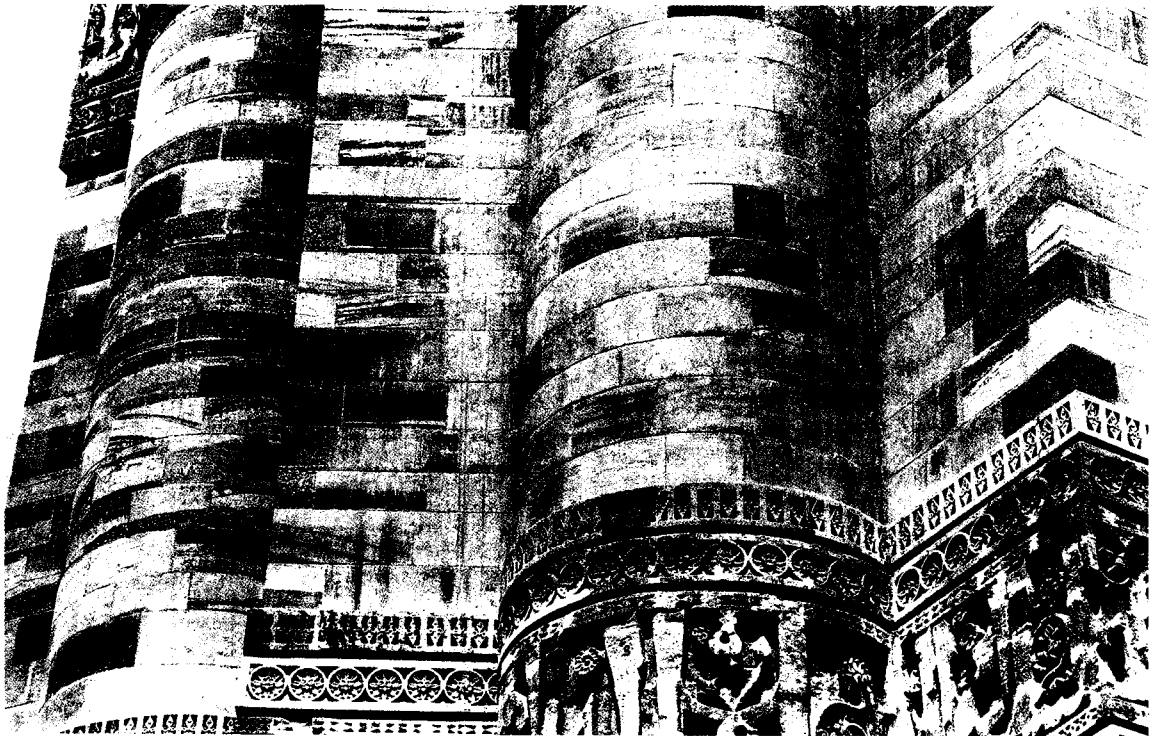
buildings, watchman quarters near the important monuments to provide proper security to the monuments, construction of sculpture sheds and museums for exhibiting the loose sculptures, and acquisition of land around the monuments to maintain the ecology and to improve the environment. Archaeological Survey of India has introduced new schemes, such as setting up of laboratories to carry out the scientific studies, to finance the voluntary organisations for the preservation of unprotected monuments, strengthening of Circles, Branches and Directorate, Development of monuments at Ajanta and Ellora region under OECF Scheme, Japan, and Development of Sanchi and Satdhara monuments through UNESCO under Japan Trust Fund.

4.05 During the year 1993-94, the conservation and preservation of as many as 500 monuments has been taken up, out of these 250 works were specially identified for comprehensive conservation. Some of the important conservation works taken up by the Survey are :

Kalyana Mandapa of Sri Chintala Venkataramana Temple at Tadipatri, Veerabhadra Swamy Temple, Lepakshi at Anantpur, Monuments in Golkonda Fort, Hyderabad, Chandragiri Fort, Charminar Hyderabad, Sri Soumyanadha Swamy Temple at Nandalur, Buddhist site Aduru, Sri Bhimeswara Swamy Temple Draksharma, Temple at Papanasi, Temples at Udaygiri, Maha Stupa at Amravati, Reconstructed Monuments at Nagarjuna-konda, Monuments at Warrangal, in Andhra Pradesh, Monuments at Sibsagar, Cachar Ruins at Khaspur, Ahom Raja's palace at Gargaon, Karenghar Palace and monuments at Joysaga in Assam. Fort at Rohtas, Monuments at Nalanda, Sasaram, Antichak and Kumrahar in Bihar. Monuments in Red Fort, Purana Quila and Archaeological area of Qutab Minar, Fort at Tughalaqabad, Zafar Mahal Mehrauli, Sultan Ghari's Tomb Malikpura, Humayun's Tomb and Neela Gumbad Nizamuddin, Badli Sarai, Magazine Kashmeri Gate, Ugrasain-ki-Baoli in Delhi. Monuments at Velha Goa and Fort Aguda in Goa. Munsar Tank Vinamgam, Monument at Khed and Roda, Temples at Dwarka, Gokeshwar Mahadev Temple Lowrali, Rani-ka-Vav and other monuments at Patan, Jami Masjid at Pawagadh, Monuments at Saijakpur, Bhuj, Jamnagar, Surat, Dockyard of Lothal and Suryakund at Modhera in Gujarat. Suraj Kund at Lakharpur, Sheikh Chilli's, Tomb Thanesar, Ancient site Agroha and Feroz Shah Palace in Hissar, Shahjahan-ki-Baoli at Meham in Rohtak, Harsh-ka-Tilla, Kurukshetra, Sarai at Gharaunda, Baoli Ghosh Ali Khan at Gurgaon, Ruined Fort of Prithvi Raj Chauhan at Hansi and Jal Mahal Narnaul in Haryana. Trilokinath Temple Mandi, Shakti Devi and Laxmi Narain Temples at Chamba Buddhist Monasteries at Tabo and Mirkula Devi Temple at Udaipur in Lahaul and Spiti Valley, Shiva Temple Baijnath, in Himachal Pradesh, Mughal arcade and Sun Temple Martand at Anantnag, Naranagh Srinagar, Monuments at Parihaspur in Baramulla, Akhnoor Fort Jammu, Monasteries at Leh, Alchi, Lamayuru, Stupas, Shey and Leh Palaces in Ladakh, Shiva Temple Billawar, Group of temples, Babore, Fort and Palace Ram Nagar at Udampur in Jammu and Kashmir. St. Francis Church Cochin, Forts of St. Anjelo and Bekal Kannur and Fort Tellicherry in Kerala. Monuments at Aihole, Badami, Bidar Fort, Bijapur, Lakkundi, Halibidu, Sravanbelgola, Hampi, Kambadakalli and Belgaum, Sangit and Nari Mahal Torvi, Old Jaina Temple Belgaum, Musafirkhana and Honda Santhbennur Shimoga, Ahmed Shah Wali's Tomb, Asktur Bidar and Fort Bellary in Karnataka. Buddhist Caves Bagh, Monuments at Khajuraho, Gyaspur, Mandu, Sanchi, Gwalior, Burhanpur, Barhut, Badoh, Pathari Amarkantak, Chanderi, Kakanmath Temple Suhania, Udeswar Temple Udaipur, Saivit Temple, Bhojpur, Vijay Mandal Vidisha, Kanti Deul Temple Ratanpur, Pataleshwar Temple Malhar and Forts at Rohat garh and Raisen in Madhya Pradesh. Caves at Ajanta, Ellora, Aurangabad, Pithalhora and Elephanta, Markandya Temple Markandya, Shiva Temple Ambernath, Bibi-ka-Maqabara and Aurangzeb's Tomb Aurangabad, Monuments at Lonar, Forts at Pauni, Daulatabad, Panhala, Bassein, Shivneri, Raigarh, Sindudurg, Vijaydurg and Gavilgarh in Maharashtra. Dimapur Ruins at Dimapur in Nagaland. Lord Jagannth Temple Puri, Sun Temple Konark, Excavated site at Udaigiri, Khandagiri. Lalitgiri and Barabati Fort, Asthasambhu Temple Dhenkanal, Nilamadhava and Sidheshwar Temple Gandharari, Paschima Somnath Temple Boudh and Barahi Temple Chaurasi in Orissa. Rambagh Gate Amritsar, Fort at Bhatinda and Noormahal Sarai in Punjab. Moat wall Bharatpur, Forts at Jaisalmer, Chittaurgarh,



संरक्षण-कार्य के पूर्व, कुतुबमीनार, दिल्ली में बलुआ पत्थर की उभरी हुई लम्बी धारियां  
Bulged sand stone flutings of Qutb Minar, Delhi – Before Conservation



संरक्षण-कार्य के पश्चात, कुतुबमीनार, दिल्ली में उभरा हुआ बलुआ पत्थर  
Bulged sand stone flutings of Qutb Minar, Delhi – After Conservation



संरक्षण-कार्य के बाद - अंकोरवाट (कंबोडिया), सिमरीप  
Angkor-vat (Cambodia), Siemreap - After Conservation



संरक्षण-कार्य के पूर्व - अंकोरवाट (कंबोडिया), सिमरीप  
Angkor-vat (Cambodia), Siemreap - Before Conservation

Ranthambhor and Kumbalgarh, Palaces at Deeg, Deo Somnathpur Dungarpur, Anasagar Baradari Ajmer, Caves at Kolvi in Jhalawar, Excavated site Kalibangan, Monuments at Bhangarh Alwar and mahanal temple and Math Chittaurgarh in Rajasthan. Fort complexes at Madras, Gingee, Sadras, Vellore, Ranjangudi, Tricky and Attur Salem, Monuments at Kanehipuram and Pudukkottai Brihadeshwara Temple, Trichy, Sugriswara Temple Periyar, Muruganatha Swamy temple Coimbatore, Siva Temple Valikantapuram Trichy, Valiswara temple Nellai, Kattabommam and Bhagwathi Temple Kanyakumari in Tamil Nadu State, Taj Mahal, Jama Masjid, Rambagh, Akbar's Tomb, Salabat Khan's Tomb, Humayun Mosque, Fatehpur Sikri Complex, Agra Fort, and Itmad-un-daula in Agra, Madan Mohan Temple at Vrindavan', Group of Temples at Jageshwar, Ancient site Sankisa, Kalinjer Fort, Jhansi Fort, Palace complex Ganwaria, Neelkanth Temple, Kalinger, Raja Man Singh Palace Varanasi, Asafuddaula, Rumi Gate, Karbala Nasiruddin Haider Daliganj, Residency complex and old Jama Masjid at Lucknow, Choukhandi Stupa Sarnath, Monuments at Varanasi, Jaunpur and Kushinagar in Uttar Pradesh. Monuments at Murshidabad Vishnupur Kalna and Guptipara, Palace at Cooch Bihar, Metcalf Hall, Maharishi Bhawan, Asiatic Society, Indian Museum and Sova Bazar Raj Bari in Calcutta, Temple at Nanur, Mayer Ghat Belur and Dutch Cemetery Chinsuriah in West Bengal and the monuments at Daman and Diu.

4.06 In addition, the conservation works on the unprotected monuments like Jama Masjid, Delhi and Tawang Monastery, Tawang in Arunachal Pradesh have been taken up as a special case. The Archaeological Survey of India is also executing some deposit works on unprotected monuments of the Government/Autonomous bodies like the Rampur Raza Library Rampur, Netaji Subhash Institute of Sports, Patiala, Victoria Memorial Hall, Calcutta and Monuments in Lodhi Garden. Technical advice, as and when sought is also rendered.

## **CHEMICAL PRESERVATION**

4.07 The chemical treatment and preservation works carried out by the Science Branch of the Archaeological Survey of India are :

Ashokan Rock Edict, Junagadh and Rao Lakha Chhatri, Bhuj in Gujarat, Lalji temple at Kalna in West Bengal, Itmad-Ud-Daula, Khas Mahal in Red Fort and Taj Mahal Agra in U.P., Panchlingeswara Temple, Govindanahalli, Mandya in Karnataka, sculptures, Inscriptions and ivory planquin in Nityakalyana Swamy temple, Thiruvadandhai and sitting bulls, lions, Sculptures etc. of Shiva temple Mahabalipuram in Tamilnadu, Wooden carvings and paintings in Nandimandapa Vadakkunathan temple, Trichur in Kerala, Mahisasur Mardini temple at Badoli in Chittorgarh District and Suraj Bhawan in the Deeg Palace complex, Deeg in Bharatpur District of Rajasthan. Extensive conservation to the Lord Jagannath temple Puri in Orissa, Pancha Vaktra temple Mandi in Himachal Pradesh, Shey Palace, Shey at Leh in Jammu and Kashmir, Stripping of the paintings from the ceiling of cave No. 4 Bagh caves in Madhya Pradesh, Marble surface of Sawan Pavillion, and painted chambers and front hall of Khas Mahal in Red Fort Delhi. Diwan-i-Khas, Hira Mahal and marble pavillion between Hamam and Shah Burj in Red Fort, Amir Khusrou's Tomb, Nizamuddin and Humayun's Tomb in Delhi. Antiquities in the site Museum, Chandragiri in District Chittor of Andhra Pradesh. Paintings of Tambekanwada in Vadodara, Rani Ka Vav at Patan and small temples of Surya Kund of Sun Temple Modhera in Mesana district of Gujarat, Gauri Shankar temples in Laxmi Narain temples of Chamba and Naggar (Kulu) in Himachal Pradesh, Canvas and wall paintings in Dariya Daulatbagh, Srirangapatna and the Panchalingeswar a temple Govindanahali in Madhya District and Gomateswara statue Sravanbelgola in Hassan district of Karnataka. Interior of Mandapa of Rajiv Lochan Mandir, Rajiv in Raipur district, strengthening and consolidation of sculptures of Khajuraho temples Chattarpur, Hoshang Shah's Tomb Mandu district Dhar, Rock paintings Bhimbetika in Raisen District and Mahadev temple, Pali Kathura in Bilaspur district, Teli-ka-Mandir in Gawalior Fort, Gwalior of Madhya Pradesh. In Maharashtra the paintings of cave No. 16 and stone sculptures of cave



No. 32 of Ellora, stone sculptures of Ambernath Temple, Ambernath in District Thane and sand stone Jallis and fountains of Bibi-ka-Maqbara Aurangabad have been included. In Orissa the deplastered surface of the Vimana of Lord Jagannath Temple, Puri Bhaskareswar Temple, Bhubaneshwar and the Museum objects of the Ratnagiri Museum are being attended to. The Jagat Shiromani Temple, Amber in Jaipur district, arms and weapons in Ranthambore Fort, Sawai Madhopur, Saat Bees, Deoria complex in Chittorgarh district of Rajasthan are also included. The sculptures of Mukteswara temple Kanchipuram, Chengoianma district the shikhara of Bridheswara temple Thanjavur in Tamilnadu, Tomb of Murshid Jodi Begum in Lucknow, Gujar Deo Temple Dwarahat in Almora and the mural paintings in the Rani Mahal of Jhansi in Uttar Pradesh are also included.

4.08 Besides photo documentation, various stages of the work during studies have been carried out in the Laboratories of the Science Branch for the complete analysis of the pigments received from Mangolia and Shey Palace in Leh, Laddakh and stone inlaid into marble in Itmad-Ud-Daulaha Agra. Complete investigation have also been carried out on the Chortan of Silver, a copper Buddha Statue before taking up their chemical treatment.

4.09 During the year, the Science Branch has published (i) a report on air pollution data at Agra (1992) (ii) Dust pollution at Taj Mahal—A case study published in the proceedings of UNESCO conference at Paris—29th June—2nd July, 1993 (iii) A report on the stratigraphic and I.R. spectrographic studies of painted plaster samples of Bogdo Khan Monastery, Mangolia and (iv) A report on the chemical cleaning and preservation of paintings of Shey Palace, Shey.

## **CAPITAL WORKS**

4.10 Besides the maintenance of the civil buildings of the Archaeological Survey of India which include the Directorate, Branches, Circle, Range Office buildings, site museums, sculpture sheds, toilet blocks, staff quarters etc. located in cities and distant places, new construction has been taken up to provide essential facilities to the tourist at monuments and storage/office and residential accomodation in remote localities for improving the maintenance and security of the centrally protected monuments, especially in remote localities. Some of the works included in the current years programme are : construction of toilet blocks at Kumrahar, Patna; Safa Masjid Ponda in Goa; and Mohammed Ghaus Tomb at Gwalior in M.P. Construction of quarters for the watch and ward staff have been taken up at Antichek Bhagalpur, Rajgir and Nalanda in Bihar, Aihole, Bagali and Hampi in Karnataka, Jagatgram, Jaunpur and Sardhana in Uttar Pradesh. Martand in Srinagar, Nangupatti in Tamil Nadu, Chandragiri in Andhra Pradesh, Ellora in Aurangabad, Maharashtra, Khed Roda in Gujarat, Narnaul in Haryana, Ranthambhor, Neelkanth, Arthuana and Bhangarh in Rajasthan, Barabati, Asurgarh, Sitabhanji, Gandharavi, and Konark in Orissa. Constructions have also been taken up for the Laboratory building for the Director (Science) at Dehradun in U.P., Conservation Assistants Office and store at Kiramohi and Billawer in J&K, Office of Horticultural Assistant at Golconda, Hyderabad in Andhra Pradesh, Office of Conservation Assistant at Modhera in Gujarat, Store buildings at Manali in Himachal Pradesh and at Old Goa in Goa. Construction of sculpture sheds have been taken up at Bijamandal Thoban, Khargane, Suharia and Nachna, while a shed is being provided over the open Jardine Museum of Khajuraho in Madhya Pradesh. The existing sculpture shed at Aihole in Karnataka is being extended. Sculpture sheds have also been taken up at Modhera, Patan and Kayavarohan in Gujarat, Neelkanth in Rajasthan, Tuman Barabati Fort and Jaipur in Orissa and Unakoti in Assam.

4.11 Under Capital works, construction of major complexes like office buildings for the Directorate/Circles, site Museums and residential complexes for the officers/staff at various places are got done through the Central Public Works Department. The works presently in progress are the office buildings at Srinagar, Patna, Vadodara, Library building at Agra and staff quarters at Fardapur in Aurangabad. The other works included are office building at Bhubneshwar, Lucknow, Bangalore, Institute of Archaeology, New Delhi, Khajuraho, Jaipur, Almora, Staff Quarters at Kalibangan, Khajuraho, Vadodara, Museum buildings at Ghantashala, Halebidu, Nalanda, Piproha and Khajuraho.

## **HORTICULTURE**

4.12 The Horticultural Branch of the Archaeological Survey of India is maintaining 132 archaeological gardens around the centrally protected monuments throughout the country. Some of which are :—

The Taj Mahal and Rambagh at Agra, Akbar's Tomb, Sikandra, Residency at Lucknow, Sahet at Sravasti, Fort at Jhansi, Khacheri cemetery at Kanpur, Lord Cornwallis Tomb at Gazipur, Sahi Fort at Jaunpur, Group of temples at Khajuraho, Bijayamandal, Red Fort and Purana qila in Delhi, Palace at Deeg, Fort at Bhatinda, Shahr-ki-Masjid at Pawagarh, Step well at Adalaj, Hazira Tomb in Baroda, Sihol, Nagarjunakonda, Golkonda Fort and Ramappa temple at Palampet, Gol Gumbad at Bijapur, Monuments at Hampi, Hoyosaleswara temple at Halebidu, Monuments at Pattadakal, Bibi-ka-Maqbara at Aurangabad, Brihadeshwara temple at Thanjavur, Shore temple at Mahabalipuram, Hazarduari Palace at Murshidabad, Tomb of Sher Shah at Sasaram Raja-Rani and Chitrakarni temples at Bhubaneswar, excavated remains at Kumrahar, Nalanda, Sun Temple Korark, Churches at old Goa, Shaniwar wada Pune, Fort and Monuments at Mandu, Burhanpur etc.

4.13 During the year, garden development work has been taken up at Velha Goa, Water Pavillion at Kumatagi, Daulatabad Fort, Anupu at Nagarjuna Sagar, Keydganj Cemetery, Allahabad, Sikandar Bagh, Lucknow, Arquilla Bijapur, Royal Enclosure, Hampi, Shaniwarwada Poona, Vellore Fort, Vellore, Laxminarain temple, Hosaholalu Jalkanteshwar temple, Vellore, Khandagiri Udayagiri, Orissa, Adina Mosque, Malda, Brahmeshwar temple, Bhubaneswar. Arrangements for laying out of garden at Ellora, Nandangarh, Bihar, Extension of garden at Mallikarjuna temple, Pattadikal, Extension of garden at Sikandra, Agra have also been taken in hand.

## **CONSERVATION OF MONUMENTS OUTSIDE INDIA, ANGKORVAT CAMBODIA**

4.14 The Archaeological Survey of India, according to the bilateral agreement between the Government of Cambodia and India has been working on the temple complex at Angkorvat. The funds are being provided by the Ministry of External Affairs. The ASI team have over the years, made a major and significant effort in preserving and conserving those monuments which has been commended by Internationally recognised archaeologist and conservationists.

4.15 In the seventh phase (1992-93), the works taken up in the sixth phase (1991-92) were completed as detailed below :

- (a) The western and eastern wing galleries of the northern wing, and the gallery on the eastern side of the third enclosure, where all the outer pillars of the semi-vaulted roof had gone out plumb and all the tiebeams between the main pillar of the main gallery and the outer pillar had been dislodged at the Joints, were conserved by bringing the pillars into their original position and fixing the tiebeams as they were originally and strengthening them by providing steel dowels wherever necessary.
- (b) The southern central entrance porch and southern entrance porch at the east corner of the third enclosure which had been dismantled in 1990 and 1970 respectively, were reconstructed as they were originally. In addition, broken architectural members like pillars and beams were suitably mended and strengthened by providing I-Section girders.
- (c) Three inner porches on the eastern side of the third enclosure which had gone out of plumb were dismantled completely and after strengthening the core of the plinth, were rebuilt as per the original.
- (d) Seven stepped entrances with massive balustrades on the eastern and southern sides of the second enclosure were conserved thoroughly and water tightened. The collapsed entrance porch on the southern side of the second enclosure was completely reconstructed to original specifications.
- (e) The south western corner tower of the first enclosure and south west corner; north west

corner, south west corner and north west corner towers of the second enclosure were thoroughly conserved and watertightened. The dislodged stones of these towers were reset and the structure was strengthened by providing concealed dowels and steel rods wherever necessary.

- (f) The southern library in between the third and fourth enclosures was further conserved by fixing more than eighty dismantled architectural members in their proper position.
- (g) The first enclosure covering an area of 700 sq. metres as provided with welded mesh to prevent bats and birds from soiling it.
- (h) This season, chemical cleaning and preservation work was carried out in the area covering the interior plinth portion, the south west corner tower, some portions of the exterior plinth of the first enclosure, the roof and exterior walls of the ante-chamber between the second and third enclosures, quadrangles of the ante-chamber, exterior and interior walls of the second enclosure and the northwest and southwest corner towers of the second enclosure.

## EXPLORATIONS

4.16 A large number of sites and remains ranging from prehistoric to the medieval times have been discovered by the Archaeological Survey of India in different parts of the country as a result of some problem-oriented investigations, search for antiquarian remains through village-to-village survey and accidental discoveries. Problem-oriented exploration in the Wainganga valley and its tributaries in Districts Nagpur and Bhandara is proposed to be **undertaken** in continuation of last season's work. **Exploration in Parabati and Utangan river valley in District Dholpur; Exploration of Prehistoric sites in North-Eastern States** e.g. Arunachal Pradesh, Meghalaya, Mizoram etc; Exploration of Karnataka—Kerala States in continuation of last season's work; Exploration of the Ghaggar river basin of Haryana; Exploration in Kali Sindh river valley in District of Kota, Rajasthan; the exploration in the south west Kutch in Gujarat State is proposed to be undertaken in continuation of last season's work. The ASI propose to **continue with** conduct of exploration surveys in the areas to be submerged on account of the construction of dams in the Districts of Vadodara and Bharuch under Sardar Sarovar Project and Sannati in Karnataka.

## EXCAVATION

4.17 At Lalkot in Delhi, the Archaeological Survey of India has **unearthed the first** fortified capital of Delhi, constructed in the middle of the 11th century A.D. by Tomar ruler Anang Pal-II. The excavation is in continuation of last season's work.

4.18 The clearance operations of Gingee fort in South Arcot district Tamil Nadu has revealed the palace of 16th century, a sub-terranean passage **and** a throne platform. An elliptical structure with flight of steps has been found at Mamallapuram, Tamil Nadu which has a one line inscription indicating that it was built by famous Pallava King Narasimha Varman-III (695-722 A.D.) popularly called as **Rajasimha. Another monolithic sculpture of Vishnu datable to Narasimha-I, was also found with the figure of Vrishaba linga Siva for the first time. An ancient well was also unearthed having a sweet water spring.**

4.19 St. Augustine Church Complex, Old Goa, with seminary, convent, novitiate and the college of people Populo which was deserted by Augustinians due to religious repression in 1833, has been exposed properly by clearing operation. The work taken up at convent exposed rows of pillars, sunken water tank, a beautiful garden and stucco crosses in shallow niches of walls, indicating 14 stations of Lord Jesus on his last journey.

4.20 The site at Dondar Khera, District Dholpur, Rajasthan, is one of the most extensive and well preserved ancient mounds. The work is carried out in continuation of last season's work.

4.21 The excavation at Sravasti (U.P.) that had been undertaken in collaboration with Research Institute, Kansai University, Japan to establish its relation with excavation at Jetvana is continuing.

4.22 The excavation at Barabati fort, Cuttack has brought to light remains of a palace, debris of a temple, a darbar hall, a citadel, a pillared hall and a platform. The work will be continued for one more season.

4.23 The excavation at Harappan site Dholavira, Distt. Gujarat has brought to light one more street and many residential structures, impressive gateway, net work of drainage, stamp seals and cemetery which lay in the South-West. The work is continuing during 1993-94.

4.24 A fresh excavation is proposed at Hinayana caves, near Jakhinwadi Caves in District Satara.

4.25 Excavation work at Taluk Hospet, District Bellary, Karnataka State brought to light remains of two rectangular palatial structures facing north and east. The work is in continuation of last season's work.

4.26 The excavation at Sannati has provided significant information pertaining to the general cultural sequence of the area. The work is in continuation.

4.27 In continuation of last season's excavation, the work is continuing during 1993-94 at Kolhua. Previous excavation of the site brought to light a cluster of votive stupas around the main stupa and Ashokan pillar Complex. A brick lined tank was also exposed fully to a shape of a Z at Kolhua District Muzaffarpur, Bihar.

## **TEMPLE & BUILDING SURVEY PROJECT**

4.28 The Archaeological Survey of India has three technical units for the survey, documentation and detailed study of architectural parts of historical studies of ancient temples of the North and South India and the project Officers are located in Madras and Bhopal respectively. At present the Paramara temples in Central India, Rajasthan and Gujarat and Chola temples in Karnataka are being surveyed by the above units respectively and the same work will continue for coming seasons also.

4.29 The functions of the Building Survey Project located in New Delhi is to survey, document and study the medieval buildings in India. Presently this unit has taken up the survey of buildings of Fatehar near Ahmedabad, Gujarat in view of the exquisite wooden structure, the houses, havelis of the area besides the survey of eastern Rajasthan and the monuments/buildings in and around Delhi.

## **MARINE ARCHAEOLOGY**

4.30 Archaeological Survey of India in collaboration with the Marine Archaeology Unit of National Institute of Oceanography carried out underwater archaeological operations at Dwaraka in Gujarat, Goa in west coast and Pompoohar in east coast. Three staff members of Archaeological Survey of India have taken preliminary training in National Institute of Oceanography.

## **EPIGRAPHY AND DISCOVERY**

4.31 Three hundred inscriptions have been collected from the States of M.P., Tamil Nadu, Karnataka and forty five inscriptions of Arabic and Persian from the States of West Bengal, Madhya Pradesh and Rajasthan have been copied so far. A total of 250 villages in the different States of the country have been surveyed till date.

## **AERIAL PHOTOGRAPHY**

4.32 Under Indo-US-Sub-Commission on Education and Culture, a work-shop on "Low Altitude, Large-Scale Reconnaissance" was held from 26.10.93 to 10.11.93 at Purana Quila. Staff members of Archaeological Survey of India participated in the work-shop. The workshop was organised under the guidance of two American experts viz. James W. Walker and Thomas Kent Hinckley of Brigham Young University, Utah, USA.

## **ANTIQUITY**

4.33 Considerable progress has been made in connection with implementation of the Antiquities and Art Treasures Act, 1972. Reports received from different parts of the country indicate that 2381 antiquities have been registered upto September, 1993. Thirty three meetings of the Expert Advisory Committee for export of non-antiquities were held in which 4333 objects were presented by the different parties for examination. Of these, 209 objects were identified as antiquities and the remaining 4124 objects as non-antiquities for which non-antiquity certificates were issued. In all, 13 appeal meetings upto September, 1993 were held for examination of objects detained as antiquities by the Customs, CBI, Police authorities as well as parties/firms. 406 objects were examined under the section 24 of the Antiquities and Art Treasures Act, 1972. Of these 188 objects were declared as antiquities. Eight temporary export permits for 8031 antiquities have been issued for display of antiquities in the exhibitions abroad. Five licences have been renewed.

## **SITE MUSEUMS**

4.34 The Museum Branch of the ASI looks after thirty one site museums located all over the country with its headquarters at Calcutta. It has four regional offices situated at Delhi (north), Sarnath (east), Madras (south) and Velha Goa (west). Organisational work of the galleries at Archaeological Museum, Gwalior (M.P.), Hazarduari Palace, Murshidabad Museum (W.B.), Archaeological Museum Ropar and Ratnagiri is in full swing. Setting up of site museum at Ranthambhor fort, Chanderi Museum in Chanderi town ship and Vellore have been approved. Proposal to construct a site museum at Singri hills, Assam has also been approved and is pending construction due to acquisition of land.

4.35 World Heritage Day (18.4.93) was celebrated at 14 monuments listed under the World Heritage list. Photographic Exhibition on monumental Heritage was organised at various places on this occasion. Special messages received from the President of India, Vice-President, the Prime Minister and the Minister of Human Resource Development in Hindi and English were prominently displayed at all the monuments.

## **INSTITUTE OF ARCHAEOLOGY**

4.36 Institute of Archaeology is a separate wing of the Archaeological Survey of India which provides necessary in-service training for the ASI personnel as well as prepare cadre of Archaeologists by training the young scholars in the field of Archaeological Research and field work.

4.37 During the year a camp at Kanyakumari (Tamil Nadu) was held to impart training in all aspects of structural conservation and chemical preservation of monuments and cultural property to the students of the Institute as well as 15 trainees from Archaeological Survey of India and the State Departments of Archaeology from Kerala, Tamil Nadu, Maharashtra, Andhra Pradesh, and Punjab.

4.38 A one week camp for the study of Vertebrate Zoology was organised at the College of Veterinary Sciences, Mathura for the students of session 1992-94. Eminent Scientist teachers taught and held practicals.

4.39 In order to promote academic research and dialogue, special lectures were arranged during the year in the Institute. Eminent speakers were Dr. G.Possehl, University of Pennsylvania, U.S.A.; Dr. M. Kenoyer, University of Wisconsin, U.S.A.; Prof. E.F.N. Ribiro, Secretary General, INTACH and Mrs. Upali Aparajit, Utkal University, Bhubaneshwar.

4.40 A study tour of Indian monuments, sites and museums was conducted as a part of the training for the benefit of the students of session 1991-93. Study tour of monuments, sites and museums of South India by the students of junior batch (session 1992-94) was also conducted.

## **CULTURAL EXCHANGE PROGRAMME**

4.41 During 1993-94, a team of two officials of ASI visited USA for undergoing training in Aerial Photography.

4.42 The Deputy Minister for Education and Culture in the Ministry of Human Resource Development visited Tokyo accompanied by Director General and another expert of ASI for participating in the Inter-Governmental Conference on the Safeguarding and Development of the Historic site of Angkor Vat.

4.43 A team of two experts of ASI attended the 5th SAARC Archaeological Congress at Maldives.

4.44 A senior officer of ASI visited Mongolia for preparing a preliminary report on conservation of the Monuments Bogdo Khan Palace Museum and Monastery in Mongolia.

4.45 Another expert of ASI visited Finland under CEP for participating in the South Asian Archaeology 1993 organised by the European Association of South Asian Archaeology and in connection with work relating to corpus of Indus Seals & Inscriptions Seals—Vol.3 which will be a joint publication of the ASI and the Finnish Academy of Science.

4.46 An expert has also been deputed to France for undergoing training in conservation research in Paris (France).

## **PUBLICATION**

4.47 During the period under review, printing of Excavations at Nagarjunakonda, Vol. II and Excavation at Bhagwanpur 1975-76 and other Explorations under Memoir series and Indian Archaeology 1988-89—A Review are in advanced stages of printing.



## CHAPTER 5

# MUSEUMS

## NATIONAL MUSEUM, NEW DELHI

5.01 The National Museum is a subordinate office under the Department of Culture. Main activities of the Museum during the year in the field of acquisition, exhibition, conservation, education and publications were as given in following paragraphs.

### EXHIBITIONS

5.02 A temporary exhibition of 126 selected *Masterpieces of Bharat Kala Bhawan* was organised in the National Museum. It was inaugurated on 11th March, 1993 by Km. Selja, Hon'ble Deputy Minister for Education and Culture.

5.03 A new gallery completely renovated and redesigned on *Tribal life style of North-East* was also inaugurated by the Hon'ble Deputy Minister for Education and Culture, Km. Selja on 11th March, 1993.

5.04 A Special exhibition on *Central Asian Art* was inaugurated by Hungarian Ambassador in India on March 21, 1993.

5.05 A special exhibition on 'Raja Ravi Varma' paintings, drawings, oleographs' was inaugurated by Hon'ble Prime Minister of India, Shri P.V. Narasimha Rao on 17th May, 1993 in the National Museum.

5.06 A special exhibition entitled 'Raga and Raginis in Indian Art' has been planned for opening in the National Museum during this year. This exhibition will be the first of its kind by virtue of the unique nature of its theme.

### CULTURAL EXCHANGE PROGRAMME

5.07 The National Museum is actively associated with 97 countries including U.S.A., UK France, China, Japan, Russia, etc. through the Cultural Exchange Programmes. Under the Indo-Mongolian



Cultural Exchange Programme, an exhibition titled 'The Path of Buddha' has been sent to Mongolia by the Indian Museum, Calcutta. On the request of Indian Museum, Calcutta, one relic casket and five pieces of holy relics were sent on loan basis, to be displayed during the period of the exhibition. This exhibition was sent in August and inaugurated on September 1, 1993.

## **INDO-US SUB-COMMISSION ON EDUCATION AND CULTURE**

5.08 Under this programme, National museum sent 16 stone Sculptures to Asia Society Gallery, New York (USA) for installing an exhibition titled "*Gods, Guardians and Lovers: Temple sculptures from North India (700-1200) A.D.*". In the month of October '93, this exhibition was shifted to Nelson Atkin Museum of Art, Kansas, USA.

## **SEMINARS**

5.09 A Symposium was organised in the National Museum on the life and contribution of Late Rai Krishna Das on 11th March, 1993. A workshop on India and Central Asia: Millenia of Contacts' was inaugurated by the Hungarian Ambassador in India on March 21, 1993.

5.10 The National Museum in collaboration with the Museums Association of India and the National Museum Institute, organised the 24th All India Museum Conference from 11th to 13th March 1993. It was inaugurated by Km. Selja, Dy. Minister for Education and Culture.

## **EDUCATIONAL ACTIVITIES**

5.11 24th short term In-service Training Course in Museology concluded on 1st February, 1993.

5.12 During the year, 8 guided tours, 4 film shows daily and one Gallery talk on every Wednesday were organised regularly.

5.13 25th Short-term In-service Training Course in Museology started in December, 1993.

## **PHOTODOCUMENTATION**

5.14 During the period, 6546 photo prints were supplied to the public, scholars, etc. About 1438 objects in black & white and 682 objects in colour were photographed. 1958 negatives were traced, 1075 negatives documented in General Negative Register and 605 new negative index cards were prepared in the photo section of the National Museum.

## **MODELLING SECTION**

5.15 During the period, 2130 raw cut were prepared, 2248 casts finished, 2095 coloured, 16 rubber mould and 6 master copy with Plaster Cast were prepared. With the fibre class, 156 raw cast were prepared, 155 cast finished, 153 cast coloured. 16 rubber mould and 3 master copy prepared during the year. Three new plaster casts from original sculptures were prepared for Comptroller and Auditor General's Office.

## **PUBLICATION**

5.16 Following publications were brought out during the year upto December, 1993.

- (a) Baburnama in Hindi
- (b) National Museum Bulletin No. 7 & 8
- (c) Newsletter No. 2



राष्ट्रीय संग्रहालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में राजा रवि वर्मा की चित्रकारी को देखते हुए  
माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री अर्जुन सिंह

Shri Arjun Singh, Hon'ble Minister for Human Resource Development, looking at the Paintings of  
Raja Ravi Varma in the Exhibition organised by the National Museum



मंगोलिया में आयोजित एक प्रदर्शनी में बुद्ध के पवित्र स्मृति-चिन्ह - भारतीय संग्रहालय  
Holy Relics of Buddha in an Exhibition organised in Mongolia - Indian Museum

1993-94



- (d) Brochure on Central Asian Art in English and Hindi
- (e) Brochures on tribal art gallery in English
- (f) Colour blocks of Rajasthani paintings book.

## **LIBRARY**

5.17 During the year, 513 books were added to the collection of National Museum Library. About 12000 readers availed of research and reference facilities in the National Museum Library.

## **CONSERVATION**

5.18 More than 400 objects of various type were given required conservation treatment during the year in the laboratory or else-where in the galleries or store and 528 others were under the process of treatment. 592 objects were examined either to prepare condition report before being sent for exhibition or to fix the priority of their treatment. Conservation laboratory staff carried out chemical cleaning, consolidation and preservation of 54 painting panels in Lok Sabha. Laboratory also carried out chemical cleaning & preservation of three objects received from Prime Minister's House, New Delhi. 246 objects of organic nature were fumigated against fungus & insect infestation. The collection of Rasaja Foundation & Indira Gandhi Art Centre were examined during the year and given necessary advice for upkeep of their art objects.

## **RESEARCH ACTIVITIES**

5.19 A project on scientific examination, documentation & authentication of Twelve Miniature Paintings was completed. Four stone and thirty two copper alloy objects were examined in detail and scientific documentation work on them were also carried out.

## **PHOTO DOCUMENTATION**

5.20 During the year, 1031 Negatives of the objects—before, during and after treatment, were prepared and 1472 prints of these were prepared. In addition, 24 X-rays and 234 slides were prepared.

## **OTHER MISCELLANEOUS WORK DURING 1993-94**

5.21 Minor treatment was given to 160 objects which were selected for Tehran Exhibition. In addition to this, they were thoroughly examined for publication of their condition report.

5.22 Conservation laboratory also examined and prepared condition report of 47 oil paintings of Shri Chitra Art Gallery, Trivandrum, selected for Raja Ravi Varma Exhibition held in National Museum during the year.

5.23 During the remaining period of 1993-94, the laboratory is likely to treat 250 objects, prepare the condition report of the objects likely to be received for proposed exhibitions and to identify and classify the slides.

# **NATIONAL MUSEUM INSTITUTE OF HISTORY OF ART, CONSERVATION AND MUSEOLOGY, NEW DELHI**

5.24 The National Museum Institute of History of Art, Conservation and Museology, New Delhi, set up by the Govt. of India under the administrative control of the Department of Culture, is a

Society registered with the Registrar of Societies, Delhi under the Societies Registration Act XXI of 1860. It started functioning from Jan. 1989. On the recommendation of the University Grants Commission, the Institute was declared 'Deemed to be a University' on 28th April, 1989 by the Department of Education, Ministry of Human Resource Development, New Delhi. A brief account of the programme and activities undertaken during the year under report is as under :

## **CLASSES AND STUDENTS**

5.25 Classes for the new semester started from the 12th August, 1993. Various new students were admitted to different courses. A certificate course through Hindi medium entitled "Bhartiya Kalanidhi" was started from March, 1993.

## **TEACHING PROGRAMME**

5.26 Classes for M.A. and Ph.D. were held six days a week. Eminent scholars, both Indian and foreign, in the field of History of Art, Conservation and Museology were invited to deliver lectures, to conduct seminars and to supervise Ph.D. Dissertations.

## **CONVOCATION**

5.27 The Second Convocation of the Institute was held in April, 1993 and 9 students were awarded Post Graduate Degrees in different disciplines. 80 students were awarded certificates in 'Indian Art & Culture' and 69 in Art Appreciation Courses.

## **SLIDE LIBRARY**

5.28 The teaching in the Institute is invariably supported by slide illustrations and other audio-visual aids. The Institute, therefore, got prepared a number of slides, in colour and black and white and placed them in Slide albums and boxes.

## **PURCHASE OF LAND**

5.29 The New Okhla Industrial Development Authority (NOIDA) have earmarked three acres of land for the Institute and the land is likely to be taken over during this year.

## **SALAR JUNG MUSEUM, HYDERABAD**

5.30 The Salar Jung Museum, together with the Salar Jung Library at Hyderabad was declared an Institution of National Importance by the Salar Jung Museum Act No. 26 of 1961. It is managed by the Salar Jung Museum Board constituted under the Act. The main functions of the Museum are collection, documentation, preservation and interpretation of the cultural and artistic wealth of the Museum. The Museum also arranges temporary exhibitions, seminars, lectures and various other educational and cultural programmes with a view to educate and enlighten the general public. The Museum is a fully financed autonomous organisation under the Department of Culture.

## **MOBILE EXHIBITION**

5.31 A mobile exhibition on "Monuments of Hyderabad" visited 40 educational institutions and 24,399 students witnessed the exhibition during 1992-93. From April-September 1993, the Mobile exhibition continued and visited 26 educational institutions and 16,302 students witnessed this feature.

## **SEMINAR**

5.32 A two day Seminar on "Hyderabad-Historical and Cultural Perspective" was organised during August, 1993 in which 20 scholars participated.

## **PUBLICATION**

5.33 Following publications were brought out by the Museum during the year :

1. *Guide to Salar Jung Museum (in Hindi)*
2. *Catalogue of Persian Manuscripts Vol. X (during 1992-93).*
3. *Catalogue of Arabic Manuscripts, Vol. VII.*

## **CHILDREN'S WEEK**

5.34 Competitions in Essay writing and Elocution in four languages viz., Hindi, Telugu, Urdu and English and Drawing competitions were conducted as a part of Children's Week for school and college students during this period. In all 645 students participated in the competition.

## **MUSEUM WEEK**

5.35 A Museum Week was celebrated from 8th to 14th January, 1993. Besides, hand-outs in four languages on five galleries viz., Founder's Gallery, Metalware Gallery, French Art, Clocks Gallery and Manuscripts Gallery were distributed to the visiting public. Rangoli competition exclusively for ladies was conducted on 13th January, 1993. In all 95 ladies of different age groups participated in the competition.

## **MANUSCRIPTS**

5.36 The officers of the Manuscripts Section have physically verified 6592 manuscripts (Arabic, Persian and Urdu) and 551 manuscripts have been catalogued. Assistance was provided to 434 scholars during the year. The staff also prepared 960 classification cards, fumigated 552 manuscripts and 10,127 folios of 55 manuscripts were microfilmed. Index for 1358 Urdu History manuscripts and 219 labels were also prepared by the staff of Manuscript Section.

5.37 Government, during the year, set up a Stock Verification Committee to verify various objects. During April to September 1993, officers of the Manuscripts Section physically verified 1043 loose calligraphic panels, prepared 195 classification slips for Arabic and Urdu manuscripts, made 1299 entries for preparation of Index of authors, fumigated 281 manuscripts and assisted 188 scholars.

## **CONSERVATION LABORATORY**

5.38 During the year, 2422 art objects including Miniature paintings, were chemically treated by the conservation laboratory staff and the picture restorer restored 20 oil paintings.

## **INDIAN MUSEUM, CALCUTTA**

5.39 Indian Museum, Calcutta is a statutory body fully funded by the Department of Culture, Ministry of Human Resource Development. It is one of the premier museums in the country established under Indian Museums Act, 1910 (Act 10 of 1910). Its Board of Trustees is headed by the Governor of West Bengal in ex-officio capacity. Major activities of the Indian Museum during the year under various schemes are given in following paras.

## **RECENT ACQUISITION**

5.40 During the year, a 10th centenary Chola Bronze image of Nataraja, a stone sculpture of Vishnu

belonging to Pala Sena School, a painting by Abanendranath as well as a decorated sword of the Nataraj family were acquired by the Museum. The Nataraj and Vishnu images, since seized by the custom authorities and later on deposited in the custody of the Archaeological Survey of India, were gifted to the museum by the Archaeological Survey of India. A few of the recent acquisition were displayed as exhibit of the month.

## **LECTURE UNDER MASS EDUCATION PROGRAMME**

5.41 During the period, 55 lectures were arranged by the Museum in connection with training course, short course, as well as special lectures. Dr. Pratap Chandra Chunder, Former Union Education Minister delivered this year's Calcutta Lecture 'Calcutta and growth of Nationalism' on 24th August, 1993.

## **EXHIBIT OF THE MONTH**

5.42 During the period, a good number of exhibits of the month were arranged on Decorated Burmese Bowl, Nataraja and Costumes of Bhutia Lepcha Tribes and other themes of contemporary interest. Besides, following exhibitions were organised :—

- (a) Exhibition on Buddhist Art in Mongolia;
- (b) Exhibition on the way of Buddha in Singapore;
- (c) Holy Relics of Buddha in Mongolia;
- (d) Temporary exhibition on Roman Antiquities in India.

## **ALLAHABAD MUSEUM, ALLAHABAD**

5.43 The Allahabad Museum was founded in 1931 by the Allahabad Municipal Board. It was formally handed over by the Allahabad Museum Corporation to Allahabad Museum Society on 29.11.86. It is registered as an Autonomous Body fully funded by Government of India.

5.44 During the year under report, the museum organised a number of seminars, lectures and workshops. It also organised new exhibitions in 5 galleries. It is for the first time that all the galleries of the museum are open to public.

## **LIBRARY**

5.45 The Museum has an airconditioned library which attracts scholars and art critics from every nook and corner of India. The popularity of the library is growing with the passage of time. The library acquired 413 books and 12 periodicals during the period under report. The library is preparing to issue 'List of Additions' for the benefit of scholars and institutions. Cataloguing and classification work has been taken up to serve the readers better.

## **CONSERVATION LABORATORY**

5.46 About 550 sheets of manuscripts were consolidated and laminated during the year. 23 stone sculptures were chemically treated. 2 terracottas were cleaned chemically and conserved. Reserve collections of various sections were inspected and some items were fumigated.

## **REPROGRAPHY LABORATORY**

5.47 The Reprography Unit made noticeable progress during the period under report. Over 1500 terracotta figures and figurines were documented. The Unit also covered various activities and programmes of the Museum.

## **VICTORIA MEMORIAL HALL, CALCUTTA**

5.48 The Victoria Memorial, a museum with special reference to medieval and modern Indian history & culture, is an autonomous institution governed by a Board of Trustees under the Chairmanship of the Governor of West Bengal and the aegis of the Department of Culture, Government of India. An institution of National Importance, the Memorial houses a very fine collection of paintings, sculptures, weapons, manuscripts, documents, maps, coins, stamps, textiles, artifacts and various other memorabilia of the Raj and the Indian response to it.

## **NATIONAL GALLERY OF MODERN ART, NEW DELHI**

5.49 The National Gallery of Modern Art (NGMA) is basically a repository of our contemporary visual art, representing three phases : (i) the later part of the 19th Century (ii) the first half of the 20th Century and (iii) the second part of 20th Century. The Gallery has a sizeable collection of over 13,000 works of art consisting of Paintings, Sculptures, Graphics and Prints. Every year about 200 works are added to the collection through purchases.

### **EDUCATIONAL PROGRAMMES**

5.50 During the period, 38 school groups consisting of 1534 students, accompanied by teachers visited the NGMA. In addition, teacher groups consisting of 378 teachers visited the Gallery. The matter of acquiring a 50 seater bus to bring the students from schools and send them back, where conveyance facilities has not been provided, is under consideration.

### **ART SKETCH CLUB**

5.51 25 Sketch Club meets were arranged for two different age groups : Junior and Senior. They were given on the spot practical guidance by visiting reputed artists.

### **FILM SHOWS**

5.52 165 film-shows were arranged on Sundays, Second Saturdays and working days. The proposals are under process for purchasing 8 more films.

### **ART REFERENCE LIBRARY**

5.53 During the period, in addition to routine subscribed Indian and foreign journals and dailies, 104 art books were added to the library. 625 readers including art scholars consulted the Library. Clippings on art-news continued to be preserved regularly.

### **ART APPRECIATION COURSES**

5.54 Two courses consisting of 32 illustrated lectures on Indian Contemporary, Modern and International Art were conducted during the period. An advanced course in Art Appreciation comprising 60 lectures was also introduced during the year.

### **RESTORATION LABORATORY**

5.55 During the period, 11 works of art were restored and 50 works were examined. Condition report was prepared and works fumigated.



## **PUBLICATION**

5.56 One colour folder on the gallery was published during the year. The work on printing of the catalogue of the collection of the NGMA, Vol. II and printing of monographs on three eminent Indian Artists is under process.

## **ART COLLECTION**

5.57 In addition to the normal work of purchasing the art objects, the Gallery organised exhibitions of "Four Pioneers" and "New Acquisition" from its collection. The Gallery has taken up the work of production of art films on its collection and mounting and framing of art objects.

## **PRODUCTION OF ART FILMS**

5.58 Production of three art films namely (i) Official art forms (ii) Bengal Renaissance and (iii) Four pioneers, were assigned to M/s Suhasini Muley, Sarbjit International and Debabrata Roy respectively. Out of these three, two films have already been completed as reported by the producers. The third one "Official art forms" is in progress.

## **PHOTO STUDIO**

5.59 150 negatives, 176 black & White and colour photographs and 254 colour slides were prepared.

## **COMPUTER CENTRE**

5.60 A Computer Centre has been established in the Gallery where the data entries for all the art objects have been completed. The colour scanning is in progress.

## **C.P.W.D. WORK**

5.61 The entire Gallery is being air-conditioned on both the floors, including reserve collection, and a lift for the disabled is also under installation.

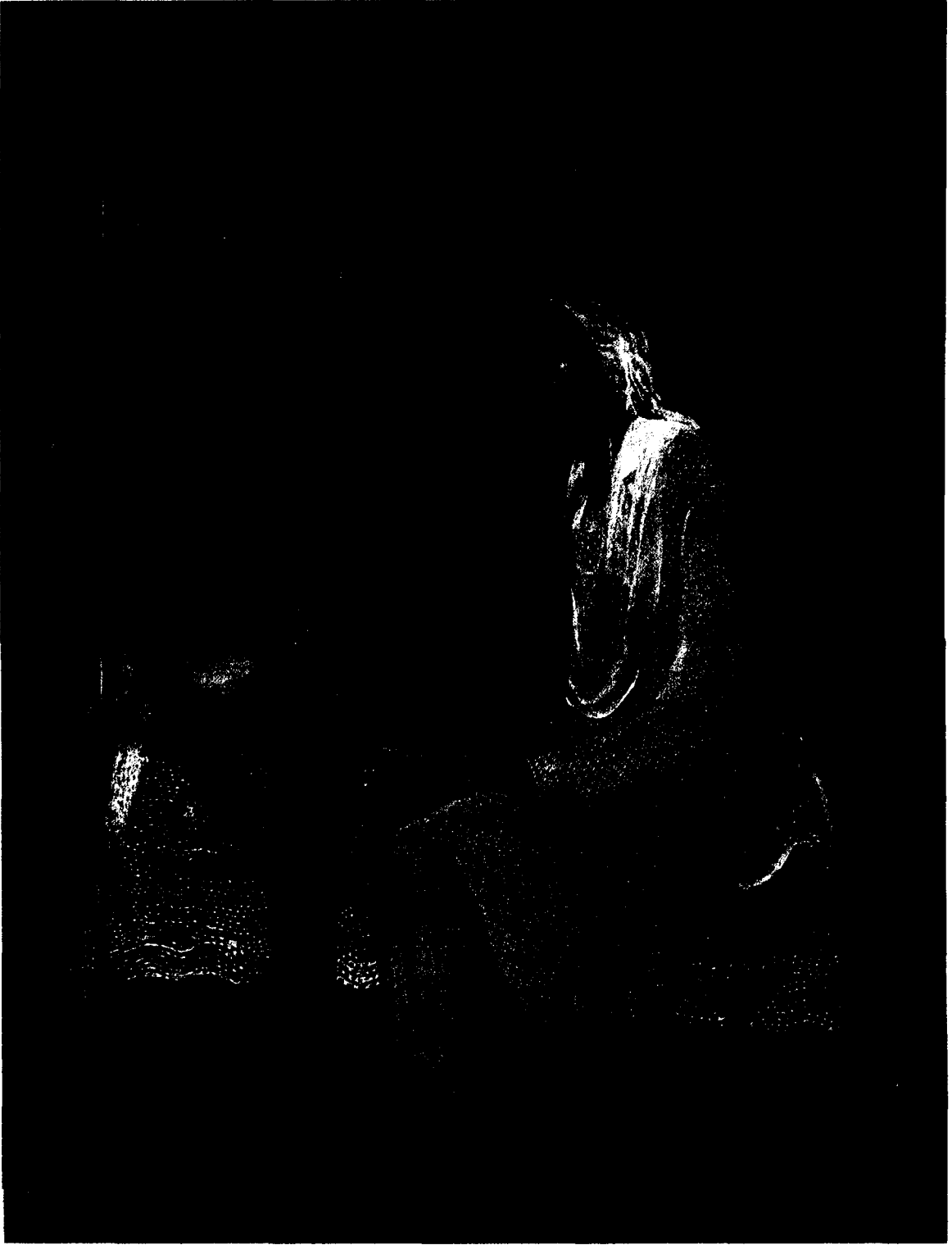
## **EXHIBITIONS**

5.62 During the period under report, one exhibition consisting of 75 paintings from the collection of NGMA has been sent to Damascus (Syria) accompanied by a Technical Expert. After showing there, the exhibition will be sent to Cairo and Alexandria in order to celebrate "Days of Indian culture in Egypt".

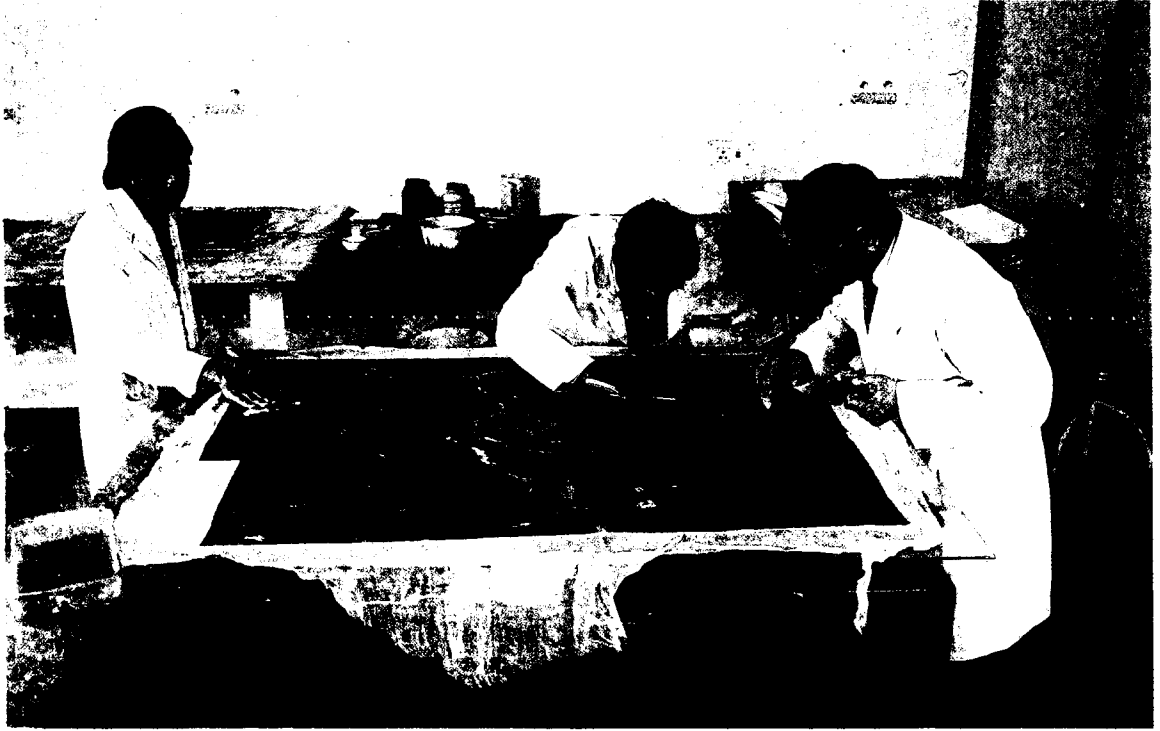
5.63 Under the In-coming exhibitions, an exhibition on the works of Shri Ram Kumar has been organised at the NGMA during the year. Another exhibition of Contemporary Egyptian art has been inaugurated by the Hon'ble Minister for Human Resource Development in December 1993, under the Indo-Egyptian Cultural Exchange Programme.

## **NEHRU MEMORIAL MUSEUM AND LIBRARY, NEW DELHI**

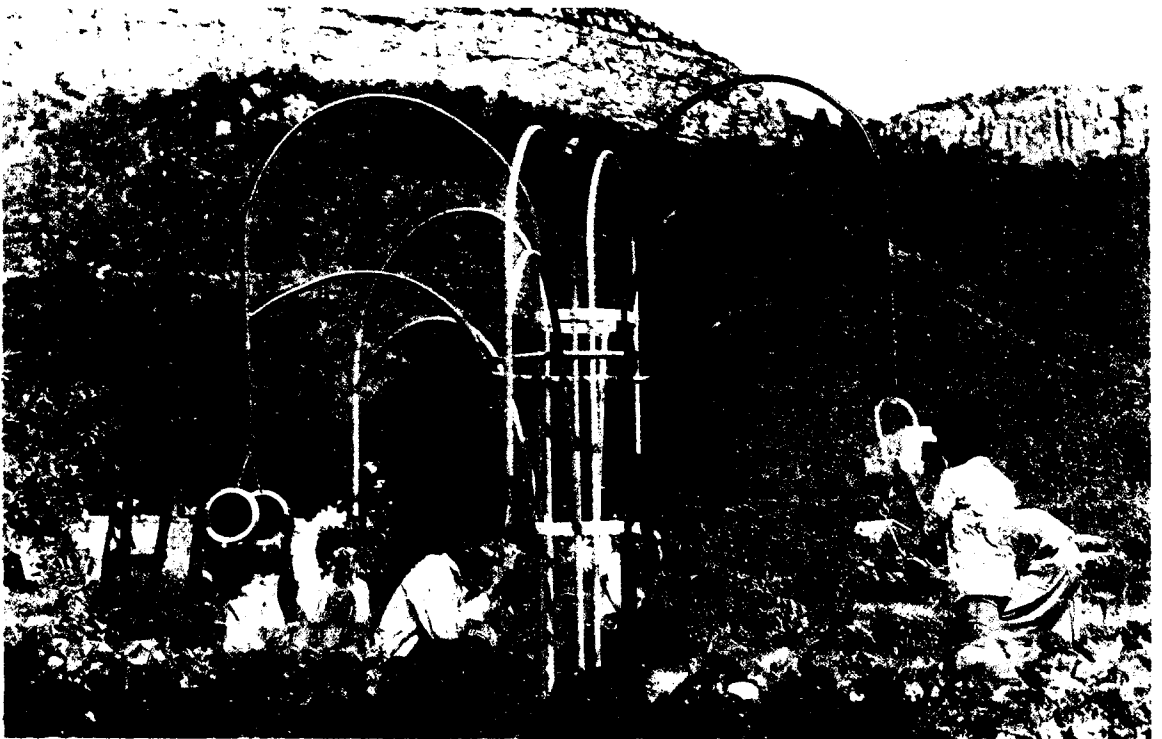
5.64 The Nehru Memorial Museum and Library maintains: (i) a personalia museum which focuses on the life of Jawaharlal Nehru and the Indian struggle for freedom; (ii) a library of printed materials, books, periodicals, newspapers and photographs bearing on the history of modern India; (iii) a repository of unpublished records of institutions and private papers of eminent Indians, which provide original



अंजोली इला मेनन की चित्रकारी - माताजी, 1983 - राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय  
Painting by Anjolie Ela Menon - Mataji, 1983 - NGMA



एक भित्ति चित्र के संरक्षण-कार्य में लगे राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा संरक्षण अनुसंधानशाला, लखनऊ के वैज्ञानिकगण  
Scientists of NRLC, Lucknow in the process of Conserving a Wall Painting



विज्ञान केन्द्र, तिरुपति में विज्ञान पार्क प्रदर्श-ऑप्टिक ट्री  
Science Park Exhibit - Optic Tree - At Science Centre, Tirupati

material for historical research; (iv) a reprography unit for microfilming old documents, records and newspapers; (v) an oral history division for supplementing written records with the recollections of men and women who have taken part in public affairs; and (vi) a centre for research.

5.65 The museum which illustrates through visual materials the life and times of Jawaharlal Nehru continued to be the focus of interest for the visitors from India and abroad. During the period under report, more than 3.71 lakh visitors came to the Museum. It also continued to figure prominently in the itinerary of dignitaries visiting the capital from India and abroad. During the year most prominent visitors from abroad were a deligation led by Director, Ministry of Education and Culture of Israel, Mexican Parliamentary Delegation and a Nepalese Delegation.

5.66 The Library, which focuses upon modern Indian History and social sciences contined to grow in holdings as well as in the quality of its services. Two thousand four hundred and ninetyone books were added to the existing stock upto the end of September 1993 which now stands at 1,76,321. The titles in the Nehruana collection have gone upto 1,346, the Gandhiana stood at 1836 and the Indirana at 311 titles. The Photo Section of the library raised its collection of photographs to 85,387.

5.67 Collections in the Archives continued to record further additions. Some of these were; Mahatma Gandhi (1935-48, 1975), Indira Gandhi (1960-84), Rajiv Gandhi (1984-91), D.S. Kothari (1931-93), S.P. Mukherjee (1936-46). Bhagwat Dayal Sharma (1941, 1951-84), Dr. Gopal Singh (1961-90); B.G. Kher (1903-57, 1961), S.P.P. Thorat (1920-22), K.B. Antrolkar (1930-79), Ram Manohar Lohia (1945) Madhu Limaye (1991-93), Danial Latifi (1930-83), Sajal Basu (1970-93), E.S. Reddy (1911-93) and Uma Shankar Dikshit (1942-90). The collections anticipated to be acquired up to March 1994 include All India Women's Conference, Senapati Bapat, P.C. Sen, S.K. Wankhede, Giri Lal Jain, Jainendra Kumar Jain, Yas, Annasaheb Shinde, Yash Pal Kapoor, Biren Roy and speeches of Jawaharlal Nehru from Madras Archives. The Oral History Division recorded 70 sessions of interviews bringing total number of persons interviewed to 1094 and sessions recorded to 3,800.

5.68 The Reprography Unit augmented the Library's microfilm collections for research and reference and prepared approximately 1,00,969 frames of 35 mm, 38400 frames of 16 mm negative microfilm of newspapers, journals and private papers. These include 2nd and 3rd instalment of Mahatma Gandhi Papers.

5.69 The unit also prepared 13,115 meters of positive microfilms; 1044 negatives of old photographs, 1064 photographs; 14,902 hard copies from microforms; 1,29,476 xerox copies were prepared for record as well as for supply to scholars and other institutions.

5.70 The Preservation Unit continued to render useful services in respect of repair and rehabilitation of valuable documents in the area of scholarly researches in history and in social sciences. The Musuem arranged 12 seminars/lectures on the themes relevant to the understanding and transformation of Indian Society. The Institution also organised two discussions on the themes (i) "Peace and Disarmament" with the Chinese delegation of the Chinese People's Association for Peace and Disarmament; (ii) "Challenges to Indian Nationalism and Indian Unity Today". A three day seminar on "State, Ideology and Civil Society" was also organised on the occasion of the birth centenary of the renowned Italian political thinker Gramsci.

## **NATIONAL COUNCIL OF SCIENCE MUSEUMS, CALCUTTA**

5.71 The National Council of Science Museums (NCSM), an autonomous organisation under the Department of Culture, is primarily engaged in the task of popularising Science and Technology among students in particular and the masses in general through a wide range of interactive programmes and activities.

5.72 NCSM administers and manages the following science museums/centres/park, countrywide :

(a) Birla Industrial & Tech. Museum (BITM), Calcutta.

- (b) Visveswaraya Industrial & Tech. Museum, Bangalore.
- (c) Nehru Science Centre (NSC), Bombay.
- (d) Rajiv Gandhi National Science Centre, Delhi (NSCD).
- (e) Central Research & Trg. Laboratory (CRTLK), Calcutta.
- (f) Srikrishna Science Centre, Patna.
- (g) Regional Science Centre, Lucknow.
- (h) Regional Science Centre, Bhubaneswar.
- (i) Raman Science Centre, Nagpur.
- (j) Regional Science Centre, Guwahati
- (k) Regional Science Centre, Bhopal.
- (l) Regional Science Centre, Tirupathi.
- (m) Regional Science Centre, Calicut.
- (n) District Science Centre, Purulia.
- (o) District Science Centre, Gulbarga.
- (p) District Science Centre, Dharampur.
- (q) District Science Centre, Tirunelveli.
- (r) Sub-regional Science Centre, Dhenkenal (Orissa).
- (s) Science Park, Kapilas (Orissa).
- (t) District Science Centre & National Students Science Camp. Digha.
- (u) Hall of Science, Technology & Environment (HOSTE), Delhi.

### **RAJIV GANDHI SCIENCE CENTRE AT MAURITIUS**

5.73 During the year the NCSM prepared a project proposal for development of full-fledged science centre in Mauritius on turn-key basis. The proposal having been accepted in full, the work on the project is in steady progress. All the exhibits to be supplied are being conceptualised and developed in different units of NCSM.

### **SCIENCE CITY AT CALCUTTA**

5.74 A Science City is being set up and planned as a major attraction to the residents of Calcutta as well as national and international visitors to the metropolis. Set in a 40 acres plot of land at the junction of the Eastern Metropolitan Bypass and Park Circus Connector, Science City will be one of the largest and finest in the world, presenting science and technology.

5.75 During the period under report, the NCSM laid particular stress on planning of new exhibits

for exhibition in the permanent galleries of the Museums/Centres, commissioning of new galleries and setting up of new Centres. A special thrust was given to the popularisation of the concept of School Science Programmes.

## **NATIONAL RESEARCH LABORATORY FOR CONSERVATION OF CULTURAL PROPERTY, LUCKNOW**

5.76 National Research Laboratory for Conservation of Cultural Property is a subordinate office under the Department of Culture established in 1976 to carry out research and conservation, training, library and documentation in the field of conservation and also to provide technical assistance to museums, archeological departments and others.

### **CONSERVATION**

5.77 The Laboratory is being regularly requested by museums and other institutions for the conservation and restoration of their objects. During the year, the Laboratory preserved various objects including 200 pages of *Panch-Ratni-Geeta* received from Archaeological Museum of Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi; 2 oil paintings on plywood from Sheela Agrawal, Allahabad; 9 metal objects from Thanjavur ART Gallery, Thanjavur, 3 stone sculptures and 6 Burmese paintings from State Museum, Lucknow; 18 miniature paintings and 10 coins from Ram Katha Sangrahalaya, Ayodhya, Dist. Faizabad; 2 oil paintings from Light Infantry, Faizabad; 2 oil paintings and 1 ceramic plate from Light Infantry, Faizabad; and 1 book from Dogra Regiment, Jabalpur.

### **LIBRARY AND DOCUMENTATION**

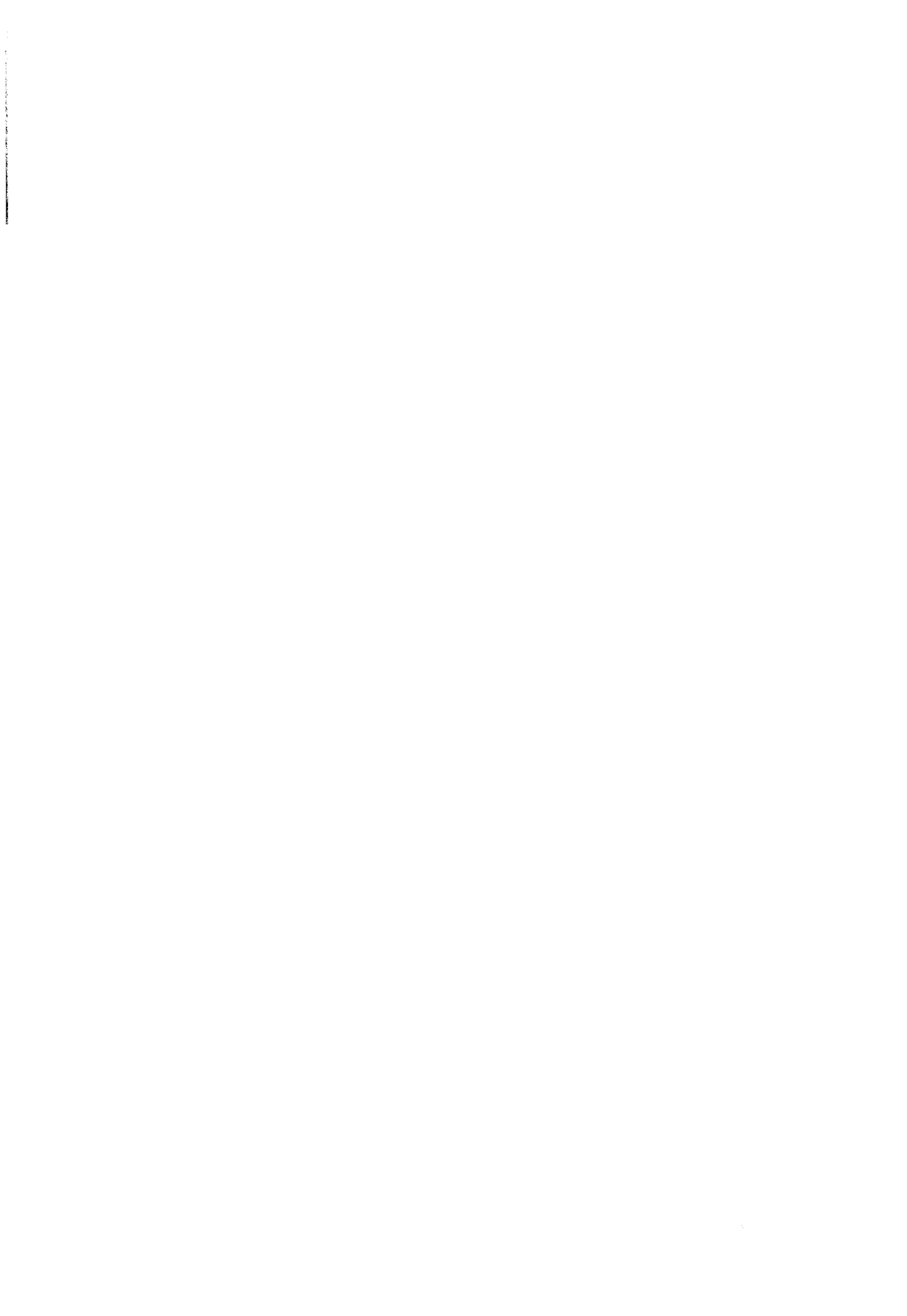
5.78 During the year, upto December, 620 books were acquisitioned & accessioned, 300 issues of periodicals were received and accessioned, 100 micro-fisches were got printed through Micro-fische Reader Printer, and a list of periodicals received in the Library as on 30th December, 192 was compiled.

### **PHOTO DOCUMENTATION**

5.79 Three photographic exhibitions were organised by the Laboratory and the following photo documentation was done Black & White Art Objects-1250 exposures; Colour prints-1000 exposures; Colour slides-700 exposures; Photo Prints and Enlargements-2100.

### **PROMOTION AND STRENGTHENING OF REGIONAL AND LOCAL MUSEUMS**

5.80 As there was no scheme under the Department of Culture to assist establishment of Regional Museums in our country, which could provide for representation of Cultural aspects of other States of Indian Union, a proposal to start a new scheme was moved by the Department. The Working Group on Culture for the 8th Five-Year Plan constituted by the Planning Commission had approved the above proposal. As such this new scheme is to be followed and developed in the 8th Five Year Plan.



# INSTITUTIONS OF ANTHROPOLOGY & ETHNOLOGY

## ANTHROPOLOGICAL SURVEY OF INDIA, CALCUTTA

6.01 The Anthropological Survey of India is a scientific research organisation under Department of Culture, Ministry of Human Resource Development. Since its inception in 1945, the Survey has been carrying out researches on bio-cultural aspects of Indian population. The thrust of its research is given priority in accordance with the trends and development of contemporary anthropological issues as well as by the guidelines and objectives outlined by the National Planning Authorities.

6.02 After successful accomplishment of operational aspects including preparation of reports and abstracts on the Plan Project "People of India" the Survey during the period under report, has initiated steps for its publication. In order to achieve the target within scheduled time frame the publication material has been placed to the Oxford University Press and a Consortium of Publishers, specially constituted with the reputed publishers from different parts of the country. The entire gamut of information that has been generated under this project has resulted in the production of 43 volumes of which 11 are National and 32 State series. Four volumes have already been published, the remaining 39 volumes being in various stages of publication. The publication process including editing of reports, final checking and verification of data, incorporation etc. is being carried out under close supervision. Besides, several rounds of meetings have been organised at Calcutta with the in-service scholars to oversee the material on glossary and related matters, as well as to discuss the People of India material on segments, quantitative data etc. Four volumes have been finalised for publication on Basketry, Domesticated Animals, Occupation and Food Habits, information for which was collected under the Project "All India Material Trait Survey". Editing of volumes (i) The Ram Katha in Tribal and Folk Tradition in India (ii) The Mahabharata in Tribal and Folk Tradition, (iii) Tribal Ethnography, Customary Laws and Change and (iv) Anthropology of Weaker Sections, was done and arrangements made for their publication. All the volumes have been brought out except the volume on the Mahabharata which is expected to be released shortly.

6.03 Adequate steps have also been initiated for the implementation of other Plan projects. Several field investigations were undertaken in various parts of the country to collect fresh data. The information



generated was analysed and **phased reports have** been prepared. Two field projects **taken up** by the Ranchi Field Station, namely, Jharkhand Movement and its **Documentation and Anthropological Study of Ranchi Town** have made satisfactory progress.

6.04 Two collaborative programmes were also launched, one with the Place-Name Society of India, Mysore and the other with the Centre for Ecological Sciences, Indian Institute of Science, Bangalore. The collaboration with the Place Name Society has been sought to implement the Survey's Plan project Anthropological Study of Place Names and Personal Names. Computer format of this project has been finalised and is being canvassed for pre-testing. It has also been arranged in collaboration with the Centre for Ecological Sciences to treat the **quantitative data of the People of India project** for multivariate analysis **at the level of segments, districts and States**. This would also include micro level analysis of data on other dimensions of anthropological variation of Indian population, collected from secondary sources.

6.05 As a part of dissemination activities, the Anthropological Survey of India organised an exhibition at Sub-regional Centre, Jagdalpur on the occasion of **Dusseera Festival**. It has also participated in the exhibition "Island on the March" organised by the Andaman Administration at Port Blair. Besides, it arranged exhibition on the occasion of Sishu Utsav at Birati, 24-Parganas; Midnapore Fair at Midnapore; 80th Annual Conference of the Indian Science Congress Association at Goa and Annual Conference of Akhil Bharatiya Adibasi Bikash Parishad at New Delhi.

6.06 The publication wing of the Survey brought out eight books and two issues of House journal. Besides, number of papers were published by the Members of the Survey in various journals published from India and abroad.

## **INDIRA GANDHI RASHTRIYA MANAV SANGRAHALAYA, BHOPAL**

6.07 The Indira Gandhi Rashtriya Manav Sangrahalaya (IGRMS), an autonomous organisation under Department of Culture, Government of India is dedicated to depiction of the story of humankind in time and space. The Sangrahalaya being developed on holistic approach of general anthropology is preparing an open-air complex. Alongside, it is also setting up indoor galleries etc. Following paras give, in brief, the programmes and activities carried out by the Sangrahalaya during 1993-94

### **EXHIBITIONS**

6.08 **Tribal Habitat**, an open air exhibition presenting the cultures of tribal people, spread over in about 40 acres of a picturesque landscape, was added with two new exhibits namely: the dwelling types of Bhil people of Madhya Pradesh, *Karbi* people and dwelling type of *Zemi Naga* people of Assam. The dwelling complex of a nomadic hunting gathering tribes was also prepared.

6.09 Two other permanent open air exhibitions namely *Coastal Village*, a holistic presentation of cultures from the coastal area, and *Rock Art Heritage* which is a presentation of prehistoric painted rock shelters were further developed during the year. All the open air exhibitions have become popular and thousands of visitors come to see these exhibitions.

6.10 An international exhibition on tribal arts, *Eternal Voyage* was prepared during the year. This exhibition has received exhibits from 8 countries.

### **OPERATION SALVAGE**

6.11 This programme is aimed at preservation of anthropological objects heritage by way of collection, multi media documentation and research in such areas and themes, as requiring urgent action. During

the year, a 16 m.m. video film is being prepared on documentation of prehistoric rock paintings of middle India. The film is likely to be completed by the end of financial year. Another 16 m.m. film being made is a documentation of life styles of *Hill Korwa* people, a primitive tribal group from eastern Madhya Pradesh.

6.12 The Video unit of Sanskritayana. Completed a U-matic high band Video coverage on traditional floor drawings of Madhya Pradesh. This coverage was later edited in the form of a video documentary.

6.13 Field work was carried out during the year for collection of objects from different parts of country, for display in house-types constructed in the open air exhibitions and to enhance the museum's reserve collection. About 750 objects were collected from Kinnar, Rabari, Banjara, Bhil, Kalabeliya, Garasia, Warli, Gamit, Lotha, Angami Naga, Zemi Naga, Ao Naga, Munda, Bhatra, Dhurwa, Gond, Oraon, Ho, Santal, Bhoti, Saora and Rathwa tribes.

6.14 Collaborative projects in area of pre-history, viz. (a) Taphonomy and Palaeo-ecology of quarternary fossils from Central Narmada Valley and (b) Excavation of upper Palaeolithic site of Mehtakheri and further exploration in Nimar region are likely to be completed during the year 1993-94.

## MUSEUM EDUCATION

6.15 The IGRMS provide in-formal education through guided tours to exhibitions and also through special education programmes. During the year, guided tours were arranged for general public and institutions, sponsored groups of students, trainees from organisations related with tribal development & Public administration etc. A special programme of demonstration to learn pottery technique was also organised in which students were registered for one month practical, learning and demonstration on the pottery techniques of Azamgarh area.

6.16 A programme on living Indian traditions of pottery and terra-cotta, comprising of potters meet, a workshop and a symposium named "Pandav, 93" was organised during the year in which over 40 potters from different parts of India participated and demonstrated their traditional techniques. A 10 days workshop was also organised & attended by 15 students from the fields from ceramic, terra-cotta, fine arts, sculptures etc. and 10 pottery/ceramic experts. Thousands of visitors witnessed this programme, which also fetched about 500 terra-cotta objects to Museum.

6.17 Under the programme of live presentation of aspects of traditions, this year the museum organised music concerts in the programme series *Poonam* featuring Pt. Hari Prasad Chaurasia's Flute Recital, Vocal performance by Smt. Subha Mudgal, Veena recital by Smt. Suma Sudhindra and Tal Vadhya Kacheri by the Tal Taringini group from Bangalore. Two plays were also enacted in the museum premise in which *Jagar Magar Andher Nagar* was adopted from a play written by Shri Bharatendu Harishchandra and *Volga Se Ganga* was dramatised from a novel of the same name by Rahul Sanskritayana. The later was in commomeration of birth centenary of Shri Sangrahalaya.

## MULTI-MEDIA LIBRARY

6.18 The multi-media library of the museum houses the reference library and video cine collection of Sangrahalaya. The reference library added 275 new books, 286 volumes of foreign journals and 288 volumes of Indian professional journals to its collection this year. It also provided reference and reprographic services to museum staff, students and scholars.

6.19 The Video cine unit under took field work for U-matic video coverage of *Chowk-Maandane* in Malwa, Nimar, Chhatisgarh, Bundelkhand, Mahakaushal, Baghelkhand cultural areas of M.P. The unit also video documented the academic and artist meet held at Ganjad and Bhandghar in Maharashtra and Patangarh in Mandla, Madhya Pradesh. The lifeways of people was also documented during these field works. The unit also documented and did coverages of programmes and activities held in Sangrahalaya.

## **MUSEUM POPULAR LECTURE**

6.20 Museum Popular Lecture towards dissemination of recent information on various themes in human evolution, prehistory and temporary culture, museum methods etc. were organised by the IGRMS under museum popular lecture series.

## **SYMPOSIUM**

6.21 In view of its abiding interest in projecting the people perspective, the IGRMS organised a symposium during the year on the *peoples perspective in visual anthropology*. This symposium was attended by over 40 anthropologists, scholars and cinema makers who had prepared documentaries on tribal and rural people.

## **INTERNATIONAL MEET ON TRIBAL AND ANALOGOUS PEOPLE**

6.22 The Sangrahalya is organising *Eternal Voyage*, an International Meet on International Meet of Tribal and Analogous People during 1993 in museum premises. This event will have a exhibition on creative arts, colloquia, group discussions, presentation of cultural programmes, crafts demonstration and screening of films on tribal populations. Preparations are on in full swing to hold this meet. Other than participants from all over India, representative from about 20 countries have confirmed their participation. Exhibits are also being sent by about a dozen countries.

6.23 For the purpose, over 250 works of art have been prepared by tribal artists in workshops organised in museum premise and at artist camps held at Patangarh in Mandla, Madhya Pradesh and Ganjad, Maharashtra. About 150 works of art have been received from museums of Tribal Research Institutes in Madhya Pradesh, Bihar, Nagaland, Orissa and Maharashtra. These works will be exhibited in the International Exhibition.

## **LITERATURE IN TRIBAL LANGUAGES**

6.24 The IGRMS is currently undertaking a project on collection, analytical appraisal and multimedia documentation of literature in tribal languages. Over 3500 literary works on various tribal languages have been collected. Preparation of gist on these literature are in progress. Group discussions, centered on Kurux, Mundari, Khadia and Santali languages were organised at New Delhi which were attended by poets, writers and scholars in these languages. Group discussions were also organised at Mysore, Ranchi and Manipur.

## **COLLOQUIA & ACADEMIC MEET**

6.25 An Academic meet on *cultural heritage of tribal people* was organised at Ooty, Shillong, Guwahati, Vardhman, Bhubaneswar, Ganjad and Bandhgarh Dahanu (Maharashtra), Hataguda (Andhra Pradesh), Komalathavi and Imphal (Manipur).

## **OTHER ACTIVITIES**

6.26 The Photo Unit, Curatorial Wing, Graphic Unit, Conservation Unit, Public Relations Unit and Computer Unit of the IGRMS also continued with their activities and provided support for implementation of various projects/schemes of Sangrahalaya during the year.

# ARCHIVES & RECORDS

## NATIONAL ARCHIVES OF INDIA, NEW DELHI

7.01 The National Archives of India (NAI) is the custodian of non-current records of permanent value of the Government of India. During the period under report, the National Archives of India continued to access public records, private papers of national importance, and microfilm copies of records of Indian interest from abroad. Its regular programmes like assisting various Ministries/Departments of the Government of India in their records management programme, extending research facilities to scholars visiting the Department, and providing financial assistance to various voluntary organisations for preservation of manuscripts in their custody as also to State/Union Territory Administration Archives for their development programmes, were carried on as usual during the year 1993-94. The Conservation Research Laboratory conducted investigations for improvement in preservation techniques for better upkeep of records. Following paras give a detailed resume of significant activities of NAI during the year 1993-94.

### ANNEXE TO THE NATIONAL ARCHIVES OF INDIA BUILDING

7.02 The Annexe Building has become functional alongwith its Air-conditioning System. Installation of automatic Halon Fire Suppression system in the remaining portion of the Annexe basement is to be completed during theyear 1993-94. Boundary wall on the Shastri Bhawan side has been completed. Architectural Division of C.P.W.D. has been requested to submit drawing for boundary wall on the Rajpath side to ensure security of National Archives of India complex. C.P.W.D. has been requested for completion of construction of Canteen, Garrage and Sub-station expeditiously. The major portion of lawn in front of annexe building has been developed.

### ACCESSIONS

7.03 The Holdings of NAI were further enriched during the year by acquisition of the following public/private records/microfilm copies of records :—

- (a) *Public Records* : (i) 85 War Diaries pertaining to Indian State Forces of World War II received from History Division, Ministry of Defence, Government of India. (ii) 11,206 files (1948–63) of Ministry of Home Affairs, Government of India. (iii) 17 files (1894–1911) of President's Secretariat, Rashtrapati Bhawan, New Delhi.
- (b) *Private Papers* : Xerox/Photocopies of (i) 7 letters (1951–56)—six in Urdu and one on English—written by Dr. Syed Mahamud, a noted Freedom Fighter to Dr. M.A. Azazi were received through Dr. S.D. Pandey, Secretary, Dr. M.A. Azazi Memorial Committee. (ii) 4 letters (1926–27) and 3 letter (1934–38 and 1942) written by Gandhiji to Miss Katherine Mayo and Dr. John R. Matt respectively, 3 letters (1926–27) written by Katherin Mayo to Director British Library (1926–27); 9 Press Clippings (1917–18, 1921–22) from *Indian Opinon* and *TIME* and an article entitled “India at the Cross Roads : Mr. Gandhi” by Sir Evelyn Wrench were received from Shri E.S. Reddy, New York (U.S.A.). (iii) Eleven letters in Urdu (1923–63) written by Raja Mahmud Ali Khan, Jalib Dehlvi, Akhtar Sherani, Hakim Muhammad Yusuf Hussain and others to Shri Sumat Prakash Shauque; 57 issues of the Weekly Newspaper *Taj* (in Urdu) Delhi; one issue (26 October, 1969) of weekly *Parcham-i-Hind* (in Urdu) Delhi; five issues (September 1928–February 1929) of monthly magazine *Zamana* (in Urdu) Kanpur and 13 books in Urdu pertaining to literature were received from Shri Sumat Prakash Shauque, New Delhi.
- (c) *Microfilms* : 40 microfilm rolls (1884–1952) in French Language, relating to history of the French in India were received from National Archives of France under Cultural Exchange Programme, and (ii) 10 microfilm rolls of “Panda Records” relating to States of Punjab and Rajasthan were received as gift from Genealogical Society of Utah (U.S.A.)

## RESEARCH AND REFERENCE

7.04 More than 4,100 visits were made by scholars to the Research Room and Library of the NAI. 193 scholars were newly enrolled. Out of these, 21 were foreign scholars from Australia, Canada, Denmark, Germany, Hongkong, Japan, Korea, Nepal, UK and U.S.A.

7.05 More than 35,300 requisitions for records, maps and books received from scholars were attended to. Besides, 88 queries seeking information from amongst the holdings of the Department received from individuals and public/private agencies were attended to.

## REFERENCE MEDIA

7.06 During the year, while 5,483 documents of Inayat Jang Collection were descriptively docketed, 27,640 items of following collections were subject listed/check listed :

(i) Private Papers of :

S.S. Rawal (1910–66), M.K. Ghosh (1956–63), S.C. Bose (1929–79), Zorawar Singh Nigam (1907–44), K.M. Munshi (1927–39), Seth Achal Singh (1937, 38 and 1950), Pranendra Narayan Choudhury (1922–56), Ram Mohan Roy (1833), S.P. Shauqu (1922–69), Rabindra Nath Tagore (1918–30), Sardar Vallabh Bhai Patel (1934–50), C.P. Ramaswami Aiyer (1938–62).

(ii) Bangladesh Papers (1966–72)

(iii) Political Prisoners Papers (1943)

(iv) Miscellaneous Paper (1631–1981) and

(v) Jhansi and U.S. Club Papers.

## **RECORDS AND ARCHIVES MANAGEMENT**

7.07 More than 35,700 files of the following Ministries/Departments/Offices were appraised : Ministry of Defence, Historical Division (1890–1958); Ministry of Food (1946–68); Ministry of Home Affairs (1957–68); Ministry of External Affairs (1946–48); Home Department, Public (1937–47); P.P. Section (1944–47); Medical B&D (1873–1921); Municipalities B&I (1875–1910); War ‘B’ and ‘D’ (1918–20); Local Board ‘B’ and ‘D’ (1889–1910) and Sanitary ‘B’ and ‘D’ (1873–1910). Out of these, 32,809 files were recommended for retention and 2,917 files for destruction.

7.08 Study Reports alongwith Records Retention Schedule and Prefatory Note were prepared and forwarded to the following Ministries/Departments for implementation :—Armed Forces Medical Services, Defence Institute of Psychological Research, and School of Foreign Languages (all in Ministry of Defence); Department of Agricultural Research and Education (Ministry of Agriculture); Directorate of Field Publicity (Ministry of Information and Broadcasting); Department of Electronics (Fifteen Technical Divisions); Department of Family Welfare and Department of Health (both in Ministry of Health and Family Welfare); National Crime Records Bureau (Ministry of Home Affairs); Patent Office; Dr. Ram Manohar Lohia Hospital and Safdarjung Hospital (all in New Delhi); and Patent Office, Calcutta.

7.09 On-the-spot study for vetting of the Records Retention Schedule of Central Fertilizer Research Institute, Faridabad (Ministry of Agriculture), was completed, during the year.

## **ARCHIVAL LEGISLATION**

7.10 A Bill on Public Records is likely to be introduced in the Winter Session of the Parliament.

## **SCHOOL OF ARCHIVAL STUDIES**

7.11 The School continued to conduct One-Year Diploma Course in Archival Studies as also various short-term courses of eight and four weeks' duration for the benefit of professionals and sub-professionals.

7.12 Twelve trainees successfully completed the One-Year Diploma Course in Archival Studies (1992-93), while next session of the Diploma Course in Archival Studies (1993-94) consisting of 12 trainees commenced on 1 September 1993.

7.13 Six short-term courses viz., Records Management (1 session), Care and Conservation of Books, Manuscripts and Archives (1 session), Reprography (2 Sessions) and Servicing and Repair of Records (2 Sessions) were completed. Apart from this, three more short-term courses, one each in Archives Administration, Records Management and Care and Conservation of Books, Manuscripts and Archives, will be conducted during 1993-94.

## **SCHEME FOR FINANCIAL ASSISTANCE**

7.14 The Grants Committee for implementation of the “Scheme of Financial Assistance for Preservation of Manuscripts” recommended a total sum of Rs. 19.75 lakhs to be disbursed during the year amongst 34 organisations/institutions/universities in various States.

## **TECHNICAL SERVICES**

7.15 Apart from providing technical information on Conservation and Reprography to Government/individuals and private institutions, a total number of 54,468 sheets were repaired and 1,383 volumes/books/miscellaneous items were bound. Besides, 58,571 xerox/enlargement copies of documents were prepared and supplied to scholars.

7.16 The newly developed paste of Cellulose Acetate Powder for repair and resotation of fragile documents was subjected to performance testing in the Preservation Branch and was found to be suitable. The same was then supplied to Records Centres at Jaipur, Pondicherry and Bhopal to examine its efficiency on a larger scale. Pondicherry and Bhopal have reported the paste as suitable for Archival repair. Report from Jaipur is awaited.

## **TOWARDS FREEDOM PROJECT**

7.17 A total of 4,709 pages of excerpts from the following records series were forwarded to Indian Council of Historical Research, New Delhi for inclusion in the proposed volumes of 'Towards Freedom' project : Home Department, Political (Internal) Branch, Government of India (1942), Home Department, Special Branch, Government of Bombay (1939-41), and Rajendra Prasad Papers (1938).

## **INTERNATIONAL RELATIONS**

7.18 The Director General of Archives was deputed to Kualalampur to attend the meeting of the Committee Constituted by International Council of Archives for the project "Guide to the Sources of Asian History" and the SARBICA Seminar on the "Role of Archives in Education" from 12-15 July, 1993.

7.19 An Officer of the NAI was also deputed to Kenya from 21-25 June, 1993 to participate in the Pan African Conference on Preservation and Conservation of Library and Archival Material. A paper on 'Protection of Collection from damages caused by Pollution' was presented by the Officer at the Seminar.

## **PUBLICATION**

7.20 The following publications were brought out by the NAI during the year.

- (i) *The Indian Archives*, Vol. 39, No. 1 (Jan-June 1990).
- (ii) *The Indian Archives*, Vol. 39, No. 2 (July-Dec. 1990).
- (iii) *The Indian Archives*, Vol. 40, No. 1 (Jan.-June 1991).
- (iv) *Annual Report of National Archives of India*, 1992.
- (v) *Swatantra Swaram* (in Telugu).
- (vi) *Guide to the Records of Residencies : Their Predecessor and Successor Bodies*. Part X, (A to K) 1756-1954.
- (vii) *Guide to the Records of Residencies : Their Predecessor and Successor Bodies*. Part XI (L to Z), 1759-1954.
- (viii) *Descriptive List of Persian Documents*, 1803, Vol. III.
- (ix) *Catalogue of Revenue Maps*, Vol. II, Part III.

7.21 Following publications are also proposed to be brought out during 1993-94 :

- (i) *The Indian Archives*, Vol. 40, No. 2 (July-Dec. 1991).
- (ii) *The Indian Archives*, Vo. 41, no. 1 (Jan-June 1992).
- (iii) *Bulletin of Research Theses and Dissertations*, Vol. No. 16.

- (iv) *Proceedings of Indian Historical Records Commission*, Vol. 54.
- (v) *Status Paper on Indian Historical Records Commission Resolutions*.
- (vi) *Indian Historical Records Commission-Retrospect*. Vol. II.
- (vii) *Index to Papers Read at Indian Historical Records Commission Sessions*, Vol. III.
- (viii) *Guide to Sources of Asian History*, Vol. 3.6.
- (ix) *Descriptive List of Mutiny Papers*, Vol. VI.
- (x) *Catalogue of Revenue Maps*, Vol. II, Part IV
- (xi) *Ashob* (in Urdu), Vol. I.
- (xii) *Khutut-i-Azad* (Hindi).

## **ARCHIVES WEEK/EXHIBITION**

7.22 The NAI will mount an exhibition entitled "Archives and the Voice of Indian Unity in 1937" The said exhibition will be based on original documents and contemporary photographs.

7.23 To create archival awareness, an Open House Programme will be organized in 1993-94 with the theme "Universities in 1857". On that occasion, visitors will be shown important wings of the Archives.

## **REGIONAL OFFICE/RECORD CENTRES**

7.24 The Regional Office/Record Centres at Bhopal, Pondicherry and Jaipur continued normal activities in their respective zones. The Regional Office/Record Centres repaired approximately 11,981 sheets of documents and bound 241 volumes/books etc. during the year.

## **THE ASIATIC SOCIETY, CALCUTTA**

7.25 Prior to March 1992 the Asiatic Society suffered for about 5 years a great setback in its activities for various reasons. Most neglected area of activities during those years was in the field of continuing researches by using the source materials available in the Society. During the year 1992-93, top priority was accorded for undertaking researches in various fields. In the team of Senior Research Fellows, apart from Prof. Rama Ranjan Mukherjee, Prof. Amiya Majumdar, Prof. Ashok Bagchi, Prof. Suniti Pathak, Prof. A.K.M. Masumi, Prof. Bhabatosh Dutta, Prof. Pranabesh Sinha Roy, Prof. Asit Bandyopadhyay, Prof. P.T. Nair and Dr. Ninel Gafurova, some more outstanding scholars including Prof. Sushil Mukherjee, former Vice-Chancellor, Calcutta University and a renowned scientist in the field of Agricultural Sciences, Prof. Debabrata Sensharma, former professor of Kurukshetra University—an eminent scholar of Indology, Prof. M.K.A. Siddiqui of Anthropological Survey of India, and Prof. Atul Roy, former Head of the Department of Islamic History & Culture of Calcutta University have joined. In order to provide them proper support, about 15 research fellows have joined the team during the period under report. Besides Prof. Sudhir Karan who has conducted very interesting studies in the field of rural dialectal folk esymological linguistic survey of western Bengal (Simanta Ranli or Jhar Kahndi) has completed his study but it was felt that some further extension of the work would make the study more useful and as such Prof. Karan has been appointed for one more year. It is expected that this addition to the completed manuscripts would add more meaningful reflections on a subject which is nationally important as certain sensitive political issues are involved.



## **RESEARCH ACTIVITIES**

7.26 The work of the project on "Indology", has made considerable progress under the supervision of Prof. Ramaranjan Mukherjee. The first phase of this project "India's concept of Ecological and Aesthetic Values on India's perception of Nature and Beauty" has been completed satisfactorily. The dissertation is ready for publication.

7.27 Another project on "Spiritual Values" is progressing under the supervision of Prof. Amiya Majumder. In fact Prof. Majumder has made significant work in the field with the help of junior scholars on the subject. Some heads of cultural and religious organisations have already been interviewed and their views on the subject have been collected. The investigation on medicine in medieval India in the project on "History on Medicine" under the guidance of Prof. Ashoke Bagchi has been completed. Prof. Bagchi's dissertation "The animals and their explanation's of drugs from forest" has been submitted for publication. The work of the project "Tibetan Studies" has made considerable progress in the subject on investigation viz., "The Bhatia (Indo-Tibetan) inhabitation of Himalayas : their identity and integration with the main stream" under the supervision of Prof. Suniti Kr. Pathak.

7.28 Prof. M.A.K. Masumi has undertaken to complete the incomplete portion of valuable publications such as (a) Haft Iq-lim, a classical work on geography and (b) Marhamul Illal. The project on "Tagore Studies" is progressing under the guidance of Prof. Bhabatosh Dutta who has completed his investigation into "Rabindra Nath's concept of man and nature". In this project a monograph, Tagore assessments of the Ramayana and Mahabharata is ready for publication. The project on "a comprehensive dictionary" under the guidance of Prof. Asit Kr. Bandopadhyaya is also progressing significantly.

7.29 Prof. Debobrata Sen-sharma has done considerable progress in his work "Critical edition of four Saiva commentaries from Kashmir on the Bhagavat Gita" under the project "Ancient Indian History". The work on the project "General History" is progressing under the guidance of Shri P.T. Nair who is preparing the Bi-Centenary History of the Asiatic Society.

7.30 The Society has undertaken another project on "History of Science" under the guidance of Prof. Sushil Kr. Mukherjee who has been working on History of teaching and research in Physiology in India. The investigation work of the project on "Society and Culture of Bengal during the medieval period (early period and later period)" is progressing under the guidance of Prof. Atul Ch. Roy. The work on "Tazikistan To-day" is progressing under the guidance of Dr. (Ms.) Ninel Gafurova.

7.31 The Society has undertaken another important project to prepare Encyclopaedia Asiatika as per the decision of the Planning Board of the Society. It would be a multi-volume project primarily aiming at presenting a systematic account of the evolution of the history and culture of the lands and peoples of Asia till the present time. It is not intended to be a sort of dictionary of various short entries. The chapters would be thematic and not personal historical accounts. Though a project of this nature will naturally reflect the historical aspects, care would be taken to highlight demographic, language and literature, economic and political aspects of each area's process of development. The work is expected to start very soon.

## **OTHER PROJECTS**

7.32 The Society has a programme named "Heritage India". It is an ambitious and imaginative project that would seek to integrate various activities of the Asiatic Society in a way that would reflect the aspirations and achievements of the people of India. The concept may be traced to the address of Smt. Indira Gandhi delivered at the Bicentenary Celebration of the Society in 1984. She said, "Heritage is not merely to be admired and drawn upon. It has to be studied in depth and as a means of self-understanding; it has to be preserved, cherished, and enriched."

7.33 The Society propose to start another project on Translation of Classical Texts in English. The rate for translation work of each book will be fixed in comparison with the rates prevailing in Sahitya

Academy and IGNC, New Delhi. The tenure of the work will be 18 months for each book. The name of some of the books are Anubhuti Prakash, Alankara Kaustubha, Kavyanusasan, Mubarak Shahi, Nagdas-Bher of Qodama Ben—Jafar etc.

7.34 Another research project which was also included in the 8th plan of the Society has since been approved by the Standing Finance Committee for the purpose of compilation of relevant archival documents in Russia and Commonwealth of Independent states formerly known as USSR. Accordingly administrative actions have been initiated for implementation of the project.

## **TRAINING PROGRAMMES**

7.35 The Society is also going to undertake training programmes on (a) Classical languages and (b) Course structure of Indian Culture & Civilization. These training programmes will be started in Sanskrit, Pali, Arabic, Persian, Tibetan, Chinese and Mongolia.

## **COMPUTERISATION/MODERNISATION**

7.36 The Society has made necessary arrangements for using computer to expedite the work of accessioning and stock verification of the books and journals in its Library. The preparation of compiling subject Index of journal of the Asiatic Society Proceedings etc. was started. As the Society's journals are in fragile and brittle condition, the Society purchased microfiche set of the journals and proceedings of the Asiatic Society from 1832 to 1935.

7.37 In order to facilitate reading and obtaining copies of microfilm and microfiche, a Microfiche Reader Printer was procured by the Society during the year.

7.38 The Society has since decided to join the CALIBNET (Calcutta Library Network) and SIRNET, Programmes (Scientific & Industrial Research Net-work). The net-work will facilitate in building up inter-action between institutions and group of researchers irrespective of geographical distances and accordingly arrangement has been made for combination of site and purchase of computers.

## **CONSERVATION**

7.39 The restoration work for preservation of the paintings of the Society was under process under the guidance of eminent experts as Professor Chintamani Kar, Principal Isha Mohammad, Professor Ashok Bhattacharya, Dr. Hiren Chakraborty and Dr. Debala Mitra. Conservation measures were taken for restoration of frames on Oil Paintings, lamination of brittle and fragile sheets of manuscripts and rare books, binding of laminated books, rare books and journals etc. Over 9,50,000 volumes (approx.) were regularly disinfected with "PIP" insecticide and 2,864 volumes were physically verified. Leather bound volumes were treated with leather preservative mixture. 2,780 volumes were fumigated with Paradichlorobenzene. 3,619 sheets were de-acidified and 549 sheets were de-laminated. Over 2,864 volumes were returned after treatment.

## **COLLECTION/CATALOGUING OF MANUSCRIPTS**

7.40 The regular cataloguers for Sanskrit manuscripts have catalogued 375 Sanskrit manuscripts from different collections for the Descriptive catalogues. Besides, they have finalised descriptions of 114 Sanskrit manuscripts for the press copy after checking their reading from the manuscripts. The part-time cataloguers engaged on piece-rate basis have catalogued 1844 Sanskrit manuscripts from the Society collection and prepared data sheets in respect of these manuscripts for Tabular Catalogues of Sanskrit manuscripts during the last six months. The work of cataloguing Tibetan manuscripts lying uncatalogued for many decades was taken up during this period. Data sheets in respect of 617 Tibetan manuscripts have been prepared by a part time cataloguer and it is proposed to publish one Tabular Catalogue

exclusively for Tibetan manuscripts. Senior Cataloguers, experts in different languages e.g. Chinese, Arabic, Persian, engaged on ad-hoc basis are doing the work of cataloguing Chinese, Arabic, Persian manuscripts and books deposited in the Museum. 26 Chinese manuscripts/books, 44 Arabic/Persian manuscripts have been catalogued and data sheets giving necessary information have been prepared during this period.

7.41 The work of cataloguing manuscripts in different Indian languages has been done by part time cataloguers. 14 Urdu manuscripts and 28 Oriya manuscripts have been catalogued during this period. Data sheets giving necessary information about these manuscripts have been prepared.

7.42 The collection of manuscripts and other museum objects in the Society's Museum has been added through gift from individuals and institutions.

7.43 The work of preparing card catalogues giving necessary details of manuscripts, deposited in the Museum is going on. Four hundred sixty five cards have been prepared during this period. Documentation of microfilm of manuscripts is in progress.

## **USER SERVICES**

7.44 During the year besides supply of 41,636 xerox copies of books, manuscripts, documents etc. to members, scholars and institutions in India and abroad, the Reprography Section of the Society prepared 2,887 Microfilm negatives from books and manuscripts for similar purpose. In order to prevent valuable rare and brittle manuscripts from frequent physical handling, 13,833 exposures of microfilms were done from 84 manuscripts.

## CHAPTER 8

# INSTITUTIONS OF BUDDHIST AND TIBETAN STUDIES

## CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES, SARNATH, VARANASI

8.01 The Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath is a premier Institution of Tibetan Studies in India, established in 1967 by the Government of India with the initiation of Pandit Jawahar Lai Nehru, the first Prime Minister of India in consultation with H.H. the Dalai Lama.

8.02 During the year, the Institute has made quick and consistent progress in its growth with the establishment of a well constituted and equipped library furnished with computer; academic advancement with in-take of Ph.D. Scholars; publication of original works, translations, Seminar materials, rare texts and a bi-annual journal of Rare Buddhist Text Research Projects, which have contributed to enhancement of the status of the Academic to a Deemed University Status, working for Buddhist and world heritage in culture.

8.03 During the year 1993-94, all the activities of the Institute were directed towards achieving its following objectives :

- (a) Preservation of Tibetan Culture and Tradition.
- (b) Restoration of Ancient Indian Sciences and literature preserved in the Tibetan Language but lost in original;
- (c) To offer an alternate educational facility to students of Indian Border areas who formerly availed the opportunity of receiving higher education in Tibet; and
- (d) Accomplishment of gains of teaching and scope of research in traditional subjects through a modern university educational system with provision for award of degree in Tibetan studies.

## **TEACHING**

8.04 The Institute offers courses of nine years duration in Tibetan Studies **under** three categories i.e.; Madhyama (Under graduate), Shastri (Graduate) and Acharya (Post-graduate). There are 3 Faculties and 6 Departments namely :—

## **FACULTIES**

1. Faculty of Hetu Evam Adhyatma Vidya
2. Faculty of Shabda Vidya
3. Faculty of Adhunik Vidya

## **DEPARTMENTS**

1. Department of Sanskrit
2. Department of Sampradya Shastra
3. Department of Samajik Vigyan
4. Department of Tibetan Language
5. Department of Classical and modern languages
6. Department of Mool Shastra

8.05 The Institute offers Research Guidance and Library Facilities to foreign Research Scholars. During the year, several foreign scholars visited the Institute and availed the facility of the library which have proved much beneficial to them. The Institute Library named Shanta Rakshit Library is fully equipped with all modern and computerisation facilities which are easily available to the scholars and readers. Total holdings of the library are 39,749 Macro-documents & 8338 Micro-documents which are a rich treasure of this library.

## **NEW FACULTIES**

8.06 Apart from the existing faculties, the Institute has started a New Faculty of Chikitsa Vidya & Shilp Vidya.

## **FUTURE PLAN AND PROJECTS**

8.07 The Institute propose to establish a Museum of Tibetan Arts and antiquities in coming years. There is also a plan to establish a well equipped Language Laboratory for promoting further intellectual contact, exchange of scholars and holding of conferences and seminars.

## **CENTRAL INSTITUTE OF BUDDHIST STUDIES, (J & K) LEH**

8.08 When the age-old practice of sending young Lamas and Novices to Tibet from ladakh, to prosecute their studies in Buddhist Philosophy and Metaphysics, came to an end in 1959, it was felt that an Institute specialising in Buddhist Philosophy should be set up in India, for which Leh was selected as the most suitable location and the Central Institute of Buddhist Studies formerly known as the School of Buddhist Philosophy, was set up. Subsequently, apart from Buddhist Philosophy, regular academic courses were started and the Institute was affiliated to the Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi to prepare students for classes, like Purva Madhyama, Uttar Madhyama, Shastri, Acharya and Ph.D. The total strength of the students, excluding those studying in the 24 various branch schools in the monasteries run by the Institute in all classes is more than 300.

8.09 The Institute is actively engaged in publishing the rare and valuable Buddhist texts, to preserve and promote the Buddhist art and culture. Translation of rare and valuable books from Tibetan to Hindi for the benefit of Hindi speaking people is also undertaken. The Institute has a Library consisting of a very large number of books, especially on Buddhist and Himalayan studies.

8.10 The Institute is rapidly expanding as an important centre for advanced studies in Buddhism and Buddhist Culture in the whole of Himalayan region.

## **LIBRARY OF TIBETAN WORKS AND ARCHIVES, DHARAMSHALA**

8.11 The Library of Tibetan Works and Archives, an autonomous registered research institution, was established by H.H. the Dalai Lama in 1871 with a view to preserve and promote the rich heritage of Tibetan Civilisation and Indo-Tibetan learning. All of its projects have been augmented with this larger objective as the foremost concern. Today, this institution has acquired world stature as a centre for Tibetology and Indo-Tibetan Buddhist Studies. The Institution has the following departments :

- (i) Tibetan books and Manuscripts Library, housing more than 70,000 books and manuscripts including invaluable handwritten manuscripts.
- (ii) Foreign language Reference Library, having 8,000 books, periodicals and newsletters in English and other European Languages on Tibet, the Himalayan Studies and Buddhology.
- (iii) Museum and Archives Department, having about 700 icons, paintings, Stupas, ritual objects and 360 historical documents and 5000 old photographs of Tibet dating back to the 13-19th Centuries.
- (iv) Centre for Tibetan Studies comprising a school of Indo-Tibetan Buddhist Studies, a school of Tibetan languages and literature, a school of Thangka paintings and schools of traditional art of wood-carving—all recognised by the Govt. of India.

8.12 During the year, a large number of visitors from India and abroad visited the Library.

## **SIKKIM RESEARCH INSTITUTE OF TIBETOLOGY, GANGTOK**

8.13 The Sikkim Research Institute of Tibetology, Gangtok is an autonomous organisation under the Government of Sikkim with the Governor of Sikkim as the President of its Governing body and had been set up for research and studies in Tibetology. The Institute has done significant work in promoting research and associated subjects like iconography, medicine, astrology and history. It has special research and publication programmes.

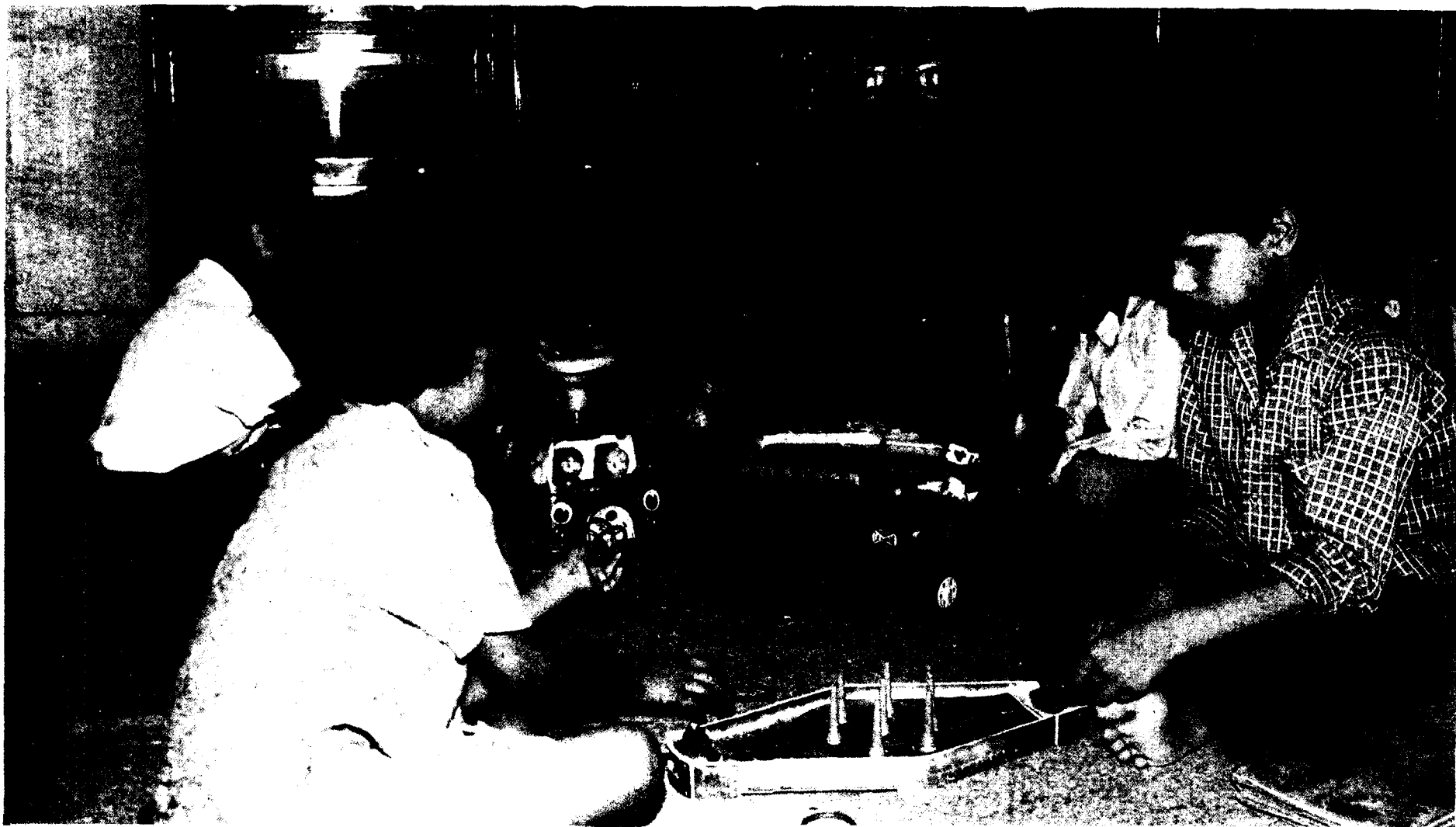
8.14 The Bulletin of Tibetology is the Institute's regular research journal which is published thrice a year.

8.15 During the year, a number of foreigners and Indian scholars visited the Institute.

## **FINANCIAL ASSISTANCE TO BUDDHIST/TIBETAN ORGANISATIONS**

8.16 The Department of Culture is administering a scheme for giving financial assistance for development of Buddhist/Tibetan Organisations including monasteries engaged in the propagation and scientific

development of **Buddhist/Tibetan Culture, tradition & research** in related fields. The grants cover non-recurring expenditure upto a maximum of Rs. 2.00 lakhs per organisation to be shared in the ratio of 3 : 1 between the Central and State Governments or the organisation. During 1993-94, about 170 organisations would be considered for giving financial assistance.



दिल्ली पब्लिक लाईब्रेरी में बच्चे  
Children at Delhi Public Library



## CHAPTER 9

# LIBRARIES

## NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA

9.01 The National Library, Calcutta is the biggest library in the country with a collection of about 2.36 million volumes stacked primarily at Belvedere, Calcutta. This Library is one of the recipient libraries under the provisions of the Delivery of Books Act, 1954 (as amended in 1956), and is the foremost repository of the Indian printed cultural heritage. It functions also as the referral centre for researchers. It is the depository of publications of the United Nations & its agencies and other foreign government agencies.

9.02 As before, the Library continued to play its vital role during the year 1993-94 in preserving the printed cultural heritage and disseminating information to the scholars and general users. Following are the important activities performed during the year upto September 1993.

## COLLECTION BUILDING AND COLLECTION ORGANISATION

9.03 The prime source of acquisition of the current books, newspapers and journals published in India is under the Delivery of Books Act. English books and journals published abroad are acquired through purchase. The Library has the book exchange programme with 215 institutions in 87 countries under the Cultural Exchange Programme of the Government of India. This finds an excellent solution for the acquisition of foreign publications not easily obtainable through normal trade channels.

## READERS SERVICES

9.04 The Library renders readers services through its Reading Room and Lending Section. The Library has on its roll over 15,000 readers as 'Reading Room Members'. The Lending Section deals with 67,809 registered borrowers both local and outstation. It also functions as the National Centre for International Loan. Till Sept. '93, approximately 11,000 books were lent out to the borrowers. The readers services are kept open throughout the year except on the national holidays.

## CONSERVATION OF LIBRARY MATERIALS

9.05 The National Library has an on-going programme for conservation of library materials. Under this programme efforts are made to preserve old and rare documents by physical conservation and microfilming. Under the Programme Microfilming, the Library preserves the contents of rare and out of print publications by microfilming them for future generations. Photocopies and microfilms are also prepared of research materials both for the Library and for supplying to researchers at a low cost.

## LIBRARY MODERNISATION SCHEME

9.06 Under Library Modernisation Scheme, the Library initiated cataloguing of English language monographs on international format UNIMARK and automated serials control were taken up. Trainings were conducted to develop manpower from amongst the professional staff.

## PERSONALLA

9.07 The Director, National Library, attended the IFLA (International Federation of Library Association) General Conference, as well as the Conference of the Directors of National Libraries at Barcelona, Spain during August 1993.

9.08 Facts at a glance about the important holdings of the Library :

Item description	upto Sept. '93
1. Books and bound periodical	20,80,000
2. Books in Indian languages	4,80,500
3. Maps	80,655
4. Manuscripts	3,182
5. Bound volumes of periodicals	1,12,500
6. Publications received as gift & on exchange	4,92,755
7. Publications received under the Delivery of Books Act	83,000
8. Indian Official Publications	4,66,500
9. Books in the Rare collection	5,190
10. Microfilms/Microfiche cards	3,200/93,500

## CENTRAL REFERENCE LIBRARY, CALCUTTA

9.09 The Central Reference Library, Calcutta is mainly responsible for the implementation of two schemes, viz. (i) Compilation and Publication of the Indian National Bibliography (Both in Roman script and in the respective language scripts) which is a record of current Indian publications in 14 languages including English, recognised by the Indian constitution and (ii) Compilation and publication of Index Indiana (in Roman Script)—an Index to select articles appearing in current Indian periodicals in major languages. This library is a subordinate organisation under the Department of Culture.

## INDIAN NATIONAL BIBLIOGRAPHY

9.10 During the year under report, all the monthly issues pertaining to 1991 were published through

a private printer. The compilation and printing of 1990 and 1991 annual volumes have also been initiated. At present the printing of 1992 Monthly Issues and its annual compilation has been taken up by a private printer.

## **LANGUAGE FASCICULES OF INB**

9.11 Printing of cumulated volumes for Urdu Bibliography 1988-90 and Tamil Bibliography 1989-91 was completed, and the Annual Volume of Hindi Bibliography for 1989 is in the press. Persistent efforts have also been made to print other language bibliographies.

## **SEMINAR, FAIRS AND CONFERENCES**

9.12 The Index Indiana at present is published as annual cumulated volume covering six Indian languages viz. Bengali, Hindi, Gujarati, Marathi, Malayalam and Tamil. The cumulated volume for 1986-88 is in the press.

## **INDEX INDIANA**

9.13 The Librarian attended a workshop on national conventions of Indian language publishers held at New Delhi in April 1993. One Asstt. Editor and one Sub-Editor will take part in the ensuing IASLIC AND ILA conferences to be held during the later part of the year 1993-94.

## **VISIT BY THE STUDENTS OF LIBRARY SCIENCE**

9.14 During the period under review, library science students of Guwahati University, Rabindra Bharati and students from Jamshedpur visited the library and applauded the work done here. This library also rendered its services to the students of B.Lib. Sc., M.Lib.Sc. and Research Scholars who frequently visit it.

## **CENTRAL SECRETARIAT LIBRARY, NEW DELHI**

9.15 The Central Secretariat Library Complex comprises the Central Secretariat Library, Shastri Bhawan, Hindi & Regional Languages Wing, Bahawalpur House with document resources in all the fourteen regional languages; and R.K. Puram Branch Library with the main objective of providing facilities for reference & research to Government Organisations, general readers and research scholars.

9.16 In the recent past, efforts were made to modernize its resources. The work of air-conditioning and installation of a lift in the main library building at Shastri Bhawan was started and is in progress.

## **MEMBERSHIPS**

9.17 The library has a centralised membership system and have enrolled/renewed 2935 members during the year.

## **ACQUISITION**

9.18 The resources of the library were enhanced by acquiring 1487 books in English, 294 books in Hindi and 833 books were purchased in Hindi and other regional languages. In addition, 47721 documents of Central & State Government publications, including gazettes, legal documents, proceedings of the legislative bodies etc. were received by the Library. Official publications received from international agencies such as UNESCO, United Nations, ILO, etc. and other foreign Governments exceeded 2000 during the period. The library has also received 3000 US Government Publications in microfiche form.

9.19 The total number of Dailies subscribed is 40 and total number of periodicals received by the library in English, Hindi and Regional languages through subscription/gift is 462.

## **SERVICES**

9.20 During the year, 1,00,307 books on a variety of subjects were issued and 65,000 books were issued by Tulsi Sadan Library (TSL).

## **INTER LIBRARY LOAN SERVICES**

9.21 The resources of the library were supplemented by acquiring 39 books on inter-library loan, and at the same time 241 books were issued on inter-library loan by CSL and 263 books were issued and 38 books were acquired on inter library loan by TSL.

## **REFERENCE SERVICES**

9.22 During the year, 1950 reference queries were attended to in person, 6300 over telephone & 30 by post by the Reference Section, 1735 queries by the R.K. Puram Branch, 180 queries by the Indian Official Documents (IOD) Section and 6013 queries by the Foreign Official Documents (FOD) Section. In addition 1160 queries were attended to in person, 772 over the phone by TSL.

## **MICROFILMING**

9.23 The Microfilming Unit prepared 10,500 exposures of rare documents during the period.

## **COMPUTER APPLICATIONS**

9.24 A bibliographic database (CATALOG) for the books added to the library with imprint date 1989 onwards has been created with UNIMARC specifications in HP3000/37 computer system. A database for serials control is maintained in the Library and the holdings information for periodicals is available on computer. A database for the Indian Official Documents (IOD) which includes gazettes and reports is maintained and is being regularly updated. Another database, MEMBERSHIP, giving details of members of the library is maintained for use in the Circulation Section.

## **INSTALLATION OF LIFT AND AIR-CONDITIONING OF STACKS OF CSL**

9.25 The work on installation of Lift and air-conditioning of Stacks of CSL is in progress.

## **MAHABHARATA DATABASE PROJECT**

9.26 About 30,000 Slokas have been converted into machine readable form till September 1993.

## **THANJAVUR MAHARAJA SERFOJI'S SARASVATI MAHAL LIBRARY, THANJAVUR**

9.27 The Thanjavur Maharaja Serfoji's Sarasvati Mahal Library is one of the few medieval Libraries that exist in the world. It symbolises a priceless repository of culture and time-defying treasure house of knowledge, built up by the successive dynasties of Nayaks and Marathas of Thanjavur. The Library embodies rich and rare collection of manuscripts on all the features of art, culture and literature.

9.28 Conceived and christened as Royal Palace Library, the Nayak Kings (1535-1673) nursed it for

intellectual enrichment. The development of the Library into a monumental institution owed to Maratha Kings of Tanjore (1676–1855). Among the regal galaxies, Raja Serfoji II (1798–1832) was an intellectual mandarin, a most pre-eminent scholar and a versatile connoisseur. While on pilgrimage to Banaras, he employed many Pandits to collect, buy and copy a vast number of works from all the renowned centres of Sanskrit learning in the North and other areas. It is on account of his singular devotion to this cause, this Library is called as Thanjavur Maharaja Serfoji's Sarasvati Mahal Library.

## **MANUSCRIPT COLLECTION**

9.29 The Library has the richest collection of manuscripts which are truly reflective of the culture of South India. In addition to the central collections, the Library could get the possession of the private Libraries of several Pandits and patrons who were living in Thanjavur and its neighbourhood. The manuscripts are available both in palm-leaf and paper on numerous subjects in varied languages like Sanskrit, Tamil, Marathi, Telugu etc.

9.30 A major part of the manuscripts of this library is in Sanskrit language numbering over 38,907. The manuscripts have been written in different scripts such as Grantha, Devanagari, Nandinagari and Telugu. The total number of Tamil manuscripts is about 3,500 comprising 3000 titles on Literature and Medicine. The range of Literature covers Grammar, Mathematics, Ethics, Lyrics, Epics, Medicine and the Philosophical treatise. The religious literature on Saivism, Vaishnavism, Jainism, Architecture, Astrology, Mantras etc., adorn the Library. These manuscripts were catalogued and published in twelve volumes in descriptive form.

9.31 The Library has about 3,000 manuscripts in Marathi language which are mostly in paper and a few in palm-leaf form. These manuscripts are divided into many sections like Vedanta, Purana, Itihasas, Kathas and Kavyas, Nataka, Stories, Vaidya, Kamasutra, Sangita etc. There are 769 manuscripts in Telugu containing 1075 works, which are mostly in palm leaf and a few in paper.

9.32 The Library has a good collection of Modi manuscripts. These are also called Marathi Raj records. There are 850 bundles in this library. They are the records of the day-to-day events and other accounts of Maratha King administration. These are only in paper and mostly in Marathi language.

## **BOOKS COLLECTION**

9.33 The Book Collection of the Library exceeding 46,100 is excellently eclectic. The old books were mostly collected by Maharaja Serfoji during his life time. In his choice of collection, there are more than 4,500 books in English, French, German, Italy, Greek and Danish languages.

## **MUSEUM**

9.34 Besides manuscripts and books, the Library possesses beautifully decorated Tanjore Paintings in wood and paper, illustrated manuscripts such as Gaja Sastra, Aswa Sastra, Mythological paintings, Botanical specimen paintings, Military Costumes, Chitra Ramayana Rare Sketches and prints. Most of the interesting and important materials are exhibited in the show cases of the Museum for visitors who exceed 1.20 lakhs a year.

## **THE CIRCADIAN FUNCTIONAL FOCUS**

9.35 The main function of this library is preservation, publication, cataloguing and service to readers. Modern conservation techniques such as fumigation, lamination, deacidification are being followed to avoid decay by insects, acidity and other mechanical damages. For preserving palm-leaf, Citronella lubricity technique is followed to give resilience to the leaves and to get rid of the insects. An indigenously effective preservative methodology consisting of the powder mixture of sweet flag, black cumin, cloves,

pepper, bark of cinnamon with camphor is also used. The Library conservation section conserved 983 paper manuscripts and 350 palm-leaf manuscripts.

9.36 The Library is publishing rare and unpublished manuscripts to spread the knowledge contained in the manuscripts to the people with the financial aid from the Central Government. The Library also publishes a Journal from 1939, through which small and complete works are published from rare manuscripts. So far this library has published 350 books. During the year, the library brought out 17 books from manuscripts and 7 reprints of previous publications.

9.37 The Library is undertaking the Microfilm project of Indira Gandhi National Centre for the Arts. This year more than 850 manuscripts were microfilmed.

## **ACQUISITIONS DURING THE YEAR**

9.38 Acquisition of manuscripts is done through gift only, but printed books are acquired by purchase and donation. During this year, 66 manuscripts and 469 books were acquired as gift. Four Tanjore style paintings having portraits of (a) King Tulaja and two Queens (b) Thanjavur Shivaji (c) Lord Siva and (d) King Tulaja with Pratapasimha were collected from Chatram Administration, Thanjavur for preservation and display at the Library's museum.

9.39 A portrait of Raja Serfoji in Canvas painting of size 10' X 9-1/2' was collected from the Mukthambal Chatram, Orathanadu, Thanjavur District and was conserved and displayed in the museum with the advice and assistance of the Staff of Regional Conservation Laboratory, Mysore.

9.40 The 216th Raja Serfoji's Birth-day was celebrated on 5th October 1993.

## **DELHI PUBLIC LIBRARY, DELHI**

9.41 The Delhi Public Library (DPL) came into existence in 1951 as Pilot Project under the then Ministry of Education in collaboration with the UNESCO to introduce the concept of free public library and information services to the people of Delhi. In course of time, the institution has grown into a premier public library system of modern India in the National Capital Territory of Delhi and has become the busiest public library in the South East Asia. The Library has a network of a Central Library at Headquarters; a Zonal Library at Sarojini Nagar; four Branch Libraries at Patel Nagar, Laxmibai Nagar, Karol Bagh and Shahdara; 17 Sub-Branch Libraries at Andrews Ganj, Bawana, Jai Rani Bagh, Jor Bagh (Children Library), Kasturba Gandhi Marg, Mukhmel pur, Narela, Netaji Nagar, New Rohatak Road, Old Sectt., Peshwa Road, R.K. Puram Sec. 8, Sri Niwas Puri, Tri Nagar, Yojna Vihar, Mundka and Jagriti Enclave; 22 Resettlement Colony Libraries at Aruna Nagar, Dakshin Puri, Hastsal, Inder Puri, Jwala Puri, Jahangir Puri, Kalyan Puri, Khan Pur, Khichari pur, Khyala, Madipur, Mangol Puri (S), Nand Nagri, Old Seema puri, Nangloi (A) Sangam Park, Satya Niketan, Seelampur, Shakur pur, Sultan puri (CE-7), Sultan puri (SC-4) & Trilok puri (Block 22); 10 Reading Rooms at Chokhandi, Gokalpuri, Mangol Puri, Nangloi, New Seema puri, Raghbir Nagar, Sultan puri, Tigri, Trilok puri & Kamla Market; a Braille Library with a network of 18 mobile service points for the visually handicapped; three Sports Libraries of the status of Sub-Branch in the premier stadia in the capital at National Stadium, Talkatora Stadium and Indira Gandhi Stadium; special services in two hospitals namely, Govind Vallabh Pant Hospital & All India Institute of Medical Sciences for the patients and one Sub-Branch at Central Jail for the prisoners and the employees; 28 Deposit Stations which are run by the organisers of the various Societies/Associations and a network of 69 mobile Service Stations to serve the remote urban and rural areas in the National Capital Territory of Delhi. Recently, the Delhi Library Board has decided to extend the Braille Library services to organisations catering to the visually handicapped in certain areas contiguous to the National Capital Region, namely, Noida, Ghaziabad, Gurgaon, Faridabad and Sonapat. It has also been decided to build a Library for the visually handicapped at Sector-II, R.K. Puram, New Delhi on the plot acquired by the DPL.

9.42 The DPL has not confined its activities only in acquiring and issuing books and journals to the borrowers. Ever since, it has been established, it has been continuously engaged in diversifying its activities to social and cultural areas too, with the emphasis on eradication of illiteracy and spreading of knowledge.

9.43 The Library has a membership of about seventy six thousand registered borrowers and issues eight thousand books every day to the borrowers through 187 service points, having a collection of 11, 22, 484 volumes. 20,95,995 volumes were issued for home reading during the year ended on 31.03.93. The Library has a very good collection of gramophone records and cassettes which are also lent out to members free of charge. The total collection of Audio Cassettes was 5385. The Delhi Library Board (DPL) has decided to set up a video cassette Library also in the DPL with effect from the current year.

9.44 During the first half of the year 1993-94, the DPL purchased 18,346 books and 1,668 books were received as gift, besides the receipt of 5,905 books under the D.B. Act.

9.45 On a proposal received from the Directorate of Education, Government of the National Capital Territory of Delhi, the Delhi Public Library has taken over 58 Composite Libraries being run under the Punjabi Academy w.e.f. 1st April, 1993 along with assets, liabilities and staff working in these libraries. These libraries cater to the needs in the resettlement colonies inhabited by the weaker sections of the Society.

9.46 At the request of the Inspector General of Prisons, Tihar, the Delhi Library Board has also decided to set up a Sub-Branch Library -cum-Reading Room-cum-Supply Station in the premises of the Central Jail, Tihar, which will be inaugurated shortly by the Delhi Home Secretary. This Library will meet the requirements of children/wards and the jail staff and will function as a nodal station for supplying books to the inmates of all the four jails.

9.47 Being the first UNESCO pilot Library project and functioning since 1951, the request of the International Federation of Library Association and Institutions (IFLA) to evaluate the functioning of the DPL has been agreed to by the Delhi Library Board. The DPL has also been selected by the Asian Development Bank as a Depository Library for the Asian Development Bank's publications.

## **RAJA RAMMOHUN ROY LIBRARY FOUNDATION, CALCUTTA**

9.48 The Raja Rammohun Roy Library Foundation is a fully financed autonomous organisation engaged in the promotion of library services all over the country in co-operation with State Governments, Union Territory Administrations and other organisations working in the field. In order to improve public library services in the country, it has been implementing number of schemes of matching assistance. The volume of assistance rendered during the year ending March, 1993 amounted to Rs. 272.60 lakhs. Over 3,500 libraries at different levels were assisted during that year.

9.49 In addition to the assistance programme, the Foundation has also initiated a number of promotional activities with a view to promoting library movement in the country. Shri Nikhil Chkravarty delivered the Raja Rammohun Roy Memorial Lecture, 1993 on July 15, 1993.

9.50 The Foundation brings out a quarterly Newsletter which not only give information on its activities but also disseminates important news on library services happening in different parts of the country and abroad. All the four issues have been published during the year. The Foundation also published a bi-annual journal Granthana: Indian Journal of Library Studies which contain important articles on Library & Information Science and allied subjects, notes & news, developments in the field of Library & Information Science and book reviews. Two issues came out during the year. A special library is being developed as an important resource centre for Library & Information Science. The Foundation is also collecting statistics and creating a computerised database of public libraries in the country.

9.51 The Foundation celebrated the completion of two decades of its establishment in March, 1993. The three-day celebrations consisting of a national seminar on Library Movement in India, Raja Rammohun Roy Memorial Lecture and meeting with State Representatives of public libraries was inaugurated by Hon'ble Union Minister of Human Resource Development, Shri Arjun Singh on March 12, 1993.

## **KHUDA BAKHSH ORIENTAL PUBLIC LIBRARY, PATNA**

9.52 An illustrious son of Bihar, Khuda Bakhsh Khan established a "Public Library" in 1891 out of his own family collection of manuscripts, printed books and by a Deed of Trust, donated to the public his entire collection. The Public Library, now known as Khuda Bakhsh Oriental Public Library, has very rich collection of manuscripts with over 18000 manuscripts alongwith 2000 original paintings of Mughal, Rajput, Iranian and Turkish schools, and 1,60,000 printed books. Declaring it, by an Act of Parliament of 1969, as an Institution of National Importance, the Government of India took over its control in the same year. It is now managed by an autonomous Board headed by the Governor of Bihar.

### **ACQUISITION**

9.53 Acquisition of manuscripts through purchase, exchange & gift is a continuing feature of the Library. The Library has a scheme of acquiring copies of rare manuscripts available in other collections. So far, collections of Aligarh, Rampur, Bhagalpur, Maner, Phulwarisharif, Asafiya (Hyderabad) and Asiatic Society (Calcutta) have been covered. The British collection of India Office and Cambridge have also been covered by acquiring microfilms of choicest of manuscripts.

### **PRESERVATION OF LIVING EMINENTS**

9.54 A separate collection of audio and video tapes is being built up to record and preserve the eminent of composite culture of India. More than 700 audio and 450 video tapes of eminent have been prepared which alongwith preservation and dissemination of the written word would be one of the finest gift of the Library to the posterity in the form of original record of the eminent while they were actually alive.

### **DISSEMINATION OF KNOWLEDGE**

9.55 Toward disseminating knowledge on a wider scale, efforts are on for making the best use of the valuable material available in the Library. For the purpose, Khuda Bakhsh Library has formulated a multi-dimensional programme to provide the scholars all possible help in their research pursuits. The entire periodical collection of the Library, old and new, is being indexed.

### **ANNUAL/EXTENSION LECTURES**

9.56 Annual/Extension lectures, talks and symposia are being held regularly wherein eminent scholars are invited to deliver lectures and present their researches. This is the easiest mean to impart knowledge in crucible; a big chunk within a short span. These lectures, the substance of a life-long study and experiences, are also being published regularly.

### **KHUDA BAKHSH RESEARCH FELLOWSHIPS**

9.57 To accelerate the speed of research, one National Fellowship, two Visiting Fellowships, three Senior and seven Junior Fellowships have been created on the pattern of UGC to work on the hidden



treasure of knowledge as speedily as possible leading to the award of Ph.d/D. Litt. degrees. Kashmir University, Gulbarga University, Jamia Millia Islamia, Magadh University, Bihar University, Shantiniketan, and Jamia Hamdard have recognised the Library as their Research Centre.

## **RESEARCH AND PUBLICATION**

9.58 Pt. Jawaharlal Nehru, while visiting the Library in 1953, expressed his desire to see the rare material of the Library reproduced by the latest techniques so that others, who cannot afford to come to Patna, may share this joy. To fulfil his desire critical editions and/or translations of all such rarities has been taken up. So far 64 rarities have been critically edited and published. During the period April—September, 1993 the Library reproduced three manuscripts besides bringing out the reprint of the critical editions of two manuscripts. The out-of print rare material were also reproduced.

## **DESCRIPTIVE CATALOGUING OF MANUSCRIPTS**

9.59 To facilitate availability of the material to the distant scholars, the Library has been descriptively cataloguing its entire collection of manuscripts. Thirty four volumes of Descriptive Catalogues of manuscripts have been published, and experts are busy with the task of completing rest of the volumes to be released within the next few years. Union Catalogues (handlists) of Arabic and Persian manuscripts on a few of the special subjects of the Library i.e. Tibb (Ionian Medicine), Tasawwuf (Sufism), Urdu Literature & Quranics have been completed and published during the five South-Asian Regional seminars on the respective subjects. So far during 1993-94, material for five volumes of descriptive Catalogue has been sent to the press.

## **COLLECTION OF MATERIAL ON FREEDOM MOVEMENT**

9.60 A lot of material on freedom movement is lying buried in the old periodicals which, when brought to light, may add new dimensions to the history of freedom movement in the sub continent. The Library is collecting all such material to be published in about thirty volumes. A rare speech of Motilal Nehru covering about sixty pages has already been published. Besides, 4 volumes of old periodicals containing material on Freedom Movement have also been published. Freedom Movement material preserved in the famous nationalist journal "Zamana" and "Hindustani" is being published in 25 volumes.

## **TRANSLATION OF BOOKS ON NATIONAL INTEGRATION FROM URDU TO HINDI & VICE-VERSA**

9.61 Literature plays a significant role in effectuating the concept of national integration. The Library is therefore, working on a scheme to translate the outstanding pieces of literature of Hindi and other national languages into Urdu and of Urdu into Hindi. The Award-winning books have been taken up first. The translated version of the Sahitya Akademi Award-winning Kashmiri book "KANTE" has been published. Some other significant books/manuscripts such as, SHAMSUL BAYAN (Hindi dictionary of Shah Alam's period, and the first Hindi dictionary produced at the instance of Aurangzeb), and AURANGZEB EK NAYA ZAVIYA-E-NAZAR, PANDIT MOTILAL NEHRU KA UDGHATAN BHASHAN, PANDIT MADAN MOHAN MALVIYA, KHUDA BAKSH EK PARICHAY, DILDAR KE DOHE have also been published.

## **ACADEMIC SAARC IN EVOLUTION**

9.62 The Khuda Bakhsh Library has of late entered into a crash-programme of intensive research through holding special seminars in a few specialised fields in which India, Pakistan and Bangladesh might be equally interested. The subjects are Tibb, Quranics, Sufism, Perso-Arabic Scientific Literature,

Indian History and Urdu Literature. The scheme of the proposed Seminars is to sort out the most significant from amongst the rare and important manuscripts preserved in the public and private collection of India, Pakistan and other SAARC countries, so as to bring out their critical editions and/or translations.

9.63 Of the five Seminars held so far, one each was devoted to Tibb, Tasawwuf, Urdu, History and Quaranics manuscripts which besides learned research papers, helped in preparation of Union Catalogues of manuscripts on the respective subjects scattered over South Asian countries. In addition, these Seminars have been playing a vital role in strengthening the SAARC ties on the academic level. What is of major importance is the net result that scholars of the participating countries, India, Pakistan, Bangladesh and Nepal (guests: Jordan, Syria, Morocco) have agreed to strengthen the ties through a team-work by unearthing the precious heritage of mankind buried in the form of manuscripts.

### **AWARD FOR OUTSTANDING CONTRIBUTION**

9.64 The Library has instituted an Award to be given to scholars for the outstanding research contribution in the Library's special fields of Arabic/Persian/Urdu/Islamic Studies/Tibb/ South Asian Studies/West Asian Studies/Central Asian Studies/Comparative Religion/Sufism/Composite Culture of India. The Awards are on the pattern of Sahitya Akademi and Jnanpith Award, and carries an amount of Rs. 1,00,000.

9.65 The first Khuda Baksh Award has been conferred on Mr. B.N. Pande, the eminent historian, for his services to the cause of National Integration. The Award was conferred by Dr. Shan̄kar Dayal Sharma, the President of India at a function held at Rashtrapati Bhavan on 10th August, 1993, the day following the closing ceremony of Golden Jubilee of Quit India Movement.

9.66 The second Khuda Baksh Award is earmarked for "Composite Culture of India".

### **RAMPUR RAZA LIBRARY, RAMPUR**

9.67 The Rampur Raza Library was established in the year 1794. The Government of India took over this library and declared it as an Institution of National Importance on 1.7.1975 through an Act of Parliament. Its affairs are managed by the Rampur Raza Library Board which has been set up under the Act. The Library has unique and rare collection of manuscripts in Arabic, Persian, Sanskrit, Pushto, Urdu, Hindi and Malayalam languages etc. It has also a rich collection of rare miniature paintings belonging to Mughal, Iranian, Rajput and Kangra Schools. It is a most important centre for visits by scholars and researchers from various parts of India as well as from other foreign countries of Asia, Europe, Africa and America.

9.68 During the year under report, a number of printed books have been added to Library's collection through donations and purchase. An information service section has been opened in the Library to facilitate the scholars in their pursuit of learning through correspondence as well. A seminar on academic activities was held in which lectures were delivered by renowned scholars of India. A number of visitors and research scholars visited the Library during the period under report.



नलचरितम् में नल के रूप में  
कलामंडलम् गोपी - संगीत नाटक  
अकादेमी

Kalamandalam Gopi as Nala in  
Nalacharitam - Sangeet Natak  
Akademi



ढाक (पश्चिम बंगाल),  
लोक उत्सव-  
संगीत नाटक अकादेमी  
Dhak (West Bengal),  
Lok Utsav -  
Sangeet Natak Akademi

# ACADEMIES AND NATIONAL SCHOOL OF DRAMA

## SANGEET NATAK AKADEMI, NEW DELHI

10.01 The Sangeet Natak Akademi, the National Academy of Music, Dance and Drama-was founded in 1953 for the furtherance of the performing arts of India, a task in which it cooperates with counterparts in the States and voluntary organisations all over the country. Through sponsorship, research and dissemination, it seeks and enhance public appreciation of music, dance and drama together with a quickened exchange of ideas and techniques for the common gain of Indian performing arts. A number of schemes have been formulated and implemented over the years with these objectives in view.

10.02 The Akademi also runs two training institutions, namely Kathak Kendra, New Delhi, and Jawaharlal Nehru Manipur Dance Academy, Imphal, for teaching of Kathak and Manipuri dance.

## AKADEMI AWARDS AND FELLOWSHIPS

10.03 The Sangeet Natak Akademi Awards and fellowships were instituted in 1953. The honours are in recognition of sustained individual contribution to the performing arts. The Awards are annual while the Fellowships are limited to 30 living recipients at any given time. Both honours carry a purse of Rs. 25,000. The Fellowships/Awards for the year 1993 are yet to be announced.

## FESTIVALS/WORKSHOP

10.04 During the year, Nrityotsava was organised from 25th to 30 May, 1993. Nrityotsava is a series of festivals launched by Sangeet Natak Akademi to promote dancers and musicians of the younger generation by providing them a national platform. Held at Trivandrum, it was organised in association with the Department of Culture, Government of Kerala and featured select dancers from various parts

of the country covering the entire range of Indian classical dances-Bharatnatyam. **Kathak**, Manipuri, Kathakali, Kuchipudi, Odissi and Mohiniattam. The special features of the festival were Chhau dance of Mayurbhansi and Seraikella, Pung Cholom and Dhol Cholom from Manipur and a performance of contemporary dance inspired by Indian dance techniques

10.05 A festival of far reaching importance focussing exclusively on Kathakali-the traditional dance theatre of Kerala, the Kathakali Mahotsavam was presented by the Akademi in Delhi from 27th October to 1st November 1993. The programme included performances in the evening and lecture demonstrations during the day time where almost all the venerable gurus and leading performers of today were featured. The performances in the festival included 10 plays by representative Kathakali playwrights providing a comprehensive picture of Kathakali tradition as performed today. A special feature of the festival was all night performances on 30th October at Rabindra Bhavan and on 1st November at Ayappa Temple, R.K. Puram. The Le-Dem series during the mornings featured eminent gurus who explained and demonstrated the various aspects of Kathakali. Different schools and styles of Kathakali belonging to Northern and Southern Kerala were presented in the Festival. Also represented were important institutions engaged in the training and practice of the art through the 70 or more participating artistes coming from different parts of Kerala as also from Delhi.

10.06 An important dimension of the festival was that it gave an opportunity to make comprehensive recordings of performances, demonstrations, interviews, and special items of the repertoire of various gurus etc. for the archives of the Akademi. Over 60 hours of audio/video recording was added to the archives which would serve as a rich source material for students and research scholars.

10.07 On the occasion of the festival, the Akademi also co-sponsored publication of a book on the art namely *Kathakali: the art of the non-wordly*, edited by D. Appukuttan Nair and K. Ayyappa Paniker which was brought out by Marg Publication, Bombay. An exhibition of photographs on Kathakali was also arranged on the occasion. The festival attracted large audiences and wide attention in the press and was highly appreciated by connoisseurs of serious art.

## **WORKSHOP**

10.08 A percussion workshop was jointly organized by the Sangeet Natak Akademi, the British Council Division of the British High Commission and the Indian Council for Cultural Relations at the British Council Auditorium, New Delhi on 25 November 1993. The event brought together an eminent percussionist from U.K., Ms. Evelyn Glennie who interacted and played with well-known Indian percussionists, T.H. Vinayak Ram (Ghatam), Tej Prakash Tulsi (Pakhawaj), Gobinda Chakraborty (Tabla) and Gazi Khan (Kartal). Bhaskar Chandavarkar, eminent musician and composer conducted the workshop and moderated the discussions.

## **ASSISTANCE TO YOUNG THEATRE WORKERS**

10.09 The broad objective of the scheme is to support experimental theatre by young directors. The Akademi offers subsidies for productions staged at its four annual Zonal Theatre Festivals and further assistance for plays chosen for the National Theatre Festival (Yuva Natya Samaroh). Applications for participation in the Zonal Festivals are screened by an expert committee of eminent directors, playwrights, actors, and critics from all over the country. Only new productions are considered.

## **UTTARI SAMBHAG YUVA NATYOTSAVA' 93**

10.10 First of the four Zonal Festivals in 1993-94, the Uttari Sambhag Yuva Natyotsava' 93 was presented from 30th August to 3rd September 1993 in association with the Punjab Sangeet Natak Akademi, Chandigarh, Guru Nanak Dev University, Amritsar and the North Zone Cultural Centre, Patiala. Five new productions featured in the Festival were (a) Latakmelkam (Hindi) : dir. Jayant Deshmukh; Ek Rang, Bhopal; (b) Daku (Hindi : dir. Ramesh Misra; Kalpana Art Group, Lucknow;

(c) Mahanirvan (Punjabi): Anil Datt; Thespian Theatre, Chandigarh; (d) Anant-Gatha (Gujarati): dir. Manvita Baradi; Garage Studio Theatre, Ahmedabad; and (e) Kismat Ya Chakrant (Hindi): dir. Avijit Dutt Yatrik, New Delhi.

### **PASCHIMI SAMBHAG YUVA NATYOTSAVA' 93 : GOA**

10.11 The second Zonal Festival-Pashchimi Sambhag Yuva Natyotsava '93 was presented during 4-9 October, 1993 at Dinanath Mangeshkar Kala Mandir, Panaji in association with Kala Academy, Goa and West Zone Cultural Centre, Udaipur. Five new productions featured in the Festival were (a) Nikal (Konkani), dir. Menino Mario Araujo; Crown Club, Goa; (b) Jo Kumar Swamy (Marathi) : dir. Yogesh Srinivas Sman; Sneha, Pune; (c) Khejdi Ki Beti (Hindi) : dir. Ashok Rahi, Indian Peoples' Theatre Association ; Jaipur; (d) Kushanku (Gujarati) : dir. Prabhakar Dabhade; Baroda Amateurs Dramatic Club, Baroda; and (e) Satyashodak (Marathi) : dir. Sharad M Bhuthadia; Pratyay Houshi Natya Kala Kendra, Kolhapur.

### **POORVI SAMBHAG YUVA NATYOTSAVA' 93 : JAMSHEDPUR**

10.12 The third Zonal Festival-Poorvi Sambhag Yuva Natyotsava '93 was presented from October 31 to November 4, 1993 at Rabindra Kalamandir, Jamshedpur in association with Eastern Zonal Cultural Centre, Calcutta and Celluloid Chapter, Jamshedpur. Five new productions featured in the Festival were (a) Ras (Bengali): dir. Ambar Ray; Samakalin Shilpidal, Calcutta; (b) Nadi-Ek Katha (Hindi) : dir. Rajkamal Nayak; Koutuk. Raipur; (c) Parleen (Oriya): dir. Lalla Biren Prasad Ray, Ame Srusti, Bhubaneswar; (d) Numit Kappa (Manipuri) : dir. Kshetri Jugindro; Manipur Ensemble, Imphal; and (e) Nayan Nachaiya (Hindi) : dir. Farid Bazmi, Rang Vidushak, Bhopal.

### **DAKSHINI SAMBHAG YUVA NATYOTSAVA' 93**

10.13 The fourth zonal festival was held at Madurai in December '93 in association with the South Zone Cultural Centre, Thanjavur and Department of Drama, Tamil University, Thanjavur. It featured the new productions (a) Panivaal (Tamil): Dir. Velu Saravanan; Aazhi, Pondicherry; (b) Manushyakam (Malayalam): Dir. Vekkan; Vaikom Thirunal, Kerala; (c) Parikrama (Konkani): Shridhar A Kamat Bamolkar; Rangasagati, Goa; and (d) Mahachaitra (Kannada): dir. Ekbal Ahmed; Samudaya, Bangalore.

10.14 Yuva Natya Samaroh, the National Theatre Festival for Young Directors, featuring selected plays staged in the four zonal festivals will be held in February 1994 at Chandigarh in collaboration with the North Zone Cultural Centre and Punjab Sangeet Natak Akademi.

### **PROMOTION AND PRESERVATION OF RARE FORMS OF TRADITIONAL PERFORMING ARTS**

10.15 The Rare Forms scheme supports advanced training in forms of music, dance and theatre which are now passing out of vogue. Fees to reputed teachers and stipends to students are paid by the Akademi by way of incentive, the effort being to sustain these arts through the traditional teaching/learning process. Details of training are regularly reported and the progress of students assessed annually by the Akademi. Some 25 training programmes have been supported through the scheme in past years. The current programmes are in Pakhawaj, Sarangi, Nadaswaram, Naqqara, Thavil and Ariyakudi Tradition of Carnatic vocal music and rare wind instruments of Rajasthan.

### **PROJECT GRANTS TO INDIVIDUALS**

10.16 This new scheme extends financial support to individuals for research and documentation in the performing arts. A total of five projects have been approved for financial assistance this year.

These include projects for research in Andhra traditions of Dance, Mayurbhanj Chhau, Kathak, Kuchipudi and the traditions of music and dance in Banaras.

## **SUPPORT TO KOODIYATTAM**

10.17 The Akademi launched in 1991 a major total care programme of support to Koodiyattam, the classical theatre tradition of Kerala. The programme includes training in Koodiyattam and Nangiar Koothu under the guidance of Guru Ammannur Madhav Chakyar at Irinjalakuda; training in Mizhavu playing under Guru P.K. Narayana Nambiar and support to the institution-Margi in Thiruvananthapuram for developing it as a centre for regular performance opportunities to trained artistes. The programme has since completed two years in April, 1993. The programme is making satisfactory progress both in respect of training and performance. Akademi is now planning to take up other related items of the project in the next financial year.

## **SUPPORT TO CHHAU DANCES**

10.18 The proposal for extending substantial support to Chhau dances of Mayurbhanj and Seraikella has been initiated. Preparatory work and further consultations with gurus, experts, detailed survey for identification and selection of artistes was carried out in Mayurbhanj district and its neighbouring areas involving visit to 26 villages in May 1993. The first phase of training programme proposed to be launched in the field of Mayurbhanj Chhau envisages training in the dance and its music under eminent gurus and Akademi Awardees at Baripada and at 5 rural centres in the district involving a total of 20 teachers and accompanying musicians and about 70 students. The programme is likely to be launched with effect from January 1994. Similar preparatory work relating to the selection of students etc. for the Seraikella style will begin shortly.

## **FINANCIAL ASSISTANCE TO CULTURAL INSTITUTIONS**

10.18a From the inception, the Akademi has rendered financial assistance to music, dance and theatre institutions. The Grants Committee, which considers applications from institutions all over the country, recommended grants amounting to Rs. 31,63,000.00 to 235 cultural institutions during the financial year 1993-94.

## **CULTURAL EXCHANGE PROGRAMMES**

### **Inter-State Cultural Exchange Programme**

10.19 The programme promotes exchange of performing troupes and individual artistes between all States and Union Territories of the country. The objective is to create an integrative awareness of Indian performing arts tradition. The 17th annual conference of State/Union Territories was held in Madras on 16-18 April 1993 to review the implementation in 1992-93 and finalise the schedule of activities for 1993-94. Ten tours have taken place till November 1993 and about 25 more are expected to be implemented by March, 1994.

## **CULTURAL EXCHANGE PROGRAMME BETWEEN INDIA AND OTHER COUNTRIES**

10.20 The Akademi as a specialist performing arts body is responsible for some of the tasks envisaged in the Cultural Exchange Programme agreements between India and other countries. The Akademi acts mainly as a clearing house for material and information on the performing arts of India, exchanging books, audio/video cassettes and other published/archival material with institutions in various countries. On a few occasions the Akademi also sponsors Indian experts and performing artists abroad under specific programme provisions and invites foreign experts and artistes to India.

10.21 During April to November 1993, the Akademi sent select audio/video cassettes/publications and photographs on Indian performing arts to institutions in Germany, Pakistan and Syria. Strings for Sitar and Sarod were sent to Canada. Visitors to the Akademi from Germany, Indonesia, Netherlands, Sri Lanka and USA were presented with SNA publications and audio/video cassettes.

## **DOCUMENTATION/DISSEMINATION**

10.22 About 8200 photographs/transparencies and approximately 230 hrs. of audio/video recordings were added on date in the archives of the Akademi, which now holds a total of over one lakh feet of 16 mm films, 95000 photographs, 32000 transparencies, 5535 hrs of audio and 1540 hrs of video recordings—chiefly of Indian music, dance, and theatre.

10.23 Apart from day to day recordings of eminent musicians and dancers, the Documentation Unit did extensive documentation of Chhau dance in Mayurbhanj District, Orissa specially of eminent gurus such as Madan Mohan Lenka, Srihari Nayak, Srikant Sen etc. An interview and demonstration of Odissi dances by Guru Pankaj Charan Das were also recorded at Bhubaneshwar and Puri. Dance and music by some of the old Maharies of Jagannath Temple at Puri were also recorded.

10.24 An extensive interview and demonstration of teaching of Kathak by Smt. Reba Vidyarthi was recorded at Delhi

10.25 In Manipur, apart from recording teaching of Thang Ta by various gurus, Shri Damo Singh, eminent Thang Ta guru was also recorded for the archives. Old gurus of Sankirtan Shri Kaliadaman Singh, Shri K. Ibomcha Sharma and Smt. L. Tombi Devi were also interviewed.

10.26 Under the collaborative project with GREM, Paris, "Music along the Ganges"—digital audio recordings were made in the region of Bihar, Uttar Pradesh and West Bengal with Mr. Xavier Bellenger.

10.27 Besides these, the Akademi recorded the workshop and Yakshangana festival and interview with Sri K.S. Karanth at Calcutta. Interviews with Sri Badal Sircar and Khaled Chowdhury were also recorded. Work on video films on Lai Haroba, Mani Madhav Chakyar, Mallikarjun Mansoor, and Behdeinkhalm festival in Jowai, Meghalaya are expected to be completed during the year 1993-94.

## **AUDIO VISUAL LIBRARY**

10.28 The Audio Visual Library has a representative collection of audio/video cassettes and discs of classical and folk music, chiefly Indian. It offers simultaneous facilities for six listeners/viewers. The Audio Visual Library collection during the period, stood at 9677 discs, 921 audio and 39 video cassettes.

## **MUSEUM OF MUSICAL INSTRUMENTS**

10.29 About 250 objects are on view at the Museum of the Akademi—chiefly folk and classical musical instruments of India. The Museum also has substantial holdings of masks, puppets, costumes, and ornaments. Several exhibitions of masks, puppets and other artefacts from the collection of the Museum have been held over the years in India and abroad.

10.30 The publication programme of the Akademi, initiated soon after its inception in 1953, consists of books and monographs on the performing arts, the quarterly journal Sangeet Natak and the Sangeet Natak Akademi News Bulletin. Besides, to promote publication on music, dance and drama, the Akademi helps authors with grants and purchases books for free distribution by way of subsidy to authors and publishers. Publications in English and Hindi have chiefly been issued under Akademi imprint, though a small list of books in Meitei and Tamil has also been published.



## **PUBLICATIONS**

10.31 The Kathak Kendra, a constituent unit of Sangeet Natak Akademi, is one of the leading dance-teaching institutions in the country. Established in 1964, it offers comprehensive courses in Kathak dance and allied subjects like vocal music and Pakhawaj. The courses are planned as a foundation for professional artists. The Kathak Kendra also maintains a Production Unit which strives to enrich the repertoire and technique of Kathak through experimental work. The Kendra has on its staff teachers of eminence in various disciplines.

## **KATHAK KENDRA, NEW DELHI**

10.32 The Kendra has been holding Chhatrotsava since 1990 in which the students of the Kendra at various levels of training are featured. The main objective of the training programme of the Kendra is to prepare stage artists with professional standard. The members of the teaching staff, choreograph group numbers, which are presented at the festival together with a few solo performances. This year Chhatrotsava was held during 29-30 September 1993 at the Kamani Auditorium, New Delhi.

10.33 Since 1984, the Kendra has started holding the Saraccandrika Festival in September/October every year which affords an opportunity to promising dancers to dance with more experienced dancers. The festival was organised this year during 25-27 October 1993 at the Sri Ram Centre for Art & Culture, New Delhi which consisted of Solo dances by Akanksha Shukla, Lucknow; Shila Mehta, Calcutta; Aditi Mangaldas, Delhi; Malti Shyam, Delhi; and Nandita Puri, Bombay on 25th October; Solo dances by Vasanti Vaishnav, Raigarh; Jayashree Acharya, Delhi; Luna Pan, Calcutta; Malabika Mitra, Calcutta and Kalyani Chakraborty, Delhi on 26th October; and Solo dances by Puja Rajesh, Delhi; Prerna Chandrakant Parkhi, Pune; Madhumita Roy, Delhi; Naveena Jafa, Delhi and Gauri Sharma Tripathi, Bombay on 27th October 1993.

10.34 The Kendra presented Dance-Dramas "Kumar Sambhav" and "Roopmati" on 10-11 November 1993 at Kamani Auditorium in aid of the earthquake victims of Maharashtra.

10.35 The Kathak Kendra also organised a Kathak Seminar in Kathak Kendra, New Delhi during 12-13 April, 1993. Renowned Kathak exponents from all over the country participated in the Seminar.

## **JAWAHARLAL NEHRU MANIPUR DANCE ACADEMY, IMPHAL**

10.36 A constituent unit of Sangeet Natak Akademi. JNMDA is the leading institution in the country for the teaching of Manipuri dance. Set up in 1954, it offers several comprehensive courses in Manipuri dance, music, and allied subjects like Lai Haroba and Thang-Ta. The courses are designed as foundation for professional artists. The institution has on staff teachers of eminence. It also has a Production Unit.

## **RABINDRA RANGSHALA**

10.37 The Akademi took over the management of Rabindra Rangshala, New Delhi, from the North Central Zone Cultural Centre, Allahabad, from 2nd April 1993.

## **FORTHCOMING EVENTS**

10.38 Among the forthcoming events in 1993-94 are Akademi Awards Presentation Ceremony and Festival of Music, Dance and Theatre; Zonal Theatre Festival in Madurai; National Theatre Festival—Yuva

Natya Samaroh in Chandigarh; Puppetry Workshop and Festival in Guwahati; Festival of traditional theatre in Bhopal; Music Festival and seminar on 'Sangita Ratnakara of Sarangadeve'; Kathak Mahotsav and Holi by Kathak Kendra; Ras Festival by Jawaharlal Nehru Manipur Dance Academy in Imphal in March 1994.

## SAHITYA AKADEMI, NEW DELHI

10.39 Being an apex national body for the promotion of literature, the Sahitya Akademi has all through devoted itself to "recognise men of achievement in letters, to encourage men of promise in letters, to educate public taste and to improve standards of literature and literary criticism". With this in view the Akademi has undertaken various programmes in the previous Five Year Plans and successfully implemented them. The increased activities taken up by the Akademi have undoubtedly made an impact on the national scene. The major programmes of Akademi are to confer annual awards in 22 languages, holding of Seminars, Literary gatherings and Workshops, upgradation and maintenance of a library at New Delhi and establishment and development of regional libraries. In addition, the Akademi has a big publication programme.

10.40 Commendable translation activities are going on in the country but the country lacks competent translators linking many languages. Translation Bureau has thus been projected in a big way. Similarly, the National Bibliography of Indian Literature published by Sahitya Akademi in four volumes hitherto covered Assamese, Bengali, English, Gujarati, Hindi, Kannada, Kashmiri, Malayalam, Marathi, Oriya, Punjabi, Sanskrit, Sindhi, Tamil, Telugu and Urdu for the period from 1901-53. The fifth volume of National Bibliography of Indian Literature covering Dogri, Konkani, Maithili, Manipuri, Rajasthani and Nepali for the period from 1901 to 1980 has been brought out in 1990-91. It is now proposed to publish National Bibliography of Indian Literature from 1954 to 1980 for the other languages.

10.41 The new schemes of the VIII Plan included publication of the best of Children Literature in translation into various Indian languages—say 50 books per year to be translated into 21 other languages recognised by the Akademi, has been taken up from 1990-91. This is an ambitious plan. Other schemes namely Men and Books & History of ideas have also been taken up from the year 1990-91 and are continuing during the VIII plan.

10.42 The Akademi, as implementing agency, has been executing the provisions under Cultural Exchange Programmes regarding interaction with writers or undertaking translations of classics on reciprocal basis.

10.43 Highlights of the activities of the Sahitya Akademi from January 1993 to September 1993 are given as under .

- \* 21 Akademi Awards were given to writers
- \* 16 Translation Awards were given to translators
- \* 140 Books published
- \* 29 Book Exhibitions held
- \* 27 Literary Forum meetings held
- \* 6 Seminars organised
- \* 5 "Meet the Author" programmes organised
- \* 3 Workshops organised

### FORTHCOMING EVENTS

10.44 Seminars on (i) Marathi Poetry in five decades (ii) Rahul Sankrityan (iii) Afro-Asian writing and (iv) The Great Indian Debate of the 20th Century are proposed to be organised during the remaining part of the year at Goa, Calcutta and New Delhi.

10.45 Under "Meet the Author" programme, Nilamani Phukan, Gulbdas Broker and Chintamani Kar would meet the people at Calcutta, Bombay & Calcutta respectively.

10.46 Under the "Literary Forum & Conferences", an All India Dogri writers conference, a Malayalam Short Story Reading, a Kannada Short Story reading and a Telugu Short Story Reading are proposed at Jammu, Trichur, Bangalore & Hyderabad respectively during 1993-94.

10.47 A Poetry Translation Workshop, a Dogri Poetry Workshop and a Kashmiri Translation Workshop are also proposed during the remaining part of the year.

## **LALIT KALA AKADEMI, NEW DELHI**

10.48 The Lalit Kala Akademi, which is the National Academy of Art, was set up in 1954 with the objective of coordinating the development of visual and plastic arts. The Akademi has its Regional Centres at Bhubaneswar, Calcutta, Lucknow and Madras, with a small office also at Bombay. During the year under report, the activities of the Akademi were as follows :

### **EXHIBITIONS**

10.49 An exhibition of Paintings, Sculptures and Prints was organised in collaboration with the Embassy of France in India during April 17-22, 1993. More than 40 Indian Artists participated. The Exhibition was inaugurated by the Ambassador of France.

10.50 The Akademi participated in the 6th Asian Art Biennale held at Dhaka, Bangladesh for a month from 2nd November, 1993. India was represented by the following participants :—

1. Shri Abbas Batliwala
2. Shri A.P. Paneerselvam
3. Babu Namboodiri K.
4. Shri Jayant Parikh
5. Shri Madan Lal
6. Ms. Prafulla Dhanukar
7. Shri P.S. Chander Sheker
8. Ms. Ratnabali Kant
9. Shri Swapan Kumar Das
10. Vidya Sagar Upadhyay
11. Shri Vinod Shah
12. Shri Suneet Chopra (attended the Seminar at the time of inauguration)

10.51 The 2nd Indian Biennale of Creative Photographs was held from September 24 to October 3, 1993. In its Special Section, 38 Photographers exhibited their 69 photographs while in the General Section, 84 photographs of 62 Photographers were exhibited. The selection of photographs was made by a two-man Jury consisting of S/Shri Avinash Pasricha and S. Paul.

10.52 A combined Sale-cum-Exhibition on Folk Art and Craft was organised by all the 7 Zonal Cultural Centres in collaboration with the Akademi from Nov. 1 to Nov. 8, 1993.

### **FORTHCOMING PROGRAMMES**

10.53 The 37th National Exhibition of Art, 1993-94 is being held at Madras sometime in the 3rd week of January, 1994. An award of Rs. 25,000/- each will be made to 10 works of outstanding

merit. Besides this, there will be 10 Hon'ble Mentions. During this Exhibition, the Akademi plans to acquire works of art worth more than 3.00 lakhs for its Permanent Collection.

10.54 A circulating Exhibition of works of Research Awardees will be held at Lucknow after which it will go to Calcutta, Bhubaneswar, Madras and Delhi. Another Exhibition will be held at Jawahar Kala Kendra, Jaipur sometime in February/March, 1994.

10.55 An Exhibition of works of Late Shri Vimal Kumar will be held at Bhubaneswar from 25th to 31st January, 1994.

10.56 An Artists Camp will also be held sometime in February/March 1994.

10.57 An Exhibition of Contemporary Paintings will be sent to China within the current financial year under the Cultural Exchange Programme.

10.58 The Akademi has plans to organise VIII Triennale-India in February/March 1994 for a duration of four weeks. With a view to seeking foreign participation, the Akademi has extended its invitation to 97 countries and consents are being received. For the first time the participation of many foreign countries will be covered under Cultural Exchange Programme between India and various countries. As a part of the Triennale-India, the Akademi will be organising following programmes in February/March 1994.

**(a) International Seminar**

10.59 An International Seminar will be convened at National Museum. Its organisational details have almost been finalised.

**(b) International Camp**

10.60 The Akademi will be organising an International Camp in multi-media alongwith cooperation of Jawahar Kala Kendra, Jaipur at their premises. Its organisational details are also at final stage and invitation to the Indian as well as to the foreign participants would be extended shortly.

10.61 The 7th Rashtriya Kala Mela will be organised in New Delhi from the 3rd week of February 1994 to coincide with the VIII Triennale Programmes. The Theme of the Mela is "TO EXPOSE THE CREATIVE TALENT ART OF THE PEOPLE OF A COUNTRY IN ANY AND EVERY FORM".

10.62 The Akademi participated in the Hindi Pustak Mela held at Varanasi and the Book Fair/Exhibitions at Frankfurt and Madison, U.S.A. It propose to participate in the following Book Fairs during the year :

(a) World Book Fair—New Delhi—February 1994

(b) Calcutta Book Fair—January, 1994

(c) Kottayam Book Fair—January, 1994

10.63 During the year, the Akademi has released Research Grant to 30 Artists affiliated to the various Regional Centres of the Akademi. Each Research Grant carries an honorarium of Rs. 1500/- p.m. for a period of 12 months.

10.64 The Akademi, during the year, appointed Masters in H.P. and Karnataka to impart training to the young students. Four students from H.P. and 5 from Karnataka are under-going training in the fields of Pahari Paintings and Mysore Style of Traditional Paintings, respectively.

10.65 The Akademi undertook/received the following Research projects, during the year :

1. Ritusamhar—illustrated with Barahmasa Paintings by Udaya Narayan Tiwari.

2. Rare Old Murals—belonging to some parts of Gujarat by Ramesh Pandya.

3. Survey and Documentation of Folk, Tribal and Traditional Arts of North-West India.
4. Survey and Documentation of Tribal Art of Bihar.
5. Survey and Documentation of Folk, Tribal and Traditional Arts of West Bengal, Punjab, H.P. Orissa, and Jammu & Kashmir.

10.66 Following publications were brought out by **the Akademi** during the year :

1. Indian Biennale of Creative Photographs.
2. SamkalenKala No. 13 and 14 (Hindi)
3. Lalit Kala (a) No. 27
4. Lalit Kala (c) No. 38
5. Kala Samvad (Hindi)—No. 28 (July-1993) and on Election Special, Kala Samvad (English)—Oct. 93.
6. Rules Folder for VIII Triennale—India.

10.67 **The following publications are also expected to be brought out during the current financial year:**

### **MONOGRAPH**

1. Reddappa Naidu (English)
2. B.N. Arya (English)
3. Kanwal Krishna & Devyani Krishna (English)

### **PORTFOLIO**

1. Graphic Prints Portfolio

### **BOOKS**

1. Folk Bronzes of Rajasthan
2. Critical Vision by Dr. A.S. Raman

### **CATALOGUES**

1. Bangladesh Biennale Catalogue
2. National Exhibition of Art 1993-94 catalogue
3. 8th Triennale—India catalogue

### **MISCELLANEOUS**

1. Triennale Brochure
2. 37th National Exhibition of Art-prospectus
3. Election procedure
4. Electoral Roll-93
5. Kala Mela booklet

## **NATIONAL SCHOOL OF DRAMA, NEW DELHI**

### **ACADEMIC ACTIVITIES**

10.68 The School re-opened on 19th July, 1993. 20 students were selected for admission this year.



यम गाथा नाटक, रंगमंडली की प्रस्तुति - राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय  
Play Yum Gatha, Rep. Co. Production - National School of Drama



शाही शिकार नाटक, विद्यालय की प्रस्तुति - राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय  
Play Shahi Shikar, School production - National School of Drama

The regular curriculum activities of the school culminate in productions which are presented for public from time to time. The productions of the current year are :

- (i) Prof. Mohan Maharishi adapted and directed Peter Shaffer's *Equus* as 'Aitash' for third year students, the performance of which were held on 16-17th April, 1993.
- (ii) Under the direction of Shri B.V. Karanth, the II year students gave 4 performances of the play 'Chandras' during 28-31st July, 1993.
- (iii) Smt. Amal Allana directed Brecht's "Aatank Ke Saye" for the final year students in October 1993.
- (iv) A Shakespearean play by III year students under the direction of Shri Rangunandan.

10.69 Many student productions, invited performances, production exercises, scene works were also arranged as part of the academic training.

### **NSD REPERTORY COMPANY**

10.70 The company performed 'Muavze' directed by Shri M.K. Raina at Lucknow on 1st April, 1993 at the invitation of 'Sahmat'. It also participated in the festival of Best Plays of 1992 organised by the Sahitya Kala Parishad with "Adhe Adhoore" directed by Tripurari Sharma. Apart from this, the Company organised *Summer Drama Festival* in the month of May-June 1993. Shri Rajinder Nath's production of Vijay Tendulkar's 'Ghasi Ram Kotwal', 'Ashad Ka Ek Din', 'Muavze', 'Khabsoorat Bahoo', 'Adhe Adhoore', 'Qaid-E-Hayat', 'Karmanwali' and 'Lehron Ke Rajhans' were the plays featured in the Festival.

10.71 The Repertory re-opened on 3rd August, 1993 after summer vacation and presented the play 'Nati Binodani' in September and 'Maskhara Moliere' on 16th Nov. 1993. Besides these new productions, the Company has also performed many repeat shows of its earlier productions. It will go to Mauritius during the year to perform three plays of Mohan Rakesh.

### **T.I.E. COMPANY**

10.72 The Theatre-in-Education (T.I.E.) company performed 'Rajia Sultan' in the month of April in several Schools in Delhi. It co-hosted a seminar on Grips Theatre in collaboration with Theatre Academy, Pune and Max-Mueller Bhawan from 16th-18th April, 1993. The Saturday Club which was reactivated, presented four short plays. A summer workshop with the participation of around 200 children also took place in June 1993. The latest production of the Company 'Desire' by Shri Abdul Latif Khatana, is being performed in different schools in Delhi.

### **EXTENSION PROGRAMME**

10.73 Under the Extension Programme, the School organised a number of intensive theatre workshops for the benefit of theatre workers in different parts of the country. In the current year, these workshops were held in Bijapur, Nainital, Jammu, Bangalore, Allahabad, Faridabad, Pune and Saharanpur to mention a few. A month long workshop on theatre techniques was organised in Delhi.

### **RANG YATRA**

10.74 Rang Yatra Exhibition, which re-opened in December, 1992 has been attracting visitors in large numbers. More than 10,000 people have seen the exhibition which is still on for public viewing. A tour of this exhibition to Udaipur, Jaipur, Chandigarh and Amritsar is being planned.

## **VISITING FACULTY**

10.75 Eminent theatre personalities who visited the School for lecture demonstrations, included S/Sh. Mahesh Elkunchwar, Habib Tanvir, Satish Alekar, V. Ramamurthy, Satyadev Dubey, Nasiruddin Shah, Sue Weston (UK), Narindra Srivastava, Prasanna, Kirti Shiledar and Surendra Verma. As part of the Academic programme, educational tours, guest performances, and short term courses were also arranged in the School. Ms. Vicky Fischer from Australia (NIDA) taught 'Design' for the students in Oct.-Nov., 1993.

## **APPRENTICE FELLOWSHIPS**

10.76 Apprentice Fellowships were given to eight of the passed out graduates. Three of the fellows presented their plays in a festival organised from 6th to 12th Nov., 1993 at Delhi.

10.77 The School has launched a *Research and Publication Programme* in the current year, under which text books, play texts, critical works and History of regional theatres will be published. The programme has just begun with the identification of scholars competent to write on various aspects of theatre and commissioning the work. An arrangement with NBT to publish translations of basic books in English/Hindi has been taken up this year for implementation.

10.78 Educational tours to Banaras, Imphal and Karnatak to study Ramlila, Manipuri/Karnatak traditional arts were arranged for the 2nd & 3rd year students this year.

10.79 Under the **Cultural Exchange Programme**, Smt. Dolly Ahluwalia and Shri Bapi Bose were sent to NIDA, Australia for a short course in Costume/Scenic designing.



# PROMOTION AND DISSEMINATION OF CULTURE

## FINANCIAL ASSISTANCE FOR PROMOTION AND DISSEMINATION OF TRIBAL FOLK ART AND CULTURE

11.01 This scheme provides for financial assistance to voluntary cultural organisations, institutions and individuals both tribal and non-tribal, for undertaking small duration projects of about a year's duration on preservation, development and dissemination of tribal/folk art and culture relating to :

- (i) documentation, research, survey and preparation of photographic record of artistic manifestations;
- (ii) disseminating awareness of the richness of tribal culture & life through a system of formal and non-formal education;
- (iii) conduct of tribal cultural activities including their festivals & festivities and preservation & propagation of tribal art, craft, oral traditions etc.

11.02 During the year 1993-94, applications were invited from voluntary organisations & others. A meeting of the Expert Committee has already been held and a no. of organisations have been selected for financial assistance.

## FINANCIAL ASSISTANCE FOR PRESERVATION AND DEVELOPMENT OF CULTURE HERITAGE OF HIMALAYAS

11.03 Under this scheme, grants are given to voluntary cultural organisations, institutions including concerned departments of universities, museums, libraries and research bodies as also individuals engaged in the field for their short duration projects concerning :

- (i) study and research of all aspects of cultural heritage of Himalayas;
- (ii) collection of objects of art and craft and documentation of cultural artifacts including the folk, music, dance and literature of Himalayas;
- (iii) dissemination of art and culture of Himalayas through audio-visual programmes;
- (iv) training in traditional and folk arts of Himalayas; and
- (v) assisting and setting up of museums and libraries etc. of Himalayan culture.

11.04 During the year 1993-94, applications were invited from voluntary organisations & others. A meeting of the Expert Committee has already been held and a no. of organisations have been selected for financial assistance.

## **FINANCIAL ASSISTANCE FOR RESEARCH SUPPORT TO VOLUNTARY ORGANISATIONS ENGAGED IN CULTURAL ACTIVITIES**

11.05 The scheme covers voluntary organisations which are engaged in cultural activities in different aspects of Indian Culture as related to its traditions and philosophy etc. To be eligible for grant, the organisations should be of All-India Character of National fame and should have been functioning for at least three years and registered under the Societies Registration Act. The scheme will not, however, be applicable to such organisations or institutions as are functioning as religious institutions, public libraries, universities or schools.

11.06 Financial assistance may be given for the following purposes :

- (a) Holding of conferences, Seminars and Symposia on important cultural matters.
- (b) To meet expenditure on activities of development nature like conduct of surveys, pilot projects, etc.

11.07 Grants for specific projects are restricted to 75% of the expenditure, subject to a maximum of Rs. 50,000/- per project as recommended by the Expert Committee .

## **CENTRE FOR CULTURAL RESOURCES AND TRAINING, NEW DELHI**

11.08 The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) is an autonomous organisation, basically responsible for providing training towards interlinking of education and culture. The activities of the CCRT are carried out by the following departments :

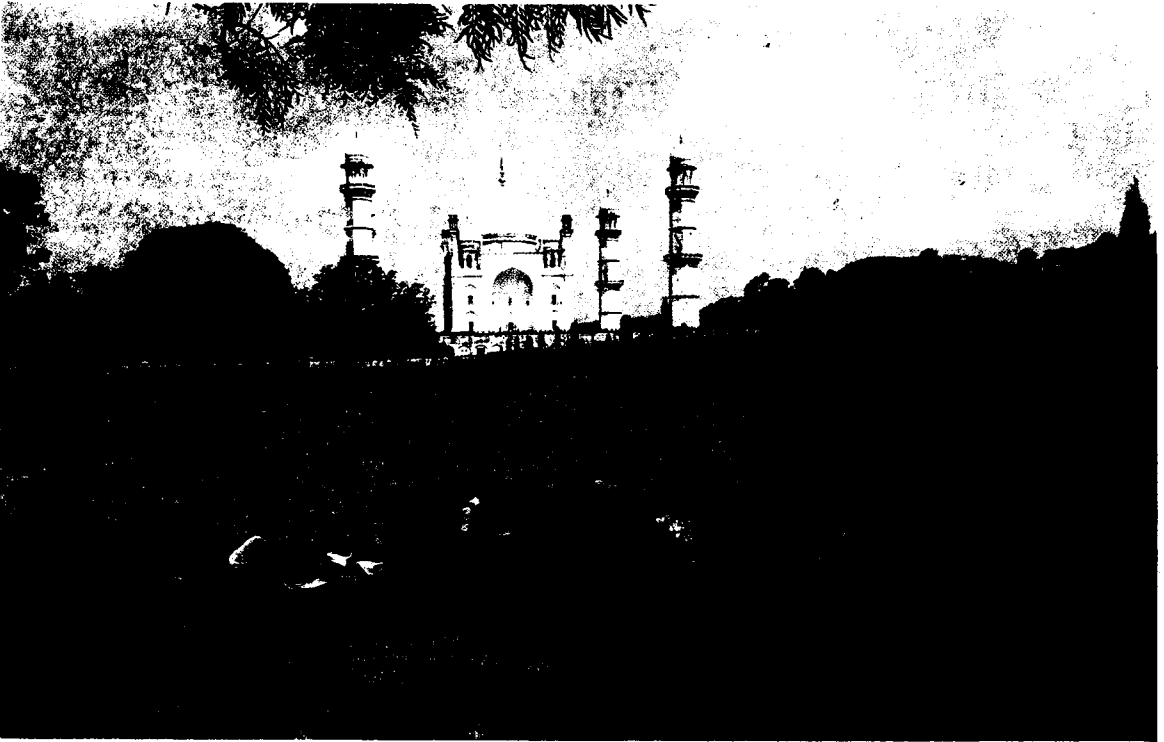
- (a) Training and Evaluation
- (b) Community and Extension Services
- (c) Collection of Resources
- (d) Production of Education Material
- (e) Publications
- (f) Cultural Talent Search Scholarship Scheme
- (g) Administration
- (h) Finance

11.09 The training programmes of CCRT organised for Primary, Middle and High School teachers,



छाऊ नृत्य के मुखौटे की तैयारी का प्रलेखन - पुरुलिया, पश्चिम बंगाल - सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली

Documentation of the preparation of Chau Dance Mask - Purulia, West Bengal - CCRT, New Delhi



भारत में विश्व सांस्कृतिक दाय स्थलों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम - बीबी का मकबरा, औरंगाबाद - सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली

Training Programme at World Cultural Heritage Site in India  
- Bibi ka Makbara, Aurangabad - CCRT, New Delhi

are Orientation Courses, Refresher Courses for trained teachers, Workshops, Courses on Puppetry for Education and Seminars. These programmes are organised for in-service teachers, Teacher Educators, Administrators and Students. The duration of each course varies and includes variety of programmes such as lectures, lecture-demonstrations, practical classes and educational tours in places of natural and cultural interest. The training aims at :

- creating an awareness of the fundamental principles underlying the development of Indian culture in order to foster a spirit of national integration;
- providing an opportunity to formulate methodologies in which aspects of Indian culture and creative activities constitute an integral part of the process of learning and teaching;
- providing teachers an opportunity to interact with scholars and artists in order to devise ways of making education a total experience;
- providing skills and training in creative activities in order to improve class-room teaching techniques; and
- providing teachers from all parts of the country an opportunity to work together for teaching different disciplines.

11.10 Based on the objectives mentioned above, the framework of the courses drawn up consists of (i) Theoretical Study of Art & Culture; (ii) Practical training in Arts & Crafts; (iii) Preparation of Educational aids for cultural education and to support classroom teaching; (iv) Educational tours to Historical Monuments, Museums & Parks; and (v) Evaluation sessions. During the year 1993-94 (upto Sept. '93), 92 training programmes were conducted.

## **WORLD DAY FOR CULTURAL DEVELOPMENT**

11.11 The CCRT was nominated as the nodal agency for celebration of the World Day for Cultural Development. To celebrate the Day, the CCRT organised a function on May 24, 1993 at Andhra Pradesh Bhavan, which was inaugurated by Hon'ble Deputy Minister for Education & Culture, Km. Selja.

## **COMMUNITY AND EXTENSION SERVICES**

11.12 The CCRT organises various educational activities for students and teachers under its Community and Extension programmes. These programmes include—Educational visits to historical monuments, museums, zoological parks and art galleries; Artists in Schools; and Workshops of 5 days duration for learning crafts and performing arts. During the year (upto Sept. '93), the CCRT organised more than 30 educational tours to places like Red Fort, Qutab Complex, National Museum, Crafts Museum, Purana Quila etc. and about 1300 students participated.

11.13 The Centre also organised a number of educational programmes for the children from non-formal education Centres and Voluntary Organisations.

## **COLLECTION OF RESOURCES**

11.14 A few of the documentation programmes conducted by the CCRT during the year (upto Sept. '93) are as follows :

- Audio recording of devotional songs by Shri Madhup Mudgal
- Organisation of a function on the occasion of the World Day for Cultural Development on May 24, 1993, where essay and painting competitions, concerts of music, dance and theatre were organised in different parts of the country. A video film showing coverage of these

functions was prepared and shown on the occasion. The function was also recorded on video and audio. Photographs of the function were also taken.

11.15 The CCRT has produced an audio-visual educational module on **Kanchipuram: The City of Temples**. The audio-visual consists of (a) 127 colour slides, (b) One 160 minute audio cassette tape containing the narration and the background music and (c) One handbook containing background information and the narration for the programme.

## **PRODUCTION OF EDUCATIONAL MATERIAL**

11.16 The CCRT has been preparing a variety of educational material in the form of teaching aids, cultural kits and printed material for free distribution to schools throughout the country. The material is given only to teachers who have been trained in how to use the same in a variety of situations in the school for curriculum teaching and extension work. Upto Sept. '93, the CCRT has prepared 600 Cultural Kits and have distributed 217 to institutions from where teachers have received training at CCRT. The Centre has also prepared 200 audio-visual modules on **Kanchipuram : The City of Temples** and distributed 75 of them.

11.17 During the year (upto Sept. '93) the CCRT has prepared 200 nos. of **Folk dances of Asia and the Pacific** and distributed 43 nos. to selected schools throughout the country. 500 nos. of **Kits on Folk Songs of Asia and the Pacific** has also been prepared of which 153 numbers have been distributed.

## **PUBLICATIONS**

11.18 The CCRT's publications attempt at providing an understanding and appreciation of different aspects of Indian art and culture. These publications also highlight the influence of nature on artistic expressions so as to create an understanding of the impact of ecology on cultural manifestations. The Centre also produces educational/cultural packages containing display cards alongwith detailed write-ups on the subject. Each package also contains a booklet of information and creative activities for students and teachers. During the period under report, the following packages were produced :

- (i) **Kanchipuram—The City of Temples I**
- (ii) **Kanchipuram—The City of Temples II**

## **CULTURAL TALENT SEARCH SCHOLARSHIP SCHEME**

11.19 More than 300 new scholarships were awarded during the current year, bringing the total number of scholarship awardees to 2667.

## **CULTURAL EXCHANGE PROGRAMME**

11.20 The CCRT is in correspondence with a number of countries under the Cultural Exchange Programme. Two countries have responded during the period under report. The CCRT is receiving an expert from Turkmenistan and sending an expert to Vietnam in the near future.

## **ZONAL CULTURAL CENTRES**

11.21 The 7 Zonal Cultural Centres (ZCCs), inaugurated in the country between November 1985 and December 1987 over the past few years have become premier field institutions for encouraging and disseminating folk and tribal arts and culture. The ZCCs handle an astonishing variety of culture-related work. Their goals include the encouragement of diverse cultural activities in the rural and low profile regions of the country. A sample of the diverse activities of the ZCC (during the year 1993-94) is given below :

#### 11.22 EAST ZONE CULTURAL CENTRE, SHANTINIKETAN

- (a) 20 Programmes which included tribal, folk, traditional and classical music and dance programmes for children and essay competition were organised in different States and awards were given. Best awardees were taken on an excursion tour 'Know your motherland' programme in May-June 1993 in different places in the country.
- (b) An exhibition of work of great master-paintings, sculptors etc. was organised in Delhi.
- (c) Kavi Sammelan of the eastern region was organised at Gangtok on July 12-13, 1993 in memory of Ad-kavi Bhanu Bhakt.
- (d) A theatre workshop was organised at Port Blair.
- (e) A 'Sri & Draw' contest was organised for Handicapped children at Calcutta.

#### 11.23 SOUTH ZONE CULTURAL CENTRE, THANJAVUR

- (a) Thanjai Dance Festival was organised from 15.01.93 to 20.01.93 at Thanjavur.
- (b) Kala Mela organised from 18.01.93 to 27.01.93 at Madras.
- (c) Bharatotsav was organised at Ernakulam, Kerala from 2.04.93 to 4.04.93.
- (d) Feet-De-Pondicherry 1993 was organised from 16.08.93 to 21.08.93.
- (e) An All-India Arts, Crafts and Folk Festival was organised at Madras from 14.09.93 to 30.09.93.

#### 11.24 WEST ZONE CULTURAL CENTRE, UDAIPUR

- (a) A workshop on Langa and Manganiar Children, Gop Dance and Gair Dance was organised at Bhilwara and Barmer.
- (b) A Crafts workshop for Mask Making and pottery making was held.
- (c) A Natya Samaroh Theatre Festival was held at Panaji in collaboration with Sangeet Natak Akademi and Kala Akademy at Panaji, Goa.
- (d) Organised a Lecture cum Demonstration on miniature paintings at Jaipur and Goa.
- (e) Participated in the Chinese Craft Exhibition under the programme 'Festival of China in India' at Ahmedabad from 28.12.92 to 10.01.93.

#### 11.25 NORTH CENTRAL ZONE CULTURAL CENTRE, ALLAHABAD

- (a) Organised a Children's production-oriented theatre workshop in 1993.
- (b) Participated in Ghazal Qawwali Samaroh at Allahabad in July, 1993.
- (c) Participated in All India Unifest-93 at Madras in July, 1993
- (d) Participated in Sadbhav Utsav at Lucknow in August, 1993.
- (e) Participated in Workshop on Folk Music at Navodaya Vidyalaya, Mirzapur in Sept., 1993.

#### 11.26 NORTH EAST ZONE CULTURAL CENTRE, DIMAPUR

- (a) Participated in CRPF Raising Day Celebration at Dimapur in July, 1993
- (b) Took part in Drama Festival at Dibrugarh in July-August, 1993
- (c) Participated in Pune Festival at Pune from 24-26 Sept. 1993
- (d) Participated in Folk Songs/Dances festival held in Assam in June, 1993
- (e) Organised an Indigenous Cookery competition at Golaghat, Assam in Sept., 1993.

#### 11.27 NORTH ZONE CULTURAL CENTRE, PATIALA

- (a) Organised an exhibition of Portraits (by a Handicapped boy) at Banasar Art Gallery, Patiala from 1.01.93 to 7.01.93.
- (b) Participated in Taj Mahotsav at Agra in Feb. 1993
- (c) Sent Artists, Teachers and Students to other Zones under National Cultural Exchange Programme
- (d) Participated in the national level Folk Dance Festival held at Bhatinda
- (e) Participated in a national level Craft Mela held at Chandigarh in October, 1993.

#### 11.28 SOUTH CENTRAL ZONE CULTURAL CENTRE, NAGPUR

- (a) Craft Mela at Ooty in May-June 1993
- (b) Cultural Programmes at Sirsa and Delhi in June, 1993
- (c) Cultural Programme at Ravindra Sadan, Calcutta in August 1993
- (d) Folk Dance Festival at Bhatinda and other 7 places in October, 1993
- (e) Folk Dance Festival at Bangalore in October. 1993
- (f) National Festival of Street Performers at Shilpgram, Udaipur in November, 1993.

11.29 In addition, the Zonal Cultural Centres participated in the Republic Day Folk Dance Festival and Crafts fair organised in Delhi in January 1994.

## **BUILDING GRANTS TO CULTURAL ORGANISATIONS**

11.30 The objective of the scheme is to give grants to voluntary cultural organisations for construction of buildings and the purchase of equipment. The scheme excludes religious institutions, public libraries, museums, municipalities, schools, universities and institutions fully financed by the Central/State Government and include those institutions which are run by local bodies/municipalities, corporations that work exclusively in the cultural fields of dance, drama, music, fine arts, indology, and literature.

11.31 In 1993, the maximum admissible grant under the scheme had been enhanced from Rs. 3 lakhs per organisation to Rs. 5 lakhs. An organisation, therefore, can now get a maximum of Rs. 5 lakhs, subject to that amount being 50% of the total expenditure.

11.32 As in the previous year, applications for this scheme, to be routed through the State Governments, were invited from various cultural institutions. So far this year, building grants have been sanctioned to 20 organisations and the number is likely to increase by the end of the financial year.

## **FINANCIAL ASSISTANCE TO DANCE, DRAMA AND THEATRE ENSEMBLES**

11.33 Two schemes are in operation under this head. Under the first part of the scheme, financial assistance is provided to well-established performing art institutions for salaries to their gurus and artists to help them become national or regional resource centres in their respective fields. 82 institutions have received this financial assistance in 1993-94.

11.34 The objective of the second part of the scheme are to provide financial assistance to professional groups and individuals for specified performing art projects. Dramatic groups, music ensembles, orchestras, children's theatres, puppet theatres, and all genres of performing arts activities are considered for grants under this scheme. Over 50 groups and individuals have received grants in 1993-94. The number is likely to go up by the end of the financial year.

## **SCHEME OF SETTING UP OF MULTI-PURPOSE CULTURAL COMPLEXES AT STATES INCLUDING THOSE FOR CHILDREN**

11.35 In order to improve the quality of life of our Youth and to make them sensitive to what is Complexes at States including those for children is being implemented by the Department of culture from Complexes at States including those for children is being implemented by the Department of Culture from the year 1992-93. Under the Scheme, financial assistance is provided to an autonomous Body created by the State Govt. for setting up of such cultural complexes, which will work as Centres of Excellence in Creative Arts and/or impart training to young talent. The proposals for basic infrastructure such as auditoria, library, museum, exhibition area, gallery, open-air-theatre etc. are also supported under the Scheme.

11.36 During the year 1992-93, token grants under the scheme were given to the Autonomous Bodies created by the States of West Bengal and Sikkim. On completion of formalities like agreeing to terms and conditions, reformulation of blue print etc., further grants would be released to them. For the year 1993-94, requests for grant have been received from a no. of States.

## **NATIONAL CULTURAL COMPLEX, NEW DELHI**

11.37 In order to meet the long standing demand of the Cultural Community, a new scheme has been drafted with the object of providing the capital city with a Cultural Complex of international standards. Keeping that in view, an Autonomous Body by the name 'Parisar' has been created and registered under the Societies Registration Act. The General Council of the Parisar has the Minister of Human Resource Development as its Chairman and eminent personalities from the field of Art and Culture like Shri Akbar Padamsee, Shri Amitabh Bachhan, Ustad Amjad Ali Khan, Prof. U.R. Anantha Murthy, Shri Charles Correa, Shri M.N. Deshpande, Prof. R.C. Gandhi, Shri O.P. Jain, Shri B.V. Karanth, Shri Kunwar Narayan, Dr. Mukund Lath, Shri Raghu Rai, Shri J. Swaminathan, and Shri Vijay Kumar Kichlu as its Members. The Executive Board of "Parisar" has also been formed under the Chairmanship of Secretary (Culture).

11.38 It is proposed that the National Cultural Complex, when set up, have Auditoria, Special



Performance Halls, Rehearsal Space for Troups, Exhibition Galleries, Space for Craft Exhibition, Seminar Room, Mini theatre, Library etc. and serve as a nerve centre of cultural activities in the Capital City.

11.39 Pending allotment of land and construction of Complex, which may take sometime, it is proposed to start some pace setting activity from the current year 1993-94.

## **SRIMANTA SANKARADEVA KALAKSHETRA, GUWAHATI**

11.40 A Memorandum of Settlement, generally known as the Assam Accord, was signed in August, 1985 which brought to an end the six-year long agitation in Assam on the issue of foreigners. The clause-6 of the Accord pertains to providing certain safeguards for protecting, preserving and promoting the cultural, social, linguistic identity and heritage of the Assamese people.

11.41 To implement this clause, an Official Level Committee consisting of Senior Officers of Central/State Government was set up in March, 1989 to formulate some concrete programmes/schemes that could be undertaken to preserve and promote the culture of Assam. In its report submitted in April, 1990, the Committee recommended, in principle, the implementation of a project for setting up a Cultural Complex in Guwahati under the title "Srimanta Sankaradeva Kalakshetra". The question of funding the project was left to the Department of Culture in the Ministry of Human Resource Development.

11.42 After the approval of the Planning Commission, Ministries of Finance and Home Affairs, the proposal was placed before the Cabinet. The Cabinet in its meeting held on 2nd September, 1993 approved the proposal for setting up of Srimanta Sankaradeva Kalakshetra with the financial assistance of Rs. 10.00 crores from Government of India, Department of Culture to be released in instalments over a period of four years commencing from 1993-94. The recurring expenditure for running and maintenance of complex will be managed by the State Government from its own resources.

## **KALAKSHETRA FOUNDATION, MADRAS**

11.43 The Government of India, through an Ordinance, promulgated on 29.9.1993, has declared Kalakshetra, Madras, as an institution of national importance, and also established the Kalakshetra Foundation. The former President of India, Shri R. Venkataraman, has been appointed as the first Chairman of the Kalakshetra Foundation. The Governing Body constituted by the Government of India includes Sarod Maestro Amjad Ali Khan, well-known Hindustani Vocalist Pandit Jasraj, Kathak Kendra Director, Shri Jeevan Pani, former Sangeet Natak Akademi Secretary, Shri B.V.K. Sastri, music and dance critic Ms. Leela Venkataraman, leading dancer, Ms. Leela Samson, industrialist Shri R.V. Ramani, Mr. N. Krishnan, IFS (Retd.), at present Director, UNESCO and Shri Bansi Dhar, Members. The two ex-officio members will be Secretary, Department of Culture and the Financial Adviser in the Ministry of Human Resource Development.

11.44 A Bill for replacing the Ordinance has been moved in both the Houses of Parliament during the Winter Session.

## **SCHEMES FOR FELLOWSHIPS, SCHOLARSHIPS AND FINANCIAL ASSISTANCE**

### **EMERITUS FELLOWSHIPS TO MOST EMINENT ARTISTES IN THE FIELDS OF PERFORMING, LITERARY AND PLASTIC ARTS**

12.01 The scheme of Emeritus Fellowship has been formulated with a view to giving financial support to artistes, who have achieved a high degree of excellence in their respective fields but since retired from the profession, to enable them to continue experimentation in a spirit of financial freedom. Nine fellowships of Rs. 5000 per month plus Rs. 10,000 per annum for incidental expenses, each tenable for 2 years are awarded every year. In deserving cases, the fellowship period may be extended subject to the condition that the total number of fellows does not exceed 30 in any year.

### **KUMAR GANDHARVA FELLOWSHIP**

12.02 A fellowship in the memory of Pt. Kumar Gandharva has been instituted from 1992-93. The fellowship is equated to the Emeritus Fellowship and is awarded by the Government to distinguished senior artists in various fields every year. The amount of fellowship is Rs. 5000/- p.m. for a period of two years. In addition, a lumpsum grant of Rs. 10,000/- per year is given to meet the travel expenses as well as to help the fellow in meeting research expenses.

### **FINANCIAL ASSISTANCE TO PERSONS DISTINGUISHED IN LETTERS, ARTS AND SUCH OTHER WALKS OF LIFE WHO MAY BE IN INDIGENT CIRCUMSTANCES AND THEIR DEPENDENTS**

12.03 The scheme provides for financial assistance to persons distinguished in letters and arts who may be in indigent circumstances and are above 58 years of age. Their dependents who have been

left unprovided-for are also considered under the scheme. Expenditure is generally shared by the Government of India and the concerned State Government on 2 : 1 basis. In exceptional cases, the entire expenditure is borne by the Government of India. The maximum assistance that could be given to an individual is Rs. 1500/- per month. So far 564 artists have benefited under this scheme.

## **AWARD OF SCHOLARSHIP TO YOUNG WORKERS IN DIFFERENT CULTURAL FIELDS**

12.04 The objective of this scheme is to give financial assistance to young artistes of outstanding promise in the age group of 18-28 years for advanced training, within India, in the fields of music, dance, drama, painting, sculpture, illustration and design woodcraft among other cultural activities. The number of scholarships awarded is 200 each year. Although the duration of these scholarships is two years, in exceptional cases it may be extended by another year. The value of the scholarships has been enhanced from Rs. 600/- to Rs. 1000/- per month w.e.f. 1.1.1993.

## **FELLOWSHIPS TO OUTSTANDING ARTISTES IN THE FIELDS OF PERFORMING, LITERARY AND PLASTIC ARTS**

12.05 The scheme provides for award of Senior Fellowship of the value of Rs. 3000 per month and Junior Fellowship of the value of Rs. 1500 per month each. Normally the duration of fellowship is for a period of two years but in exceptional cases, this can be extended by another year. 50 Senior Fellowships and 150 Junior Fellowships are awarded every year. The main objective of the scheme is to provide basic financial support to outstanding people in the fields of literary, plastic and performing arts in the age group 25-65 years for very advanced training or for the revival of traditional forms of art.

## **GRANTS TO CULTURAL ORGANISATIONS**

12.06 Financial assistance is being given to institutions of all India character, engaged in the development of cultural activities, to meet part of their expenditure on maintenance and development activities. The institutions assisted include the Ramakrishna Mission Institute of Culture, Calcutta, Institute of Historical Studies, Calcutta, Numismatic Society of India, Varanasi, Institute of Traditional Culture, Madras, Bhartiya Vidya Bhavan, Bombay and the Institute of Numismatic Studies, Nasik.





गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति द्वारा आयोजित एक राष्ट्रीय बाल कार्यक्रम - बच्चे सद्भावना के पथ पर  
Children for Harmony - one of the National Children's Programme organised by Gaudhi Smriti and Darshan Samiti

## MEMORIALS

### GANDHI SMRITI AND DARSHAN SAMITI, NEW DELHI

13.01 The Gandhi Smriti and Darshan Samiti (GS&DS) was set up in 1984 with the twin objective of (i) preservation, maintenance and upkeep of GS&DS (ii) propagating the life, emotion and thoughts of Mahatma Gandhi through socio-educational and cultural programmes.

13.02 During 1993-94, the GS&DS organised a number of programmes and activities involving children, youth, women, Gandhian workers, academicians and scholars. During this period, 2 Youth Meets/Camps were held at Kurukshetra & Rajouri, on the themes of "Communal Harmony and National Integration". As part of its efforts to propagate Gandhiji's message to various sections, GS&DS has been organising Charkha spinning on a regular basis both at Gandhi Darshan (Rajghat) and Gandhi Smriti (5, Tees January Marg). Free facilities for spinning are offered to the public at both these places.

13.03 The Galleries of the GS&DS continued to draw large number of visitors from India and abroad. The Samiti has a permanent and comprehensive Exhibition Unit, a full auditorium, a Conference Hall, adequate camping facilities for major national and international events. It regularly brings out the quarterly Newsletter and various publications. During the period under report, it brought out the following publications :

- (a) Gandhi's Contribution to Non-Violent Global Awakening for Peace (Prof. Glenn D. Paige)
- (b) Towards a World Without War : Gandhism and the Modern World (Dr. Daisaku Ikeda)
- (c) Sadbhavana Ke Prahari : Ganesh Shankar Vidyarthi (Janmashtabdi Smriti Bhavanjali)
- (d) Sabdhavana Ke Amar Shaheed (Shri B.N. Pande).

### NAV NALANDA MAHAVIHARA AND HUEN-T-SANG MEMORIAL, NALANDA

13.04 In the late fifties, the Chinese Government had presented the relics of Huen-T-Sang in a casket to Pandit Nehru alongwith a cheque and plan for the construction of a memorial in the memory

of Huen-T-Sang at Nalanda. The Government of India (Department of Culture) constructed a Memorial there. However, the Casket containing the relics of Huen-T-Sang have not been moved to the Memorial. Meanwhile, the Nav Nalanda Mahavihara was set up by the Government of Bihar for pursuing studies in Pali and Buddhist Philosophy. In recent years, a proposal was mooted to take over the institution from the Government of Bihar and merge it with the Huen-T-Sang Memorial. Recently, the Bihar Government has by notification offered the Nava Nalanda Mahavihara to the Government of India with all the assets and liabilities. The bye-laws have been framed and vetted by the Ministry of Law.

## **MAULANA ABUL KALAM AZAD INSTITUTE OF ASIAN STUDIES, CALCUTTA**

13.05 The Maulana Abul Kalam Azad Institute of Asian Studies, under the administrative control of the Department of Culture is the Centre for research and training of the life and works of Maulana Abul Kalam Azad with the study on Social, Cultural, Political and Economic movement in Asia from the middle of the 19th Century. The Institute maintains a library of books, newspapers, still photographs and materials on the secular traditions of modern India and events of the 19th century which are available to the public for study and research. It also maintains a personal museum at the former residence of Maulana Abul Kalam Azad. The Museum highlight the life and works of Maulana Abul Kalam Azad as a distinguished national leader and thinker.

## **DEVELOPMENT AND MAINTENANCE OF NATIONAL MEMORIALS**

13.06 The objective of this Scheme is to commemorate the role of eminent national personalities, and high-light lives and activities of those who have contributed and played a historic role in the history of our country, and to impart such personalities to the younger generations.

13.07 The scheme covers memorials set up on the initiatives of the (i) Central Government, (ii) State Governments, and by the (iii) Voluntary Organisations. The maximum limit of financial assistance is Rs. 5 lakhs. The Voluntary Organisations submitting applications for financial assistance should be registered under the Societies Registration Act of 1860.

## **CENTENARIES AND ANNIVERSARIES**

14.01 One of the important activities undertaken by the Department of Culture has been the commemoration of the Centenaries of distinguished Indians who have left an indelible impression on the history and life of our country.

14.02 National Committees are set up for the centenaries which are considered to be of such importance. Year long programmes are drawn up by the Committees for implementation during the Centenary year. These programmes normally include organising national seminars, installing statues, other functions, stamp release, publications and exhibitions.

14.03 The Department of Culture also provides financial assistance to registered voluntary organisations for celebrating the centenaries of outstanding personalities which are not taken up for celebration by the Government.

14.04 Another mode of organising centenaries is through State Governments by requesting them to set up the centenary committee and the Government of India on its part organises a few programmes like release of Commemorative Postage Stamps, Seminars/Lectures, Publication etc.

### **CURRENT PROGRAMMES**

14.05 For concluding the Golden Jubilee Celebration of the Quit India Movement, a programme was organised on 9th August 1993 at the Indira Gandhi Stadium New Delhi. The occasion marked the release of Commemorative coins.

14.06 Birth Centenary Celebration of Mahapandit Rahul Sanskritayyan was also organized.

14.07 National Committees for celebrating the birth anniversaries of (a) Mahatma Gandhi, and (b) Rafi Ahmed Kidwai were constituted.





# INTERNATIONAL CULTURAL RELATIONS

## CULTURAL AGREEMENTS/CULTURAL EXCHANGE PROGRAMMES

15.01 Development of Cultural Relations with foreign countries and projecting India's cultural image in its true perspective continued during the year. At present we have Cultural Agreements with 95 countries. While Cultural Agreements are broad general concepts of cultural interaction, Cultural Exchange Programmes cover specific time-bound items relating to a number of activities concerning culture, sports, youth affairs with particular accent on performing arts.

15.02 During the current year, Cultural Agreements have been entered into with 7 countries, i.e., Chile, Russia, Tajikistan, Moldova, Israel, Belarus and Estonia. In this context, it would be relevant to highlight the significance of first ever Cultural Agreement signed with Israel on 18th May, 1993. Shri Arjun Singh, Minister of Human Resource Development signed on behalf of the Government of India and Mr. Shimon Peres, Minister of Foreign Affairs signed on behalf of the Government of Israel. This Cultural Agreement covers important themes of interaction in the spheres of art, culture, education including academic activity and in the fields of sports and youth activities, journalism, radio, television and cinema.

15.03 Within the framework of Cultural Agreements, regular time-bound programmes of exchanges have been developed with a number of countries. Their number is 69 at present, including 11 CEPs' signed/renewed on the recommendations of the concerned Indian Missions abroad. The grants were given to a few selected Indian Missions for encouragement of cultural activities among the local population of Indian origin.

15.04 An endeavour was made to encourage particularly interaction with Central Asian Republics. In this context it is significant to mention the visit of an 8-Member Kazakh Joint Commission on Cultural Co-operation to India from 30.10.93 to 6.11.93 in connection with monitoring the implementation of Cultural Exchange Programme and to explore the possibility of covering other areas of prospective collaboration in the cultural field. While the Kazakh Commission was led by H.E. Mr. A.T. Sigaev,

the First Deputy Minister of Culture of Kazakhstan, Dr. S.K. Mahapatra, Secretary, Department of Culture headed the Indian side.

15.05 Both sides agreed in principle to have bilateral co-operation in a number of areas of culture, arts, literature, mass-media, tourism & sports.

### **PRESENTATION OF BOOKS, ART OBJECTS AND ESSAY COMPETITIONS**

15.06 The Department of Culture continued to provide funds to ICCR for presentation of books and art objects to foreign governments, organisations, libraries and individuals and for organising essay competitions abroad through the Indian Missions.

15.07 The Department of Culture has been extending financial assistance to these societies/associations on the recommendations of the concerned Indian Missions abroad. The grants were given to a few selected Indian Missions for the encouragement of Cultural activities among the local population of Indian origin.

15.08 The Government of India has constructed an Indian students' Hostel in the campus of the Cite Universitaire Paris and donated it to the University in 1960. The hostel, known as Maison de 'Ine' has accommodation for 104 students. Its management has, however, been retained by India.

### **PARTICIPATION IN INTERNATIONAL MEETINGS/CONFERENCES**

15.09 The Sub-Regional Consultative Meeting on the Evaluation of the National Cultural Policies, held at Bangkok from 15-20 July, 1992 was attended by a Joint Secretary in the Department of Culture as the Government of India's representative. The Department deputed Adviser (Education) in the Planning Commission to represent India in the Sub-Regional Meeting of National Committees for the World Decade for Cultural Development held at Kathmandu from 14-16 September, 1992.

15.10 The 27th Session of the General Conference of UNESCO held at Paris in Oct.-Nov., 1993, was attended by a Joint Secretary of the Department of Culture.

### **UNESCO'S ASSISTANCE FOR THE PROJECT ON CONSERVATION AND PRESERVATION OF THE BUDDHIST MONUMENTS AT SANCHI & SATDHARA**

15.11 Under a contract, UNESCO will provide financial assistance to the extent of US \$5 lakhs over a period of four years (1993 to 1996) for the project on conservation and preservation of Buddhist monuments at Sanchi and Satdhara.



गेंद-संतुलन, शेंडोंग ऐक्रोबेटिक ट्रूप - भारत में चीन महोत्सव  
Bowl Balancing, Shandong Acrobatic Troupe - Festival of China in India

# FESTIVALS OF INDIA

16.01 During the year 1993-94, two seminars were organised under the on-going programme of the Return Swedish Manifestation. These seminars concentrated on the "Working Environment" and "Children's Right to Play". The Symposium were organised in Ahmedabad by the Gandhi Labour Institute and at Pune by the SNTD University in conjunction with the Swedish Institute, Stockholm in April and June, 1993 respectively.

16.02 The Festival of India in China is to begin in the month of April, 1994, for a period of 6 weeks. The Festival would include performing art events, exhibitions, seminars and film festivals which are expected to be held at several places in China.



प्रकृति पर प्रदर्शनी का एक दृश्य - इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली

A View of the Exhibition on Prakriti - IGNCA, New Delhi

1993-94

# INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

17.01 The Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA) was established to commemorate the memory of the former Prime Minister, Smt. Indira Gandhi. The Centre was launched in November, 1985 and was constituted into an Autonomous Trust by a Government resolution dated 19th March, 1987. The IGNCA comprises five main Divisions viz, (1) Kala Nidhi, (2) Kala Kosa, (3) Janapada Sampada, (4) Kala Darshana, and (5) Sutradhara.

17.02 The Kala Nidhi Division of IGNCA comprises a computerised National Information System and Data Bank on arts, humanities and cultural heritage fully supported by a Cultural Reference Library of multi-media collections to serve as a major resource centre for research in the humanities and the arts. The Reference Library encompasses important print and non-print reference material such as encyclopaedias, primary texts, rare books and personal collections of renowned Indian and foreign scholars in different languages of the world.

17.03 The Kala Kosa Division of IGNCA serves as the research and publication division which aims to comprehend arts within the context of the Indian world view. It undertakes publication of fundamental concepts and series of fundamental texts relating to Indian arts glossaries of basic technical terminologies in arts and crafts, reprint of critical writings on Indian arts and inter-disciplinary multi-volume encyclopaedia of Indian arts.

17.04 The Janapada Sampada Division of IGNCA undertake to build a core collection of material and documentation on folk and tribal arts and crafts; launch multi-disciplinary lifestyle studies of tribal communities for evolving alternate models for the study of Indian cultural phenomenon in its totality and the interwebbing of environmental, ecological, agricultural, socio-economic, cultural and political parameters.

17.05 The Kala Darshana Division of I.G.N.C.A. provides a forum for interdisciplinary seminars, Exhibitions and performances on unified themes and concepts.

17.06 The Sutradhara Division of IGNCA is the nodal division for policy making, planning, administration, coordination, maintenance of accounts and the management of the finances of IGNCA.

17.07 During the year, the Reference Library of Kala Nidhi Division added 2750 selected works of eminent authors to its collection. In acquisition of Microfilms/microfiches programme, 117 rolls of Microfilms of rare Indian manuscripts from collection abroad and 13,000 Microfiches from INION, Moscow, STAATS BIBLIOTHEK P.K. (SBPK), Berlin and from Commercial Microfilm Publishers on Russia, were added. Under the scheme of Microfilming of unpublished manuscripts of various manuscript Libraries/Centres in the country, the Reference Library has produced 1601 Rolls (more than 1,00,000 folios). In its major slides acquisition programme, the Reference Library has added 4327 slides from British Library, London etc. and acquired 36 audio cassetts.

17.08 The Kala Kosa Division during the year published 11 critically edited texts such as Matralaksanam, Sri Hastamuktavali, Brhaddesi, Dattilam etc. texts viz. Kanva-Satapathabrahmana, Kalika-purana, Mayamata, Nartananirnaya, Brhaddesi Vol. II, Silparatna-kosa, Svayambhuvasutra-sangraha; Kriyakramadyotika, and Risal-i-Ragadarpana are in printing process under the series called Kalamulasastra. Under the programme of reprint/translation of works on secondary materials, 5 works (Essays in early Indian Architecture, Ellora-Concept and Style, Understanding Kuchipudi Religion and Environmental crisis and Spiritual Authority and Temporal Power) have been printed and published. Under the programme of Numismatic Arts of India, documentation of 90,000 coins have been completed, out of which 1800 coins have been selected as art specimens.

17.09 During the year under reference the Janapada Sampada Division (under Lok-Parampara) has completed reports on the following pilot projects: Sacred Groves and Sacred Trees of Uttra-Kannada; Symbolic Relationship between Man, Animal and Nature; the Gujjar mode of Subsistence and Change; Religiofolk theatre of Garhwal and the Visvakarma Artisans's views on the Five Elements. Under Vraja-Nathdvara project of Khsetra Sampada, a monograph "Evening Blossoms: Temple Tradition of Sanjhi-Kala in Vrindavan" has been finalised. Under Brihadisvara Project, the monograph on architectural drawings of Chola temples has been completed.

17.10 The Ethnographic section of Janapada Sampada Division acquired 1200 m. cloth scroll paintings of episodes in Mahabharata and 25 meters of scroll on Gandhiji's life painted by Smt. Santokba Dudhat. These paintings, titled as "Chitravali" were exhibited in April, 1993 at Bal Bhavan Society premises. Embroidery pieces and beadwork by Rabari women were acquired and documented under the Scheme "Creativity of women in daily life and life style".

17.11 Under Adi Drsyra Programme on prehistoric and aboriginal art, a monograph on "Deer in rock art in India" has been prepared. Based on the manifestation of sound Adi Sravya, database have been created for folk musical instruments taking into account the details of categories of instruments, community, geographical region etc.

17.12 Under puppetry programme, puppet shows by the famous *puppeteer* Dadi Padamsee and his Ishara group, were organised at Gandhi Smriti and Darshan Samiti and at a few children schools.

17.13 An International Seminar on Interface of Cultural Identity and Development was organised by IGNCA under the aegis of UNESCO in April, 1993. Preparations are going on for international *Global Specialists Conference on Rock Art* to be held during the current financial year itself.

17.14 As part of IGNCA's focus on Man, Environment and Arts, a series of multi-disciplinary seminars were held on "Man-Nature-Integral vision". Kala Darshana Division organised an exhibition titled "Prakriti"-Man in harmony with elements". In the continuing series of photographic exhibition an exhibition "The legacy of Raja Deen Dayal-An exhibition of photographs" was put up in October, 1993. Two memorial lectures introduced by the IGNCA on the name of eminent scholars viz., Late Acharya Hazari Prasad Dwivedi and Late Prof. N.K. Bose were organised.

17.15 A symposium on "Future of the mind: Mind of the future" was organised as a programme under the project "Information 2000" jointly by IGNCA, ICCR and Indo US Sub Commission on Education and Culture.

17.16 The Government has agreed to further augment the Corpus Fund of IGNCA by Rs. 25.00 crores to enable it to meet its day to day expenditure from the interest earnings thereon.



# NATIONAL POLICY ON CULTURE

18.01 The Department of Culture has been engaged in the task of eliciting the views of Experts, Critics Administrators etc. in the field of art and culture for quite some time towards drafting a National Policy on Culture. As a first step in this direction, the Department organised 10 regional seminars in September 1990 at different parts of the country where in about 460 eminent persons from the field of art & culture, media etc. participated. The recommendations made in those seminars were compiled in the form of a brief note which was placed in a meeting of State Ministers and Secretaries of Culture held in New Delhi in May, 1992.

18.02 Based on the recommendations made in the meeting of State Ministers & Secretaries of Culture, an Approach Paper on National Policy on Culture was drafted and circulated among a large number of eminent persons from the field of Music, dance, drama, media, films, literature, education, archaeology anthropology and library etc. The Approach Paper was also discussed in two meetings of the Parliamentary Consultative Committee attached to the Ministry of Human Resources Development during August 1992.

18.03 A National Colloquium was organised in New Delhi during November, 1992 to discuss the Approach Paper wherein, a small compendium giving the recommendations/suggestions etc., received from various persons was circulated. About 100 eminent persons from the field of media, visual art, photography, architecture, archaeology, anthropology, literature, library, museums, education, music, dance and theatre etc., participated in the Colloquium and gave their recommendation.

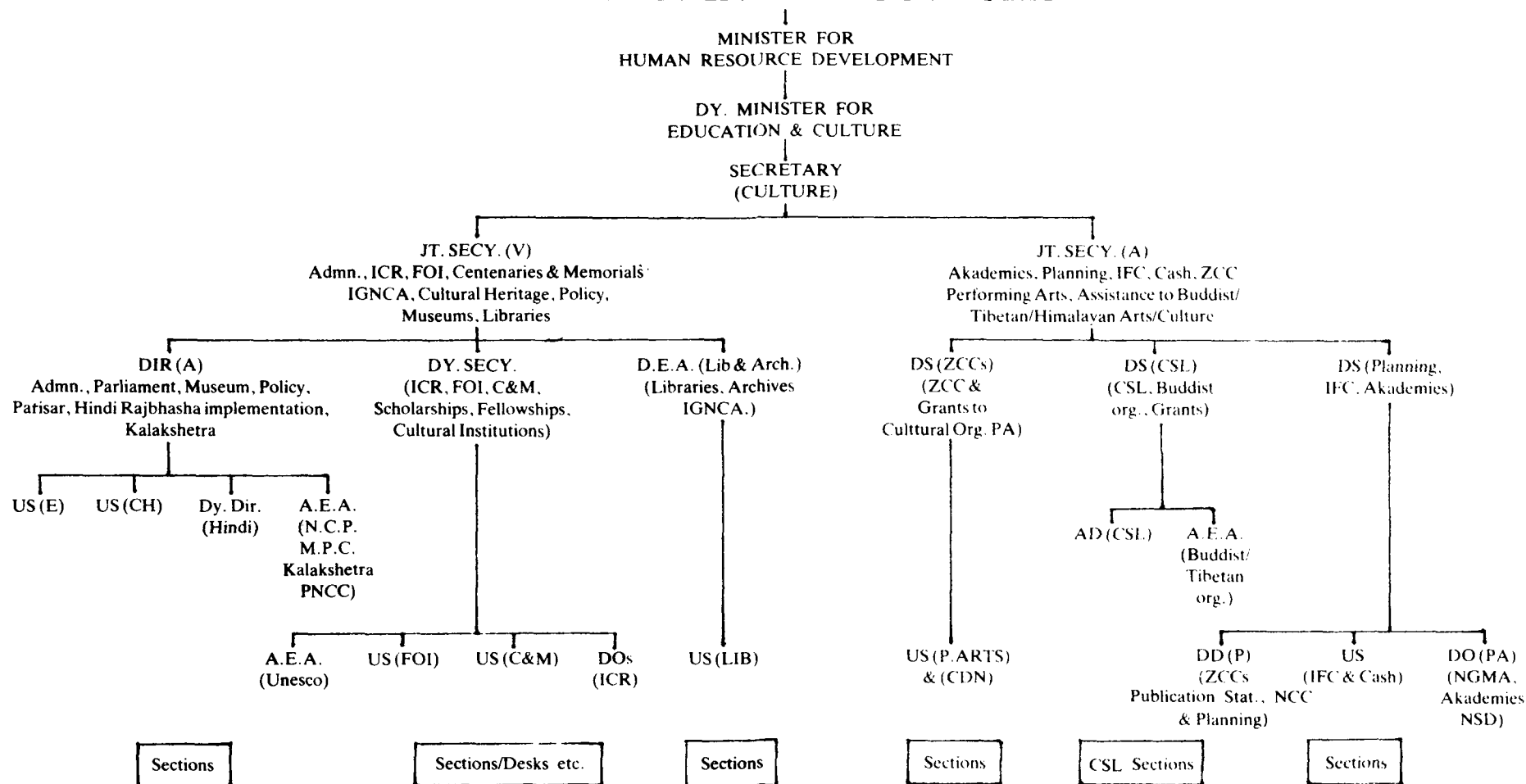
18.04 The Approach Paper has been circulated to all the Members of Parliament and was also laid in both the Houses of Parliament. The Approach Paper was likely to be considered during the Winter Session of Parliament 1993. On the basis of the recommendations of the Members of Parliament and based on the various suggestions received, the Draft Policy will be prepared and placed before the Cabinet for their consideration.



# ORGANISATIONAL CHART

APPENDIX-I

## DEPARTMENT OF CULTURE



**Abbreviations :** ICR—International Cultural Relations; FOI—Festival of India; IFC—Internal Finance Cell; ZCC—Zonal Cultural Centres; C&M—Centenaries & Memorials; IGNCA—Indira Gandhi National Centre for the Arts; PA—Performing Arts; NCP—National Culture Policy; MPCC—Multipurpose Cultural Complexes at States; NCC—National Cultural Complex, Delhi; CSL—Central Secretariat Library; CDN—Coordination; NGMA—National Gallery of Modern Art; NSD—National School of Drama; DEA—Deputy Educational Adviser; AEA—Asstt. Educational Adviser; DS—Deputy Secretary; US—Under Secretary; DO—Desk Officer.



## Financial Allocations (in lakhs of Rupees) of items discussed in various chapters

Sl. No.	Sl. No. Item	Plan Non-Plan	Budget Estimates 1993-94	Revised Estimates 1993-94	Budget Estimates 1994-95
1.	Archaeological Survey of India.	Plan	1200.00	1200.00	1300.00
		Non-Plan	3060.00	3209.00	3300.00
2.	National Museum, New Delhi.	Plan	200.00	200.00	190.00
		Non-Plan	259.00	353.00	360.00
3.	Indian Museum, Calcutta.	Plan	200.00	200.00	190.00
		Non-Plan	85.50	85.50	94.05
4.	Salarjung Museum, Hyderabad.	Plan	200.00	200.00	250.00
		Non-Plan	32.75	32.75	36.19
5.	Financial Assistance for Reorganisation and Dev. of Museums including Nehru Centre.	Plan	15.00	15.00	15.00
		Non-Plan	—	—	—
6.	Victoria Memorial Hall, Calcutta.	Plan	100.00	100.00	100.00
		Non-Plan	43.25	43.25	45.00
7.	Setting up of a Museum for Gem and Jewellery.	Plan	—	—	—
		Non-Plan	1.00	1.00	1.00
8.	National Gallery of Modern Art, New Delhi.	Plan	140.00	140.00	150.00
		Non-Plan	38.10	38.10	42.00
9.	Nehru Memorial Museum & Library, New Delhi.	Plan	100.00	100.00	75.00
		Non-Plan	162.20	162.20	185.00
10.	Allahabad Museum, Allahabad.	Plan	40.00	40.00	45.00
		Non-Plan	30.50	30.50	35.00
11.	National Council of Science Museum, Calcutta.	Plan	1300.00	1300.00	1400.00
		Non-Plan	419.00	469.00	480.00
12.	National Research Laboratory for Conservation of Cultural Property, Lucknow.	Plan	90.00	90.00	90.00
		Non-Plan	33.55	33.55	37.00
13.	Inter-Museum Exchange of Exhibitions of Art Objects.	Plan	6.00	6.00	6.00
		Non-Plan	—	—	—
14.	Anthropological Survey of India, Calcutta.	Plan	150.00	150.00	140.00
		Non-Plan	286.00	286.00	300.00
15.	Rashtriya Manav Sangrahalaya, Bhopal.	Plan	250.00	250.00	300.00
		Non-Plan	54.00	54.00	54.00
16.	National Archives of India, New Delhi.	Plan	153.00	153.00	180.00
		Non-Plan	203.00	243.00	250.00
17.	Khuda Baksh Oriental Public Library, Patna.	Plan	38.00	38.00	40.00
		Non-Plan	18.50	18.50	29.21
18.	T.M.S.S.M. Library	Plan	30.00	30.00	30.00
19.	Rampur Raza Library, Rampur.	Plan	15.00	15.00	20.00
		Non-Plan	5.50	5.50	19.75
20.	Asiatic Society, Calcutta.	Plan	341.00	341.00	200.00
		Non-Plan	92.70	92.70	95.00
21.	Central Institute of Buddhist Studies, Leh.	Plan	50.00	50.00	50.00
		Non-Plan	46.50	46.50	55.00
22.	Central Institute of Higher Tibetan Studies, Varanasi.	Plan	100.00	100.00	100.00
		Non-Plan	89.60	89.60	90.00
23.	Library of Tibetan Works and Archives, Dharamsala.	Plan	—	—	—
		Non-Plan	8.40	8.40	12.00
24.	Sikkim Research Institute of Tibetology, Gangtok.	Plan	—	—	—
		Non-Plan	17.00	17.00	17.00
25.	Financial Assistance for Development of Buddhist & Tibetan Organisations.	Plan	45.00	145.00	45.00
		Non-Plan	—	—	—

Sr. No.	Item	Plan Non-Plan	Budget Estimates 1993-94	Revised Estimates 1993-94	Budget Estimates 1994-95
26.	National Library, Calcutta.	Plan Non-Plan	100.00 304.00	100.00 304.00	120.00 310.00
27.	Central Reference Library, Calcutta.	Plan Non-Plan	14.00 28.30	14.00 28.30	15.00 32.00
28.	Central Library, Bombay.	Plan Non-Plan	5.00 8.00	5.00 8.00	5.00 8.00
29.	Central Sectt. Library, New Delhi.	Plan Non-Plan	30.00 17.00	30.00 17.00	30.00 21.00
30.	Delhi Public Library, Delhi.	Plan Non-Plan	60.00 156.55	60.00 156.55	80.00 172.20
31.	Connemara Public Library, Madras.	Plan Non-Plan	— 9.00	— 9.00	— 14.00
32.	Raja Rammohan Roy Library Foundation, Calcutta.	Plan Non-Plan	250.00 46.35	250.00 46.35	275.00 53.50
33.	Sahitya Akademi, New Delhi.	Plan Non-Plan	150.00 82.00	150.00 82.00	200.00 89.00
34.	Sangeet Natak Akademi, New Delhi.	Plan Non-Plan	270.00 127.00	270.0 127.00	290.00 134.00
35.	Lalit Kala Akademi, New Delhi.	Plan Non-Plan	135.00 89.00	135.00 150.00	150.00 90.00
36.	National School of Drama, New Delhi.	Plan Non-Plan	150.00 116.65	150.00 116.65	160.00 125.00
37.	Centre for Cultural Resource and Training	Plan Non-Plan	200.00 81.35	200.00 81.35	260.00 82.00
38.	Building Grants to Voluntary Cultural Organisations	Plan Non-Plan	100.00 —	100.00 —	120.00 —
39.	Financial Assistance to Dance, Drama & Theatre Ensembles	Plan Non-Plan	180.00 35.00	180.00 35.00	200.00 40.00
40.	Art Exhibition (Festival of India)	Plan Non-Plan	— 100.00	— 300.00	— 100.00
41.	Shankar's International Children Competition	Plan Non-Plan	— 1.75	— 1.75	— 1.75
42.	Development of Cultural Organisations	Plan Non-Plan	18.00 —	18.00 —	20.00 —
43.	Cultural Organisation of India	Plan Non-Plan	55.00 35.00	55.00 35.00	55.00 39.57
44.	Institutions & Individuals engaged in literary Activities	Plan Non-Plan	— 8.00	— 8.00	— 10.00
45.	Financial Assistance for promotion of Himalayan Arts.	Plan Non-Plan	10.00 —	10.00 —	15.00 —
46.	Financial Assistance for promotion of Tribal/Folk Arts	Plan Non-Plan	30.00 —	30.00 —	40.00 —
47.	Project for interlinking Culture with Education, Mass-Media etc.	Plan Non-Plan	40.00 —	40.00 —	— —
48.	Zonal Cultural Centres	Plan Non-Plan	175.00 —	175.00 —	200.00 —
49.	Scholarships to Young Workers in Different fields	Plan Non-Plan	— 13.50	— 13.50	— 18.00
50.	Award of Fellowships to Outstanding artists in the fields of Performing, Literary and Plastic Arts.	Plan Non-Plan	85.00 13.50	85.00 43.50	100.00 50.50
51.	Scheme of Financial Assistance to the Persons in the Letters, Arts & such other walks of life who may be in indigent circumstances.	Plan Non-Plan	35.00 34.00	35.00 49.00	45.00 52.00
52.	Emeritus Fellowships	Plan Non-Plan	— 7.50	— 7.50	— 7.50

Sr. No.	Item	Plan Non-Plan	Budget Estimates 1993-94	Revised Estimates 1993-94	Budget Estimates 1994-95
53. 3.	Gandhi Smriti & Darshan Samiti	Plan Non-Plan	100.00 70.00	130.00 70.00	130.00 70.00
54. 4.	Integrated Development of Nav Nalanda Mahavihara & Huen-T-Sang Memorial.	Plan Non-Plan	10.00 —	10.00 —	10.00 —
55. 5.	Development & Maintenance of National Memorials.	Plan Non-Plan	— 30.00	— 30.00	— 30.00
56. 6.	Centenaries/Anniversaries	Plan Non-Plan	— 285.00	— 285.00	— 135.00
57. 7.	International Cultural Activities	Plan Non-Plan	— 13.00	— 13.00	— 20.00
58. 8.	Presentation of Books & Art Objects	Plan Non-Plan	— 10.00	— 10.00	— 10.00
59. 9.	International Co-operation & World Heritage Fund	Plan Non-Plan	— 3.50	— 3.50	— 4.50
60. 0.	Delegations	Plan Non-Plan	— 7.00	— 7.00	— 7.00
61. 1.	Travel Subsidy, TA/DA & Other items.	Plan Non-Plan	— 4.00	— 4.00	12.00 10.00
62. 2.	Setting-up of Multi-purpose Cultural complexes	Plan Non-Plan	200.00 —	200.00 —	200.00 —
63. 3.	Indira Gandhi National Centre for Arts	Plan Non-Plan	1000.00 2.00	1000.00 2.00	1000.00 2.00
64. 4.	Secretariat of the Department of Culture	Plan Non-Plan	48.00 264.00	48.00 264.00	42.00 279.00
65. 5.	Setting up of a Prince of Wales Museum, Bombay	Plan Non-Plan	50.00 —	50.00 —	10.00 —
66. 6.	Kalakshetra, Madras	Plan Non-Plan	50.00 —	50.00 —	50.00 —
67. 7.	Implementation of National Culture Policy	Plan Non-Plan	50.00 —	50.00 —	— —
68. 8.	Srimanta Sankaradeva Kalakshetra, Guwahati	Plan Non-Plan	— —	— —	200.00 —

NIEPA DC



D08146

NATIONAL INSTITUTE OF EDUCATION  
National Institute of Educational  
Planning and Administration  
17-B, Anandbindo Marg,  
New Delhi-110016  
D-8146  
9-8-97